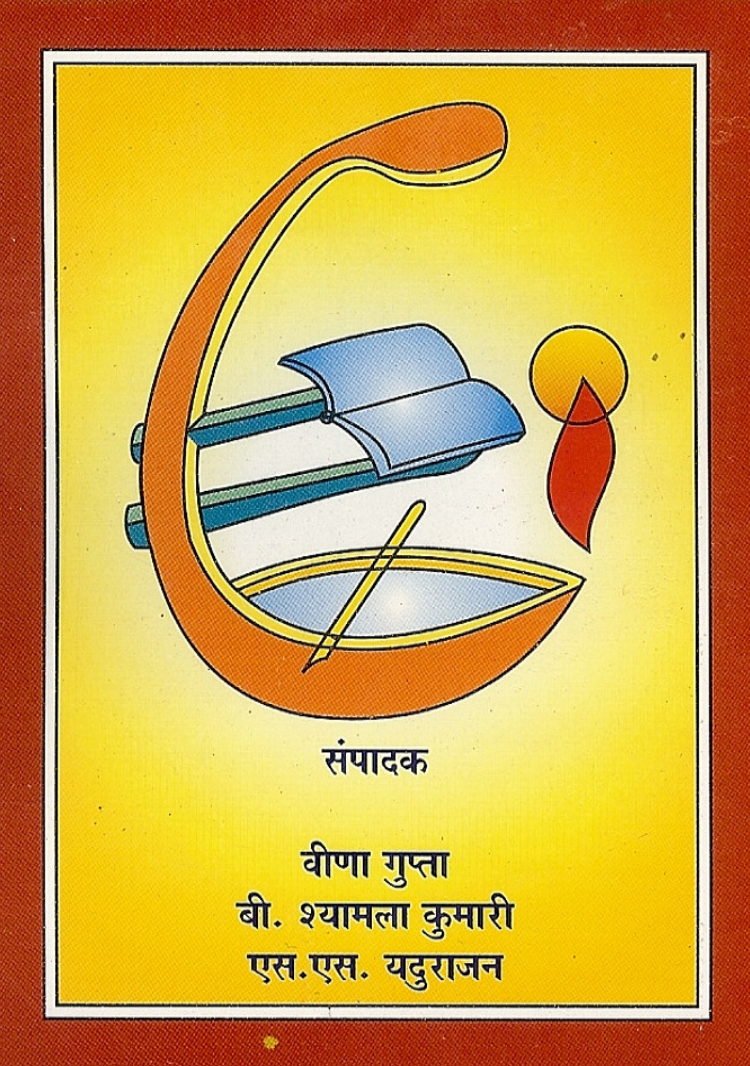
भारतीय भाषा ज्योति

डोगरी



संपादक

वीणा गुप्ता
बी. श्यामला कुमारी
एस.एस. यदुराजन



भारतीय भाषा संस्थान
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार)
मानसगंगोत्री, मैसूर–570 006, भारत
एवं
डोगरी संस्था
जम्मू–180 001, भारत

भारतीय भाषा ज्योति

डोगरी

संपादक

वीणा गुप्ता
बी० श्यामला कुमारी
एस० एस० यदुराजन



भारतीय भाषा संस्थान
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार)
मानसगंगोत्री, मैसूर – 570 006, भारत
एवं
डोगरी संस्था
जम्मू – 180 001, भारत

Bharatiya Bhasha Jyoti : Dogri
Edited by :
Veena Gupta
B. Syamala Kumari
S.S. Yadurajan
Pp : +

First Published : *January 2003* / *Pausa 1924*

Prof. Udaya Narayana Singh
Director
Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri, Mysore – 570 006, INDIA

Phone : 0091/0821–515820 (Director)
Telex : 0846-268 CIIL IN
E-mail : udaya@ciil.stpmy.soft.net (Director)
bhasha@sancharnet.in

EPABX : 0091/0821–515558
Grams : BHARATI
Fax : 0091/0821–515032
Website : http://www.ciil.org

Price : Rs. 100-00 ($ 10-00)

For Copies :
Dogri Sanstha
Jammu - 180 001
India

&

Publication Unit
Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri P.O., Hunsur Road
Mysore – 570 006, India

Published by Prof. Udaya Narayana Singh, Director
Central Institute of Indian Languages, Mysore and
Prof. Lalit Magotra, President
Dogri Sanstha, Jammu.
Printed by Kuldeep Sharma
Classic Printers, Bari Brahmana, Jammu – 181 133, India

विषय सूची

प्राक्कथन

सदियों से भारत में बहुभाषिकता का प्रचलन रहा है– यह बात अब सर्वजनविदित है। वाणिज्य और अर्थ–व्यवस्था की दृष्टि से बहुत आगे बढ़ गये हैं– ऐसे देश के निवासियों के लिए भारत की बहुभाषिकता अभी भी पहेली जैसी ही है। उनके देशों में अनेक नस्ल के लोग अपने गीत–संगीत, खाना–खजाना, वेश–आभूषण तथा रहन–सहन को लेकर आते रहे हैं, पर कुछ ही समय में उनका अपनत्व विलीन हो जाता है। अतः उनके लिए भारत में एक साथ अनेक भाषाओं का इस क़दर सदियों से कथित, पठित, प्रस्फुटित रह पाना एक अजीबो–ग़रीब मिसाल जैसा है जिसकी व्याख्या दे पाना मुश्किल काम है। पर किसी भारतीय की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की ओर अगर हम ग़ौर करें तो यह देखेंगे कि वह एक ही साथ प्रतिदिन अलग–अलग काम में पृथक्–पृथक् परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न भाषा का प्रयोग करता है। अगर हम देखते हैं कि कोई चाय के बगीचे में मज़दूरों के साथ बिहारी बोलियों में, उनके संचालकों के साथ असमिया में, दफ्तर में अंग्रेज़ी में और मनोरंजन के लिए फिल्म तथा टी०वी० में हिन्दी का व्यवहार करता है और घर में अपने लोगों के साथ बंगला में बात करता है तो हमें ऐसी स्थिति में कोई अस्वाभाविकता नज़र नहीं आती है। यहाँ न केवल व्यक्ति बहुभाषी है, भाषिक स्थितियों में भी बहुभाषिकता ग्रथित है। वह तभी संभव हो सकता है जब किसी मुल्क में भाषाएँ जोड़ने का काम करती हैं, तोड़ने का नहीं। लोग अक्सर यह भूल जाते हैं कि भारत में आये, बसे और जन्मे हज़ारों क्षेत्र के लोगों के लिए उनकी भाषाएँ ही वह साधन रही हैं जो एक दूसरे को आपस में जोड़ती रही हैं।

भारतीय भाषा संस्थान इसी भाषिक संयोग को, आदान–प्रदान को बरक़रार रखने में और इसमें और इज़ाफा करने के काम में अपने को समर्पित करता आया है। आधुनिक भारतीय भाषाओं के शिक्षण–प्रशिक्षण का क्षेत्र इस संस्थान के लिए सब से महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा

है। यहाँ से प्रकाशित पौने चार सौ के करीब किताबों में से आधी से ज़्यादा भाषा–शिक्षण के क्षेत्र में ही हो रही हैं।

जैसा कि भारतीय भाषा के अध्ययन–अध्यापन से जुड़े लोगों को पता ही है, 1969 में स्थापित होने के बाद से भारतीय भाषा संस्थान का मुख्य उद्देश्य रहा है सभी भारतीय भाषाओं का विकास करना एवं उनमें आवश्यकतानुसार पाठ्य–सामग्री तैयार करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुख्य भारतीय भाषाओं के अलावा बहुत सी जन–जातीय भाषाओं पर शोध हो रहा है और उनमें पाठ्य–सामग्री तैयार की जा रही है। इसके अतिरिक्त त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत भारतीय भाषा संस्थान के मैसूर, पूणे, भुवनेश्वर, पटियाला, सोलन, लखनऊ एवं गुवाहाटी में स्थित क्षेत्रीय भाषा केन्द्रों के माध्यम से प्रति वर्ष जुलाई से अप्रैल तक भारत के विभिन्न राज्यों के अध्यापकों को उनकी इच्छानुसार अथवा संबंधित राज्य की भाषा प्रणाली के अन्तर्गत वांछित भाषाओं में दस मास का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण के उपरांत ये अध्यापक सीखी गई भाषा को सम्बन्धित राज्यों के विद्यालयों में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अथवा ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाते हैं।

पर अब एक द्वितीय भाषा शिक्षण की जितनी अच्छी क़िताबें आती रही हैं– खास तौर पर भारतीय भाषाओं के सीखने सिखाने की किताबें– वे सभी अंग्रेजी के माध्यम से ही रची–बनी छपी–छपायी गयी हैं। उनके रचयिता और प्रकाशक शायद सोचते हैं कि अंग्रेजी के माध्यम को अपनाने से द्वितीय भाषा शिक्षण (Second language learning) और विदेशी भाषा शिक्षण (Foreign language learning) दोनों के लिए उनकी किताबें प्रयोग में आ सकती हैं। सोचा होगा कि इस तरह से ऐसी किताबें बाज़ार में खरी उतरेंगी। लेकिन दक्षिण एशियाई देशों में बसे और यहाँ के किसी न किसी भाषा को मातृभाषा के रूप में बोलने वालों के लिए किसी भारतीय ज़ुबान को सीखना और इसके दायरे के बाहर के लोगों के लिए हमारी भाषाओं पर अधिकार प्राप्त करना तो बिलकुल अलग शिक्षण–प्रक्रियायें हैं। अतः इन दोनों लक्ष्य–गोष्ठियों के लिए दो अलग तरह की सामग्री की आवश्यकता है। एक और कदम आगे जा कर इस अपने लंबे तजुर्बे से मैं यह भी कह सकता हूँ कि अगर किसी भारतीय

को एक अन्य भारतीय भाषा सीखनी–सिखानी है तो वह काम अगर एक भारतीय भाषा के ज़रिये ही की जा सकती है। उस लिहाज़ से माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी का नाम आना स्वाभाविक है कारण इसको मातृ–भाषा तथा अन्य–भाषा के रूप में बोलने–जानने वाले भारतीय लोगों की संख्या इतनी बड़ी है कि भारतीय संदर्भ में हिन्दी के माध्यम से अन्य अनुसूचित भाषाओं को सिखाने की वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत सामग्री अब तक क्यों नहीं आयी थी, यही एक आश्चर्य–जनक बात है। इस कमी की आपूर्ति के लिए और इन ज़रूरतों को देखते हुये भारतीय भाषा संस्थान ने '**भारतीय भाषा ज्योति**' की एक पुस्तक–शृंखला की संकल्पना की है।

त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी भाषी राज्यों में अन्य भारतीय भाषाओं का तीसरी भाषा के रूप में प्रचलन तो अवश्य हुआ है परन्तु भाषा अध्यापकों एवं पुस्तकों की कमी के कारण वांछित सफलता नहीं मिल पाई। अन्य भारतीय भाषाओं एवं विशेष रूप से दक्षिण भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं अध्यापन हेतु उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार एवं कुछ स्वायत्त संस्थाओं ने एक अभियान कुछ वर्ष पहले प्रारंभ किया था। चयनित भाषाओं की वांछित पुस्तक एवं भाषा अध्यापकों के विशिष्ट प्रशिक्षण एवं नियुक्ति हेतु राज्य सरकार ने भारतीय भाषा संस्थान का सहयोग आवश्यक समझा। इसी सहयोग की कड़ी में उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार के अनुरोध पर भारतीय भाषा संस्थान ने राज्य के भाषा विभाग के साथ मिलकर असमी, बंगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, सिंधी, कश्मीरी, पंजाबी, कन्नड़, मलयालम, तमिल एवं तेलुगु भाषाओं की पाठ्य–सामग्री के निर्माण हेतु कार्यशालाएँ आयोजित कीं। इन कार्यशालाओं के माध्यम से इन सभी भाषाओं की पाठ्य पुस्तकें तैयार की गईं थीं। ये पुस्तकें '**भारतीय भाषा ज्योति**' पुस्तक–शृंखला के अंतर्गत आ रही हैं।

इस शृंखला के साथ एक और महत्त्वपूर्ण भाषा एवं संस्था जुड़ी हुई है और वह है जम्मू–कश्मीर राज्य के जम्मू प्रान्त की प्रमुख भाषा डोगरी एवं इस भाषा की प्रगति की ओर अग्रसर '**डोगरी संस्था, जम्मू**'। इस संस्था के सहयोग से हमारी सामग्री का परीक्षण–निरीक्षण संभव हो रहा है और इस सामग्री को उत्साही जनता तक पहुँचाने में भी, यानि इसके प्रकाशन

और मुद्रण में इनका योगदान–सराहनीय रहा है। अतः ''**भारतीय भाषा ज्योति–डोगरी**'' पुस्तक इसी संस्था के सहयोग से प्रकाशित हुई है।

दोनों संस्थाओं की ओर से मैं आशा करता हूँ कि भारतीय भाषा ज्योति शृंखला की यह डोगरी पुस्तक समस्त हिन्दी भाषा–भाषियों के लिए उपयोगी होगी। इसके माध्यम से वे न केवल सम्बन्धित भाषा के अध्ययन में रुचि का परिचय देंगे, अपितु उसके प्रचार में भी अपना अमूल्य योगदान देंगे।

(उदय नारायण सिंह)
निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान

मैसूर
दिनांक : 17.10.2002

आभार

भारतीय भाषा संस्थान द्वारा जुलाई–अगस्त, 1997 में स्नातकोत्तर डोगरी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय के सहयोग से डोगरी विभाग जम्मू में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में उन लोगों के डोगरी सीखने के उद्देश्य से **भारतीय भाषा ज्योति–डोगरी** नामक 'एक ग़हन पाठ्यक्रम' की रूपरेखा एवं सामग्री तैयार की गई, जिनकी मातृभाषा डोगरी नहीं। तत्पश्चात् दिसम्बर 1997 में भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर की ओर से संस्थान में ही एक दस दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें इस पुस्तक की सामग्री को अन्तिम रूप दिया गया।

डोगरी सीखने के इच्छुक लोगों के लिए प्रस्तुत सामग्री की उपयोगिता आश्वस्त बनाने हेतु संस्थान की ओर से नवम्बर 1998 में डोगरी संस्था जम्मू के सहयोग से आठ दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन डोगरी भवन, कर्ण नगर, जम्मू में किया गया, जिसमें विभिन्न कॉलेजों, हायर सैकंड्री स्कूलों आदि से 21 अध्यापकों ने प्रशिक्षण लिया।

इस कार्य की सम्पूर्णता एवं सफल प्रकाशन में **भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर** ने जो अमूल्य योगदान दिया उसके लिए संस्थान के निदेशक **प्रो० उदय नारायण सिंह** के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ तथा शिक्षा सामग्री निर्माण तथा प्रशिक्षण विभाग की अनुसंधान अधिकारी **श्रीमती बी० श्यामला कुमारी** तथा अनुसंधान सहायक **श्री एस०एस० यदुराजन जी** के प्रयत्नों के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी विभाग की तत्कालीन अध्यक्षा **प्रो० चम्पा शर्मा** और उनके सहयोगियों का आभारी हूँ जिन्होंने कार्यशालाओं के आयोजन एवं प्रस्तुत सामग्री को प्रारूप देने में अपना भरपूर सहयोग दिया। भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के तत्कालीन निदेशक **डॉ० ओंकारनाथ कौल** के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा परम कर्त्तव्य है क्योंकि उन्होंने इस कार्य की योजना के लिए और इसकी सर्वांग सम्पन्नता के लिए भरपूर सहयोग दिया।

स्नातकोत्तर डोगरी विभाग की अध्यक्षा एवं डोगरी संस्था जम्मू की महामंत्री **प्रो० वीणा गुप्ता** का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने इस सामग्री के संपादन एवं प्रकाशन कार्य में अनथक मेहनत व लगन का प्रमाण दिया।

प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री तैयार करने हेतु आयोजित कार्यशाला के प्रतिभागियों–

1. प्रो० चम्पा शर्मा
2. डॉ० वीणा गुप्ता
3. डॉ० शशि पठानिया
4. डॉ० शिवदेव सिंह मन्हास
5. डॉ० सत्यपाल श्रीवत्स
6. डॉ० सुरिन्दर गंडलगाल
7. श्री लक्ष्मी दत्त शास्त्री
8. डॉ० सर्मिष्टा शर्मा
9. डॉ० शशि बजाज
10. डॉ० चंचल भसीन और
11. श्री पवितर सिंह सलाथिया

के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने सामग्री तैयार करने में लगन व परिश्रम का परिचय दिया।

प्रो० ललित मगोत्रा

प्रधान,

डोगरी संस्था, जम्मू।

भूमिका

रियासत जम्मू कश्मीर एकाधिक संस्कृतियों का संगम होने के कारण एक बहुभाषी राज्य है और डोगरी इस राज्य की द्वितीय प्रमुख भाषा है। राज्य की शीतकालीन राजधानी जम्मू प्रान्त के अधिकांश क्षेत्र की यह मातृभाषा है। राज्य के संविधान में मान्यता प्राप्त कश्मीरी, डोगरी, लद्दाखी, हिन्दी, बलती, पहाड़ी, पंजाबी, उर्दू आदि भाषाओं में भी इसे द्वितीय स्थान प्राप्त है। भारत की सीमावर्ती भाषा होने के कारण उत्तर–भारत के भाषाई नक्शे में इसका विशेष स्थान है। यह भारत की अन्य आधुनिक भाषाओं की अपेक्षा अधिक संयोगात्मकता, सुदृढ़ व्याकरणिक व्यवस्था एवं भाषाई विलक्षणताओं से गौरवान्वित है।

प्रस्तुत पुस्तक उन लोगों की सुविधा के लिए तैयार की गई है जिनकी मातृभाषा डोगरी नहीं है और जो डोगरी सीखने और उसमें बातचीत करने के इच्छुक हैं। जम्मू प्रान्त का अधिकांश क्षेत्र सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण रक्षा के विशेष साधनों से सम्पन्न रहता है अतः इस क्षेत्र में विशेष सैनिक बल सेवारत रहते हैं जिन्हें अपने सेवा–काल में इस क्षेत्र की भाषा को समझने और उसमें बातचीत करने की आवश्यकता होती है। दूसरा, पर्यटन की दृष्टि से भी इस प्रदेश का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष स्थान है। श्री वैष्णो देवी जी के पवित्र तीर्थ स्थल पर वर्ष भर श्रद्धालुओं का तान्ता बँधा रहता है। उधर श्री अमरनाथ जी के पवित्र दर्शनों के लिए भी देश भर से असंख्य श्रद्धालु आते हैं और इस यात्रा का मुख्य द्वार भी जम्मू ही है। श्रद्धालु जन आते–जाते जम्मू नगर में ही रुकते–ठहरते हैं। इसके अतिरिक्त वादी कश्मीर तथा जम्मू प्रान्त के अन्य पर्यटन स्थलों के लिए भी काफी संख्या में पर्यटक यहाँ आते हैं जिन्हें अपनी यात्रा–अवधि में जन–साधारण से सम्पर्क स्थापित करने एवं सामान्य सेवाओं की प्राप्ति हेतु डोगरी भाषा समझने और इसमें विचार–अभिव्यक्ति के लिए यह भाषा सीखने की आवश्यकता होती है। तीसरा, पिछले कुछ वर्षों से वादी कश्मीर में अस्थिर परिस्थितियों के कारण बहुत से कश्मीरी भाषी जम्मू क्षेत्र में आ बसे हैं जो डोगरी भाषा को न तो समझ ही सकते हैं और न ही इस क्षेत्र के लोगों से सम्यक रूपेण बातचीत कर सकते हैं। अतः इस क्षेत्र में अपना जीवन सुचारू ढंग से चलाने हेतु उन सब के लिए भी डोगरी भाषा सीखना अनिवार्य प्रतीत होता है।

इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए इस पुस्तक का प्रकाशन भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर की एक उपलब्धि है। यह पुस्तक हिन्दी माध्यम में तैयार की गई है इसकी भी विशेष उपयोगिता है। भारतवर्ष क्योंकि विभिन्न भाषा–बोलियों रूपी फूलों का एक सुंदर एवं वृहत् गुलदस्ता है और इस क्षेत्र में आने वाले पर्यटक एवं सैनिक बल विभिन्न भाषा–प्रदेशों से हो सकते हैं। जहां तक हिन्दी भाषा का सम्बन्ध है वह हमारे देश की राष्ट्रभाषा होने के कारण लगभग सभी भारतवासियों के बीच सम्पर्क–भाषा की भूमिका निभाती है। अतः हिन्दी भाषा के माध्यम से डोगरी सीखना अधिकांश लोगों के लिए उपादेय होगा।

यहां पर इस बात का उल्लेख करना अनुचित न होगा कि डोगरी भाषा की अपनी लिपि थी जिसको 'डोगरा अक्खर' अथवा 'डोगरा लिपि' कहा जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक प्रदेश के सार्वजनिक क्षेत्र में इसका प्रयोग औपचारिक एवं अनौपचारिक कार्यों के लिए होता रहा और उस समय यह लिपि केवल डोगरी भाषा के लिए ही नहीं अपितु हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, संस्कृत आदि भाषाओं के लिए भी प्रयुक्त होती रही। आज सार्वजनिक क्षेत्र में जहां अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेज़ी, राष्ट्रीय भाषा हिन्दी एवं राजकीय भाषा उर्दू का प्रयोग हो रहा है वहां डोगरी साहित्य–रचना के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जा रहा है। इक्की–दुक्की रचनाओं को छोड़ लगभग समूचा साहित्य देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित हुआ है और उधर हिन्दी–भाषा लेखन के लिए भी देवनागरी लिपि ही प्रयुक्त होती है। इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि देवनागरी लिपि के अधिकांश वर्णों का उच्चारण डोगरी और हिन्दी दोनों भाषाओं में समान है केवल कुछ–एक वर्ण (लिपि चिन्ह) हैं जो डोगरी भाषा में हिन्दी भाषा से उच्चारण–भिन्नता रखते हैं। ये वर्ण हैं **घ, झ, ढ, ध, भ और ह**। शब्दों के आरम्भ में आने पर इनका उच्चारण अपने–अपने वर्ग के अघोष, अल्पप्राण व्यञ्जनों क्रमशः क्, च्, ट्, (ढ् शब्दारम्भ में नहीं आती) त्, और प् में परिवर्तित होकर साथ में निम्नारोही सुर (Low-rising tone) का योग ग्रहण करता है। जैसे :

घर	(kàr)	"घर"	भूत	(pù:t)	"भूत"
ढोल	(tòl)	"ढोल"	धारा	(tà:ra:)	"धारा"
झूठ	(chù:th)	"झूठ"			

मध्यस्थिति में आने पर इन वर्णों का उच्चारण अपने–अपने वर्ग के सघोष, अल्पप्राण व्यञ्जनों में परिणत होकर परिवेश के आधार पर कभी उच्चावरोही (High-falling) और कभी निम्नारोही (Low-rising) सुर का योग ग्रहण करता है। यदि इन वर्णों से पूर्व दीर्घ एवं बलशाली अक्षर (स्वर) होता है तो इन वर्णों का उच्चारण उच्चावरोही सुर युक्त होता है और यदि इनके पूर्व ह्रस्व और बलहीन तथा बाद में दीर्घ एवं बलशाली स्वर होता है तो इनका उच्चारण निम्नारोही सुर से युक्त होता है जैसे :-

पूर्व स्वर (अक्षर) दीर्घ अथवा बलशाली			**पश्चात्वर्ती स्वर दीर्घ अथवा बलशाली**		
बाघड़ बिल्ला	(bágarbilla)	"बाघ"	मघेर	(magèr)	"माघ"
रांझन	(ránjan)	"रांझा"	समझाना	(sə̀mjàna)	"समझाना"
बड्ढना	(báḍḍana)	"काटना"	बढाना	(bəḍàna)	"कटवाना"
पढ़ना	(páṛəna)	"पढ़ना"	पढ़ाना	(pəṛàna)	"पढ़ाना"
साधना	(sádhəna)	"साधना"	बधाना	(bədàna)	"बढ़ाना"
निभना	(níbəna)	"निभना"	नभाना	(nəbàna)	"निभाना"

शब्दान्त में इन वर्णों का परिवेश पूर्व स्वर के दीर्घ अथवा बलशाली होने की स्थिति वाला होता है अतः इनका उच्चारण भी सघोष अल्पप्राण व्यञ्जन के समान उच्चावरोही सुर युक्त होता है। जैसे :-

अर्घ	(ə́rg)	"अर्घ"	सांझ	(sánj)	"भाभीदारी"
कड्ढ	(káḍḍ)	"निकाल"	पढ़	(pə́ṛ)	"पढ़"
बध	(bə́d)	"बढ़"	खब्भ	(khə́bb)	"गड्ढा"

इसी प्रकार सघोष महाप्राण संघर्षी व्यञ्जन 'ह्' भी वास्तविक रूप में कुछ एक शब्दों जैसे **हाहाकार (हाहाकार), पैहा (पैसा), नेहा (नहीं था), नेहियां (नहीं थीं), नेहे (नहीं थे) नहो (नहीं)** आदि शब्दों में ही अपने हकारत्व रूप में उच्चरित होता है या कालसूचक योजक क्रिया **हा**, हे, **ही**, **हियां**, **में** अन्यथा सघोष, महाप्राण, स्पर्श, व्यञ्जनों की भांति परिवेश के आधार पर केवल उच्चावरोही और निम्नारोही सुरों में परिणत हो जाता है। जैसे :-

हार	(àr)	"हार"	हैल	(ɛ̀l)	"हैल"
हीरा	(ìra)	"हीरा"	होर	(òr)	"होर"
हूर	(ùr)	"हूर"	हौला	(ɔ̀la)	"हौला"
हेत	(èt)	"हेत"			

मध्य स्थिति में

पूर्व स्वर दीर्घ अथवा बलशाली			पश्चात् स्वर दीर्घ अथवा बलशाली		
बाह्र	(bár)	"बाहर"	ब्हार	(bàr)	"बाहर"
कीह्ल	(kíl)	मन्त्र द्वारा किसी अनिष्टकारी शक्ति के प्रभाव को नष्ट करना	क्हानी	(kàni)	"कहानी"
चूह्क	(chúk)	"छोर, कोना"	तम्हूड़ी	(tə̂mùṛi)	"ततैया"
देह्ल	(dél)	"लड़के के विवाह पर बेटियों को दिया जाने वाला नेग"	दर्हेड़ना	(drèṛəna)	"उधेड़ना"
मैह्ल	(mɛ́l)	"महल"	सर्हैना	(sarɛ̀na)	"तकिया"
कोह्ल	(kól)	अनाज भंडार करने के लिए मिट्टी का सन्दूक	थ्होना	(thòna)	"प्राप्त होना"
खौह्रा	(khɔ́ra:)	"कर्कश"	म्हौल	(mɔ̀l)	"माहौल"

शब्दान्त में 'ह्' व्यञ्जन का उच्चारण सर्वदा अपने पूर्ववर्ती स्वर (अक्षर) को उच्चावरोही सुर प्रदान करता है और स्वयं लुप्त रहता है। जैसे :

साह्	(sá)	"साँस"	बाह्	(bá)	"वास्ता"
बीह्	(bí)	"बीस"	त्रीह्	(trí)	"तीस"
खूह्	(khú)	"कुआँ"	मूंह्	(mũ̃)	"मुँह"
रेह्	(ré)	"रहे"	खेह्	(khé)	"राख"
रोह्	(ró)	"रोष"	मोह्	(mó)	"मोह"

देवनागरी के 'ऋ' और 'ष्' वर्णों का प्रयोग डोगरी में नहीं होता, किन्तु, हिन्दी, संस्कृत आदि के तत्सम, शब्दों में ये वर्ण लिखे अवश्य जाते हैं। इसी प्रकार देवनागरी के '**य**' और '**व**' वर्ण भी डोगरी में प्रायः शब्दारम्भ में '**ज**' तथा '**ब**' रूपों में उच्चरित होते हैं तथापि तत्सम् शब्दों में इनका प्रयोग भी होता है।

प्रस्तुत पुस्तक 25 पाठों पर आधारित है। पुस्तक में पाठ–व्यवस्था डोगरी भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था और भाषा की विलक्षणताओं को ध्यान में रखकर की गई है। हर पाठ की पाठ्य सामग्री वार्तालाप शैली में दी गई है और साथ में उनका हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है ताकि लक्ष्य भाषा को समझने वाले, बोलने, पढ़ने और लिखने की योग्यता प्राप्त कर सकें। अभ्यास के बाद 'शब्दावली' के अन्तर्गत डोगरी शब्दों के हिन्दी समानार्थी–शब्द भी दिए गये हैं। शब्द उसी क्रम में रखे गए हैं जिस क्रम से पाठ में प्रयुक्त हुए हैं। अन्त में पाठ में प्रयुक्त व्याकरणिक ईकाइयों पर टिप्पणियां भी दी गई हैं।

पुस्तक के परिशिष्ट भाग में पुस्तक में आए हुए शब्दों की सांस्कृतिक टिप्पणियां दी गई हैं। जिनसे शिक्षार्थियों को डोगरा–संस्कृति के विशेष पक्ष की जानकारी भी प्राप्त हो सकेगी और ये भाषा और उसके संपूर्ण परिवेश से परिचित हो सकेंगे। आशा है यह पुस्तक डोगरी सीखने के इच्छुक लोगों, जिनकी मातृभाषा डोगरी नहीं है, के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रो० वीणा गुप्ता
अध्यक्षा, डोगरी विभाग
जम्मू विश्व विद्यालय, जम्मू।

पाठ–1

एह् केह् ऐ?

(यह क्या है?)

विद्यार्थी :	एह् केह् ऐ सर ?	विद्यार्थी :	यह क्या है सर ?
अध्यापक :	एह् कताब ऐ, एह् कापी ऐ ते ओह् पैंसल ऐ। अच्छा। एह् केह् ऐ ?	अध्यापक :	यह किताब है, यह कापी है और वह पैंसिल है। अच्छा। यह क्या है ?
विद्यार्थी :	ओह् कताब ऐ।	विद्यार्थी :	वह किताब है।
अध्यापक :	ते एह् केह् ऐ ?	अध्यापक :	और यह क्या है ?
विद्यार्थी :	ओह् पैंसल ऐ।	विद्यार्थी :	वह पैंसिल है।
अध्यापक :	नेईं, एह् कान्नी ऐ।	अध्यापक :	नहीं, यह कलम है।
विद्यार्थी :	ओह् केह् ऐ सर ?	विद्यार्थी :	यह क्या है सर ?
अध्यापक :	ओह् बारी ऐ दरोआजा नेईं। ओह् केह् ऐ ?	अध्यापक :	वह खिड़की है दरवाज़ा नहीं। वह क्या है ?
विद्यार्थी :	ओह् मेज़ ऐ नां ?	विद्यार्थी :	वह मेज है न ?
अध्यापक :	हां, ओह् मेज ऐ ते एह् केह् ऐ ?	अध्यापक :	हाँ वह मेज है और यह क्या है ?
विद्यार्थी :	ओह् कान्नी ऐ।	विद्यार्थी :	वह कलम है।
अध्यापक :	कताब केह्ड़ी ऐ ते कापी केह्ड़ी ऐ ?	अध्यापक :	किताब कौन सी है और कापी कौन सी है ?
विद्यार्थी :	एह् कताब ऐ ते ओह् कापी।	विद्यार्थी :	यह किताब है और वह कापी।

अध्यापक : एह् केह् ऐ ?

विद्यार्थी : ओह् कुर्सी ऐ।

अध्यापक : एह् कुर्सी नेईं डैस्क ऐ।
ओह् कुर्सी ऐ। ओह् केह् ऐ ?

विद्यार्थी : ओह् पक्खा ऐ नां ?

अध्यापक : हां, ओह् पक्खा ऐ।
दरोआजा केह्ड़ा ऐ ते
बारी केह्ड़ी ऐ ?

विद्यार्थी : ओह् दरोआजा ऐ ते
ओह् बारी ऐ।

अध्यापक : एह् कताबां न।
ओह् कापियां न।

विद्यार्थी : एह् कताबां न ते ओह्
कापियां।

अध्यापक : कापियां केह्ड़ियां न ते
पैंसला केह्ड़ियां न ?

विद्यार्थी : एह् कापियां न ते ओह्
पैंसलां।

अध्यापक : ओह् मेज न। एह् पक्खे न।
मेज केह्ड़े न ते पक्खे केह्ड़े ?

विद्यार्थी : ओह् मेज न ते एह् पक्खे।

अध्यापक : ओह् दरोआजे न ते
ओह् बारियां न। ओह्
केह् न ?

अध्यापक : यह क्या है ?

विद्यार्थी : वह कुर्सी है।

अध्यापक : यह कुर्सी नहीं डेस्क है।
वह कुर्सी है। वह क्या है ?

विद्यार्थी : वह पंखा है न ?

अध्यापक : हाँ, वह पंखा है।
दरवाज़ा कौन सा है और
खिड़की कौन सी है ?

विद्यार्थी : वह दरवाज़ा है और वह
खिड़की है।

अध्यापक : ये किताबें हैं।
वे कापियें हैं।

विद्यार्थी : ये किताबें हैं और वे
कापियां।

अध्यापक : कापियें कौन सी हैं और
पेंसिलें कौन सी हैं ?

विद्यार्थी : ये कापियें हैं और वे
पेंसिलें।

अध्यापक : वे मेज़ हैं। ये पंखे हैं। मेज़
कौन से हैं और पंखे कौन से ?

विद्यार्थी : वे मेज़ हैं और ये पंखे।

अध्यापक : वे दरवाज़े हैं और वे
खिड़कियां। वे क्या हैं ?

विद्यार्थी :	ओह् डैस्क न।	विद्यार्थी :	वे डेस्क हैं।
अध्यापक :	बारियां केह्ड़ियां न ?	अध्यापक :	खिड़कियां कौन सी हैं ?
विद्यार्थी :	एह् बारियां न।	विद्यार्थी :	ये खिड़कियां हैं।
अध्यापक :	एह् माला ऐ ते एह् पैन। माला केह्ड़ी ऐ ?	अध्यापक :	यह माला है और यह पेन। माला कौन सी है ?
विद्यार्थी :	ओह् माला ऐ।	विद्यार्थी :	वह माला है।
अध्यापक :	एह् पैन न ते ओह् मालां न। पैन केह्ड़े न ?	अध्यापक :	ये पेन हैं और वे मालाएं हैं। पेन कौन से हैं ?
विद्यार्थी :	एह् पैन न।	विद्यार्थी :	ये पेन हैं।
अध्यापक :	ते मालां केह्ड़ियां ?	अध्यापक :	और मालाएं कौन सी हैं ?
विद्यार्थी :	ओह् मालां न नां।	विद्यार्थी :	वे मालाएं हैं न।
अध्यापक :	दोस्तो। एह् केह्–केह् न ?	अध्यापक :	दोस्तो। ये क्या–क्या हैं ?
विद्यार्थी :	सर! एह् मालां न, बारियां न, कापियां न, पैंसलां न, कताबां न ते कुर्सियां न।	विद्यार्थी :	सर! ये मालाएं हैं खिड़कियां है, कापियां हैं, पेंसिलें हैं, किताबें हैं और कुर्सियां हैं।
अध्यापक :	ते ओह् केह्–केह् न ?	अध्यापक :	और वे क्या–क्या हैं ?
विद्यार्थी :	ओह् पैन न, मेज न, डैस्क न, पक्खे न ते दरोआजे न।	विद्यार्थी :	वे पेन हैं, मेज़ हैं, डेस्क हैं, पंखे हैं और दरवाज़े हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

एह् कताब ऐ।	एह् कताबां न।
एह् कापी ऐ।	एह् कापियां न।

ओह् कुर्सी ऐ।
ओह् बारी ऐ।
एह् मेज ऐ।
एह् दरोआजा ऐ।
ओह् पक्खा ऐ।
ओह् डैस्क ऐ।
एह् मेज ऐ ते ओह् कुर्सी।
बारी केह्ड़ी ऐ ते दरआजा केह्ड़ा ?

ओह् कुर्सियां न।
ओह् बारियां न।
एह् मेज न।
एह् दरोआजे न।
ओह् पक्खे न।
ओह् डैस्क न।
एह् मेज न ते ओह् कुर्सियां।
बारियां केह्ड़ियां न ते दरोआजे केह्ड़े ?

2. **Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)**

Model (i)

एह् कुर्सी ऐ (कताब)
एह् कताब ऐ।
(कापी)
(पैंसल)
(कान्नी)

Model (ii)

ओह् दरोआजा ऐ। (मेज)
ओह् मेज ऐ।
(डैस्क)
(पक्खा)
(पैन)

Model (iii)

ओह् कुर्सियां न। (पैंसलां)
ओह् पैंसला न।
(कताबां)
(कापियां)
(बारियां)

Model (iv)

एह् दरोआजे न। (पक्खे)
एह् पक्खे न।
(मेज)
(पैन)
(डैस्क)

3. **Response Drill (प्रश्न–उत्तर अभ्यास)**

Model (i)

एह् केह् ऐ ? *(पैंसल)*

एह् पैंसल ऐ।

1. एह् केह् ऐ ? (कताब)
2. एह् केह् ऐ ? (कुर्सी)
3. एह् केह् ऐ ? (कान्नी)

Model (ii)

ओह् केह् ऐ ? *(मेज)*

ओह् मेज ऐ।

1. ओह् केह् ऐ ? (पक्खा)
2. ओह् केह् ऐ ? (दरोआजा)
3. ओह् केह् ऐ ? (डैस्क)

Model (iii)

एह् केह् न ? *(कताबां)*

एह् कताबां न।

1. एह् केह् न ? (पैंसला)
2. एह् केह् न ? (कापियां)
3. एह् केह् न ? (कुर्सियां)

Model (iv)

ओह् केह् न ? *(पक्खे)*

ओह् पक्खे न।

1. ओह् केह् न ? (दरोआजे)
2. ओह् केह् न ? (पैन)
3. ओह् केह् न ? (मेज)

4. **Transformational Drill (रूपान्तर अभ्यास)**

Model (i)

ओह् कुर्सी ऐ ?

ओह् केह् ऐ ?

1. एह् कापी ऐ।
2. एह् मेज ऐ।
3. ओह् डैस्क ऐ।
4. ओह् कापी ऐ।

Model (ii)

ओह् कुर्सियां न ?

ओह् केह् न ?

1. ओह् कापियां न।
2. ओह् कुर्सियां न।
3. एह् पक्खे न।
4. एह् पैन न।

5. एह् पक्खा ऐ।

6. ओह् पैंसल ऐ।

5. ओह् कताबां न।

6. एह् दरोआजे न।

Model (iii)

ओह् कापी ऐ।

कापी केह्ड़ी ऐ ?

1. ओह् कताब ऐ।
2. ओह् कान्नी ऐ।
3. ओह् बारी ऐ।

Model (iv)

ओह् पक्खा ऐ।

पक्खा केह्ड़ा ऐ ?

1. ओह् डेस्क ऐ।
2. ओह् मेज ऐ।
3. एह् पैन ऐ।

Model (v)

एह् कापियां न।

कापियां केह्ड़ियां न ?

1. एह् कताबां न।
2. एह् पैंसलां न।
3. एह् बारियां न।

Model (vi)

ओह् दरोआजे न।

दरोआजे केह्ड़े न ?

1. ओह् पक्खे न।
2. ओह् मेज न।
3. ओह् पैन न।

5. **निम्नलिखित रिक्त स्थानों में कोष्ठक में दिए गए हिन्दी शब्दों के डोगरी के समानार्थक शब्द भरिए :–**

1. एह् ―――――― ऐ (खिड़की)
2. ओह् ―――――― ऐ (किताब)
3. एह् ―――――― ऐ (पेंसिल)
4. ओह् ―――――― ऐ (पंखा)
5. एह् ―――――― ऐ (डेस्क)

6. ओह् ---------- ऐ (दरवाज़ा)

7. एह् ---------- न (पेसिलें)

8. ओह् ---------- न (किताबें)

9. एह् ---------- न (खिड़कियां)

10. ओह् ---------- न (पंखे)

11. एह् ---------- न (दरवाज़े)

12. ओह् ---------- न (मेज़)

6. 'केहूड़ा' या 'केहूड़ी' का उपयुक्त प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान भरिए :-

दरोआजा ---------- ऐ।

बारी ---------- ऐ।

पक्खा ---------- ऐ।

कापी ---------- ऐ।

पैंसल ---------- ऐ।

मेज ---------- ऐ।

कताब ---------- ऐ।

कान्नी ---------- ऐ।

7. 'केहूड़े' या 'केहूड़ियां' का उपयुक्त प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान भरिए :-

1. मेज -------- न ते कुर्सियां -------- न।
2. कापियां -------- न ते कताबां -------- न।
3. कान्नियां -------- न ते पक्खे -------- न।
4. दरोआजे -------- न ते बारियां -------- न।

Vocabulary **शब्दावली**

एह्	=	यह, ये	कान्नी	=	कलम
ओह्	=	वह, वे	कताब	=	किताब
ऐ	=	है	कापी	=	कापी
न	=	हैं	पैंसल	=	पेंसिल
केह्	=	क्या	बारी	=	खिड़की
केह्ड़ा	=	कौन सा	माला	=	माला
केह्ड़ी	=	कौन सी	मेज	=	मेज़
केह्ड़े	=	कौन से	पक्खा	=	पंखा
केह्ड़ियां	=	कौन सीं	पैन	=	पेन
डैस्क	=	डेस्क	दरोआजा	=	दरवाजा
विद्यार्थी	=	विद्यार्थी	अध्यापक	=	अध्यापक
अच्छा	=	अच्छा	ते	=	और
कुर्सी	=	कुर्सी	केह्–केह्	=	क्या–क्या
दोस्तो	=	दोस्त का सम्बोधन (बहुवचन में)			
सर	=	अंग्रेज़ी में अध्यापक के लिए सम्बोधन			

टिप्पणियाँ

1.1 प्रस्तुत पाठ में आप डोगरी के निश्चयवाचक सर्वनाम 'एह्' (यह) तथा 'ओह्' (वह), प्रश्नवाचक सर्वनाम 'केह्' (क्या) और सहायक (पूरक) क्रिया 'ऐ' (है) से परिचित हुए हैं। जैसे :–

एह् कताब ऐ।	यह किताब है।
ओह् केह् ऐ ?	वह क्या है ?

1.2 '**एह्**' तथा '**ओह्**' सर्वनाम दोनों लिंगों–पुलिंग और स्त्रीलिंग तथा दोनों वचनों–एकवचन तथा बहुवचन की सूचना देते हैं :-

एह् = यह / ये

ओह् = वह / वे

'**केह्**' सर्वनाम प्रायः एकवचन में ही प्रयुक्त होता है।

1.3 डोगरी में **दो लिंग** हैं– पुलिंग तथा स्त्रीलिंग सभी डोगरी संज्ञाएं (संज्ञाएं) इन दो लिंगों के अन्तर्गत आ जाती हैं। जैसे :-

मेज (पुलिंग)	कापी (स्त्रीलिंग)
डैस्क (पुलिंग)	कुर्सी (स्त्रीलिंग)

1.4 डोगरी में दो वचन हैं – एकवचन तथा बहुवचन

(i) पुलिंग संज्ञाओं के एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए दो प्रकार के नियम लागू होते हैं :-

(क) आकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के अंतिम –आ को –ए करने से बहुवचन रूप बनते हैं। जैसे :-

एकवचन	**बहुवचन**
दरोआजा	दरोआजे
पक्खा	पक्खे

(ख) आकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के अतिरिक्त अन्य सभी पुलिंग संज्ञाओं के अन्त में शून्य प्रत्यय लगाने से बहुवचन रूप बनते हैं। जैसे :-

एकवचन	**बहुवचन**
मेज	मेज
पैन	पैन
डैस्क	डैस्क

(ii) सभी स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में **आं** प्रत्यय जोड़ने से संज्ञा के बहुवचन रूप बनते हैं। जैसे :-

एकवचन	**बहुवचन**
पैंसल	पैंसलां
कताब	कताबां
माला	मालां
बारी	बारियां
कुर्सी	कुर्सियां
कान्नी	कान्नियां

आकारान्त एकाक्षरी संज्ञाओं में प्रायः बहुवचन सूचक प्रत्यय **–आं** से पहले '**व्**' अथवा '**म्**' का योग होता है। जैसे :-

एकवचन		**बहुवचन**
मां	'मां'	मावां/मामां ''माताएं''
बांह्	'भुजा'	बाह्वां/बाह्मां ''भुजाएं''

1.5 अन्यपुरुष के साथ योजक क्रिया के वर्तमान कालिक रूप इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं :-

एकवचन	ऐ	'है'
बहुवचन	न	'हैं'

यह योजक क्रिया **कर्ता** और कर्म के वचन के अनुसार प्रयुक्त होती है। जैसे :-

एह् पैंसल ऐ।	'यह पेंसिल है।'
एह् पैंसलां न।	'ये पेंसिलें हैं।'

1.6 डोगरी प्रश्नवाचक सर्वनाम '**केह्**' 'क्या' प्रायः अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :-

एह् केह् ऐ ?	'यह क्या है ?'
एह् पैन ऐ।	'यह पेन है।'

कई बार मानवेतर प्राणियों के लिए भी '**केह्**' सर्वनाम प्रयुक्त होता है। जैसे :-

ओह् केह् ऐ ? — 'वह क्या है ?'

ओह् तोता ऐ। — 'वह तोता है।'

'**केह्**' सर्वनाम का पुनरुक्त रूप '**केह्–केह्**' का प्रयोग संज्ञाओं का वैभिन्य जानने के लिए किया जाता है। जैसे :-

ओह् केह्–केह् न ? — 'वे क्या–क्या हैं ?'

ओह् कताबां न, पैन न, — 'वे किताबें हैं, पेन हैं,

कुर्सियां न ते बारियां न। — कुर्सियां हैं और खिड़कियां हैं।'

1.7 प्रश्नवाचक सर्वनाम '**केह्ड़ा**' प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक सभी प्रकार की संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होता है तथा उनके लिंग तथा वचन के अनुसार रूप ग्रहण करता है। जैसे :-

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
केह्ड़ा दरोआजा	केह्ड़े दरोआजे	केह्ड़ी बारी	केह्ड़ियां बारियां
'कौन सा दरवाज़ा'	'कौन से दरवाज़े'	'कौन सी खिड़की'	'कौन सी खिड़कियां'
दरोआजा केह्ड़ा ऐ ?	'दरोआजे केह्ड़े न ?	बारी केह्ड़ी ऐ ?	बारियां केह्ड़ियां न ?
'दरवाज़ा कौन सा है ?'	'दरवाज़े कौन से हैं ?'	'खिड़की कौन सी है ?'	'खिड़कियां कौन सी हैं ?'

1.8 दो शब्दों, दो वाक्यों आदि को जोड़ने के लिए 'ते' (और) का प्रयोग होता है। जैसे :-

मेज **ते** कुर्सी — 'मेज़ **और** कुर्सी'

मेज केह्ड़ा ऐ **ते** कुर्सी केह्ड़ी ऐ ? — 'मेज़ कौन सा है **और** कुर्सी कौन सी है ?'

1.9 '**नेईं**' (नहीं) नकारात्मक अव्यय है। यह हां .... नेईं (हाँ .... नहीं) वाले वार्तालाप वाक्यों के आरम्भ में भी आता है। जैसे :-

नेईं, एह् कुर्सी नेईं ऐ।

नहीं, यह कुर्सी नहीं है।

नेईं, एह् मेज ऐ।

नहीं, यह मेज है।

1.10 वाक्य के अन्त में क्रिया के बाद जब 'नां' आता है तो वह सकारात्मक अर्थ में प्रश्नात्मक अर्थ सूचित करता है। जैसे :-

ओह् मेज ऐ **नां** ?

'वह मेज है न ?'

'क्या वह मेज है ?'

1.11 दोस्तो (दोस्तो)

यह '**दोस्त**' संज्ञा का सम्बोधन कारकीय रूप है।

एकवचन में 'दोस्ता' रूप प्रयुक्त होता है और

बहुवचन में 'दोस्तो' रूप बनता है।

× × × ×

पाठ–2

तुस कु'न ओ?
(आप कौन हैं?)

अध्यापक	:	तूं मनदीप एं ?	अध्यापक	:	तुम मनदीप हो ?
मनदीप	:	हां जी, में मनदीप आं।	मनदीप	:	हाँ जी, मैं मनदीप हूँ।
अध्यापक	:	में अध्यापक आं ते ओह् प्रिंसीपल साह्‌ब न।	अध्यापक	:	मैं अध्यापक हूँ और वे प्रिंसीपल साहब हैं।
मनदीप	:	नमस्ते सर, नमस्ते।	मनदीप	:	नमस्ते सर, नमस्ते।
अध्यापक	:	नमस्ते। तूं कु'न एं।	अध्यापक	:	नमस्ते। तुम कौन हो ?
राजीव	:	जी में राजीव आं। एह् संजीव ऐ।	राजीव	:	जी मैं राजीव हूँ। यह संजीव है।
अध्यापक	:	तुस विद्यार्थी ओ ?	अध्यापक	:	तुम विद्यार्थी हो ?
राजीव	:	हां जी, अस विद्यार्थी आं।	राजीव	:	हाँ जी, हम विद्यार्थी हैं।
अध्यापक	:	तुस केह्‌ड़ी कलासा दे विद्यार्थी ओ ?	अध्यापक	:	तुम किस क्लास के विद्यार्थी हो ?
मनदीप	:	जी अस बी०ए० फाइनल दे विद्यार्थी आं।	मनदीप	:	जी हम बी०ए० फाइनल के विद्यार्थी हैं।
अध्यापक	:	राजीव, तूं बी डोगरा एं ?	अध्यापक	:	राजीव, तू भी डोगरा है ?
राजीव	:	नेईं जी, में पंजाबी आं।	राजीव	:	नहीं जी, मैं पंजाबी हूँ।
अध्यापक	:	मनदीप। ओह् कु'न ऐ ?	अध्यापक	:	मनदीप ! वह कौन है ?
मनदीप	:	ओह् माली ऐ ते एह् कारीगिर ऐ।	मनदीप	:	वह माली है और यह कारीगिर है।
अध्यापक	:	ओह् दर्जी न ?	अध्यापक	:	वे दर्ज़ी हैं ?

मनदीप	:	नेईं जी, ओह् तरखान न।	मनदीप	:	नहीं जी, वे बढ़ई हैं।
अध्यापक	:	तुस कु'न ओ ?	अध्यापक	:	आप कौन हैं ?
सुभाष	:	में सुभाष आं, में खढारी बी आं।	सुभाष	:	मैं सुभाष हूँ, मैं खिलाड़ी भी हूँ।
अध्यापक	:	तुस डाक्टर ओ ?	अध्यापक	:	आप डाक्टर हैं ?
सुभाष	:	नेईं जी, में इंजीनियर आं। एह्, डाक्टर न। ओह् प्रोफेसर न।	सुभाष	:	नहीं जी, मैं इंजीनियर हूँ। यह डाक्टर हैं। वह प्रोफेसर हैं।
अध्यापक	:	श्वेता ते श्यामली, तुस स्हेलियां ओ ?	अध्यापक	:	श्वेता और श्यामली, आप सहेलियां हैं ?
श्वेता	:	हां जी, अस स्हेलियां आं।	श्वेता	:	हाँ जी, हम सहेलियां हैं।
अध्यापक	:	कंपोडर केह्ड़ा ऐ ते नर्स केह्ड़ी ऐ ?	अध्यापक	:	कंपोडर कौन सा है और नर्स कौन सी है ?
श्वेता	:	एह् कंपोडर ऐ ते ओह् नर्स ऐ।	श्वेता	:	यह कंपोडर है और वह नर्स है।
अध्यापक	:	मजदूर केह्ड़े न ?	अध्यापक	:	मजदूर कौन से हैं ?
सुभाष	:	मजदूर ओह् न।	सुभाष	:	मजदूर वे हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

Singular	**Plural**
में अध्यापक आं।	अस विद्यार्थी आं।
में राजीव आं।	अस स्हेलियां आं।

तूं डोगरा एं ?

तूं मनदीप एं ?

ओह् माली ऐ।

ओह् नर्स ऐ।

एह् कंपोडर ऐ।

तुस विद्यार्थी ओ।

तुस कु'न ओ ?

ओह् दर्जी न।

ओह् तरखान न।

एह् डाक्टर न।

2. **Substitution (स्थानापन्न अभ्यास)**

Model - I

में मनदीप आं। *(डाक्टर)*

में डाक्टर आं।

(श्वेता)

(कारीगिर)

Model - II

अस विद्यार्थी आं। *(इंजीनियर)*

अस इंजीनियर आं।

(तरखान)

(पंजाबी)

Model - III

तूं राजीव एं ? *(डोगरा)*

तूं डोगरा एं ?

(नर्स)

(सुभाष)

Model - IV

तुस विद्यार्थी ओ ? *(अध्यापक)*

तुस अध्यापक ओ ?

(स्हेलियां)

(कंपोडर)

Model - V

ओह् सुभाष ऐ। *(माली)*

ओह् माली ऐ।

(श्यामली)

(संजीव)

ओह् प्रिंसीपल साह्ब न। *(खढारी)*

ओह् खढारी न।

(दर्जी)

(मजदूर)

3. Response Drill (प्रश्न उत्तर–अभ्यास)

(i)		(ii)	
तूं कु'न एं?	*(माली)*	*तुस कु'न ओ?*	*(मजदूर)*
में माली आं।		*अस मजदूर आं।*	
1. तूं कु'न एं ?	(दर्जी)	तुस कु'न ओ ?	(खढारी)
2. तूं कु'न एं ?	(पंजाबी)	तुस कु'न ओ ?	(तरखान)
3. तुस कु'न ओ ?	(प्रिंसीपल)	तुस कु'न ओ ?	(कंपोडर)
4. तुस कु'न ओ ?	(अध्यापक)	तुस कु'न ओ ?	(दर्जी)
5. तुस कु'न ओ ?	(डाक्टर)	तुस कु'न ओ ?	(इंजीनियर)

(iii)		(iv)	
ओह् कु'न ऐ?	*(मनदीप)*	*ओह् कु'न न?*	*(संजीव ते सुभाष)*
1. ओह् कु'न ऐ ?	(श्वेता)	ओह् कु'न न ?	(विद्यार्थी)
2. ओह् कु'न ऐ ?	(श्यामली)	ओह् कु'न न ?	(राजीव ते मनदीप)
3. ओह् कु'न ऐ ?	(माली)	ओह् कु'न न ?	(प्रोफेसर)
4. ओह् कु'न ऐ ?	(कारीगिर)	ओह् कु'न न ?	(मजदूर)
5. ओह् कु'न साह्ब न ?	(डाक्टर)	ओह् कु'न न ?	(कंपोडर)

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में योजक – क्रिया भरिए :

1. में पंजाबी ————।   एह् मनदीप ————।

2. अस पंजाबी ————।   एह् खढारी ————।

3. तूं श्वेता ————।   में कु'न ————।

4. तुस स्हेलियां --------।

तूं बी डोगरा --------।

5. ओह् दर्जी --------।

ओह् कु'न --------।

6. ओह् मजदूर --------।

तुस कु'न --------।

5. उदाहरणों का अनुसरण करते हुए वाक्यों में परिवर्तन कीजिए :

(i)

में खढारी आं ?

हां जी, तुस खढारी ओ।

1. में अध्यापक आं ?
2. में डाक्टर आं ?

(ii)

तूं कारीगिर एं ?

हां जी, में कारीगिर आं।

तूं मजदूर एं ?

तूं विद्यार्थी एं ?

(iii)

अस दर्जी आं ?

जी, तुस दर्जी ओ।

1. अस पंजाबी आं ?
2. अस स्हेलियां आं ?
3. अस तरखान आं ?

(iv)

तुस कारीगिर ओ ?

नेईं जी, अस कारीगिर नेईं, अस विद्यार्थी आं।

1. तुस प्रिंसीपल ओ ?
2. तुस डाक्टर ओ ?
3. तुस माली ओ ?

(v)

ओह् मनदीप ऐ ?

हां जी, ओह् मनदीप ऐ।

1. ओह् राजीव ऐ ?
2. ओह् श्वेता ऐ ?

(vi)

ओह् डाक्टर न ?

नेईं जी, ओह् डाक्टर नेईं न।

ओह् इंजीनियर न ?

ओह् प्रोफैसर न ?

6. उदाहरणों का अनुसरण करते हुए वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(i)

में डाक्टर आं ?

अस डाक्टर आं।

1. *में पंजाबी आं।*

2. *में विद्यार्थी आं।*

(ii)

तूं दर्जी एं।

तुस दर्जी ओ।

1. *तूं प्रिंसीपल एं।*

2. *तूं अध्यापक एं।*

(iii)

ओह् खढारी ऐ।

ओह् खढारी न।

1. *ओह् माली ऐ।*

2. *ओह् मजदूर ऐ।*

Vocabulary शब्दावली

कु'न	(कौन)	अध्यापक	(अध्यापक)
में	(मैं)	प्रिंसीपल	(प्रिंसीपल)
अस	(हम)	प्राफैसर	(प्रोफेसर)
तूं	(तू)	दर्जी	(दर्ज़ी)
तुस	(तुम । आप)	कारीगिर	(कारीगिर)
ओह्	(वह)	माली	(माली)
एह्	(यह)	तरखान	(बढ़ई)
हां	(हाँ)	डाक्टर	(डाक्टर)
हां जी	(हाँ जी)	इंजीनियर	(इंजीनियर)

नेईं	(नहीं)	विद्यार्थी	(विद्यार्थी)
नेईं जी	(नहीं जी)	नर्स	(नर्स)
साह्‌ब	(साहब)	कंपोडर	(कंपौंडर)
बी	(भी)	पंजाबी	(पंजाबी)
आं	(हूं)	डोगरा	(डोगरा)
एं	(है । हो)	खढारी	(खिलाड़ी)
ओ	(हो । हैं)	मजदूर	(मजदूर)
ऐ	(है)	स्हेलियां	(स्हेलियां)
न	(हैं)		

टिप्पणियाँ

2.1 इस पाठ में आपको डोगरी के **पुरुषवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम** और **योजक क्रिया** के कुछ रूपों से परिचित करवाया गया है।

2.2 डोगरी में पुरुषवाचक सर्वनाम तीन हैं :

प्रथमपुरुष सर्वनाम, मध्यमपुरुष सर्वनाम और **अन्यपुरुष सर्वनाम**। प्रथमपुरुष और मध्यमपुरुष सर्वनामों के एकवचन तथा बहुवचन में **भिन्न–भिन्न रूप** बनते हैं, जबकि अन्यपुरुष सर्वनाम एकवचन और बहुवचन में **एक ही रूप** में प्रयुक्त होता है। जैसे :–

	एकवचन		**बहुवचन**	
प्रथमपुरुष	में	'मैं'	अस	'हम'
मध्यमपुरुष	तूं	'तू'	तुस	'तुम / आप'
अन्यपुरुष				
दूरवर्ती	ओह्	'वह'	ओह्	'वे'
समीपवर्ती	एह्	'यह'	एह्	'ये'

2.3 प्रश्नवाचक सर्वनाम '**कु'न**' केवल मनुष्य जाति की संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होता है और इसमें भी वचन के लिए परिवर्तन नहीं होता। जैसे :-

एकवचन	**बहुवचन**
ओह् कु'न ऐ ?	ओह् कु'न न ?
'वह कौन है ?'	'वे कौन हैं ?'
ओह् माली ऐ।	ओह् दर्जी न।
'वह माली है।'	'वे दर्जी हैं।'

2.4 योजक क्रिया '**ऐ**' (है) सभी पुरुषों के साथ वचन के अनुसार बदलती है। जैसे :-

में मनदीप आं।	प्रथमपुरुष, एकवचन
मैं मनदीप हूँ।'	
अस विद्यार्थी आं	प्रथमपुरुष, बहुवचन
'हम विद्यार्थी हैं।'	
तूं कु'न एं ?	मध्यमपुरुष, एकवचन
'तुम कौन हो ?'	
तुस कु'न ओ ?	मध्यमपुरुष, बहुवचन
'तुम/आप कौन हो/हैं ?'	
ओह् विद्यार्थी ऐ।	अन्यपुरुष, एकवचन
'वह विद्यार्थी है।'	
ओह् विद्यार्थी न।	अन्यपुरुष, बहुवचन
'वे विद्यार्थी हैं।'	

प्रथमपुरुष में योजक '**आं**' (हूँ/हैं) एकवचन तथा बहुवचन दोनों में समान रहती है।

2.5 '**हां ------ नेईं** '(हाँ----- नहीं)' वाले प्रश्नोत्तर वाक्यों में प्रश्न सूचना अधिकतर अनुतान (वाक्य के उच्चारण ढंग) से हो जाती है। जैसे :

तूं मनदीप एं ?	'तुम मनदीप हो ?'
हां जी में मनदीप आं।	'जी हाँ मैं मनदीप हूँ।'

2.6 प्रश्नोत्तर वाक्यों में '**हां**' अथवा '**हां जी**' सकारात्मक अर्थ के लिए आता है और '**नेईं**' अथवा '**नेईं जी**' नकारात्मक अर्थ के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :-

तुस विद्यार्थी ओ ?	'तुम विद्यार्थी हो ?'
हां जी, अस विद्यार्थी आं।	'जी हाँ, हम विद्यार्थी हैं।'
राजीव, तूं बी डोगरा एं ?	'राजीव, तू भी डोगरा है ?'
नेईं जी, में पंजाबी आं।	'जी नहीं, मैं पंजाबी हूँ।'

2.7 '**होर**', '**जी**' और '**साह्‌ब**' आदरसूचक शब्द हैं। इनका प्रयोग व्यक्तिवाचक नामों के साथ, विभिन्न व्यवसायिकों के साथ तथा अपने से बड़े रिश्तों के साथ होता है। जैसे :-

एह्‌ देवी शंकर होर न।	'ये देवीशंकर जी हैं।'
ओह्‌ मेरे पिताजी न।	'वे मेरे पिता जी हैं।'
एह्‌ तुन्दे जीजा होर न ?	'ये आपके जीजा जी हैं।'
एह्‌ मेरे मास्टर जी न।	'ये मेरे मास्टर जी हैं।'
ओह्‌ प्रोफैसर साह्‌ब न।	'वे प्रोफेसर साहब हैं।'
ओह्‌ कु'न साह्‌ब न ?	'वे कौन साहब हैं ?'
ओह्‌ डाक्टर साह्‌ब न।	'वे डाक्टर साहब हैं।'

2.8 इसके अतिरिक्त आदर सूचक अर्थ में सर्वनामों के बहुवचनीय रूप भी एकवचन के लिए प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

तुस डाक्टर ओ ?	'आप डाक्टर हैं ?'

एह् डाक्टर न।	'ये डाक्टर हैं।'
ओह् प्रोफैसर न।	'वे प्रोफेसर हैं।'

2.9 'द्' (क्) सम्बन्ध का चिह्न है। डोगरी में सम्बन्ध के चिह्न लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं। जैसे :-

	एकवचन		**बहुवचन**	
पुलिंग	दा	'का'	दे	'के'
स्त्रीलिंग	दी	'की'	दियां	'की'

प्रथमपुरुष तथा मध्यमपुरुष एकवचन सर्वनाम (**में** और **तूं**) को छोड़कर अन्य सभी सर्वनामों तथा सभी संज्ञाओं के साथ **दा**, **दे**, **दी**, **दियां** कारक चिह्न प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

ओह्दा	'उसका'
एह्दी	'इसकी'
कोह्दे	'किसके'
जेह्दियां	'जिसकी (बहुवचन)'
राम दी	'राम की'
लकड़ी दे	'लकड़ी के'
मिट्टी दियां	'मिट्टी की (बहुवचन)'
फलें दा	'फलों का'

× × × ×

पाठ–3

मेरा घर

(मेरा घर)

शिवनंदन	:	एह् घर कोह्दा/कुसदा ऐ ?	शिवनंदन	:	यह घर किसका है ?
मोहन	:	एह् घर साढ़ा ऐ ते मेरा नां मोहन ऐ।	मोहन	:	यह घर हमारा है और मेरा नाम मोहन है।
शिवनंदन	:	नमस्ते जी।	शिवनंदन	:	नमस्ते जी।
मोहन	:	नमस्ते जी, तुस कु'न ?	मोहन	:	नमस्ते जी, आप कौन ?
शिवनंदन	:	जी अस यात्रू आं। मेरा नां शिवनंदन ऐ। एह् मेरे पिता जी न ते एह् मेरी माता जी न।	शिवनंदन	:	जी हम यात्री हैं। मेरा नाम शिवनंदन है। ये मेरे पिता जी हैं और ये मेरी माता जी हैं।
मोहन	:	ते एह् तुन्दियां भैनां न ?	मोहन	:	और ये आपकी बहनें हैं ?
शिवनंदन	:	हां जी, एह् मेरियां भैनां– रमा ते तारा न। तुन्दा भ्रा सोहन मेरा दोस्त ऐ।	शिवनंदन	:	जी हाँ, ये मेरी बहनें–रमा और तारा हैं। आपका भाई सोहन मेरा दोस्त है।
मोहन	:	सोहन, शिवनंदन तेरा दोस्त ऐ ?	मोहन	:	सोहन, शिवनंदन तुम्हारा दोस्त है ?
सोहन	:	सुआगत ऐ। सुआगत ऐ।	सोहन	:	स्वागत है। स्वागत है।
शिवनंदन	:	सोहन, तेरे पिता जी ते तेरी माता जी कु'त्थै न ?	शिवनंदन	:	सोहन, तुम्हारे पिता जी और तुम्हारी माता जी कहाँ हैं।
सोहन	:	चरणवंदना माता जी, चरणवंदना पिता जी, नमस्ते भाबी जी। भाबी जी, तुस पंजाबन ओ ?	सोहन	:	चरणवंदना माता जी, चरणवंदना पिता जी, नमस्ते भाभी जी। भाभी जी आप पंजाबन हैं।

शिखा : नेईं जी, में ते डोगरी आं।

सोहन : शिवनंदन! एह् बक्सा तुन्दा/थुआढ़ा ऐ ?

शिवनंदन : हां, एह् बक्सा साढ़ा ऐ।

सोहन : एह् डब्बे बी तुन्दे/थुआढ़े न ?

शिवनंदन : हां साढ़े न। सोहन! थुआढ़ी ताई जी कु'त्थै न ?

सोहन : ओह् अन्दर न।

शिखा : एह् उन्दियां पोतरियां न।

शिवनंदन : तुन्दी कुड़ी केह्ड़ी ऐ ? सुलभा ?

शिखा : नेईं जी, ओह्दा नां जूही ऐ, सुलभा ओह्दी बुआ ऐ।

शिवनंदन : एह् मकान तुन्दा अपना ऐ ?

सोहन : जी हां। एह् साढ़ा अपना मकान ऐ, कराए दा नेईं।

शिवनंदन : अच्छा। बड़ा बड्डा मकान ऐ ते नां बी 'मातृछाया' बड़ा शैल ऐ।

शिखा : साढ़ी ननान सुलभा तुन्दी भैन तारा दी स्हेली ऐ।

सोहन : साढ़ा नौकर रामू ते तुन्दा नौकर शामू प्हाड़ी न।

शिखा : नहीं जी, मैं तो डोगरी हूँ।

सोहन : शिवनंदन! यह बक्सा आपका है ?

शिवनंदन : हाँ, यह बक्सा हमारा है।

सोहन : ये डिब्बे भी तुम्हारे हैं ?

शिवनंदन : हाँ हमारे हैं। सोहन! तुम्हारी ताई जी कहां हैं ?

सोहन : वे अन्दर हैं।

शिखा : ये उनकी पोतियां हैं।

शिवनंदन : आपकी लड़की कौन सी है ? सुलभा ?

शिखा : नहीं जी, उसका नाम जूही है, सुलभा उसकी फूफी है।

शिवनंदन : यह मकान आपका अपना है ?

सोहन : जी हाँ। यह हमारा अपना मकान है, किराए का नहीं।

शिवनंदन : अच्छा। बहुत बड़ा मकान है और नाम भी 'मातृछाया' बहुत सुंदर है।

शिखा : हमारी ननद सुलभा आपकी बहन तारा की सहेली है।

सोहन : हमारा नौकर रामू और तुम्हारा नौकर शामू पहाड़ी हैं।

शिखा	: शामू दी लाड़ी सरला ते रामू दी भैन ऐ।	शिखा	: शामू की पत्नी सरला तो रामू की बहन है।
शिवनंदन	: तां ते अस सब दोस्त आं।	शिवनंदन	: तब तो हम सब दोस्त हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. घर कोह्दा/कुसदा ऐ ?
2. शिवनंदन तेरा दोस्त ऐ।
3. में ते डोगरी आं।
4. ओह्दा नां जूही ऐ।
5. शामू दी लाड़ी सरला ऐ।
6. सुलभा ओह्दी बुआ ऐ।

1. अस यात्रू आं।
2. एह् डब्बे तुन्दे न।
3. एह् मेरियां भैनां न।
4. ओह् अन्दर न।
5. एह् तुन्दियां भैनां न ?
6. अस सब दोस्त आं।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model - (1)

एह् घर मेरा ऐ। *(साढ़ा)*

एह् घर साढ़ा ऐ।

(ओह्दा)

(तुन्दा)

(तेरा)

(उन्दा)

Model - (2)

एह् डब्बे मेरे न। *(साढ़े)*

एह् डब्बे साढ़े न।

(ओह्दे)

(तुन्दे)

(तेरे)

(उन्दे)

Model - (3)

एह् मेरी भैन ऐ। *(साढ़ी)*

Model - (4)

एह् मेरियां भैनां न। *(साढ़ियां)*

एह् साढ़ी भैन ऐ। *एह् साढ़ियां भैनां न।*

(ओह्‌दी) *(ओह्‌दियां)*

(तुन्दी) *(तुन्दियां)*

(तेरी) *(तेरियां)*

(उन्दी) *(उन्दियां)*

3. Response Drill (प्रश्न – उत्तर अभ्यास)

Model - (1)

एह् घर कोह्‌दा ऐ?

एह् घर मेरा ऐ।

सोहन दे भ्रा दा नां केह् ऐ?

जूही दी बुआ कु'न ऐ?

तारा दी स्हेली दा नां केह् ऐ।

सरला कोह्‌दी भैन ऐ?

Model - (2)

डब्बे कोह्‌दे न?

डब्बे शिवनंदन हुन्दे न।

रमा ते तारा कोह्‌दियां भैनां न?

ताई जी कु'त्थै न?

रामू ते शामू कु'न न?

रामू ते शामू कु'न्दे नौकर न?

4. Transformation Drill (रूपान्तर अभ्यास)

Model - (1)

शिवनंदन दा दोस्त सोहन ऐ।

शिवनंदन दा दोस्त कु'न ऐ?

मोहन सोहन दा भ्रा ऐ।

शिखा सोहन दी भाबी ऐ।

बक्सा शिवनंदन दा ऐ।

सुलभा जूही दी बुआ ऐ।

Model - (2)

रामू ते शामू नौकर न।

रामू ते शामू कु'न न?

रमा ते तारा भैनां न।

सुलभा ते तारा स्हेलियां न।

सोहन दे माताजी ने पिताजी इत्थै न।

मोहन ते सोहन हुन्दे मकान दा नां 'मातृछाया' ऐ।

5. **कोष्टक में दिए गए सर्वनाम शब्दों में उपयुक्त परिवर्तन करके रिक्त स्थान भरिए :**

1. -------- नां गायत्री ऐ। (ओह्)
2. -------- नां सुलभा ऐ। (तुस)
3. -------- नां सोहन ऐ। (में)
4. -------- नां राधा ऐ ? (कु'न)
5. -------- नां सोनु ऐ। (में)
6. -------- नां मनदीप ऐ। (तूं)
7. -------- नां शिवनंदन ऐ ? (कु'न)
8. -------- नां मोहन ऐ। (ओह्)

6. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

1. मेरा नां केह् ऐ ?
2. साढ़ा ग्रां केह्ड़ा ऐ ?
3. एह् पैन कोह्दे न ?
4. ओह् जागत कु'न्दा ऐ ?
5. शिखा कोह्दा नां ऐ ?
6. उन्दा केह् नां ऐ ?

1. तुन्दा नां केह् ऐ ?
2. एह् कुड़ी कोह्दी ऐ ?
3. डब्बे कोह्दे न ?
4. शिवनंदन कोह्दा दोस्त ऐ ?
5. ओह्दा केह् नां ऐ ?
6. तेरा केह् नां ऐ ?

7. **उदाहरणों का अनुसरण करते हुए वचन परिवर्तन कीजिए :–**

Model - (1)

एह् मेरा भ्राऽ ऐ।

एह् मेरे भ्राऽ न।

1. एह् तेरा घर ऐ।

Model - (2)

ओह् साढ़ी भैन ऐ।

ओह् साढ़ियां भैनां न।

1. एह् तेरी कताब ऐ।

2. ओह् थुआढ़ा/तुन्दा दरोआजा ऐ।

3. एह् साढ़ा दोस्त ऐ।

4. एह् ओह्दा अध्यापक ऐ।

5. ओह् उन्दा पैन ऐ।

2. एह् थुआढ़ी/तुन्दी बारी ऐ।

3. एह् साढ़ी स्हेली ऐ।

4. ओह् ओह्दी धीऽ ऐ।

5. ओह् उन्दी माला ऐ।

Vocabulary शब्दावली

घर	घर	कोह्दा/कुसदा	किसका
ओह्दी/उसदी	उसकी	मेरा	मेरा
कोह्दे/कुसदे	किसके	साढ़ा	हमारा
ओह्दे/उसदे	उसके	यात्रू	यात्री
ओह्दियां/उसदियां	उसकी	मेरे	मेरे
कोह्दी/कुसदी	किसकी	मेरी	मेरी
मेरियां	मेरी	पिताजी	पिताजी
माता होर	माताजी	भैनां	बहनें
कोह्दियां/कुसदियां	किसकी	दोस्त	दोस्त
मकान	मकान	कु'न्दा	किनका
तेरा	तेरा	उन्दा	उनका
तेरे	तेरे	उन्दे	उनके
तेरियां	तेरी (बहुवचन)	उन्दी	उनकी (बहुवचन)
साढ़े	हमारे	कु'न्दे	किनके
साढ़ी	हमारी	केह्–केह्	क्या–क्या

साढ़ियां	हमारी (बहुवचन)	उन्दे	उनके
भाबीजी	भाभीजी	कुड़ियां	लड़कियां
चरणवन्दना	चरण छूकर प्रणाम	पंजाबन	पंजाबन
उन्दियां	उनकी	डोगरी	डोगरी
स्हेलियां	सहेलियां	बक्सा	बक्सा
तुन्दा/थुआढ़ा	तुम्हारा/आपका	कु'न्दियां	किनकी
तुन्दे/थुआढ़े	तुम्हारे/आपके	उन्दियां	उनकी
तुन्दी/थुआढ़ी	तुम्हारी/आपकी	प्हाड़ी	पहाड़ी
तुन्दियां/थुआढ़ियां	तुम्हारी/आपकी	प्हाड़न	पहाड़न
डब्बा	डिब्बा	ताई जी	ताई जी
आपूं	स्वयं	हैन	हैं
गै	ही	कुड़ी	लड़की
ओह्दा/उसदा	उसका		

टिप्पणियां

3.1 इस पाठ में आप पुरुषवाचक तथा प्रश्नवाचक सर्वनामों के सम्बन्ध कारकीय रूपों से परिचित हुए हैं। डोगरी में ये रूप लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदलते हैं। जैसे :–

पुलिंग

	एकवचन		**बहुवचन**	
		प्रथमपुरुष		
एकवचन	मेरा	'मेरा'	साढ़ा	'हमारा'
बहुवचन	मेरे	'मेरे'	साढ़े	'हमारे'

मध्यमपुरुष

एकवचन	तेरा	'तेरा'	तुन्दा/थुआढ़ा	'आपका'
बहुवचन	तेरे	'तेरे'	तुन्दे/थुआढ़े	'आपके'

अन्यपुरुष दूरवर्ती

एकवचन	ओह्दा	'उसका'	उन्दा	'उनका'
बहुवचन	ओह्दे	'उसके'	उन्दे	'उनके'

समीपवर्ती

एकवचन	एह्दा	'इसका'	इन्दा	'इनका'
बहुवचन	एह्दे	'इसके'	इन्दे	'इनके'

प्रश्नवाचन

एकवचन	कोह्दा	'किसका'	कु'न्दा	'किनका'
बहुवचन	कोह्दे	'किसके'	कु'न्दे	'किनके'

स्त्रीलिंग

एकवचन **बहुवचन**

प्रथमपुरुष

एकवचन	मेरी	'मेरी'	साढ़ी	'हमारी'
बहुवचन	मेरियां	'मेरी'	साढ़ियां	'हमारी'

मध्यमपुरुष

एकवचन	तेरी	'तेरी/तुम्हारी'	तुन्दी/थुआढ़ी	'आपकी'
बहुवचन	तेरियां	'तेरी/तुम्हारी'	तुन्दियां/थुआढ़ियां	'आपकी'

अन्यपुरुष दूरवर्ती

एकवचन	ओह्दी	'उसकी'	उन्दी	'उनकी'
बहुवचन	ओह्दियां	'उसकी'	उन्दियां	'उनकी'

समीपवर्ती

एकवचन	एह्दी	'इसकी'	इन्दी	'इनकी'
बहुवचन	एह्दियां	'इसकी'	इन्दियां	'इनकी'

प्रश्नवाचन

एकवचन	कोह्दी	'किसकी'	कु'न्दी	'किनकी'
बहुवचन	कोह्दियां	'किसकी'	कु'न्दियां	'किनकी'

प्रयोग

एह् मेरा भ्राऽ ऐ।	'यह मेरा भाई है।'
एह् मेरे भ्राऽ न।	'ये मेरे भाई हैं।'
एह् मेरी भैन ऐ।	'यह मेरी बहन है।'
एह् मेरियां भैनां न।	'ये मेरी बहनें हैं।'
एह् साढ़ा भ्राऽ ऐ।	'यह हमारा भाई ऐ।'
एह् साढ़े भ्राऽ न।	'ये हमारे भाई हैं।'
एह् साढ़ी भैन ऐ।	'यह हमारी बहन है।'
एह् साढ़ियां भैनां न।	'ये हमारी बहनें हैं।'
एह् तेरा भ्राऽ ऐ।	'यह तुम्हारा भाई है।'
एह् तेरे भ्राऽ न।	'ये तुम्हारे भाई हैं।'
एह् तेरी भैन ऐ।	'यह तुम्हारी बहन है।'

एह् तेरियां भैनां न।	'ये तुम्हारी बहनें हैं।'
एह् तुन्दा/थुआढ़ा भ्राऽ ऐ।	'यह आपका भाई है।'
एह् तुन्दे/थुआढ़े भ्राऽ न।	'ये आपके भाई हैं।'
एह् तुन्दी/थुआढ़ी भैन ऐ।	'यह आपकी बहन है।'
एह् तुन्दियां/थुआढ़ियां भैनां न।	'ये आपकी बहनें हैं।'
एह् कोह्दा घर ऐ?	'यह किसका घर है?'
एह् कोह्दे मकान न?	'ये किसके मकान हैं?'
एह् कोह्दी झोंपड़ी ऐ?	'यह किसकी **झोंपड़ी** है?'
एह् कोह्दियां झोंपड़ियां न?	'ये किसकी **झोंपड़ियां** हैं?'
एह् ओह्दा घर ऐ।	'यह उसका घर है।'
एह् ओह्दे मकान न।	'ये उसके मकान हैं।'
एह् ओह्दी झोंपड़ी ऐ।	'यह उसकी **झोंपड़ी** है।'
एह् ओह्दियां झोंपड़ियां न।	'ये उसकी **झोंपड़ियां** हैं।'
ओह् इन्दा घर ऐ।	'वह इनका घर है।'
ओह् इन्दे कमरे न।	'वे इनके कमरे हैं।'
ओह् इन्दी झोंपड़ी ऐ।	'वह इनकी झोंपड़ी है।'
ओह् इन्दियां कताबां न।	'वे इनकी किताबें हैं।'

3.2 आदर–भाव प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर सर्वनाम के बहुवचन रूप प्रयुक्त होते हैं। जैसे :–

एह् मेरे पिता जी न।	'ये मेरे पिता जी हैं।'
एह् तुन्दियां माता जी न?	'ये आपकी माता जी हैं?'

उन्दा नां श्यामला ऐ। 'उनका नाम श्यामला है।'

इन्दा नां शशि ऐ। 'इनका नाम शशि है।'

3.3 आदर–प्रदर्शन के लिए एकवचन के स्थान पर सर्वनाम के बहुवचनी रूपों के साथ क्रिया भी बहुवचन में ही आती है। जैसे :–

एह् मेरे पिता जी न। 'ये मेरे पिता जी हैं।'

तुस संदीप दियां भैन ओ ? 'आप संदीप की बहन हैं ?'

ओह् मेरे मित्तर न। 'वे मेरे मित्र हैं।'

एह् मेरियां गुरु न। 'ये मेरी गुरु हैं।'

3.4 'कु'त्थै' (कहाँ), इत्थै (यहाँ), तां (तब), गै (ही) अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं।

3.5 'अपना' निजवाचक सर्वनाम 'आप' का सम्बन्ध कारकीय रूप है जो एकवचन के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :–

एह्	मकान	तुन्दा	अपना	ऐ ?
''यह	मकान	आपका	अपना	है ?''

3.6 'अच्छा' (अच्छा) विस्मय सूचक अव्यय है –––––––

3.7 'बड्डा' (बड़ा) और 'शैल' (सुन्दर) विशेषण हैं।

× × × ×

पाठ–4

जान–पन्छान

(जान–पहचान)

सुधाकर :	डा० प्रद्युमन दा कमरा केह्‌ड़ा ऐ ?	सुधाकर :	डॉ० प्रद्युमन का कमरा कौन सा है ?
रोगी :	पता नेईं जी। में बी ओपरा आं।	रोगी :	पता नहीं जी। मैं भी अजनबी हूं।
बाबू :	डाक्टर साह्‌ब हुन्दा अपना कमरा ओह्‌ ऐ। पर ओह्‌ इसलै कमरे च नेईं हैन। किश कम्म ऐ ?	बाबू :	डाक्टर साहब का अपना कमरा वह है। पर वे इस समय कमरे में नहीं हैं। कुछ काम है क्या ?
सुधाकर :	में दनसाल ग्रांऽ दा आं। भला एह्‌ डाक्टर होर दनसाल ग्रांऽ दे हरिराम हुन्दे पुत्तर न नां ?	सुधाकर :	जी मैं दनसाल गाँव का हूँ। भला ये डाक्टर साहब दनसाल गाँव के हरिरामजी के बेटे हैं न ?
बाबू :	नेईं। एह्‌ ते वकील हीरालाल जी दे पुत्तर न। ते हीरालाल जी हरिराम दे भ्राऽ न।	बाबू :	नहीं। ये तो वकील हीरालाल जी के बेटे हैं और हीरालाल जी हरिराम जी के भाई हैं।
सुधाकर :	अच्छा। तां तुस बी दनसाल ग्रांऽ दे ओ ?	सुधाकर :	अच्छा। तो तुम भी दनसाल गाँव के हो ?
बाबू :	नेईं जी। में ते इत्थूं दा गैं।	बाबू :	नहीं जी। मैं तो यहीं का हूँ।
सुधाकर :	थुआढ़ी मातृभाशा केह्‌ड़ी ऐ ?	सुधाकर :	आपकी मातृभाषा कौन सी है।
बाबू :	मेरी मातृभाशा डोगरी ऐ।	बाबू :	मेरी मातृभाषा डोगरी है।
सुधाकर :	अच्छा, अच्छा।	सुधाकर :	अच्छा, अच्छा।

बाबू	: साढ़े डाक्टर साह्‌ब दियां माता जी बी डुग्गर दियां न ते उन्दी भाशा बी डोगरी ऐ।	बाबू	: हमारे डॉक्टर साहब की माता जी भी डुग्गर की हैं और उनकी भाषा भी डोगरी है।
सुधाकर	: एह्‌ कु'न न ?	सुधाकर	: ये कौन हैं ?
बाबू	: एह्‌ बी इत्थै क्लर्क न। इन्दा नां प्रकाश ऐ ते इन्दे ग्रांऽ दा नां ऐ नगरोटा। इन्दी अपनी इक हट्टी बी ऐ।	बाबू	: ये भी क्लर्क हैं। इनका नाम प्रकाश है और इनके गाँव का नाम है नगरोटा। इनकी अपनी दुकान भी है।
सुधाकर	: थुआढ़ी बी हट्‌टी ऐ के ?	सुधाकर	: क्या आपकी भी दुकान है ?
बाबू	: नेईं जी। इन्दे भ्राऽ दी ऐ। इन्दियां मशीनां न।	बाबू	: जी नहीं। इनके भाई की है। इनकी आटा–चक्कियां हैं।
सुधाकर	: ओह्‌ कमरा कोह्‌दा ऐ ?	सुधाकर	: वह कमरा किसका है ?
बाबू	: ओह्‌ कमरा डाक्टर अमर हुन्दा ऐ।	बाबू	: वह कमरा डॉक्टर अमर जी का है।
सुधाकर	: उ'ऐ डाक्टर अमर जि'न्दा घर राजौरी ऐ ते जि'न्दी कुड़ी प्रभा ऐ ते निशि ते विभा नुहां न ?	सुधाकर	: वह डॉक्टर अमर जिनका घर राजौरी है, जिनकी बेटी प्रभा है और निशि तथा विभा बहुएँ न ?
बाबू	: हां जी। उ'ऐ न।	बाबू	: हाँ जी। वही हैं।
सुधाकर	: बाबू जी। एह्‌ डाक्टर अमन कु'न न ?	सुधाकर	: बाबू जी। यह डाक्टर अमन कौन है ?
बाबू	: उ'ऐ जी, जि'न्दे अपने ट्रैक्टर बी हैन ते बाग बी।	बाबू	: वही जी जिनके अपने ट्रैक्टर भी हैं तथा बाग भी।
सुधाकर	: अच्छा, अच्छा।	सुधाकर	: अच्छा, अच्छा।

जि'न्दियां अपनियां कारां बी हैन ते सतवारी कोठी बी।	जिनकी अपनी कारें भी हैं और सतवारी कोठी भी।
बाबू : हां जी, उ'ऐ।	बाबू : हाँ जी, वही।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. डा० प्रद्युमन दा कमरा केह्ड़ा ऐ? — डाक्टर साह्ब हुन्दा अपना कमरा ओह् ऐ।
2. भला एह् डाक्टर होर दनसाल ग्रांऽ दे हरिराम हुन्दे पुत्तर न नां। — एह् ते वकील हीरालाल जी दे पुत्तर न।
3. एह् बी इत्थै कलर्क न। इन्दा नां प्रकाश ऐ। — साढ़े डाक्टर साह्ब हुन्दियां माता जी बी डुग्गर दियां न।
4. इन्दी अपनी इक हट्टी बी ऐ। — नेईं जी। इन्दे भ्राऽ दी ऐ। इन्दियां मशीनां न।
5. उ'ऐ जी जि'न्दा सतवारी बाग ऐ। — जि'न्दे अपने ट्रैक्टर बी न।
6. उ'ऐ डाक्टर अमर जि'न्दा घर राजौरी ऐ, जि'न्दी कुड़ी प्रभा ऐ। — अच्छा–अच्छा। जि'न्दियां अपनियां कारां बी हैन।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model - (1)

एह् कमरा साढ़ा ऐ। (उन्दा)

एह् कमरा उन्दा ऐ।

(इन्दा)

(अपना)

Model - (2)

एह् कार मेरे भ्राऽ दी ऐ। (उन्दे)

एह् कार उन्दे भ्राऽ दी ऐ।

(इन्दे)

(अपने)

Model - (3)

इक हट्टी मेरी ऐ। (उन्दी)

Model - (4)

मशीनां तुन्दियां बी न। (उन्दियां)

इक हट्‌टी उन्दी ऐ।

(इन्दी)

(अपनी)

मशीनां उन्दियां बी न।

(इन्दियां)

(अपनियां)

3. Transformation Drill (रूपान्तर अभ्यास)

Model - (1)

एह् बाग अमर दा ऐ।

एह् बाग कोह्दा / कुस दा ऐ ?

1. डा० अमर हुन्दे पुत्तर डाक्टर न।
2. ट्रैक्टर डा० अमन हुन्दे न।
3. प्रभा डा० अमर हुन्दी कुड़ी ऐ।
4. निशी ते विभा डा० अमर हुन्दियां नुहां न।

Model - (2)

डा० अमर हुन्दा घर राजौरी ऐ।

डा० अमर हुन्दा घर कु'त्थै ऐ ?

1. सुधाकर दा घर दनसाल ऐ।
2. डा० अमन हुन्दी कोठी सतवारी ऐ।
3. साढ़े डाक्टर साह्‌ब हुन्दी माता जी डुग्गर दियां न।
4. हीरालाल जी वकील न।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

1. सुधाकर दा ग्रांऽ केह्ड़ा ऐ ?
2. बाबू जी दी मातृभाशा केह्ड़ी ऐ ?
3. डा० प्रद्युमन हुन्दे पिताजी दा नां केह् ऐ ?
4. डा० अमर हुन्दा घर कु'त्थै ऐ ?
5. निशि ते विभा कु'न न ?
6. डॉ० अमन हुन्दी कोठी कु'त्थै ऐ ?
7. हीरालाल होर कु'न न ?

5. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों से रिक्त स्थान भरिए :–**

1. ––––––– अपनी इक हट्टी बी ऐ। (एह्)
2. ओह् मेरा ––––––– भ्राऽ ऐ। (आप)
3. –––––––– मातृभाशा केह्ड़ी ऐ ? (तुस)
4. डा० अमन हुन्दियां ––––––– कारां बी हैन। (आप)
5. उ'ऐ डाक्टर अमर ––––––– घर राजौरी ऐ। (जो)

6. **निम्नलिखित शब्दों के वाक्य बनाइए :–**

इन्दा, हट्टी, अपना, जि'न्दा, उन्दा, अपनी।

7. **पढ़िए, समझिए और लिखिए :–**

इन्दा ––––––––––––––––– इन्दे	इन्दी ––––––––––––––––– इन्दियां
अपना –––––––––––––––––	अपनी –––––––––––––––––
जि'न्दा –––––––––––––––––	जि'न्दी –––––––––––––––––
उन्दा –––––––––––––––––	उन्दी –––––––––––––––––
ओह्दा –––––––––––––––––	ओह्दी –––––––––––––––––
कुसदा –––––––––––––––––	कुसदी –––––––––––––––––
तुन्दा –––––––––––––––––	तुन्दी –––––––––––––––––
मेरा –––––––––––––––––	मेरी –––––––––––––––––
तेरा –––––––––––––––––	तेरी –––––––––––––––––
थुआढ़ा –––––––––––––––––	थुआढ़ी –––––––––––––––––

Vocabulary **शब्दावली**

कमरा	कमरा	हुन्दियां	जी की
ओपरा	अजनबी	इत्थै	यहाँ
हुन्दा	जी का	ग्रांऽ	गाँव
इसलै	इस समय	इन्दी	इनकी
दनसाल	स्थान का नाम	अपनी	अपनी
डाक्टर	डॉक्टर	हट्टी	दुकान
पुत्तर	बेटा	इन्दियां	इनकी
भ्राऽ	भाई	मशीन	मशीन (आटा–चक्की)
इत्थूं	यहाँ से	जि'न्दा	जिनका
गै	ही	जि'न्दे	जिनके
मातृभाशा	मातृभाषा	जि'न्दी	जिनकी
अच्छा	अच्छा	नुहां	बहुएँ
बाग	बाग	कारां	कारें
कोठी	कोठी	नगरोटा	जगह का नाम

टिप्पणियाँ

4.1 इस पाठ में आपने निजवाचक सर्वनाम 'आप/आपूं' (आप/स्वयं) सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'जो/जेहड़ा' (जो) और प्रश्नवाचक सर्वनाम 'केह्' (क्या) के सम्बन्ध कारकीय रूप की जानकारी प्राप्त की है। डोगरी में ये रूप लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदलते हैं।

4.2 निजवाचक सर्वनाम 'आप' एवं 'आपूं' में वचन के लिए परिवर्तन नहीं होता। लिंग और वचन के अनुसार इसके रूप निम्न प्रकार हैं :–

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
कर्ता	आप/आपूं	'स्वयं'	आप/आपूं	'स्वयं'
		सम्बन्ध कारक		
एकवचन	अपना	'अपना'	अपनी	'अपनी'
बहुवचन	अपने	'अपने'	अपनियां	'अपनी' (बहुवचन)

4.3 सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'जो/जेह्ड़ा' में लिंग, वचन और पुरुष तीनों के लिए परिवर्तन होता है। जैसे :-

पुलिंग

	एकवचन		बहुवचन	
कर्ता कारक	जो/जेह्ड़ा	'जो'	जो/जेह्ड़े	'जो'
सम्बन्ध कारक	जिसदा/जेह्दा	'जिसका'	जि'न्दा	'जिनका'
	जिसदे/जेह्दे	'जिसके'	जि'न्दे	'जिनके'

स्त्रीलिंग

	एकवचन		बहुवचन	
कर्ता कारक	जो/जेह्ड़ी	'जो' जो।	जेह्ड़ियां	'जो'
सम्बन्ध कारक	जिसदी/जेह्दी	'जिसकी'	जि'न्दी	'जिनकी'
	जिसदियां/जेह्दियां	'जिसकी'	जि'न्दियां	'जिनकी'

4.4 प्रश्नवाचक सर्वनाम 'केह्'(क्या) अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होता है और वह केवल एकवचन में आता है। सम्बन्ध कारक के लिए इसमें लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तन होता है। जैसे :-

	एकवचन		बहुवचन	
कर्ता कारक	केह्	'क्या'	केह्	'क्या'
सम्बन्ध कारक	कैह्दा	'किस (चीज़) का'	कैह्दी	'किस (चीज़) की'
	कैह्दे	'किस (चीज़) के'	कैह्दियां	'किस (चीज़) की' (बहुवचन)

× × × ×

पाठ–5
रसोई घर
(रसोई घर)

रानी	:	रुट्टी त्यार ऐ ?	रानी	:	मम्मी, क्या खाना तैयार है ?
मम्मी	:	हां।	मम्मी	:	हाँ–हाँ।
रानी	:	एह् मिट्ठा भत्त ऐ ?	रानी	:	क्या यह मीठा भात है ?
मम्मी	:	हां एह् मिट्ठा भत्त ऐ ते ओह् चिट्टे चौल।	मम्मी	:	हाँ यह मीठा भात है और वह सादा भात।
रानी	:	मम्मी! तत्ता पानी केह्ड़ा ऐ ?	रानी	:	मम्मी! गर्म पानी कौन सा है ?
मम्मी	:	एह् ठंडा पानी ऐ ते ओह् तत्ता पानी।	मम्मी	:	यह ठंडा पानी है और वह गर्म पानी।
रानी	:	एह् दुद्ध ऐ जां देहीं ?	रानी	:	यह दूध है या दही ?
मम्मी	:	एह् दुद्ध ऐ।	मम्मी	:	यह दूध है।
रानी	:	इन्ना दुद्ध!	रानी	:	इतना दूध!
मम्मी	:	बड़ा मता ते नेईं, त्रै किलो ऐ।	मम्मी	:	बहुत अधिक तो नहीं, तीन किलो है।
रानी	:	देहीं नेईं है ?	रानी	:	क्या दही नहीं है ?
मम्मी	:	देहीं बी है। घ्यो बी है।	मम्मी	:	दही भी है। घी भी है।
रानी	:	कल देहीं मिट्ठा हा, केह् अज्ज बी मिट्ठा ऐ ?	रानी	:	कल दही मीठा था, क्या आज भी मीठा है ?
मम्मी	:	देहीं अज्ज बी मिट्ठा ऐ।	मम्मी	:	दही आज भी मीठा है।
रानी	:	मम्मी, एह् केह्ड़ी सब्जी ऐ ?	रानी	:	मम्मी यह कौन सी सब्ज़ी है ?
मम्मी	:	एह् कश्मीरी आलू न।	मम्मी	:	ये कश्मीरी आलू हैं।

रानी	: दूई सब्जी केह्ड़ी ऐ ?	रानी	: दूसरी सब्ज़ी कौन सी है ?
मम्मी	: एह् ऐ मटरपनीर।	मम्मी	: यह है मटरपनीर।
रानी	: सब्जी बड़ी मती ऐ।	रानी	: सब्ज़ी बड़ी ज़्यादा है।
मम्मी	: इन्नी मती ते नेईं।	मम्मी	: इतनी ज़्यादा तो नहीं।
रानी	: केह् एह् मिट्ठी चटनी ऐ ?	रानी	: क्या यह मीठी चटनी है ?
मम्मी	: नेईं एह् खट्टी–मिट्ठी ऐ।	मम्मी	: नहीं यह खट्टी–मीठी है।
रानी	: कल चटनी सुआदली ही।	रानी	: कल चटनी स्वादिष्ट थी।
मम्मी	: हां भाई, सुआदली ही।	मम्मी	: हाँ भई, स्वादिष्ट थी।
रानी	: एह् चाह् कनेही ऐ ?	रानी	: यह चाय कैसी है ?
मम्मी	: एह् चाह् ठंडी ऐ। बडलै आह्ली कनेही ही ?	मम्मी	: यह चाय ठंडी है। सुबह की चाय कैसी थी ?
रानी	: बडलै चाह् ठीक ही। मम्मी, एह् थाली नानी दी ऐ न ?	रानी	: सुबह चाय अच्छी थी। मम्मी, क्या यह बड़ी थाली नानी की है ?
मम्मी	: नेईं एह् ते तेरी दादी दी ऐ ते एह् थाली चांदी दी ऐ।	मम्मी	: नहीं, यह तेरी दादी की है और यह थाली चाँदी की है।
रानी	: अच्छा। ते एह् मेरी ऐ नां ?	रानी	: अच्छा। तो यह मेरी है न ?
मम्मी	: हां। हून तेरी गै।	मम्मी	: हां। अब यह तेरी ही है।
रानी	: मां। कल खीरे कौड़े हे। चंगे नेईं हे।	रानी	: मां कल खीरे कड़वे थे। अच्छे नहीं थे।
मम्मी	: पर अज्ज ते मिट्ठे न।	मम्मी	: पर आज तो मीठे हैं।
रानी	: मम्मी, एह् ढोडे प्हाड़ी आटे दे न ?	रानी	: मम्मी, ये मक्की की रोटियाँ पहाड़ी आटे की हैं ?
मम्मी	: हां प्हाड़ी आटे दे न।	मम्मी	: हाँ। पहाड़ी आटे की हैं।

रानी : तां गै इन्ने सुआदले न।

मम्मी : ढोडे प्हाड़ी आटे दे गै सुआदले होंदे न।

रानी : केह् एह् सारे चिमचे चांदी दे न ?

मम्मी : नेईं ते। बड्डे स्टील दे न ते लौह्के चांदी दे।

रानी : मम्मी। एह् थालियाँ साफ न ?

मम्मी : हां एह् सब साफ न।

रानी : एह् थालियां किन्नियां न ?

मम्मी : बड्डियां छे न ते लौह्कियां न सत्त।

रानी : चांदी दा सारा समान साफ ऐ नां, मम्मी ?

मम्मी : सिर्फ चांदी दा गै नेईं रसोई दा सारा समान साफ है।

रानी : मम्मी एह् सब्जी दियां कटोरियां मेरियां न ?

मम्मी : नेईं। एह् ते सोनू दियां न।

रानी : अज्ज किन्नियां सब्जियां न ?

मम्मी : कल चार सब्जियां हियां ते अज्ज बी चार गै न।

रानी : मम्मी, एह् सब्जियां ते ठंडियां न ?

मम्मी : नेईं, एह् ते गर्म न।

रानी : मम्मी! एह् मट्ठियां मिट्ठियां न ?

मम्मी : नेईं। एह् ते लूनियां न।

रानी : तभी तो इतनी स्वादिष्ट हैं।

मम्मी : मक्की की रोटियाँ पहाड़ी आटे की ही स्वादिष्ट होती हैं।

रानी : क्या ये सारे चमच चाँदी के हैं ?

मम्मी : नहीं तो। बड़े स्टील के हैं और छोटे चाँदी के।

रानी : मम्मी, क्या ये थालियाँ साफ हैं ?

मम्मी : हाँ ये सभी साफ हैं।

रानी : ये थालियां कितनी हैं ?

मम्मी : बडी छः हैं और छोटी हैं सात।

रानी : चाँदी का सब सामान साफ है न, मम्मी ?

मम्मी : सिर्फ चाँदी का ही नहीं रसोई का सब सामान साफ है।

रानी : मम्मी, ये सब्ज़ी की कटोरियाँ मेरी हैं ?

मम्मी : नहीं। ये तो सोनू की हैं।

रानी : आज कितनी सब्ज़ियाँ हैं ?

मम्मी : कल चार सब्ज़ियाँ थीं और आज भी चार ही हैं।

रानी : मम्मी, ये सब्ज़ियाँ तो ठंडी हैं।

मम्मी : नहीं। ये तो गर्म हैं।

रानी : मम्मी! ये मट्ठियें मीठी हैं ?

मम्मी : नहीं। ये तो नमकीन हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

Singular	Plural
1. एह् मिट्ठा भत्त ऐ?	ओह् चौल चिट्टे न।
2. गर्म पानी केह्ड़ा ऐ?	एह् कश्मीरी आलू न।
3. कल देहीं मिट्ठा हा।	कल खीरे कौड़े हे।
4. एह् केह्ड़ी सब्जी ऐ?	एह् ढोडे प्हाड़ी आटे दे न।
5. कल चटनी सुआदली ही।	एह् थालियां साफ न।
6. एह् चाह् ठंडी ऐ।	एह् मट्ठियां मिट्ठियां न।
7. एह् थाली चांदी दी ऐ।	एह् ते लूनियां न।
8. बडलै चाह् ठीक ही।	एह् सब्जियां ते ठंडियां न।
9. रुट्टी त्यार ऐ।	एह् थालियां किन्नियां न?
10. एह् थाली नानी दी ऐ न?	बड्डियां छे न ते लौह्कियां न सत्त।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model - (1)

एह् ढोडा तत्ता ऐ। *(ठंडा)*

एह् ढोडा ठंडा ऐ।

(लौह्का)

(बड्डा)

(सुआदला)

Model - (2)

एह् मट्ठी तत्ती ऐ। *(ठंडी)*

एह् मट्ठी ठंडी ऐ।

(लौह्की)

(बड्डी)

(सुआदली)

Model (3)

एह् ढोडे तत्ते न। *(ठंडे)*

एह् ढोडे ठंडे न।

(लौह्के)

Model (4)

एह् मट्ठियां तत्तियां न। *(ठंडियां)*

एह् मट्ठियां ठंडियां न।

(लौह्कियां)

(बड्डे) (बड्डियां)

(सुआदले) (सुआदलियां)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)	**Model (2)**
पानी ठंडा ऐ।	*चौल चिट्टे न।*
पानी कनेहा ऐ ?	*चौल कनेह् न ?*
भत्त मिट्ठा ऐ।	खीरे कौड़े न।
चटनी सुआदली ऐ।	सब्जियां ठंडियां न।
चाह् ठंडी ऐ।	ढोडे सुआदले न।

Model (3)	**Model (4)**
चिमचे पञ्ज न।	*थालियां छे न।*
चिमचे किन्ने न।	*थालियां किन्नियां न ?*
पक्खे त्रै न।	सब्जियां चार न।
मेज अट्ठ न।	पैंसलां सत्त न।
डैस्क दस न।	कापियां नौ न।

4. A. Response Drill (प्रश्न–उत्तर अभ्यास)

Model (1)	**Model (2)**
देहीं कनेहा ऐ ?	*चौल कनेह् न ?*
देहीं मिट्ठा ऐ।	*चौल चिट्टे न।*
भत्त कनेहा ऐ ?	खीरे कनेह् न ?
दुद्ध किन्ना ऐ ?	ढोडे कनेह् न ?
पानी कनेहा ऐ ?	चिमचे किन्ने न ?

Model (3)	**Model (4)**
चाह् कनेही ऐ ?	*सब्जियां किन्नियां न ?*
चाह् ठंडी ऐ।	*सब्जियां चार न।*
चटनी कनेही ऐ ?	मट्ठियां कनेहियां न ?
सब्जी किन्नी ऐ ?	सब्जियां कनेहियां न ?
बडलै चाह् कनेही ही ?	थालियां किन्नियां न ?

B. उदाहरण का अनुसरण करते हुए उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :–

उदाहरण :– एह् पानी ठंडा ऐ ते ओह् पानी गर्म ऐ।

1. स्टील दे चिमचे ——————न ते ओह् चिमचे ——————न।
2. एह् मट्ठियां ——————न ते ओह् मट्ठियां ——————न।
3. कल खीरे ——————हे ते अज्ज ——————न।
4. छे थालिया——————न ते सत्त थालियां ——————न।

Vocabulary शब्दावली

चिट्टा	सफेद	त्रै	तीन
बड्डा	बड़ा	सत्त	सात
मिट्ठा	मीठा	छे	छः
लौह्का	छोटा	भत्त	पकाए हुए चावल
कौड़ा	कड़वा	देहीं	दही
लूना	नमकीन	दुद्ध	दूध
केह्ड़ा	कौन सा	ढोडा	मक्की की रोटी
किन्ना	कितना	खट्टा	खट्टा
इन्ना	इतना	ठंडा	ठंडा
बडला	सुबह		

टिप्पणियाँ

5.1 इस पाठ में आप डोगरी विशेषणों से परिचित हुए हैं।

5.2 डोगरी में विशेषणों का प्रयोग दो प्रकार होता है :

(i) 'सैल्ला' (हरा) 'लौह्‌का' (छोटा) 'थोह्‌ड़ा' (कम)

आदि आकारान्त पुलिंग विशेषण संज्ञा के लिंग, वचन आदि के अनुसार बदलते हैं। जैसे :-

	पुलिंग		स्त्रीलिंग		
एकवचन	सैल्ला	'हरा'	सैल्ली	'हरी'	
बहुवचन	सैल्ले	'हरे'	सैल्लियां	'हरी'	(बहुवचन)
प्रयोग	सैल्ला कुर्ता		'हरा कुर्ता'		
	सैल्ले कुर्ते		'हरे कुर्ते'		
	सैल्ली कमीज		'हरी कमीज़'		
	सैल्लियां कमीजां		'हरी कमीज़ें'		

(ii) आकारान्त पुलिंग विशेषणों को छोड़ कर बाकी सभी विशेषण संज्ञाओं के लिंग, वचन आदि के लिए नहीं बदलते। जैसे :-

शैल कपड़ा	'सुन्दर कपड़ा'
शैल कुड़ी	'सुन्दर लड़की'
शैल कपड़े	'सुन्दर कपड़े'
शैल कुड़ियां	'सुन्दर लड़कियाँ'
केसरी पजामा	'केसरी पाज़ामा'
केसरी धोती	'केसरी धोती'
केसरी पजामे	'केसरी पाज़ामे'
केसरी धोतियां	'केसरी धोतियाँ'

5.3 डोगरी में विशेषणों का प्रयोग प्रायः संज्ञाओं से पूर्व होता है। जैसे :–

एह् बड्डे गलास न।	'ये बड़े गिलास हैं।'
एह् मिट्ठा भत्त ऐ।	'यह मीठा भात है।'
ओह् चिट्टे चौल न।	'वे सादा चावल हैं।'

5.4 जब विशेषण का प्रयोग क्रिया के साथ होता है तब वह संज्ञा के बाद आता है। जैसेः–

एह् चाह् ठण्डी ऐ।	'यह चाय ठण्डी है।'
एह् चटनी मिट्ठी ऐ।	'यह चटनी मीठी है।'
एह् खीरे कौड़े न।	'ये खीरे कड़वे हैं।'
ओह् कौलियां मेरियां न।	'वे कटोरियाँ मेरी हैं।'

5.5 संख्यावाचक विशेषणों में से गणनासूचक विशेषणों की दस तक संख्या इस प्रकार हैः–

इक	'एक'	छे	'छः'
दो	'दो'	सत्त	'सात'
त्रै	'तीन'	अट्ठ	'आठ'
चार	'चार'	नौ	'नौ'
पञ्ज	'पाँच'	दस	'दस'

5.6 'किन्ना' (कितना) प्रश्नात्मक संख्यावाचक विशेषण है। इसमें संज्ञाओं के लिंग, वचन आदि के अनुसार परिवर्तन होता है। जैसे :–

किन्ना दुद्ध	'कितना दूध'
किन्ने रपेऽ	'कितने रुपये'
किन्नी खंड	'कितनी चीनी'
किन्नियां कताबां	'कितनी किताबें'

5.7 **'कनेहा'** **(कैसा)** प्रश्नात्मक गुणावाचक विशेषण भी संज्ञाओं के लिंग, वचन आदि के अनुसार बदलता है। जैसे :–

कनेहा कपड़ा	'कैसा कपड़ा'
कनेह् कपड़े	'कैसे कपड़े'
कनेही कमीज	'कैसी कमीज़'
कनेहियां कमीजां	'कैसी कमीज़ें'

5.8 **'घट्ट'** **(कम)** **'थोह्ड़ा'** **(थोड़ा)** **'मता'** **(अधिक)** अनिश्चित संख्या की सूचना देने वाले विशेषण हैं। यहाँ पर भी आकारान्त विशेषणों **'थोह्ड़ा'**, **'मता'** आदि में संज्ञा के लिंग, वचन आदि के लिए तब्दीली होती है। जैसे :–

थोह्ड़ा दुद्ध	'थोड़ा दूध'
थोह्ड़े गलास	'थोड़े गिलास'
थोह्ड़ी खंड	'थोड़ी चीनी'
थोह्ड़ियां चीजां	'थोड़ी चीज़ें'
मता कम्म	'अधिक काम'
मते गलास	'अधिक गलास'
मती रुट्टी	'अधिक रोटी'
मतियां पैंसलां	'अधिक पेंसिलें'

———

पाठ–6

जनरल स्टोर

(जनरल स्टोर)

छवि	: कपड़े हैन ?	छवि	: कपड़े हैं ?
दकानदार	: हां।	दुकानदार	: हाँ।
छवि	: एह् कोट ऐ ?	छवि	: यह कोट है ?
दकानदार	: हां, एह् लाल ते नाह्ब्बी दोऐ कोट न।	दुकानदार	: हाँ, यह लाल कोट है और वह उन्नाबी कोट है।
छवि	: एह् पैह्ला कोट लम्मा किन्ना ऐ ?	छवि	: यह पहला कोट लम्बा कितना है ?
दकानदार	: इक मीटर लम्मा ऐ।	दुकानदार	: एक मीटर लम्बा है।
छवि	: शशि, इन्ना लम्मा ठीक ऐ ?	छवि	: शशि, इतना लम्बा ठीक है ?
शशि	: नेईं, एह् छुट्टा ऐ।	शशि	: नहीं, यह छोटा है।
छवि	: दूआ कोट केह्ड़ा ऐ ?	छवि	: दूसरा कोट कौन सा है ?
दकानदार	: दूआ छुट्टा ऐ ते त्रिया लम्मा ऐ।	दुकानदार	: दूसरा छोटा है और तीसरा लम्बा है।
शशि	: एह् किन्ने दा ऐ ?	शशि	: यह कितने का है ?
दकानदार	: ढाई सौ रपेऽ दा।	दुकानदार	: ढाई सौ रुपये का।
शशि	: किश घट्ट नेईं ?	शशि	: कुछ कम नहीं ?
दकानदार	: चलो, पौने दो सौ रपेऽ सेही।	दुकानदार	: चलो, पौने दो सौ रुपये सही।
शशि	: ओह् चौथा कोट बधिया ऐ ?	शशि	: वह चौथा कोट बढ़िया है ?
छवि	: नेईं ओह् घटिया ऐ।	छवि	: नहीं, वह घटिया है।

सोनू : दीदी, एह् पञमा कोट शैल ऐ ?

छवि : नेईं एह् नाह्ब्बी कोट शैल ऐ।

शशि : छेमां, सतमां ते अठमां दपट्टा कैह्दा ऐ ?

दकानदार : एह् सारे जयपुरी न।

छवि : फ्ही नौमां ते दसमां कनेह् न ?

दकानदार : एह् दोऐ अमरीकी न ?

शशि : एह् दपट्टा केह्ड़ा ऐ ?

दकानदार : एह् शफान दा ऐ।

शशि : कुल किन्ने दपट्टे न ?

दकानदार : बीह् न।

छवि : होर केह्ड़ा–केह्ड़ा समान ऐ ?

दकानदार : सब किश है, दाल, चाह्, क्रीम, पौडर आदि।

शशि : देसी घ्यो दा अद्धे किलो दा डब्बा है ?

दकानदार : नेईं, किल्लो दा ऐ।

शशि : घटिया ते नेईं ?

दकानदार : नेईं जी, खालस ऐ।

छवि : एह् साड़ी सूती ऐ ?

सोनू : दीदी, यह पाँचवाँ कोट अच्छा है ?

छवि : नहीं, यह उन्नाबी कोट अच्छा है।

शशि : छठा, सातवाँ और आठवाँ दुपट्टा किसका है ?

दुकानदार : ये सभी जयपुरी हैं।

छवि : फिर, नौमाँ और दसवाँ कैसे हैं ?

दुकानदार : यह दोनों अमरीकी हैं।

शशि : यह दुपट्टा कौन सा है ?

दुकानदार : यह शुफान का है।

शशि : कुल कितने दुपट्टे हैं ?

दुकानदार : बीस हैं।

छवि : और कौन–कौन सा सामान है ?

दुकानदार : सब कुछ है, दाल, चाय, क्रीम, पाऊडर आदि

शशि : देसी घी का आधा किलो ग्राम का डिब्बा है ?

दुकानदार : नहीं किलोग्राम का है।

शशि : घटिया तो नहीं ?

दुकानदार : नहीं जी, शुद्ध है।

छवि : यह साड़ी सूती है ?

दकानदार	:	नेईं, एह् रेशमी ऐ।	दुकानदार	:	नहीं, यह रेशमी है।
छवि	:	केसरी रंग है ?	छवि	:	केसरी रंग है ?
दकानदार	:	हां, केसरी बी है।	दुकानदार	:	हाँ, केसरी भी है।
शशि	:	एह् सवा पञ्ज मीटर ऐ ?	शशि	:	यह सवा पाँच मीटर है ?
दकानदार	:	नेईं, एह् साड्ढे पञ्ज मीटर ऐ।	दुकानदार	:	नहीं, यह साढ़े पाँच मीटर है।
छवि	:	एह् पैंट किन्ने दी ऐ ?	छवि	:	यह पैंट कितने की है ?
दकानदार	:	एह् इक सौ रपेऽ दी ऐ ते ओह् दो सौ दी ऐ।	दुकानदार	:	यह एक सौ रुपयों की है और वह दो सौ रुपयों की है।
छवि	:	इन्ने ते मते न।	छवि	:	इतने तो अधिक हैं।
दकानदार	:	एह् माल असली ऐ नकली नेईं।	दुकानदार	:	यह माल असली है, नकली नहीं।
शशि	:	ओह् प्याजी सूट ऐ ?	शशि	:	वह गुलाबी सूट है ?
दकानदार	:	हां, सूट ऐ।	दुकानदार	:	हाँ, सूट है।
छवि	:	किन्ने दा ऐ ?	छवि	:	कितने का है ?
दकानदार	:	एह् त्रै सौ रपेऽ दा ऐ।	दुकानदार	:	यह तीन सौ रुपयों का है।
शशि	:	एह् ते दूना मुल्ल ऐ।	शशि	:	यह तो दुगुणा मूल्य है।
छवि	:	अच्छा, कश्मीरी जैकट बी है ?	छवि	:	अच्छा, कश्मीरी जैकट भी है ?
दकानदार	:	नेईं, लद्दाखी ऐ। एह् बड़ी मश्हूर ऐ।	दुकानदार	:	नहीं लद्दाखी है। यह बहुत मशहूर है।
छवि	:	किन्ने दी ऐ ?	छवि	:	कितने की है ?
दकानदार	:	इक ज्हार रपेंऽ दी।	दकानदार	:	एक हजार रुपयों की।

छवि	:	एह् ते त्रीनी मैंह्गी ऐ।	छवि	:	यह तो तीन गुणा मँहगी है।
दकानदार	:	एह् पश्मीने दी ऐ ते पशमीना मैंह्गा ऐ।	दुकानदार	:	यह पशमीने की है और पश्मीना मँहगा है।
शशि	:	ओह् डब्बा कनेहा ऐ ?	शशि	:	वह डिब्बा कैसा है ?
दकानदार	:	ओह् देसी ध्यो दा डब्बा ऐ।	दुकानदार	:	वह देसी घी का डिब्बा है।
शशि	:	एह् टोपी ठंडी ऐ ?	शशि	:	यह टोपी ठंडी है ?
दकानदार	:	नेईं, टोपी गर्म ऐ।	दुकानदार	:	नहीं, टोपी गर्म है।
सोनू	:	एह् नसवारी जराब मेरी ऐ ?	सोनू	:	यह नसबारी जुराब मेरी है ?
शशि	:	नेईं, फरोजी जराब तेरी ऐ।	शशि	:	नहीं फिरोजी जुराब तुम्हारी है।
छवि	:	लाल कोट किन्ने न ?	छवि	:	लाल कोट कितने हैं ?
दकानदार	:	लाल कोट ञारां न।	दुकानदार	:	लाल कोट ग्यारह हैं।
शशि	:	एह् कोट बधिया न ?	शशि	:	यह कोट बढ़िया हैं ?
छवि	:	नेईं, घटिया न।	छवि	:	नहीं, घटिया हैं।
शशि	:	पैह्ले कोट घटिया हे ?	शशि	:	पहले कोट घटिया थे ?
दकानदार	:	नेईं, उ'ब्बी बधिया न।	दुकानदार	:	नहीं, वह भी बढ़िया थे।
छवि	:	एह् नाह्बी कमीज तंग ऐ ?	छवि	:	यह उन्नाबी कमीज तंग है ?
शशि	:	नेईं, एह् मिगी बड़ी खु'ल्ली ऐ।	शशि	:	नहीं यह मुझे बहुत खुली है।
छवि	:	एह् नाह्ब्बी कमीजां किन्नियां न ?	छवि	:	यह उन्नाबी कमीजें कितनी हैं ?
दकानदार	:	एह् नाह्ब्बी कमीजां बारां न।	दुकानदार	:	ये उन्नाबी कमीजें बारह हैं।
सोनू	:	एह् स्वैटर कनेह् न ?	सोनू	:	ये स्वैटर कैसे से हैं ?
शशि	:	एह् मोनू दे स्वैटर न।	शशि	:	ये मोनू के स्वैटर हैं।

छवि	:	एह् स्वैटर गर्म न ?	छवि	:	ये स्वैटर गर्म हैं ?
शशि	:	नेईं, एह् कैश्मीलोन दे न।	शशि	:	नहीं, ये कैश्मीलॉन के हैं।
छवि	:	दालां साफ न ?	छवि	:	दालें साफ हैं ?
दकानदार	:	हां, एह् दालां साफ न।	दुकानदार	:	हां, ये दालें साफ हैं।
शशि	:	तां गै एह् दालां मैंह्गियां न ?	शशि	:	तभी ये दालें मँहगी हैं ?
दकानदार	:	ओह् ते ठीक ऐ साफ चीजां मैंह्गियां न।	दुकानदार	:	वह तो ठीक है साफ चीज़ें मँहगी हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

Model (1)

1. **एह् कोट ऐ।**

एह् पैह्ला कोट लम्मा किन्ना ऐ ?

ओह् चौथा कोट बधिया ऐ।

एह् पञ्जमां कोट शैल ऐ।

एह् दपट्टा केह्ड़ा ऐ ?

एह् शफान दा ऐ।

एह् पैंट किन्ने दी ऐ ?

एह् टोपी ठंडी ऐ।

एह् नसवारी जराब मेरी ऐ।

एह् नाह्ब्बी कमीज तंग ऐ।

Model (2)

एह् सारे दपट्टे जयपुरी न।

छेमां, सतमां ते अठमां दपट्टा कैह्दा ऐ ?

लाल कोट किन्ने न ?

लाल कोट ञारां न।

एह् कोट बधिया न।

नाह्बी कमीजां बारां न।

एह् स्वैटर कनेह् न ?

एह् स्वैटर गर्म न ?

एह् दालां साफ न।

एह् दालां मैंह्गियां न।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

1. *एह् कोट लाल ऐ।*

(नाह्ब्बी)
(गटेई)
(केसरी)
(बधिया)
(घटिया)

एह् कोटी लाल ऐ।

(नाह्ब्बी)
(गटेई)
(केसरी)
(बधिया)
(घटिया)

एह् कोट लाल न।

(नाह्ब्बी)
(गटेई)
(केसरी)
(बधिया)
(घटिया)

एह् लाल कोटियां न।

(नाह्ब्बी)
(गटेई)
(केसरी)
(बधिया)
(घटिया)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

(i)	(ii)
एह् लाल कोट बधिया ऐ ?	*एह् दुपट्टे जयपुरी न ?*
नेईं, एह् घटिया ऐ।	*हां, एह् जयपुरी न।*
1. एह् सारा माल असली ऐ ?	एह् देसी ध्यो खालस ऐ ?
2. एह् साड़ी सूती ऐ ?	एह् साड़ी सवा पञ्ज मीटर ऐ ?
3. एह् नाह्ब्बी कमीज तंग ऐ ?	एह् दालां साफ न ?
4. एह् टोपी ठंडी ऐ ?	ओह् प्याजी सूट ऐ ?

4. **निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरिए :–**

घटिया, ठंडी, सवा मीटर, नौ, प्याजी, तेरे, नाह्ब्बी, जयपुरी, खु'ल्लियां, त्रै सौ, पैन्ट।

1. एह् चीज बधिया ऐ ते ओह् ....न।
2. एह् कोट ऐ ते ओह् .... ऐ।
3. एह् पैंट सौ रपेऽ दी ऐ ते ओह् .... ऐ।
4. एह् दपट्टा शफान दा ऐ ते ओह् .... ऐ।
5. एह् टोपी गर्म ऐ ते ओह् .... ऐ।
6. एह् कमीजां तंग न ते ओह् .... न।
7. एह् कोट इक मीटर लम्मा ऐ ते ओह् .... ऐ।
8. एह् साड़ियां केसरी न ते ओह् .... न।
9. गर्म टोपियां सत्त न ते ठंडियां टोपियां .... न।
10. एह् शैल कपड़े मेरे न ते ओह् कपड़े .... न।

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

1. पैह्ला कोट किन्ना लम्मा ऐ ?
2. कुल दपट्टे किन्ने न ?

3. लद्दाखी जैकट किन्ने दी ऐ ?

4. लाल कोट किन्ने न ?

5. नाह्ब्बी कमीजां किन्नियां न ?

6. **निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए :–**

लाल, जयपुरी, मेरे, केसरी, त्रै, सवा पञ्ज, चार, प्याजी, केह्ड़ा, कोह्दा, कनेह्, किन्ना, शैल, सतमां, त्रीनी, तंग, शफान, पशमीना, साफ।

Vocabulary शब्दावली

लाल	लाल	पैंट	पैंट
नाह्ब्बी	उन्नाबी	दकानदार	दुकानदार
लम्मा	लम्बा	फरोजी	फीरोजी
इन्ना	इतना	पैह्ले	पहले
छुट्टा	छोटा	नेईं	नहीं
किन्ना	कितना	खु'ल्ली	खुली
घट्ट	कम	नकली	नकली
बधिया	बढ़िया	सूती	सूती
घटिया	घटिया	दपट्टा	दुपट्टा
शफान	शुफान	केह्ड़ा	कौन सा
सब	सब	समान	सामान
खालस	शुद्ध	केह्ड़ी	कौन सी
किन्ने	कितने	शैल	अच्छा
त्रै	तीन	पञ्ज	पाँच
मश्हूर	मशहूर	देसी घ्यो	देसी घी
जराब	जुराब	मिगी	मेरे को
मैंह्गी	मँहगी	बीह्	बीस
किल्लो	किलो	इक	एक

टिप्पणियाँ

6.1 इस पाठ में आप डोगरी के संख्यावाचक विशेषणों के भिन्न–भिन्न रूपों से परिचित हुए हैं।

6.2 क्रमसूचक संख्यावाचक विशेषण निम्न रूपों में प्रयुक्त होते हैं :–

पैह्ला	'पहला'	छेमां	'छठा'
दूआ	'दूसरा'	सतमां	'सातवाँ'
त्रीआ	'तीसरा'	अठमां	'आठवाँ'
चौथा	'चौथा'	नौमां	'नवाँ'
पञमां	'पाँचवाँ'	दसमां	'दसवाँ'

6.3 दस के आगे की भी सभी संख्याओं के साथ '–मां' प्रत्यय लगने से क्रमसूचक रूप बनते हैं। जैसे :–

ञा'रमां	'ग्यारहवाँ'	काह्ठमां	'इकसठवाँ'
उ'न्नीमां	'उन्नीसवाँ'	व्हत्तरमां	'बहत्तरवाँ'
ठाईमां	'अट्ठाईसवाँ'	बासीमां	'बयासीवाँ'
पैंतीमां	'पैंतीसवाँ'	छेआनमेमां	'छियांनवेवाँ'
कतालीमां	'इकतालीसवाँ'	सौमां	'सौवाँ'

6.4 क्रमसूचक संख्यावाचक विशेषण भी संज्ञा के लिंग, वचन आदि के अनुसार बदलते हैं। जैसे :–

पैह्ला जागत	'पहला लड़का'
पैह्ली कुड़ी	'पहली लड़की'
पैह्ले पञ्ज कमरे	'पहले पाँच कमरे'
पैह्लियां पञ्ज बारियां	'पहली पाँच खिड़कियाँ'

6.5 डोगरी के अपूर्ण – अंक संख्यावाचक विशेषण निम्न हैं :–

अद्धा	'आधा'
पौना	'पौन/तीन चौथाई'
सवा	'सवा'
साड्ढे	'साढ़े' वगैरा

6.6 **'पौना'** विशेषण संज्ञाओं के लिंग अनुसार बदलता है। जैसे :–

पौना गलास	'पौन गिलास'
पौनी रुट्टी	'पौन रोटी'

6.7 संख्याओं के साथ **'पौना'** विशेषण हमेशा **'पौने'** रूप में ही प्रयुक्त होता है। जैसे :–

पौने दो बजे	'पौने दो बजे'
पौने चार रपेऽ	'पौने चार रुपये'
पौने दस मीटर	'पौने दस मीटर'

6.8 **'सवा'** और **'साड्ढे'** विशेषणों में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे :–

सवा दो बजे	'सवा दो बजे'
सवा त्रै रपेऽ	'सवा तीन रुपये'
साड्ढे चार मीटर	'साढे चार मीटर'
साड्ढे दस बजे	'साढे दस बजे'

6.9 एक और आधे के योग के लिए 'डेढ' (डेढ) तथा दो और आधे के योग के लिए 'ढाई' (अढाई) शब्द प्रयुक्त होते हैं।

6.10 **'कुल्ल'** (कुल) विशेषण में कोई परिवर्तन नहीं होता।

6.11 चलो। (**टीक / अच्छा**) आदि स्वीकृति सूचक अर्थ देता है और इसका प्रयोग अव्यय के समान होता है।

6.12 संख्यावाचक विशेषणों में से गणनासूचक विशेषणों की 11 (ग्यारह) से 20 (बीस) तक की संख्या इस प्रकार हैं :-

ञारां	'ग्यारह'	सोलां	'सोलह'
बारां	'बारह'	सतारां	'सतरह'
तेरां	'तेरह'	ठारां	'अठारह'
चौदां	'चौदह'	उन्नी	'उन्नीस'
पन्दरां	'पन्द्रह'	बीह्	'बीस'



पाठ–7

ग्रांऽ–सुधार

(ग्राम–सुधार)

सोहन	:	ओह् ओपरे आदमी कु'न हे ?	सोहन	:	वे अजनबी आदमी कौन थे ?
मोहन	:	जेह्ड़े हूनै–हूनै इत्थै हे ?	मोहन	:	जो अभी–अभी यहाँ थे ?
सोहन	:	हां–हां।	सोहन	:	हाँ–हाँ।
मोहन	:	ओह् इत्थूं दे बी.डी.ओ. न ते उन्दे दफ्तरै दे किश कर्मचारी।	मोहन	:	वे यहाँ के बी.डी.ओ. हैं और उनके दफ्तर के कुछ कर्मचारी।
सोहन	:	कल ते एह् तुआहीं हे। अज्ज इद्धर कि'यां ?	सोहन	:	कल तो ये उधर थे। आज इधर कैसे ?
मोहन	:	अज्ज साढ़े स्कूलै दी इमारत दी इंस्पैक्शन ऐ।	मोहन	:	आज हमारे स्कूल की इमारत की इंस्पेक्शन है।
सोहन	:	हून ओह् लोक कु'त्थै न ?	सोहन	:	अब वे लोग कहाँ हैं ?
मोहन	:	ओह् उद्धर बागै दे पिच्छें खेतरें च न।	मोहन	:	वे उधर बाग के पीछे खेतों में हैं।
सोहन	:	तुआंह् उन्दे कश होर कु'न–कु'न ऐ ?	सोहन	:	वहाँ उनके पास और कौन–कौन है ?
मोहन	:	सरपंच, ग्रामसेवक, चौकीदार, पटवारी ते किश होर लोक बी उत्थै गै न।	मोहन	:	सरपंच, ग्रामसेवक, चौकीदार, पटवारी तथा कुछ और लोग भी वहाँ ही हैं।
सोहन	:	अज्ज तां इत्थूं दे सारे खास लोक उत्थै मजूद न।	सोहन	:	आज तो यहाँ के सारे खास लोग वहाँ मौजूद हैं।
मोहन	:	हाँ। एह्दी ते सभनें गी कल स'ञां दी गै खबर ही।	मोहन	:	हाँ। इसकी तो कल शाम से ही सभी को खबर थी।

सोहन : ब, में कल बडले थमां गै इत्थै हा, मिगी हूनै तगर कोई पता नेईं।

मोहन : अज्ञकल साढ़ा चौकीदार किश ढिल्ला ऐ, इस्सै करी सूचना नेईं ही।

सोहन : अच्छा। ओह् कदूं दा मांदा ऐ ?

मोहन : मांदा ते ओह् परूं दा गै ऐ, ब बिच्च किश चिर ठीक बी हा।

सोहन : हां। सच्चें गै बचैरे गी रातीं – प्रभाती, बडलै–स'ञ्जां, इद्धर–उद्धर, ताहीं–तुआहीं दूर–नेड़ै बड़ी दौड़–भज्ज ऐ।

मोहन : एह् सब ते सच्च ऐ। इ'यै नेह् कर्मठ अज्ञकल बड़े घट्ट न।

सोहन : हां जी। इस संसारै च अज्ञकल खरे मनुक्खें दी बड़ी कमी ऐ।

मोहन : इस्सै करी कोई खरा कम्म अज्ज सैह्ज नेईं।

सोहन : हां। साढ़े ग्रांऽ दे पुलै दी गल्ल बी ते इस्सै दा गै प्रमाण ऐ।

मोहन : खैर, किश लोक ते कर्मठ हैन, इस्सै लेई एह् संसार बरकरार

सोहन : पर, मैं तो कल सुबह से ही यहाँ था, मुझे अभी तक कोई खबर नहीं।

मोहन : आजकल हमारा चौकीदार कुछ ठीक नहीं, इसी कारण सूचना नहीं थी।

सोहन : अच्छा। वह कब से बीमार है ?

मोहन : बीमार तो वह पिछले साल से ही है, किन्तु बीच में कुछ देर ठीक भी था।

सोहन : हाँ। सच ही बैचारे को रात प्रभात, सुबह–शाम, इधर–उधर, यहां–वहां, दूर–पास बहुत भाग–दौड़ है।

मोहन : यह सब तो सच है। इस प्रकार के कर्मठ आजकल बहुत कम हैं।

सोहन : हाँ जी। इस संसार में आजकल भले लोगों की बहुत कमी है।

मोहन : इसीलिए कोई भला काम आज सहज नहीं।

सोहन : हाँ हमारे गाँव के पुल की बात भी तो इसी का प्रमाण है।

मोहन : खैर, कुछ लोग तो कर्मठ हैं, इसीलिए यह संसार बरकरार

	ऐ। साढ़े स्कूलै दी एह् इमारत इस्सै दा गै नतीजा ऐ।		है। हमारे स्कूल की यह इमारत इसी का नतीजा है।
सोहन :	हां जी। पैह्ले साढ़े ग्रां च बढ़ियां मुश्कलां हियां, ब हून काफी स्हूलतां न। स्कूलै दी इमारत दी कमी ही, हून ओह् बी नेईं ऐ।	सोहन :	हाँ जी, पहले हमारे गाँव में बहुत कठिनाइयाँ थीं, किन्तु अब काफी सहूलतें हैं। स्कूल की इमारत की कमी थी अब वह भी नहीं है।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. ओह् ओपरे आदमी कु'न हे ?
2. ओह् इत्थूं दे बी. डी. ओ. न।
3. अज्ज साढ़े स्कूलै दी इमारत दी इंस्पैक्शन ऐ।
4. ओह् उद्धर बागै दै पिच्छें खेतरें च न।
5. तुआंह् उन्दे कश होर कु'न–कु'न ऐ ?
6. किश होर लोक बी उत्थै गै न।
7. एह्दी ते सभनें गी कल स'ञां दी गै खबर ही।
8. सच्चें गै बचैरे गी रातीं– प्रभाती, बडलै – स'ञां, इद्धर – उद्धर ताहीं–तुआहीं दूर–नेड़ै बड़ी दौड़–भज्ज ऐ।
9. इ'यै नेह् कर्मठ अज्जकल बड़े घट्ट न।
10. खैर किश लोक ते कर्मठ हैन, इस्सै लेई एह् संसार बरकरार ऐ।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)		*Model (2)*	
ओह् इद्धर ऐ।	*(उद्धर)*	*ओह् इद्धर न।*	*(उद्धर)*

ओह् उद्धर ऐ।

(इत्थै)
(उत्थै)
(तांह्)
(तुआंह्)

ओह् उद्धर न।

(इत्थै)
(उत्थै)
(तांह्)
(तुआंह्)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)

ओह् बागै दे पिच्छें न।

ओह् बागै दे अग्गें न।

ओह् इद्धर हे।

ओह् ताहीं हा।

ओह् उत्थै गै न।

ओह् अज्ज इत्थै ऐ।

ओह् दूर ऐ।

Model (ii)

ओह् ओपरा आदमी ऐ।

ओह् ओपरा आदमी नेईं ऐ।

ओह् मांदा ऐ।

ओह् बी. डी. ओ. न।

अज्ज साढ़े स्कूलै दी इंस्पैक्शन ऐ।

सभनें गी कल स'ञां दी खबर ही।

कल एह् तुआहीं हे।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

1. ओह् ओपरे आदमी कु'न हे ?
2. चौकीदार कदूं दा मांदा ऐ ?
3. चौकीदार की मांदा ऐ ?
4. ग्रांऽ च किस स्हूलता दी कमी ही ?
5. बागै पिच्छें खेतरें च कु'न–कु'न हा ?

5. निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :–
परूं, हून, पिच्छें, उत्थै, इद्धर

1. ––––––––– ग्रांऽ च सब्भै स्हूलतां न।

2. ओह् ———————— दा मांदा ऐ।

3. ओह् होर लोक बी———————— गै न।

4. किश बागै ———————— खेतरें च हे।

5. ओह् अज्ज ———————— कि'यां न।

6. **पढ़िए, समझिए और लिखिए :–**

इद्धर ———————— उद्धर

इत्थै ————————

अग्गें ————————

बडलै ————————

ताहीं ————————

दूर ————————

कल् ————————

इत्थूं ————————

7. **शब्दों को उपयुक्त क्रम में रख कर वाक्य बनाइए :–**

1. ताहीं हे गै थमां बडलै ओह्।
2. मुशकल निर्णा हा गै।
3. हे ओह् ताहीं।
4. मांदा हा चौकीदार दा परूं।
5. कि'यां अज्ज न इद्दर ओह्।

8. **निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए :–**

परूं, उत्थै, कु'त्थै, कदूं, ढिल्ला,
हून, बडला, कर्मठ, अज्ज।

Vocabulary शब्दावली

ओपरे	अजनबी	कल्ल	कल
कु'न	कौन	स'ञ	शाम
हूनै–हूनै	अभी–अभी	बडलै	प्रातः
दफ्तर	कार्यालय	मिगी	मुझे
कर्मचारी	कर्मचारी	हून	अभी
ताहीं	इस ओर	इद्धर	इधर
अज्जकल्ल	आजकल	उ'ऐ	वही
ढिल्ला	ढीला	मांदा	बीमार
कु'त्थै	कहाँ	बिच	बीच
किश	कुछ	चिर	देर
उद्धर	उधर	रातीं	रात को
पिच्छें	पीछे	प्रभातीं	प्रभात को
खेतर	खेत	तुआंह्	उस ओर
कोल	समीप	सबेला	जल्दी
होर	और	अग्गें	आगे
उत्थै	वहाँ	दूर	दूर
अज्ज	आज	नेड़ै	पास
पूरा	पूरा	सच्चें	सच ही
किट्ठ	इकट्ठ	दौड़–भज्ज	भाग–दौड़
एह्दी	इसकी	कर्मठ	कर्मठ
सभनें	सबने	घट्ट	कम
सैह्ज	सहज	बरकरार	बरकरार
स्हूलत	सुविधा	मुश्कल	कठिन

टिप्पणियाँ

7.1 इस पाठ में आपने योजक क्रिया के भूतकालिक रूपों तथा **काल, स्थान और दिशा** सूचक क्रिया विशेषणों के बारे में जानकारी प्राप्त की है।

7.2 भूतकाल में योजक क्रिया **'ऐ' (है)** वाक्य के कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार बदलती है। पुरुष के लिए इसमें कोई तब्दीली नहीं होती। जैसे :–

	पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
एकवचन	हा	'था'	ही	'थी'
बहुवचन	हे	'थे'	हियां	'थीं'

प्रयोग

निर्णा गै मुश्कल हा।	'निणर्य ही मुश्किल था'
एह् ओपरे आदमी कु'न हे ?	'ये अजनबी आदमी कौन थे ?'
कल स'ञ्जां दी गै खबर ही।	'कल शाम से ही खबर थी'
ग्रांऽ च बड़ियां मुश्कलां हियां।	'गाँव में बहुत मुश्किलें थीं।'

7.3 डोगरी के स्थान सूचक क्रियाविशेषण निम्न हैं :–

इत्थै	'यहाँ'	नेड़ै	'समीप'
उत्थै	'वहाँ'	कु'त्थै	'कहाँ'
अग्गें	'आगे'	कोल	'नज़दीक'
पिच्छें	'पीछे'	दूर	'दूर'

7.4 डोगरी के कुछ दिशा सूचक क्रिया विशेषण निम्न हैं :–

इद्धर	'इधर'	उद्धर	'उधर'
तांह्	'इधर/ इस ओर'	तुआंह्	'उधर/उस ओर'
ताहीं	'इस ओर'	तुआहीं	'उस ओर'

7.5 **काल सूचक क्रिया विशेषण निम्न हैं :–**

अज्ज	'आज'	राती	'रात को'
कल	'कल'	प्रभाती	'सुबह–सवेरे'
अज्जकल	'आजकल'	बडलै	'सुबह'
हून	'अब'	चिरें	'देर से'
हूनै	'अभी'	सवेल्ला	'जल्दी'
हूनै–हूनै	'अभी–अभी'	स'ञ्जां	'शाम को'
कदूं	'कब'	पैह्‌ले	'पहले'
पिच्छूं	'बाद में'		

7.6 स्थान, काल और दिशासूचक क्रिया विशेषण अपने मूल रूपों में (अकेले) भी आते हैं और अपादान में **'दा'**, **'थमां'** **(से)** आदि कारक चिह्नों के साथ भी आते हैं। जैसे :–

(i) **मूलरूप में**

कल एह्‌ तुआहीं हे।	'कल ये उधर थे'।
जेह्‌ड़े हूनै–हूनै इत्थै हे ?	'जो अभी–अभी यहाँ थे ?'
हून ओह्‌ लोक कु'त्थै न ?	'अब वे लोग कहाँ हैं ?'
अज्ज सारे खास लोक	'आज सभी खास लोग'
उत्थै मजूद न।	'वहाँ मौजूद है।'

(ii) अपादान और सम्बन्ध कारक के अर्थ में **'दा'**, **'दे'**, **'थमां'** आदि कारक चिह्नों के साथ :–

ओह्‌ इत्थूं दे बी. डी. ओ. न।	'वे यहाँ के बी. डी. ओ. हैं।'
एह्‌दी ते सभनें गी कल	'इसकी तो सभी को कल शाम
स'ञ्जां दी गै खबर ही।	से ही सूचना थी।'

ओह् कदूं दा मांदा ऐ ? 'वह कब से बीमार है ?'

मांदा ते ओह् परूं दा गै। 'बीमार तो वह पिछले साल से ही है।'

7.7 **इस्सै लेई** (इसीलिए) **इस्सै करी** (इसी कारण) दो उपवाक्यों को जोड़ते हैं और किसी परिणाम की सूचना देते हैं। जैसे :–

खैर किश लोक ते कर्मठ हैन, इस्सै लेई एह् संसार बरकरार ऐ।
''खैर कुछ लोग तो कर्मठ हैं, इसीलिए यह संसार बरकरार है।''

अज्ञकल साढ़ा चौकीदार किश ढिल्ला ऐ, इस्सै करी सूचना नेईं ही।
''आजकल हमारा चौकीदार कुछ ठीक नहीं है, इसी कारण सूचना नहीं थी।''

7.8 **'ब' (पर / किन्तु / परन्तु)** विरोध सूचक अर्थ की सूचना देता है। यह अव्यय प्रायः संयुक्त वाक्यों में प्रयुक्त होता है। जैसे :–

में ते कल उत्थै हा ब मिगी खबर नेईं।

'मैं तो कल वहाँ था किन्तु मुझे सूचना नहीं'।

कभी–कभी यह वाक्य के आरम्भ में भी आता है। जैसे :–

ब, में कल बडले थमां गै इत्थै हा,

मिगी हूनै तगर कोई खबर नेईं।

'किन्तु मैं तो कल सुबह से ही यहाँ था, मुझे अभी तक कोई खबर नहीं।'

7.9 विशेषणों के साथ 'बड़ा' (बहुत) का प्रयोग क्रियाविशेषण का काम करता है। डोगरी में यह क्रियाविशेषण संज्ञाओं के लिंग, वचन के अनुसार बदलता है, इसलिए ***बड़ा, बड़े, बड़ी, बड़ियां*** आदि रूपों में प्रयुक्त होता है। जैसे :–

बड़ा घट्ट कम्म	'बहुत कम काम'
बड़े घट्ट रपेऽ	'बहुत कम रुपये'
बड़ी घट्ट सब्जी	'बहुत कम सब्जी'
बड़ियां घट्ट कताबां	'बहुत कम किताबें।'

7.10 **'इ'यै नेह्'** **(ऐसे)** विशेषण की भांति प्रयुक्त होकर तुलना अथवा उदाहरण का अर्थ प्रकट कर रहा है। जैसे :–

इ'यै नेह् कर्मठ अज्ञकल बड़े घट्ट न।

ऐसे कर्मठ आजकल बहुत कम हैं।

7.11 **'च'** **(में)** अधिकरण कारक का चिह्न हे जो आश्रय के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसेः–

पैह्ले साढ़े ग्रांऽ च बड़ियां मुश्कलां हियां।

'पहले हमारे गाँव में बहुत कठिनाइयाँ थीं।'

❋ ❋ ❋

पाठ–8

स्कूलै दी त्यारी

(स्कूल की तैयारी)

मां	:	बच्चू, उट्ठ, तौलकर। राधा बच्ची, तु'म्मी उट्ठ।	मां	:	बेटा उठ, जल्दी कर। राधा बेटी, तू भी उठ।
बच्चे	:	मम्मी, असेंगी ब्रश देओ।	बच्चे	:	मम्मी, हमें ब्रश दीजिए।
मां	:	हां–हां। लैओ पैह्ले ब्रश करो ते फ्ही न्हवो–धोवो ते बर्दी लाओ।	मां	:	हां–हां। लो पहले ब्रश करो और फिर नहाओ–धोवो और वर्दी पहनो।
बच्चे	:	मम्मी दिक्खो। अस दोऐ त्यार आं।	बच्चे	:	मम्मी देखो। हम दोनों तैयार हैं।
राधा	:	मम्मी मेरा टिफन इद्धर रक्खो ते राजू दा बस्ते च पाओ।	राधा	:	मम्मी मेरा टिफिन इधर रखिए और राजू का बस्ते में डालिए।
राजू	:	पानियै दी बोतल कु'त्थै ऐ मम्मी ? मिगी देओ।	राजू	:	पानी की बोतल कहाँ है मम्मी ? मुझे दीजिए।
मां	:	एह् लै, फड़ अपनी बोतल। राधा दी बोतल कु'त्थै ऐ ?	मां	:	यह ले, पकड़ अपनी बोतल। राधा की बोतल कहाँ है ?
राधा	:	मेरी बोतल मेरे कोल ऐ। मम्मी! मेरे नमें कपड़े कु'त्थै न ?	राधा	:	मेरी बोतल मेरे पास है। मम्मी! मेरे नए कपड़े कहाँ हैं ?
मां	:	सारे कपड़े ट्रैंकै बिच्च न। राधा अज्ज तूं सुत्थन–कुर्ता ला। नमें कपड़े कल लाएआं।	मां	:	सारे कपड़े संदूख में हैं। राधा आज तुम सुत्थन कुर्ता पहनो। नए कपड़े कल पहनना।
राधा	:	ठीक ऐ मम्मी।	राधा	:	ठीक है मम्मी।
मां	:	शाबाश बेटी, शाबाश।	मां	:	शाबाश बेटी, शाबाश।
राधा	:	राजू, तूं अज्ज मेरे कन्नै नेईं आ। अज्ज साढ़े स्कूल डांस दा	राधा	:	राजू, तुम आज मेरे साथ नहीं आओ। आज हमारे स्कूल डाँस

	अभ्यास ऐ। कार्यक्रम कल ऐ। कल तूं मेरे कन्नै चलेआं।		का अभ्यास है। कार्यक्रम कल है। कल तुम मेरे साथ चलना।
मां :	अच्छा राजू, अज्ज तूं शामू कन्नै स्कूल जा। कल तूं ते राधा दोऐ किट्ठे जाएओ।	मां :	अच्छा राजू, आज तुम शामू के साथ स्कूल जाओ। कल तुम और राधा दोनों इकट्ठे जाना।
राजू :	मम्मी मेरे बूट कु'त्थै न ?	राजू :	मम्मी मेरे बूट कहाँ हैं ?
राधा :	मेरे कमरे च न। जा ते दिक्ख चंगी चाल्ली।	राधा :	मेरे कमरे में है। जाओ और देखो अच्छी तरह।
पिता जी :	बच्चेओ। बडलै–बडलै रौला नेईं पाओ। चुप–चपीते अपना–अपना कम्म करो।	पिता जी :	बच्चो। सुबह–सुबह शोर मत करो। चुप–चाप अपना–अपना काम करो।
मां :	हून तुस बी उट्ठो नां। जरा अपने लाडले गी त्यार ते करो।	मां :	अब आप भी उठिए न। ज़रा अपने लाडले को तैयार तो कीजिए।
पिता जी :	अच्छा कमला। तूं राजू दी चिन्ता नेईं कर। राजू तूं बी मम्मी गी तंग नेईं करेआं।	पिताजी :	अच्छा कमला। तुम राजू की चिन्ता मत करो। राजू तुम भी मम्मी को तंग मत करना।
राधा :	राजू अपनियां सारिया कताबां बस्ते च पा ते शामू कन्नै स्कूल जा। दिक्खेआं कोई बी कताब नेईं भुल्लेआं।	राधा :	राजू अपनी सभी किताबें बस्ते में डालो और शामू के साथ स्कूल जाओ। देखना कोई भी किताब मत भूलना।
राजू :	अच्छा दीदी। दीदी तूं अग्गें–अग्गें चल अस तेरे पिच्छें–पिच्छें।	राजू :	अच्छा दीदी। दीदी तुम आगे–आगे चलो हम तुम्हारे पीछे–पीछे।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

(i)	(ii)
1. बच्चू उट्ठ।	असेंगी ब्रश देओ।
2. एह् लै, फड़ अपनी बोतल।	न्हवो–धोवो ते बर्दी लाओ।
3. अज्ज तूं सुत्थन–कुर्ता ला।	बडलै–बडलै रौला नेईं पाओ।
4. तूं अग्गें–अग्गें चल।	मिगी पानियै दी बोतल देओ।
5. तूं अज्ज शामू कन्नै जा।	राजू दा टिफन बस्ते च पाओ।
6. तूं राजू दी चिन्ता नेईं कर।	हून तुस बी उट्ठो नां।
7. नमें कपड़े कल लाएआं।	चुप–चपीते अपना कम्म करो।
8. दिक्खेआं इक बी कताब नेईं भुल्लेआं।	कल तूं ते राधा दोऐ किट्ठे जाएओ।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (i)

राजू उट्ठ। *(पढ़)*

राजू पढ़।

(न्हौ)

(पढ़)

(जा)

Model (ii)

राजू तूं कल जाएआं। *(पढ़ेआं)*

राजू तूं कल पढ़ेआं।

(आमेआं)

(न्हमेआं)

(बर्दी लाएआं)

Model (iii)

बच्चेओ न्हवो–धोवो।

(स्कूल जाओ)

Model (iv)

बच्चेओ किट्ठे जाएओ।

(खाएओ)

बच्चेओ स्कूल जाओ। बच्चे किट्ठे खाएओ।

(रौला नेईं पाओ) (पढ़ेओ)

(ब्रश करो) (चलेओ)

(बर्दी लाओ) (टुरेओ)

3. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :–**

न्हवो–धोवो, रक्खो, पाओ, लाएआं, चलेआं, जाएओ, कम्म करो, भुल्लेआं, नमें कपड़े, कल

चुप–चपीतें अपना–अपना ——————

————————ते बर्दी लाओ।

कल तूं ते राधा दोऐ किट्ठे ——————

मम्मी मेरा टिफन इद्धर ——————

कल तूं मेरे कन्नै ——————

राजू दा टिफन बस्ते च ——————

दिक्खेआ कोई बी कताब नेईं ——————

4. **Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)**

Model (i)

राजू अज्ज तूं शामू कन्नै स्कूल जा।

राजू कल तूं शामू कन्नै स्कूल जाएआं।

1.. राधा अज्ज तूं सुत्थन कुर्ता ला।

2. शामू अज्ज तूं अखबार पढ़।

3. राधा अज्ज तूं गीत सुन।

4. कमला तूं चिन्ता नेईं कर।

Model (ii)

बच्चेओ! अज्ज तुस नमें कपड़े लाओ।

बच्चेओ! कल तुस नमें कपड़े लाएओ।

1. मम्मी मेरा टिफन इद्धर रक्खो।
2. मम्मी राजू दा टिफन बस्ते च पाओ।
3. अज्ज चुप–चपीते अपना–अपना कम्म करो।
4. जरा अपने लाडले गी त्यार करो।

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

1. बच्चे मम्मी गी केह् आखदे न ?
2. ब्रश दिन्दे होई मां केह् आखदी ऐ ?
3. राधा मम्मी गी अपने टिफन आस्तै केह् गलांदी ऐ ?
4. राजू दा टिफन कु'त्थै रक्खने लेई आखदी ऐ ?
5. राधा राजू गी अज्ज कोह्दे कन्नै स्कूल जाने लेईं आखदी ऐ ?
6. मां राधा गी अज्ज केह् लाने लेई आखदी ऐ ?
7. पिता जी राजू गी केह् समझांदे न ?

6. **कोष्ठक में दिए गए क्रिया रूपों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–**

देना (दे, देओ),	न्हौना (न्हौ, न्हवो)
रक्खना (रक्ख, रक्खो);	लाना (ला, लाओ)
जाना (जाएआं, जाएओ);	चलना (चलेआं, चलेओ)
भुल्लना (भुल्लेआं, भुल्लेओ);	करना (करेआं, करेओ)

Vocabulary शब्दावली

बच्चू	बेटा (बेटे को प्यार से सम्बोधन)	बच्ची	बेटी (बेटी को प्यार से सम्बोधन)
तु'म्मी	तुम भी	असेंगी	हमें
बर्दी	वर्दी,	त्यार	तैयार
टिफन	टिफिन	बस्ता	बस्ता
बोतल	बोतल	नमें	नए
कपड़े	कपड़े	सुत्थन	जनाना चूड़ीदार पाज़ामा
कुर्ता	कमीज (चूड़ीदार पाजामे के साथ पहनी जाने वाली कुर्तानुमां कमीज़)	कम्म	काम
ट्रैंक	संदूख	ठीक	ठीक
डांस	नृत्य, नाच	अभ्यास	अभ्यास
बूट	बूट	कमरा	कमरा
कताबां	किताबें	हां–हां	हाँ–हाँ
अच्छा	अच्छा	ठीक	ठीक
शाबाश	शाबाश	किट्ठे	इकट्ठे
उट्ठ	उठ	तौल	जल्दी
कर	कर, करो	देओ	दीजिए
लैओ	लीजिए	लाओ	पहनो, पहनिए
पाओ	डालिए	रक्खो	रखिए

ला	पहन, लगा	लाएआं	पहनना
आ	आ, आओ	चलेआं	चलना
जा	जा, जाओ	जाएओ	जाना, जाइएगा
तंग करना	तंग करना	चिन्ता करना	चिन्ता करना
अपनियां	अपनी (बहुवचन)	सारियां	सभी
दिक्खेआं	देखना	भुल्लना	भूलना
कन्नै	साथ, के साथ	फ्ही	फिर, बाद में
दोऐ	दोनों	कोल	पास
चंगी चाल्ली	अच्छी तरह, भली भाँति	बच्चेओ	बच्चो
रौला	शोर	बडलै–बडलै	सुबह–सुबह
ते	तो, और	बी	भी

टिप्पणियाँ

8.1 इस पाठ में आप क्रिया के **आज्ञार्थ वाले रूपों** तथा **संज्ञाओं के तिर्यक् (विभक्तिवाले)** रूपों से परिचित हुए हैं।

8.2 आज्ञार्थ वर्तमान काल और भविष्यत् काल में आता है और केवल मध्यम पुरुष के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :–

वर्तमान काल	तूं जा 'तुम जाओ'
	तुस जाओ 'आप जाएं'
भविष्यत् काल	तूं जाएआं 'तुम जाना'
	तुस जाएओ 'आप जाना/ जाइएगा'

8.3 डोगरी में वर्तमान काल के आज्ञार्थ में मध्यम पुरुष एक वचन के लिए धातु (क्रिया के मूल रूप) में कोई परिवर्तन नहीं होता और बहुवचन के लिए धातु के अन्त में – ओ प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :–

एकवचन		बहुवचन	
उट्ठ	'उठ/ उठो'	उट्ठो	'उठो / उठिए'
दे	'दो'	देओ	'दो/ दीजिए'
कर	'कर / करो'	करो	'करो / कीजिए'
पी	'पी / पिओ'	पीओ	'पिओ / पीजिए'
जा	'जा / जाओ'	जाओ	'जाओ / जाइए'
खा	'खा / खाओ'	खाओ	'खाओ / खाइए'
चल	'चल / चलो'	चलो	'चलो / चलिए'
दिक्ख	'देख / देखो'	दिक्खो	'देखो / देखिए'

8.4 औकारान्त धातुओं में 'ओ' बहुवचन सूचक प्रत्यय लगने से पहले अन्तिम 'औ' को अव् आदेश हो जाता है। जैसे :–

न्हौ = न्ह्व + ओ = न्हवो 'नहाओ / नहाइए'

सौ = सव् + ओ = सवो 'सोओ / सोइए'

रौह् = र'व् + ओ = र'वो 'रहो / रहिए'

8.5 भविष्यत्काल के आज्ञार्थ में मध्यम पुरुष एकवचन के लिए धातु के साथ **'आं'** और बहुवचन के लिए **'एओ'** प्रत्यय जुड़ते हैं। जैसे :–

धातु	एकवचन		बहुवचन	
जा	जाएआं	'जाना'	जाएओ	'जाना/जाइएगा'
सुन्	सुनेआं	'सुनना'	सुनेओ	'सुनना/सुनिएगा'
पढ़्	पढ़ेआं	'पढ़ना'	पढ़ेओ	'पढ़ना/पढ़िएगा'
कर्	करेआं	'करना'	करेओ	'करना/करिएगा'

8.6 आज्ञार्थ क्योंकि मध्यम पुरुष के लिए आता है और मध्यम पुरुष हमेशा प्रत्यक्ष रूप में सामने होता है। इसलिए मध्यम पुरुष में यदि मनुष्य जाति की संज्ञाएं हों तो उनके रूप सम्बोधन कारक में होते हैं। जैसे :–

बच्चु, तौल कर।	'बेटे, जल्दी करो।'
जागतो, स्कूल जाओ।	'लड़को, स्कूल जाओ।'
बच्चेओ, रुट्टी खाओ।	'बच्चो, खाना खाओ'
कुड़ियो, कताब पढ़ो।	'लड़कियो, किताब पढ़ो।'
मुड़ेओ, कल स्कूल जाएओ।	'लड़को, कल स्कूल जाना।'
जागता, अज्ज बाह्र नेईं जाएआं।	'लड़के, आज बाहर मत जाना।'

8.7 **'गी' (को)** कारक चिह्न डोगरी में कर्म तथा सम्प्रदान कारकों के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे :–

मम्मी, असेंगी ब्रश देओ।	'मम्मी, हमें ब्रश दीजिए'।

8.8 **'कन्नै' (के साथ)** करण कारक का चिह्न है और **'च' (में)** अधिकरण कारक का। जैसे:–

राजू, तूं अज्ज मेरे कन्नै नेईं जाएआं।

'राजू तुम आज मेरे साथ नहीं जाना।'

बूट मेरे कमरे च न।

'बूट मेरे कमरे में हैं।'

8.9 सभी प्रकार के कारक चिह्न संज्ञाओं के विभक्ति युक्त रूपों के साथ प्रयुक्त होते हैं। सरल रूपों के साथ नहीं। जैसे :–

कमरा	कमरे च	'कमरे में'
मेरा	मेरे कन्नै	'मेरे साथ'
अस	असें गी	'हमें'

8.10 डोगरी में पुलिंग संज्ञाओं के विभक्ति वाले रूप दो प्रकार के होते हैं।

(i) आकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के अन्तिम **'आ'** को **'ए'** कर देने से तिर्यक् एकवचन रूप बनते हैं और **'एं'** कर देने से बहुवचन रूप। जैसे :–

संज्ञा	**एकवचन**		**बहुवचन**	
कमरा	कमरे	'कमरे'	कमरें	'कमरों'
बस्ता	बस्ते	'बस्ते'	बस्तें	'बस्तों'
लाडला	लाडले	'लाडले'	लाडलें	'लाडलों'

(ii) आकारान्त संज्ञाओं के अतिरिक्त बाकी सभी पुलिंग संज्ञाओं में तिर्यक् कारक के एकवचन के लिए या तो कोई तब्दीली नहीं होती और या **'ऐ'** लगता है। किन्तु बहुवचन के लिए संज्ञा के अन्त में **'एं'** प्रत्यय ही जुड़ता है। जैसे :–

संज्ञा	**एकवचन**		**बहुवचन**	
जागत 'लड़का'	जागत	जागतै 'लड़के'	जागतें	'लड़कों'
साधु 'साधु' साधु	साधुऐ	'साधु'	साधुएं	'साधुओं'
माली 'माली' माली	मालियै	'माली'	मालियें	'मालियों'

8.11 प्रथमपुरुष सर्वनाम के विभक्ति वाले रूप हैं :–

	एकवचन		***बहुवचन***	
	मेरे	*'मेरे'*	*साढ़े*	*'हमारे'*
जैसे:–	मेरे कन्नै		'मेरे साथ'	
	साढ़े कन्नै		'हमारे साथ'	

8.1 2 मध्यमपुरुष सर्वनाम के विभक्ति वाले रूप हैं :–

	एकवचन	*बहुवचन*
	तेरे 'तेरे / तुम्हारे'	*तुन्दे/ थुआढ़े 'आपके'*
जैसे:–	तेरे कन्नै	'तेरे साथ'
	तुन्दे कन्नै	'आपके साथ'
	थुआढ़े कन्नै	'आपके साथ'

8.1 3 अन्यपुरुष सर्वनाम के विभक्ति वाले रूप हैं :–

	एकवचन	*बहुवचन*
दूरवर्ती –	उसदे / ओह्दे 'उसके'	उन्दे 'उनके'
जैसे:–	उसदे / ओह्दे कन्नै	उन्दे कन्नै
	'उसके साथ'	'उनके साथ'
समीपवर्ती –	इसदे / एह्दे 'इसके'	इन्दे 'इनके'
जैसे :–	इसदे / एह्दे कन्नै	इन्दे कन्नै
	'इसके साथ'	'इनके साथ'

8.1 4 अनिश्चय वाचक सर्वनाम के विभक्ति वाले रूप हैं :–

	एकवचन	
	कुसै	'किसी'
जैसे :–	कुसै कन्नै	'किसी के साथ'

इनका बहुवचन में प्रयोग नहीं होता।

8.1 5 प्रश्नवाचक सर्वनाम **'कु'न'** के विभक्ति वाले रूप हैं :–

एकवचन		*बहुवचन*	
कुसदे/ कोह्दे	'किसके'	कु'न्दे	'किनके'

जैसे :–	कुसदे/कोह्दे कन्नै	कु’न्दे कन्नै
	‘किसके साथ।’	‘किनके साथ।’

8.16 सम्बन्धवाचक सर्वनाम ‘जो’ के विभक्ति वाले रूप हैं :–

एकवचन		*बहुवचन*	
जिसदे/जेह्दे	‘जिसके’	जि’न्दे	‘जिनके’
जैसे :–	जिसदे /जेह्दे कन्नै	जि’न्दे कन्नै	
	‘जिसके साथ’	‘जिनके साथ’	

8.17 निजवाचक सर्वनाम **‘आप/आपूं’** विभक्ति के साथ एकवचन तथा बहुवचन में एक ही रूप में मिलता हैं :–

एकवचन	*बहुवचन*
अपने	अपने

जैसे :–	*एकवचन*	तूं अपने कन्नै मिगी लेई चल। ‘तुम अपने साथ मुझे ले चलो’।
	बहुवचन	तुस अपने कन्नै मिगी लेई चलो। ‘आप अपने साथ मुझे ले चलिए’।

8.18 सर्वनामों के कर्म कारक की विभक्ति वाले रूप हैं। जैसे :–

	एकवचन	*बहुवचन*
प्रथम पुरुष सर्वनाम	मि	असें
मध्यमपुरुष सर्वनाम	तु	तुसें
अन्यपुरुष सर्वनाम		
दूरवर्ती	उस	उ’नें
समीपवर्ती	इस	इ’नें
अनिश्चय वाचक सर्वनाम	कुसै	

प्रश्नवाचक सर्वनाम	कुस	कु'नें
सम्बन्धवाचक सर्वनाम	जिस	जि'नें
निजवाचक सर्वनाम	आपूं / अपने	आपूं / अपने

प्रयोग

मिगी पता नेईं।	'मुझे मालूम नहीं।'
असेंगी केह् पता ?	'हमें क्या मालूम ?'
तुगी पता नेईं।	'तुझे मालूम नहीं।
तुसेंगी पता नेईं।	'आपको मालूम नहीं।'
उसी केह् पता ?	'उसे क्या मालूम ?'
उ'नेंगी पता नेईं।	'उन्हें मालूम नहीं।'
इसी छोड़।	'इसे छोड़ो'
इ'नेंगी फड़।	'इन्हें पकड़ो।'
कुसै गी कोई फायदा नेईं।	'किसी को कोई फायदा नहीं'
कुसगी सनांऽ ?	'किसे सुनाऊँ ?'
कु'नेंगी पुच्छां ?	'किन्हें पूछूँ ?'
जिसगी दिक्खेआ हा।	'जिसे देखा था।'
जि'नेंगी पुच्छेआ।	'जिन्हें पूछा।'
आपूं/अपने गी सब पता ऐ।	'अपने को सब मालूम है।

8.19 **'बी'** **(भी)** बलसूचक अव्यय है। वाक्य में जिस शब्द पर बल देना होता है उसके साथ 'बी' का प्रयोग होता है। जैसे :–

तुस बी उट्ठो।	'आप भी उठें'।
कताब बी पढ़ो।	'किताब भी पढ़ें'।

✻ ✻ ✻

पाठ—9
दोस्तै दा घर
(दोस्त का घर)

रमेश	:	आओ जी। धन्न भाग। तुस अज्ज कल लभदे गै नेईं ?	रमेश	:	आओ जी। अहोभाग्य। आप आजकल दिखते ही नहीं ?
सुरेश	:	में रोज अखनूर जंदा आं/ जन्नां।	सुरेश	:	मैं रोज अखनूर जाता हूँ।
रमेश	:	अखनूर। अखनूर केह्ड़े पास्सै ऐ ?	रमेश	:	अखनूर। अखनूर किस ओर है ?
सुरेश	:	बस चन्हां दरेआ टपदे गै अखनूर आई जंदा ऐ। ते तुस कुद्धर होंदे ओ ?	सुरेश	:	बस चिनाब दरिया पार करते ही अखनूर आ जाता है। और आप किधर होते हैं ?
रमेश	:	में दकाना पर होन्नां।	रमेश	:	मैं दुकान पर होता हूँ।
सुरेश	:	उत्थै बड़ा कम्म होंदा ऐ ?	सुरेश	:	वहां बहुत काम होता हैं ?
रमेश	:	कम्म ते होंदा गै ऐ। बडलै पैह्लें सोत–फंड दिन्नां। फ्ही चीजां–बस्तां टकानै रक्खनां। परमात्मा अग्गें मत्था टेकनां।	रमेश	:	काम तो होता ही है। सुबह पहले झाड़ू देता हूं, फिर चीज़ें–वस्तुएं ठिकाने पर लगाता हूँ। परमात्मा के आगे सिर झुकाता हूँ।
सुरेश	:	ते फ्ही ?	सुरेश	:	तो फिर ?
रमेश	:	ते फ्ही दिन भर गाह्कें दी सेवा करनां।	रमेश	:	फिर दिन भर ग्राहकों की सेवा करता हूँ।
बिट्टू	:	नमस्ते चाचा जी,	बिट्टू	:	नमस्ते चाचा जी।
सुरेश	:	सनाऽ बेटा ठीक एं ?	सुरेश	:	सुनाओ, बेटा ठीक हो ?
बिट्टू	:	जी, चाचा जी, ठीक आं।	बिट्टू	:	जी चाचा जी, ठीक हूँ।
सुरेश	:	अज्ञकल बी मैच खेढना एं ?	सुरेश	:	आजकल भी मैच खेलते हो ?

बिट्टू : मैच बी खेढनां ते
कम्पयूटर बी सिक्खनां।

सुरेश : सुनीता कु'त्थै ऐ ?
क्या घर नेईं ऐ ?

रमेश : नेईं, अन्दर गै। हूनै औंदी ऐ।

सुनीता : चाचा जी, नमस्ते।

सुरेश : खुश रौह्, बच्ची। तूं बड़ा मता
पढ़नी एं तां गै लिस्सी एं।

सुनीता : पढ़नी बी आं पर अज्ञकल
स्कूला दा कम्म मता थ्होंदा ऐ।
उ'ऐ मकान्नी आं।

सुरेश : अच्छा बच्चू। जा कम्म कर पर
सेह्तू दा बी खेआल रक्खेआं।

रमेश : अज्ञकल छुट्टियां न। पवित्तर
ते सुरिन्दर बी इत्थै गै न।

सुरेश : अच्छा। तां फ्ही बड़ी
रौनक होंदी ऐ।

रमेश : होर केह् जी। ब'रा भर ते कल्ल–
मकल्ले गै रौह्न्ने आं।

सुरिन्द्र : भापा जी, पैरें पौन्ने आं।

सुरेश : जींदे र'वो। बड्डे–बड्डे बनो।
सनाओ कदें उधमपुर
बी जंदे ओ ?

सुरिन्दर : जदूं–कदें मौका मिलदा ऐ
तां जरूर जन्नां।

बिट्टू : मैच भी खेलता हूँ और
कम्प्यूटर भी सीखता हूँ।

सुरेश : सुनीता कहाँ है ?
क्या घर पर नहीं है ?

रमेश : नहीं, भीतर ही है। अभी आती है।

सुनीता : चाचा जी, नमस्ते।

सुरेश : खुश रहो बेटी। तुम बहुत अधिक
पढ़ती हो इसीलिए कमज़ोर हो।

सुनीता : पढती भी हूँ परंतु आजकल स्कूल
से काम अधिक मिलता है। वही
करती हूँ।

सुरेश : अच्छा बच्ची। जाओ काम करो।
परन्तु स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना।

रमेश : आजकल छुट्टियां हैं। पवित्तर
और सुरिन्द्र भी यहीं पर हैं।

सुरेश : अच्छा, तो फिर बहुत रौनक
होती हैं ?

रमेश : और क्या ? वर्ष भर तो
अकेले ही रहते हैं।

सुरिन्द्र : भाई जी, चरण स्पर्श।

सुरेश : जीते रहो। बड़े–बड़े बनो।
सुनाइए कभी उधमपुर
भी जाते हो ?

सुरेन्द्रा : जब कभी समय मिलता है
तो वहां अवश्य जाता हूँ।

सुरेश : शशि ते चंचल कुद्धर न ?	सुरेश : शशि और चंचल कहाँ हैं ?
सुरिन्दर : इत्थै गै न। दिक्खो हूनै औंदियां न।	सुरिन्द्र : यहाँ ही हैं। देखिए अभी आती हैं।
शशि ते चंचल : नमस्ते भापा जी।	शशि और चंचल : नमस्ते भाई साहिब।
सुरेश : नमस्ते। सनाओ राजी खुशी ओं ?	सुरेश : नमस्ते। सुनाओ, राजी खुशी से हो ?
शशि ते चंचल : जी, सारे राजी खुशी न।	शशि और चंचल : जी, सभी कुशल हैं।
सुरेश : दोऐ इक्कै शैह्‌र रौंह्‌दियां ओ ?	सुरेश : दोनों एक ही शहर में रहती हो ?
शशि : नेईं जी, में ते रामबन रौह्‌न्नी आं ते चंचल, डूडू बसंतगढ़ रौंह्‌दी ऐ। बस छुट्टियें च गै अस इत्थै किट्ठियां होन्नियां।	शशि : नहीं जी, मैं रामबन रहती हूँ और चंचल डूडू बसंतगढ़ में रहती है। बस केवल छुट्टियों में हम यहाँ पर इकट्ठी होती हैं।
सुरेश : चंचल बेटा, तुन्दे सस्स–सौह्‌रा कु'त्थै होंदे न ?	सुरेश : चंचल बेटा, तुम्हारे सास–ससुर कहाँ होते हैं ?
चंचल : ओह् डूडू बसंतगढ़ गै रौंह्‌दे न।	चंचल : वे डूडू बसन्तगढ़ में ही रहते हैं।
सुरेश : ते शशि, तेरियां दरानियां – जठानिया कु'त्थै रौंह्‌दियां न ?	सुरेश : तो शशि, तुम्हारी देवरानी और जेठानी कहाँ रहती हैं ?
शशि : भापा जी, मेरी दरानी कोई – नेईं ऐ। दो जठानियां न ते ओह् उधमपुर गै रौंह्‌दियां न।	शशि : भाई साहब, मेरी देवरानी कोई नहीं है। दो जठानियें है और वे उधमपुर में ही रहती हैं।
सुरेश : थुआढ़े च सुरिन्दर सारें शा बड्डा ते चंचल सारें शा लौह्‌की ऐ नां ?	सुरेश : आपमें सुरिन्द्र सबसे बड़ा और चंचल सबसे छोटी है न ?
शशि : जी भापा जी।	शशि : हाँ, भाई साहब।
सुरेश : भरजाई होर कु'त्थै न ? इत्थै नेईं लभदियां।	सुरेश : भाभी जी कहाँ हैं ?' यहाँ दिखती नहीं हैं।

रमेश	:	हूनै लभदियां न। दिक्खो लभदियां न जां नेईं ?	रमेश	:	अभी दिखाई पड़ती हैं। देखो दिखाई पड़ती हैं कि नहीं ?
सुरेश	:	आहा। अज्ज सच्चें गै सब्भै किट्ठे आं। मिगी बड़ा चंगा लगदा ऐ।	सुरेश	:	आहा। आज सच ही सब इकट्ठे हैं। मुझे बहुत अच्छा लगता है।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. में रोज अखनूर जन्नां।
2. तुस कुद्धर होंदे ओ ?
3. अज्जकल बी मैच खेढना एं ?
4. अज्जकल मता पढ़नी एं ?
5. सुनीता कु'त्थै रौंह्दी ऐ ?
6. तुन्दे सस्स–सौह्‌रा कु'त्थै रौंह्दे न ?
7. छुट्टियां होन तां अस इत्थै किट्ठियां औन्नियां।
8. दोऐ इक्कै थाह्‌र रौंह्दियां ओ ?
9. भापा जी, पैरें पौन्ने आं।
10. अज्जकल छुट्टियां न।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

में रोज पढ़ना आं। (लिखना)

में रोज लिखना आं।

(खेढना)

(औना)

Model (2)

में रोज पढ़नी आं। (लिखना)

में रोज लिखनी आं।

(खेढना)

(औना)

Model (3)

अस रोज जन्ने आं। (पढ़ना)

अस रोज पढ़ने आं।

(खाना)

(न्हौना)

Model (4)

अस रोज जन्दियां आं (पढ़ना)

अस रोज पढ़दियां/पढ़नियां आं।

(खाना)

(न्हौना)

Model (5)

तूं रोज औंदा एं। (बौंह्दा)

तूं रोज बौंह्दा एं।

(पढ़ना)

(चलना)

Model (6)

तूं रोज औंदी/औन्नी एं। (बौंह्दा)

तूं रोज बौंह्दी/बौह्न्नी एं।

(पढ़ना)

(चलना)

Model (7)

तुस रोज पढ़दे ओ। (औना)

तुस रोज औंदे ओ।

(लब्भना)

(टुरना)

Model (8)

तुस रोज पढ़दियां ओ। (औना)

तुस रोज औंदियां ओ।

(लब्भना)

(टुरना)

Model (9)

ओह् रोज टुरदा ऐ। (लब्भना)

ओह् रोज लभदा ऐ।

(जाना)

(पढ़ना)

Model (10)

ओह् रोज टुरदी ऐ। (लब्भना)

ओह् रोज लभदी ऐ।

(जाना)

(पढ़ना)

Model (11)

ओह् रोज औंदे न। (जाना)

Model (12)

ओह् रोज औंदियां न। (जाना)

ओह् रोज जंदे न। ओह् रोज जंदियां न।

(न्हौना) (न्हौना)

(दिक्खना) (दिक्खना)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)	*Model (2)*
सुरिन्दर रोज औंदा ऐ।	ओह् रोज औंदे न।
छवि रोज औंदी ऐ।	ओह् रोज औंदियां न।
पवित्तर बसोहली रौंह्दा ऐ।	ओह् बसोह्ली रौंह्दे न।
ओह् स्कूल जंदा ऐ।	ओह् स्कूल जंदे न।
ओह् रुट्टी खंदा ऐ।	ओह् रुट्टी खंदे न।
ओह् खेढदा ऐ।	ओह् खेढदे न।
ओह् कम्प्यूटर सिखदा ऐ।	ओह् कम्प्यूटर सिखदे न।
ओह् पढ़दा ऐं।	ओह् पढ़दे न।

Model (3)

तूं कम्म करना एं।

तुस कम्म करदेओ।

तूं पढ़ना एं।

में जन्नी आं।

ओह् औंदा ऐं।

सुधा सोत दिन्दी ऐ।

पवित्तर रुट्टी खंदा ऐ।

चंचल कम्प्यूटर सिखदी ऐ।

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

1. सुरेश रोज कु'त्थै जंदा ऐ?
2. रमेश दिन भर केह् करदा ऐ?
3. शशि कु'त्थै रौंह्दी ऐ?
4. शशि दियां जठानियां किन्नियां न?
5. चंचल दे सस्स–सौह्‌रा कु'त्थै रौंह्दे न?

5. **कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के उपयुक्त रूप के साथ रिक्त स्थान भरिए :–**

1. स्कूला दा कम्म मता---------------- ऐ। (थ्होना)
2. में रोज अखनूर ----------------- आं। (जाना)
3. में चीजां–बस्तां टकानै -------------- आं। (रक्खना)
4. तूं अज्ञकल बी मैच ---------------- एं। (खेढना)
5. ओह् ब'रा भर कल्लमुकल्ले ----------- न। (रौह्‌ना)

6. **निम्नलिखित क्रियापदों में से उपयुक्त क्रियापद चुनकर रिक्त स्थान भरिए :–**

खन्नी आं, पढ़दा ऐ, खेढने आं, लान्दी ऐ, दिखदे न, जंदियां न।

1. सोनू दसमीं च ---------------------------- ।
2. कल्पना शैल कपड़े -------------------------- ।
3. में दुआई ------------------------------- ।
4. अस चैस ------------------------------- ।
5. माता होर मन्दर---------------------------- ।
6. जागत टी. वी. बड़ा -------------------------- ।

Vocabulary शब्दावली

धन्नभाग	अहोभाग्य	खुश	खुश
रोज	रोज	रौह्	रह
जन्नां	जाता हूँ	पढ़नी आं	पढ़ती हूँ
पास्सै	ओर	कारक	कारक
स्कूला (दा)	स्कूल का		
दरेआ	दरिया	बस	बस (अव्यय)
थ्होंदा	मिलता	टपदे गै	पार करते ही
मकान्नी आं	खत्म करती हूँ	आई जंन्दा/	आ जाता
		सेह्तू (दा)	सेहत का
होंदे ओ	होते हो	(कारक चिन्ह)	
खेआल	ख्याल	छुट्टियां	छुट्टियाँ
पर	पर (कारक चिन्ह)	होन्नां	होता हूँ
बड़ी	बड़ी	सोत–फंड	झाड़–बुहार
रौनक	रौनक	दिन्नां	देता हूँ
लगदी ऐ	लगती है	फ्ही	फिर
ब'रा भर	वर्ष भर	चीजां–बस्तां	चीजें–वस्तुएं
कल्लमकुल्ले	अकेले	टकानै	ठिकाने
पैरें पौन्नेआं	पाँव लागें	रक्खनां	रखता हूँ
जीदें र'वो	जीते रहो	परमात्मा	परमात्मा

बड़्डे–बड़्डे बनो	बड़े–बड़े बनो	मत्था	माथा
मिलदा ऐ	मिलता है	टेकनां	टेकता हूँ
गाह्कें	ग्राहकों	भापाजी	भाई जी
सेवा	सेवा	राजी खुशी	राजी खुशी
करनां	करता हूँ	थाह्र	जगह
चाचाजी	चाचाजी	रामबन	एक गाँव का नाम
सनाऽ	सुनाओ	डूडू बसन्तगढ	एक गाँव का नाम
ठीक	ठीक	होन	हों
मैच	मैच	किट्ठियां	इकट्ठीं
खेढना एं/ खेढ़दा एं	खेलते हो	सस्स–सौह्रा	सास–ससुर
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	जठानियां	जेठानियें
सिक्खनां	सीखता हूँ	पंचैरी	एक गाँव का नाम
औंदी ऐ	आती है	चंगा	अच्छा
सारें शा बड़्डा	सबसे बड़ा	सभनें शा	सबसे
लम्मी	लम्बी	इसकरी	इसलिए

टिप्पणियाँ

9.1 इस पाठ में आप डोगरी के **वर्तमान काल के क्रिया–रूपों** से परिचित हुए हैं।

9.2 डोगरी में क्रिया के वर्तमान कालिक रूप दो प्रकार से बनते हैं।

(i) **'ला' (पहन) 'पी' (पी) 'सौ' (सो) 'खड़ो' (खड़ा हो)** आदि स्वरांत धातुओं के साथ

'न्द्' प्रत्यय लगने से क्रिया का वर्तमान कलिक रूप बनता है। **'न्द्'** प्रत्यय के बाद लिंग और वचन की सूचना देने वाले प्रत्यय भी जुड़ते हैं। जैसे :–

हो	+	न्द्	+	आ	=	होंदा	'होता'	(पुलिंग एकवचन)
हो	+	न्द्	+	ए	=	होंदे	'होते'	(पुलिंग बहुवचन)
हो	+	न्द्	+	ई	=	होंदी	'होती'	(स्त्रीलिंग एकवचन)
हो	+	न्द्	+	इयां	=	होंदियां	'होतीं'	(स्त्रीलिंग बहुवचन)
पी	+	न्द्	+	आ	=	पींदा	'पीता'	(पुलिंग एकवचन)
ले	+	न्द्	+	ई	=	लेंदी	'लेती'	(स्त्रीलिंग एकवचन)
सौ	+	न्द्	+	ए	=	सौंदे	'सोते'	(पुलिंग बहुवचन)
न्हौ	+	न्द्	+	आ	=	न्हौंदा	'नहाता'	(पुलिंग एकवचन)
खा	+	न्द्	+	आ	=	खंदा	'खाता'	(पुलिंग एकवचन)
जा	+	न्द्	+	आ	=	जंदा	'जाता'	(पुलिंग एकवचन)
सी	+	न्द्	+	ई	=	सींदी	'सीती'	(स्त्रीलिंग एकवचन)

'जा' और **'खा'** धातुओं को वर्तमान कालिक रूपों में **'ज'** और **'ख'** आदेश हो जाता है। जैसे :–

जा→ ज------ जंदा, जंदे, जंदी, जंदियां में और

खा→ ख------ खंदा, खंदे, खंदी, खंदियां में

(ii) **'पढ़्', 'लिख्', 'कर्'** आदि व्यञ्जनांत धातुओं के साथ 'अद्' प्रत्यय लगने से क्रिया का वर्तमान कालिक रूप बनता है। इसके साथ भी लिंग और वचन की सूचना देने वाले प्रत्यय जुड़ते हैं। जैसे :–

पढ़्	+	अद्	+	आ	=	पढ़दा	'पढ़ता'
पढ़्	+	अद्	+	ए	=	पढ़दे	'पढ़ते'

पढ़्	+	अद्	+	इ	=	पढ़दी	'पढ़ती'
पढ़्	+	अद्	+	इयां	=	पढ़दियां	'पढ़तीं'
लिख्	+	अद्	+	आ	=	लिखदा	'लिखता'
टुर्	+	अद्	+	ए	=	टुरदे	'चलते'
कर्	+	अद्	+	ई	=	करदी	'करती'
बल्	+	अद्	+	इयां	=	बलदियां	'जलतीं'

9.3 डोगरी में वर्तमान काल के क्रियारूपों में पुरुष की सूचना योजक क्रिया **'ऐ'** **(है)** के रूपों से मिलती है। जैसे :–

(i) प्रथमपुरुष

पुलिंग

एकवचन	में जन्दा आं/जन्नां	'मैं जाता हूँ'
बहुवचन	अस जन्दे आं/ जन्नेआं	'हम जाते हैं'

स्त्रीलिंग

एकवचन	में जन्दी आं/जन्नी आं	'मैं जाती हूँ'
बहुवचन	अस जंदिया आं/जन्नियां	'हम जाती हैं'

(ii) मध्यमपुरुष

पुलिंग

एकवचन	तूं जन्दा एं/जन्नां एं	'तुम जाते हो'
बहुवचन	तुस जंदे ओ	'आप जाते हैं'

स्त्रीलिंग

एकवचन	तूं जंदी एं/जन्नी एं।	'तुम जाती हो'
बहुवचन	तुस जंदियां ओ।	'आप जाती हैं'

(iii) अन्यपुरुष

पुलिंग

एकवचन	ओह् जंदा ऐ।	'वह जाता है'
बहुवचन	ओह् जंदे न।	'वे जाते हैं

स्त्रीलिंग

एकवचन	ओह् जंदी ऐ।	'वह जाती है'
बहुवचन	ओह् जंदियां न।	'वे जाती हैं'

9.4 क्रिया के जिन वर्तमान कालिक रूपों के साथ योजक क्रिया अनुनासिक रूपों (**आं** तथा **एं**) में होती है, उन क्रिया रूपों की **'द्'** ध्वनि **न्** में परिवर्तित हो जाती है। जैसे :-

जंदा आं	=	जन्नां	'मैं जाता हूँ'
जंदी एं	=	जन्नी एं	'तुम जाती हो'
जंदे आं	=	जन्ने आं	'हम जाते हैं'
जंदियां आं	=	जन्नियां	'हम जाती हैं'
जंदी आं	=	जन्नी आं	'मैं जाती हूँ'

9.5 डोगरी में सामान्य वर्तमान काल के रूप धातु के वर्तमान कालिक रूप के साथ योजक क्रिया के योग से बनते हैं। जैसे :-

ओह् पढ़दा ऐ।	'वह पढ़ता है'
अज्ञकल बड़ी रौनक लगदी ऐ।	'आजकल बड़ी रौनक होती है ?'
भापा जी पैरें पौन्ने आं।	'भाई साहब चरण छूता हूँ।'
तुस दोऐ इक्कै थाह्‌र रौंह्‌दियां ओ।	'आप दोनों एक ही स्थान पर रहती हैं।'

9.6 डोगरी वाक्यों की संरचना में शब्दों का क्रम प्रायः इस प्रकार रहता है :-

कर्ता + कर्म + धातु का वर्तमान कालिक रूप + योजक क्रिया जैसे :-

ओह् रुट्‌टी खंदा ऐ।	'वह रोटी खाता है।'

में रुट्टी पकान्नी आं।	'मैं रोटी बनाती हूँ।'
तुस रुट्टी बंडदे ओ।	'आप खाना बाँटते हैं।'
जागत खत लिखदा ऐ।	'लड़का पत्र लिखता है।'
रमा टल्ले धोंदी ऐ।	'रमा कपड़े धोती है।'
कुड़ियां गीत गांदियां न।	'लड़कियां गीत गाती हैं।'

9.7 आदरसूचक वाक्यों में मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष एकवचन के स्थान पर बहुवचन सर्वनामों का प्रयोग होता है और क्रिया भी बहुवचन में आती है। जैसे :–

तुस रोज अखनूर जंदे ओ ?	'आप रोज अखनूर जाते हैं ?'
ओह् रोज अखनूर जंदे न।	'वे रोज अखनूर जाते हैं।'

9.8 वाक्य में नकारात्मक अव्यय **'नेईं' (नहीं)** क्रिया के वर्तमान कालिक रूप से पहले आता है और इसके आने से योजक का प्रयोग प्रायः नहीं होता। जैसे :–

नेईं जी, अस किट्ठियां नेईं रौंह्दियां।

'नहीं जी, हम इकट्ठी नहीं रहती'

भरजाई होर इत्थै नेईं लभदियां ?

'भाभी जी यहां नहीं दिखाई पड़तीं।'

9.9 **'टपदे गै' (फादते ही/ पार करते ही)** क्रियारूप वर्तमान काल में क्रिया के तत्काल होने की सूचना देता है। इसमें क्रिया के वर्तमान काल के पुलिंग बहुवचन रूप के साथ **'गै' (ही)** अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे :–

जंदे गै	'जाते ही'
पुजदे गै	'पहुँचते ही'
खंदे गै	'खाते ही'
दिखदे गै	'देखते ही'

9.10 **'आई जंदा ऐ'** **(आ जाता है)** संयुक्त क्रिया है इसमें **'आई'** **(आ)** मुख्य क्रिया है 'जंदा' (जाता) सहायक क्रिया और **'ऐ'** **(है)** योजक क्रिया।

9.11 **'कल्ल मुकल्ले'** **(बिल्कुल अकेले)** विशेषण शब्द है। यह **'कल्ले–कल्ले'** **(अकेले–अकेले)** पुनरुक्त विशेषण के बीच **'मु'** मध्य प्रत्यय के जुड़ने से बना है। जैसे :– कल्ले + मु + कल्ले = कल्लमुकल्ले

9.12 **'सारें शा'** **(सभी से)** विशेषण शब्दों के साथ उत्तम अवस्था का भाव सूचित करने के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :–

सुरिन्दर सारें शा बड्डा ऐ।	'सुरेन्द्र सबसे बड़ा है।'
चंचल सारें शा लौह्की ऐ।	'चंचल सबसे छोटी है।'

* * *

पाठ–10

दोस्तें दी गल्लबात

(दोस्तों की बातचीत)

मोहन	: तुस लोक इत्थै केह् करा करदे ओ ? केह् स्कूल नेईं जंदे ?	मोहन	: तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो ? क्या स्कूल नहीं जाते ?
सोहन	: अस सन्तोलिया खेढा करने आं।	सोहन	: हम सन्तोलिया खेल रहे हैं।
मोहन	: ओह् जागत ते स्कूल जा करदे न ते तूं इत्थै खेढा करना एं ?	मोहन	: वे लड़के तो स्कूल जा रहे हैं और तुम यहाँ खेल रहे हो ?
सोहन	: नेईं मेरा स्कूल इन्नी सबेल्ला नेईं लगदा। हूनै तोड़ी ते में मास्टर जी कशा नाच सिक्खा करदा हा।	सोहन	: नहीं मेरा स्कूल इतनी सुबह नहीं लगता। अभी तक तो मैं मास्टर जी से नृत्य सीख रहा था।
मोहन	: कदूं थमां सिक्खा करना एं ? कल–परसों थमां ?	मोहन	: कब से सीख रहे हो ? कल–परसों से ?
सोहन	: नेईं, में पिछले द'ऊं म्हीनें थमां नाच दा अभ्यास करा करनां।	सोहन	: नहीं मैं पिछले दो महीनों से नृत्य का अभ्यास कर रहा हूँ।
मोहन	: केह्ड़ा नाच ? कुड्ढ जां कोई होर ?	मोहन	: कौन सा नृत्य ? कुड्ढ या कोई दूसरा ?
सोहन	: में फु'म्मनी नाच सिक्खा करनां।	सोहन	: मैं 'फु'म्मनी' नृत्य सीख रहा हूं।
मोहन	: ते ओह् कुड़ियां केह्ड़ा नाच सिक्खा करदियां न ?	मोहन	: और वे लड़कियाँ कौन सा नृत्य सीख रही हैं ?
सोहन	: नाच ? ओह् नच्चा नेईं करदियां। ओह् ते रस्सा टप्पा करदियां न। दिक्खा नेईं करदा ?	सोहन	: नाच ? वे नृत्य नहीं कर रही हैं। वे तो रस्सा फाँद रही हैं। देख नहीं रहे हो ?

मोहन	: हूनै तगर दुए जागत बी कुड्ढ नच्चा करदे हे के नेईं ?	मोहन	: अभी तक दूसरे लड़के भी कुड्ढ नाच रहे थे या नहीं ?
सोहन	: हां–हां	सोहन	: हाँ–हाँ
दिनेश	: तुस दोऐ इत्थै केह् गल्ल करा करदे ओ ?	दिनेश	: तुम दोनों यहाँ क्या बात कर रहे हो ?
सोहन	: अस इ'यां गै गल्लां करा करने आं।	सोहन	: हम यूँ ही बातें कर रहे हैं।
मोहन	: अस नाचें दे बारे च गल्लां करा करदे हे।	मोहन	: हम नाचों के बारे में बातें कर रहे थे।
सोहन	: उस थमां पैह्लें में फु'म्मनी नाच दा अभ्यास करा करदा हा ते तूं ?	सोहन	: उसके पहले मैं फु'म्मनी नाच का अभ्यास कर रहा था और तुम ?
दिनेश	: में जागतें दी खेढ दिक्खा करदा हा।	दिनेश	: मैं लड़कों का खेल देख रहा था।
मोहन	: कु'त्थै ? नैह्रा दे कंढै ? जित्थै कुड़ियां कपड़े धोआ करदियां न।	मोहन	: कहां ? नहर के किनारे ? जहाँ लड़कियाँ कपड़े धो रही हैं ?
दिनेश	: तु'म्मी केह् आक्खा करना एं ? में उत्थै पानी भरा करदा हा।	दिनेश	: तुम भी क्या कह रहे हो ? मैं वहां पानी भर रहा था।
सोहन	: की ?	सोहन	: क्यों ?
दिनेश	: अपनियें टमाटरें दी क्यारियें लेई।	दिनेश	: अपनी टमाटरों की क्यारियों के लिए।
मोहन	: अच्छा। दोऐ कम्म कन्नै–कन्नै। टमाटरें दियें क्यारियें लेई पानी भरना ते खेढ बी दिक्खना।	मोहन	: अच्छा दोनों काम साथ–साथ। टमाटरों की क्यारियों के लिए पानी भरना और खेल भी देखना।
सोहन	: दिनेश। क्या तूं हून दकानै पर नौकरी नेईं करा करदा ?	सोहन	: दिनेश। क्या तुम अब दुकान पर नौकरी नहीं कर रहे हो ?

दिनेश	:	हां ---- हां दकानै पर बी जन्नां ते थोह्ड़ा–मता खेतीबाड़ी दा कम्म बी करनां।	दिनेश	:	हाँ ---- हाँ। दुकान पर भी जाता हूँ और थोड़ा–बहुत खेतीबाड़ी का काम भी देखता हूँ।
मोहन	:	तां फ्ही तुन्दे घर टल्ले सीने दा कम्म कु'न करा करदा ऐ ? तेरा भ्राऽ ?	मोहन	:	तो फिर तुम्हारे घर में सिलाई का काम कौन कर रहा है ? तुम्हारा भाई ?
दिनेश	:	नेईं, मेरा भ्राऽ ते कम्पोडर ऐ। भरजाई सलाई दा कम्म करदी ऐ। लौह्का भ्राऽ ते इन्जीनियरी दा कोर्स करा करदा ऐ।	दिनेश	:	नहीं, मेरा भाई तो कम्पौंडर है। भाभी सिलाई का काम करती है। छोटा भाई तो इंजीनियरिंग का कोर्स कर रहा है।
मोहन	:	तेरी लौह्की भैन मैडीकल कालज पढ़ा करदी ऐ नां ?	मोहन	:	तुम्हारी छोटी बहन मेडिकल कालेज में पढ़ रही है न ?
दिनेश	:	मेरी कोई भैन नेईं। मेरी भरजाई दी भैन मीरा मैडीकल कालज च पढ़ा करदी ऐ। गर्मियें दियां छुटिट्यां न, तां ओह् इत्थै ऐ।	दिनेश	:	मेरी कोई बहन नहीं है। भाभी जी की छोटी बहन मीरा मेडिकल कालेज में पढ़ रही है। गर्मियों की छुट्टियां हैं न, इसलिए वह यहाँ है।
मोहन	:	अच्छा। चलनां। में शैह्र जाना ऐ।	मोहन	:	अच्छा। चलता हूँ। मुझे शहर जाना है।
सोहन	:	मिम्मी स्कूल जाना ऐ।	सोहन	:	मुझे भी स्कूल जाना है।
दिनेश	:	चंगा। अस सब चलने आं।	दिनेश	:	अच्छा। हम सब चलते हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. तुस लोक इत्थै केह् करा करदे ओ ?
2. अस सन्तोलिया खेढा करने आं।

3. ओह् जागत ते स्कूल जा करदे न ते तूं इत्थै खेढा करना एं?

4. ओह् कुड़ियां केह्ड़ा नाच सिक्खा करदियां न।

5. ओह् नच्चा नेईं करदियां ओह् ते रस्सा टप्पा करदियां न।

6. तुस दोऐ इत्थै केह् गल्लां करा करदे ओ?

7. अस इ'यां गै गल्लां करा करने आं।

8. दिनेश, क्या तूं हून दकानै पर नौकरी नेईं करा करदा?

9. दकानै पर बी जन्नां ते थोह्ड़ा–मता खेतीबाड़ी दा कम्म बी करनां।

10. मेरा भ्राऽ ते कम्पोडर ऐ। भरजाई सलाई दा कम्म करदी ऐ। लौह्का भ्राऽ ते इन्जीनियरी दा कोर्स करा करदा ऐ।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)	*Model (2)*
में खेढा करनी आं।	*में पानी भरा करदा हा।*
में खेढा करना आं।	*अस पानी भरा करदे हे।*
ओह् नाच सिक्खा करदी ऐ।	जागत खेढ दिक्खा करदा हा।
कुड़ी कपड़े धोआ करदी ऐ।	ओह् नौकरी करदा ऐ।
जागत स्कूल जा करदा ऐ।	कुड़ी कपड़े सीआ करदी ऐ।
ओह् फुट्बाल खेढा करदा ऐ।	तूं गल्लां करा करना एं।
ओह् फु'म्मनी नाच सिक्खा करदा ऐ।	में ते पढ़ा करदा हा।
ओह् इन्जीनियरी दा कोर्स करा करदा ऐ।	तूं कुद्धर जा करदा हा?

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

अस सन्तोलिया खेढा करने आं।

तुस इत्थै केह् करा करदे ओ ?

1. जागत स्कूल जा करदे न।
2. में पिछले द'ऊं म्हीनें थमां नाच दा अभ्यास करा करनां।
3. में फु'म्मनी नाच सिक्खा करनां।
4. टल्ले सीने दा कम्म भरजाई करदी ऐ।
5. मीरा भरजाई दी लौह्की भैन ऐ।
6. लौह्का भ्राऽ इन्जीनियरी दा कोर्स करा करदा ऐ।
7. कुड़ियां नच्चा नेईं करदियां ओह् ते रस्सा टप्पा करदियां न।
8. अस इ'यां गै गल्लां करा करने आं।
9. में जागतें दी खेढ दिक्खा करदा हा।
10. में पानी अपनियें टमाटरें दियें क्यारियें लेई भरा करदा हा।

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

1. सोहन केहड़ा नाच सिक्खा करदा ऐ ?
2. कुड़ियां केह् करा करदियां न ?
3. टल्ले सीने दा कम्म कु'न करदा ऐ ?
4. दिनेश दा लौह्का भ्राऽ केह् करा करदा ऐ ?
5. मीरा कु'त्थै पढ़ा करदी ऐ ?
6. मीरा कु'न ऐ ?
7. दिनेश केह् कम्म–काज करदा ऐ ?

5. **कोष्ठक में दी गई क्रियाओं को उपयुक्त रूप में परिवर्तित करके रिक्त स्थान भरिए :–**

1. में .... करनां। (जाना)

2. दिनेश स्कूल .... करदा ऐ। (खेढना)

3. ओह् मास्टर जी कशा नाच .... करदा ऐ। (सिक्खना)

4. कुड़ियां रस्सा ....करदियां न। (टप्पना)

5. अस गल्लां ....करने आं। (करना)

6. जागत फु'म्मनी नाच .... करदे हे। (दिक्खना)

7. कुड़ी कपड़े .... करदी ऐ। (धोना)

6. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–**

कुड्ढ, फु'म्मनी, सन्तोलिया, सलाई, कल, सिक्खना, नाच, परसों, अभ्यास, क्यारी, खेतीबाड़ी, गल्ल, छुट्टी।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों को नकारात्मक वाक्यों में बदलिए :–

1. अस सन्तोलिया खेढा करने आं।
2. जागत स्कूल जा करदे न।
3. तूं कुड्ढ पा करना ऐ।
4. ओह् फु'म्मनी सिक्खा करदे हे।
5. ओह् फिंडगत्ता खेढा करदा ऐ।
6. अनीता पानी भरा करदी ही।
7. सीता पट्टू धोआ करदी ऐ।
8. अस सलाई सिक्खा करदियां हियां।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों का डोगरी में अनुवाद कीजिए :–

1. मैं खेल रहा हूँ।
2. हम नाच रहे थे।
3. सोहन नाच सीख रहा था।

4. दिनेश स्कूल जा रहा था।

5. लड़के जम्मू जा रहे थे।

6. वह गीत गा रहे हैं।

7. वंह सुन्दर लड़का है।

'Vocabulary' शब्दावली

खेढना	'खेलना'	गुआंढनां	पड़ोसिनें
अस	'हम'	सब्भै	सभी
सन्तोलिया	'एक लोक खेल'	जागत	'लड़का'
सबेल्ला	'जल्दी'	कुड्ढ	'डोगरलोक नाच'
फु'म्मनी	'डोगरा लोक नाच'	कुड़ियां	लड़कियाँ
रस्सा	'रस्सा'	टप्पना	'फाँदना'
शैल–शैल	'अच्छी–अच्छी'	फिंडगत्ता	'लोक खेल'
सारे	सभी	रुट्टी	'रोटी'
पट्टू	कम्बल	त्रैवै	तीनों
निक्का	छोटा	मंझला	बीच वाला
बड्डा	बड़ा	ननानां	ननदें
लौह्की	छोटी	निक्की	छोटी
दरानी	देवरानी	जठानी	जेठानी

टिप्पणियाँ

10.1 इस पाठ में आप **क्रिया के वर्तमान तथा भूतकालिक निरन्तरता सूचक रूपों** से अवगत हुए हैं। साथ ही समुदाय सूचक संख्यावाचक विशेषणों से भी परिचित हुए हैं।

10.2 डोगरी में निरन्तरता सूचक अर्थ के लिए इस प्रकार के क्रिया रूपों का प्रयोग होता है।

अस सन्तेलिया खेढा करने आं।
'हम सन्तोलिया खेल रहे हैं।'

कुड़ियां रस्सा टप्पा करदियां न।
'लड़कियां रस्सा फाँद रही हैं।'

दुए जागत बी कुड्ढ नच्चा करदे हे।
'दूसरे लड़के भी कुड्ढ नाच रहे थे।'

10.3 डोगरी में वर्तमान कालिक निरन्तरता सूचक क्रिया रूप इस प्रकार बनते हैं:-

(i) मुख्य क्रिया आकारान्त रूप में आती है, जैसे :-

करा (कर) *टप्पा (फांद)* *नच्चा (नाच)*

(ii) निरन्तरतावाचक सहायक क्रिया 'कर' वर्तमान कालिक रूपों में आती है। जैसे :-

करदा, करदे, करदी, करदियां।

(iii) काल, पुरुष आदि की सूचना के लिए योजक क्रिया 'ऐ' (है) का प्रयोग भिन्न-भिन्न कालों और पुरुषों के अनुसार होता है। जैसे :-

में खेढा करदा आं। करनां।	'में खेल रहा हूँ।'
अस खेढा करदे आं/करने आं।	'हम खेल रहे हैं'
तूं खेढा करदा एं/करना एं।	'तुम खेल रहे हो।'
तुस खेढा करदे ओ।	'आप खेल रहे हैं।'
ओह् खेढा करदा ऐ।	'वह खेल रहा है।'
ओह् खेढा करदे न।	'वे खेल रहे हैं।'

ये सभी प्रथम पुरुष, मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष के पुलिंग रूप थे। स्त्रीलिंग के रूपों के लिए **'कर'** सहायक क्रिया के रूपों में परिवर्तन होता है। बाकी मुख्य क्रिया और योजक क्रिया के रूप पुलिंग रूपों की भांति ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

में खेढा करदी आं/करनी आं।

झल्लने	झेलनी
पौनियां	पड़तीं
ओपरे	अनजान
जाइयै	जाकर
पुच्छनी	पूछनी
लेनियां	ले जानी
में	मैं
दुआइयां	दवाइयाँ
उत्थै	वहाँ
दकानां	दुकानें
ढक्किया	ढक्कियां
बड़ी	बहुत
बब्ब	बाप
छोड़ियै	छोड़कर
भैन	बहन
फ्ही	फिर
दस्सी छोड़ेओ	बता देना
लोड़दियां	चाहिए
किट्ठियां	इकट्ठीं
इन्नी	इतनी
तुन्दा	आपका
आवा करदियां	आ रहीं
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी
ठैह्रने	ठहरने
जाची लै	जांच लें
उप्पर	पर
जंदे	जाते
मन्दर	मन्दिर
तगर	तक
बडलै	सुबह
न्हेरै	अन्धेरे
रुकदी	रुकती
अद्धे	आधे
निक्के	छोटे
चंगी	अच्छी
कु'सी	किसे/किसको
बड्डी	बड़ी
सद्दी लैनी	बुला लेनी
बलाई लैनी	बुला लेनी
भजाई देना	भेज/भिजवा देना
पैह्लें	पहले
करी लेदियां	कर लीं
बड़मुल्ली	बहुमूल्य
मता	बहुत
धन्नवाद	शुक्रिया

'मैं खेल रही हूँ।'

अस खेढा करदियां आं/करनियां।

'हम खेल रही हैं।'

10.4 भूतकालिक निरन्तरता सूचक क्रिया रूप भी वर्तमान कालिक क्रियारूपों की तरह बनते हैं। केवल योजक क्रिया 'ऐ' (है) के रूप भूतकाल में प्रयुक्त हैं। जैसे :-

में नाच सिक्खा करदा हा।

'मैं नाच सीख रहा था।'

अस नाच सिक्खा करदे हे।

'हम नाच सीख रहे थे।'

ओह् रस्सा टप्पा करदी ही।

'वह रस्सा फाँद रही थी।'

ओह् रस्सा टप्पा करदियां हियां।

'वे रस्सा फाँद रही थीं।'

निरन्तरता सूचक भूतकाल के रूपों में पुरुष सूचक भेद नहीं होता।

10.5 **'दोऐ'** **(दोनों)**, **'त्रैवै'** **(तीनों)**, **'चारै'** **(चारों)** **सब्भै** **(सभी)** संख्यावाचक विशेषण हैं जो अपनी–अपनी संख्या के समुदाय की सूचना दे रहे हैं। प्रत्येक संख्या के साथ 'ऐ' प्रत्यय जुड़ने से समुदायवाचक रूप बनते हैं। जैसे :-

दो	+	ऐ	=	दोऐ	'दोनों'
त्रै	+	ऐ	=	त्रैवै	'तीनों'
चार	+	ऐ	=	चारै	'चारों'
पञ्ज	+	ऐ	=	पञ्जै	'पाँचों'

झल्लने	झेलनी	ठैह्रने	ठहरने
पौनियां	पड़तीं	जाची लै	जांच लें
ओपरे	अनजान	उप्पर	पर
जाइयै	जाकर	जंदे	जाते
पुच्छनी	पूछनी	मन्दर	मन्दिर
लेनियां	ले जानी	तगर	तक
में	मैं	बडलै	सुबह
दुआइयां	दवाइयाँ	न्हेरै	अन्धेरे
उत्थै	वहाँ	रुकदी	रुकती
दकानां	दुकानें	अद्धे	आधे
ढक्कियां	ढक्कियां	निक्के	छोटे
बड़ी	बहुत	चंगी	अच्छी
बब्ब	बाप	कु'सी	किसे/किसको
छोड़ियै	छोड़कर	बड्डी	बड़ी
भैन	बहन	सद्दी लैनी	बुला लेनी
फ्ही	फिर	बलाई लैनी	बुला लेनी
दस्सी छोड़ेओ	बता देना	भजाई देना	भेज/भिजवा देना
लोड़दियां	चाहिए	पैह्लें	पहले
किट्ठियां	इकट्ठीं	करी लेदियां	कर लीं
इन्नी	इतनी	बड़मुल्ली	बहुमूल्य
तुन्दा	आपका	मता	बहुत
आवा करदियां	आ रहीं	धन्नवाद	शुक्रिया
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी		

10.6 **'कशा'** (से) करण कारक का चिह्न् है। प्रयोग :-

कोह्दे कशा ? 'किससे'

मास्टरजी कशा 'मास्टर जी से।'

10.7 **'जां'** **(या/अथवा)** का प्रयोग दो शब्दों तथा दो वाक्यों के बीच होता है। जैसे :-

केह्ड़ा नाच कुड्ढ जां कोई होर ?

'कौन सा नाच कुड्ढ अथवा कोई दूसरा ?'

यह अव्यय दो या अधिक विकल्पों में से किसी एक की प्रस्तुति करता है। जैसे :-

सोहन जां मोहन जां दिनेश बजार जा करदा हा।

''सोहन या मोहन अथवा दिनेश बाजार जा रहा था।''

10.8 **'भरना'** **(भरना)**, **'दिक्खना'** **(देखना)** आदि क्रिया के संज्ञार्थक रूप हैं। ये संज्ञाओं की भाँति प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

दोऐ कम्म कन्नै-कन्नै। पानी भरना ते खेढ बी दिक्खना।

''दोनों काम साथ-साथ। पानी भरना और खेल भी देखना।''

***

झल्लने	झेलनी	ठैह्रने	ठहरने
पौनियां	पड़तीं	जाची लै	जांच लें
ओपरे	अनजान	उप्पर	पर
जाइयै	जाकर	जंदे	जाते
पुच्छनी	पूछनी	मन्दर	मन्दिर
लेनियां	ले जानी	तगर	तक
में	मैं	बडलै	सुबह
दुआइयां	दवाइयाँ	न्हेरै	अन्धेरे
उत्थै	वहाँ	रुकदी	रुकती
दकानां	दुकानें	अद्धे	आधे
ढक्कियां	ढक्कियां	निक्के	छोटे
बड़ी	बहुत	चंगी	अच्छी
बब्ब	बाप	कु'सी	किसे/किसको
छोड़ियै	छोड़कर	बड्डी	बड़ी
भैन	बहन	सद्दी लैनी	बुला लेनी
फ्ही	फिर	बलाई लैनी	बुला लेनी
दस्सी छोड़ेओ	बता देना	भजाई देना	भेज/भिजवा देना
लोड़दियां	चाहिए	पैह्लें	पहले
किट्ठियां	इकट्ठीं	करी लेदियां	कर लीं
इन्नी	इतनी	बड़मुल्ली	बहुमूल्य
तुन्दा	आपका	मता	बहुत
आवा करदियां	आ रहीं	धन्नवाद	शुक्रिया
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी		

पाठ—11
पिकनिक बारै
(पिकनिक के बारे में)

मून	: केह् तूं कल स्कूल औगा ?	मून	: क्या तू कल स्कूल आएगा ?
सेतु	: नेईं, कल ते छुट्टी ऐ।	सैतु	: नहीं, कल तो छुट्टी है।
मून	: मेरा मतलब हा परसों। पिकनिक आह्ले दिन ?	मून	: मेरा मतलब था परसों। पिकनिक वाले दिन ?
सेतु	: पिकनिक आस्तै ते में जरूर औङ।	सेतु	: पिकनिक के लिए तो मैं जरूर आऊँगा।
मून	: रज्जू, तु'म्मी औगी जां नेईं ?	मून	: रज्जू, तू भी आएगी या नहीं ?
रज्जू	: में किश जरूरी कम्म करना ऐ, पर औने दी कोशश करङ। तुस सब जा करदे ओ नां ?	रज्जू	: मुझे कुछ जरूरी काम करना है, परन्तु आने की कोशिश करुँगी। क्या आप सब जा रहे हैं न ?
मून	: पक्का। अस सब जाह्गे। सन्नी ते हनी बी औङन।	मून	: जरूर। हम सब जाएँगे। सन्नी और हनी भी आएँगी।
सेतु	: परसों इसलै किन्ना मजा होग !	सेतु	: परसों इस बक्त कितना मजा होगा !
मून	: हां—हां। अस सारे जा करदे होगे। गाने बी गा करदे होगे। भांत—सभांते द्रिश्श बी दिक्खा करदे होगे।	मून	: हा हां। हम सब जा रहे होंगे। गाने भी गा रहे होंगे। तरह—तरह के दृष्य भी देख रहे होंगे।
रज्जू	: तूं हूनै गै सुखने लैन लगेआ एं ?	रज्जू	: तुम अभी से सपने लेने लगे हो ?
मून	: हां—हां। सुखने केह् ओह् ते सच्च गै होग।	मून	: हा—हां सपने क्या वह तो सचाई ही होगी।
सेतु	: दस्स भला, में इसलै केह् सोचा करदा होङ ?	सेतु	: जरा बताओ, मैं अब क्या सोच रहा हूँगा ?

टिप्पणियाँ

15.1 इस पाठ में आपने **'चहिदा'** **(चाहिए)** और **'पौना'** **(पड़ना)** सहायक क्रियाओं के प्रयोग
परिचय किया है।

15.2 डोगरी में **'चाहिदा'** सहायक क्रिया संज्ञार्थक रूपों वाली मुख्य क्रियाओं के साथ प्रयुक्त हो
है और 'पौना' सहायक क्रिया संज्ञार्थक रूपों वाली मुख्य क्रिया तथा ईकारान्त मुख्य क्रि
के साथ प्रयुक्त होती है। जैसे :–

जाना चाहिदा ऐ।	'जाना चाहिए'
लिखना चाहिदा हा।	'लिखना चाहिए था'
जाना पेआ।	'जाना पड़ा'
जाना पौग।	'जाना पड़ेगा।'
रोई पेआ।	'रो पड़ा'

15.3 **'चाहिदा'** सहायक क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के स
आती है और इसके वाक्यों का कर्ता कर्म कारक में आता है। जैसे :–

असें गी कु'त्थै जाना चाहिदा ऐ?	'हमें कहाँ जाना चाहिए?'
तुगी पढ़ना चाहिदा ऐ।	'तुम्हे पढ़ना चाहिए।'
मिगी कपड़े धोने चाहिदे न।	'मुझे कपड़े धोने चाहिएँ।'

15.4 अकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ **'चाहिदा'** सहायक क्रिया पुलिंग एकवचन में ही रह
है। जैसे :–

दस्सो हां कु'स–केह्ड़े थाह्र जाना चाहिदा ऐ?

'बताइए कौन से स्थान पर जाना चाहिए?'

हूनै तगर उसी पुज्जना चाहिदा हा।

'अब तक उसे पहुँचना चाहिए था।'

रज्झू : एह् ते साफ ऐ। पिकनिक च केह्–केह् चीजां खाने गी थ्होङन उसदे बारे च गै तूं सोचा करदा होगा।

सेतु : झूठ। में ते खाने दे बारे च नेईं सोचा करदा। में सोचा करदा हा जे उत्थै झीला दे कंढै टुरने च किन्ना मजा औग ?

मून : में ते छड़ा कंढे पर टुरने कन्नै गै संतुश्ट नेईं होई जाङ। में ते झीला च तरना ऐ।

रज्झू : तूं ते बड़ा शरारती एं। मास्टर जी तुगी कदें तरन नेईं देङन। हून तूं एह् दस्स जे में इसलै पिकनिक उप्पर केह् करा करदी होगी ?

सेतु : एह् दस्सना ते औक्खी गल्ल नेईं।

रज्जू : फ्ही बी जरा दस्स ते सेही।

मून : तूं ते अनु, हनी, तारा ते बाकी कुड़ियें कन्नै रलियै नच्चा–गा करदी होगी।

रज्झू : तुस लोक केह् आखा करदे ओ ? कुड़ियां सिर्फ नच्चने–गाने आस्तै गै न ?

मून : तां दस्स तूं उत्थै केह् करदी होगी ?

रज्झू : बड़ा किश करङ। झीला च पानी पीन मते हारे पैंछी औने न नां,

रज्झू : यह तो साफ है। पिकनिक में क्या–क्या चीजें खाने के लिए मिलेंगी, उसके बारे में ही तुम सोच रहे होंगे।

सेतु : झूठ। मैं तो खाने के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। मैं सोच रहा था कि वहाँ झील के किनारे चलने में कितना आनन्द आएगा ?

मून : मैं तो सिर्फ किनारे पर चलने से ही तृप्त नहीं हूँगा। मैंने तो झील में तैरना है।

रज्झू : तुम तो बहुत शरारती हो। मास्टर जी तुम्हें कभी तैरने नहीं देंगे। अब तुम बोलो कि मैं इस समय पिकनिक पर क्या कर रही हूँगी ?

सेतु : यह कहना तो मुश्किल बात नहीं है।

रज्जू : फिर भी जरा बताओ न।

मून : तुम तो अनु, हनी, तारा और अन्य लड़कियों के साथ मिल नाच–गा रही होगी।

रज्झू : तुम लोग क्या कह रहे हो ? लड़कियां सिर्फ नाच–गाने के लिए ही हैं ?

मून : तब बतलाओ तुम वहाँ क्या करती होगी ?

रज्झू : बहुत कुछ करूँगी। झील में पानी पीने के लिए बहुत सारे पक्षी

रोज बमार रौंह्दे ओ कुसै डाक्टरै गी दस्सना ते चाहिदा ऐ।

'रोज बीमार रहते हो किसी डाक्टर को दिखाना तो चाहिए।'

.5.5 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ जब **'चाहिदा'** सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

पर्यटन विभाग दे कन्नै रावता करी लैना चाहिदा हा।

'पर्यटन विभाग के साथ सम्पर्क कर लेना चाहिए था।'

किश्तवाड़ ते भद्रवाह जनेह् थाह्‌र जरूर दिक्खने चाहिदे न।

'किश्तवाड़ और भद्रवाह जैसे स्थान जरूर देखने चाहिएँ।'

ठैह्‌रने दी थाह्‌र बी दिक्खी-सुनी लैनी चाहिदी ऐ।

'ठहरने की जगह भी देख-सुन लेनी चाहिए।'

सफर पर अपनी जरूरतै दियां चीजां गै लेनियां चाहिदियां न।

'सफर पर अपनी जरूरत की चीज़ें ही लेनी चाहिएँ।'

15.6 **'चाहिदा'** क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई **'संज्ञा'** होती है तो **'चाहिदा'** के रूप संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

दुआइयां चाहिदियां होंङन तां लब्भी जाङन।

'दवाइयें चाहिएँ (होंगी) तो मिल जाएँगी।'

कैमरा चाहिदा होग तां दस्सेओ।

'कैमरा चाहिए (होगा) तो कहिएगा।'

मिगी पैसे चाहिदे न।

'मुझे पैसे चाहिएँ।'

उसी कताब चाहिदी ऐ।

'उसे पुस्तक चाहिए।'

रोज बमार रौंह्दे ओ कुसै डाक्टरै गी दस्सना ते चाहिदा ऐ।

'रोज बीमार रहते हो किसी डाक्टर को दिखाना तो चाहिए।'

.5.5 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ जब **'चाहिदा'** सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :–

पर्यटन विभाग दे कन्नै रावता करी लैना चाहिदा हा।

'पर्यटन विभाग के साथ सम्पर्क कर लेना चाहिए था।'

किश्तवाड़ ते भद्रवाह जनेह् थाह्र जरूर दिक्खने चाहिदे न।

'किश्तवाड़ और भद्रवाह जैसे स्थान जरूर देखने चाहिएँ।'

ठैह्‌रने दी थाह्र बी दिक्खी–सुनी लैनी चाहिदी ऐ।

'ठहरने की जगह भी देख–सुन लेनी चाहिए।'

सफर पर अपनी जरूरतै दियां चीजां गै लेनियां चाहिदियां न।

'सफर पर अपनी जरूरत की चीज़ें ही लेनी चाहिएँ।'

15.6 **'चाहिदा'** क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई **'संज्ञा'** होती है तो **'चाहिदा'** के रूप संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :–

दुआइयां चाहिदियां होंङन तां लब्भी जाङन।

'दवाइयें चाहिएँ (होंगी) तो मिल जाएँगी।'

कैमरा चाहिदा होग तां दस्सेओ।

'कैमरा चाहिए (होगा) तो कहिएगा।'

मिगी पैसे चाहिदे न।

'मुझे पैसे चाहिएँ।'

उसी कताब चाहिदी ऐ।

'उसे पुस्तक चाहिए।'

उन्दे फंघ झीला दे कंढै चबक्खै
खिल्लरे दे होने न।
में उ'नेंगी किट्ठा करना चाहूङ।

सेतु : सिर्फ इन्ना गै ? किश खागी
नेईं ? गागी नेईं ? नचगी नेईं ?

रज्जू : खाना, गाना ते होग गै पर नच्चङ
नेईं। नच्चने च मिगी दिलचस्पी
नेईं। फंघ किट्ठे करने दे इलावा
में बक्ख–बक्ख रंगें दे पत्तर बी
किट्ठे करना चाहूङ।

मून : मेरा बी इक प्रोग्राम ऐ।

सेतु : केह् ओह् बड्डा प्रोग्राम ऐ ?
मिगी बी कन्नै रखगा नां ?

मून : जरूर। अस दोऐ परसों इसलै
मच्छियें गी आटा पा करदे होगे।
तदूं आटा खाने आस्तै खचोपड़
बी आवा करदे होङन। तां में उन्दा
सभनें दा फोटू खिच्चना चाहूङ। में
अपने भापे दा कैमरा लेई चलङ।

रज्जू : तां तूं पैछियें दे फोटो बी जरूर खिचगा।

सेतु : अच्छा हून ते अस पिकनिक दा
प्रोग्राम बना करने आं पर परसों
अस पिकनिक दियां असली गल्लां
करा करदे होगे।

आएंगे न, उनके पंख चारों ओर
झील के किनारे बिखरे होंगे।
मैं उन्हें इकट्ठा करना चाहूँगी।

सेतु : सिर्फ इतना ही ? कुछ खाओगी
नहीं ? गाओगी नहीं, नाचोगी नहीं ?

रज्जू : खाना–खाना तो होगा पर नाचूंगी
नहीं। नाचने में मेरी दिलचस्पी
नहीं है। पंख इकट्ठे करने के
इलावा मैं भिन्न–भिन्न रंग के पत्ते
भी इकट्ठे करना चाहूँगी।

मून : मेरा भी एक कार्यक्रम है।

सेतु : क्या वह बड़ा कार्यक्रम है ?
मुझे भी साथ रखोगे नां ?

मून : जरूर। हम दोनों परसों इस वक्त
मछलियों को आटा डाल रहे होंगे।
तब आटा खाने के लिए कछुए भी
आ रहे होंगे। तब मैं उन सबका
फोटो लेना चाहूँगा। मैं अपने भैया
का कैमरा ले चलूँगा।

रज्जू : तब तुम पक्षियों के फोटो भी ज़रूर लोगे।

सेतु : अच्छा। अब तो हम पिकनिक की
योजना बना रहे हैं, पर परसों हम
पिकनिक की असली बातें कर रहे
होंगे।

15.7 डोगरी में **'चाहिए'** के अर्थ में **'चाहिदा'** के सादृश्य पर **'लोड़दा'** प्रयोग भी होत
जैसे :–

असेंगी कु'नें गल्लें दा ध्यान रक्खना लोड़दा ऐ ?

'हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?'

जे किश लोड़दा होग जरूर दस्सेओ।

'जो कुछ चाहिए (होगा) जरूर बतलाइएगा।'

15.8 **'चाहिदा'** वाले वाक्यों में काल और अर्थ संबन्धी सूचना योजक क्रिया के रूपों से होत
जैसे :–

चाहिदा ऐ	'चाहिए'	चाहिदा होग	'चाहिए होगा'
चाहिदा हा	'चाहिए था'	चाहिदा होऐ	'चाहिए हो।'

15.9 **'पौना'** सहायक क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ
है। अकर्मक क्रियाओं के साथ दो रूपों में प्रयुक्त होती है।

(i) संज्ञार्थक रूपों के साथ

(ii) ईकारान्त रूपों के साथ

15.9.1 संज्ञार्थक रूपों के साथ यह पुलिंग एक वचन में आती है और वाक्य का कर्ता कर्म व
में होता है। जैसे :–

उ'नें गी टुरना पेआ।	'उन्हें चलना पड़ा।'
जागतै गी पढ़ना पौग।	'लड़के को पढ़ना पड़ेगा (होगा)'
उसी नच्चना पेआ।	'उसे नाचना पड़ा।'

15.9.2 सकर्मक क्रियाओं के ईकारान्त रूपों के साथ **'पौना'** सहायक के रूप वाक्य के क
लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। जैसे :–

में हस्सी पेआ।	'मैं हँस पड़ा।'

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

   1. कल तूं स्कूल औगा ?
   2. नेईं, कल ते छुट्टी ऐ।
   3. पिकनिक आस्तै ते में जरूर औङ।
   4. रज्जू, तु'म्मी औगी जां नेईं ?
   5. परसों इसलै किन्ना मजा होग !
   6. अस सारे जा करदे होगे। गाने बी गा करदे होगे। भांन्त–सभांते द्रिश्श बी दिक्खा करदे होगे।
   7. पिकनिक च केह्–केह् चीजां खाने गी थ्होङन ?
   8. में ते खाने दे बारे च नेईं सोचा करदा। में सोचा करदा हा जे उत्थै झीला दे कंढै टुरने च किन्ना मजा औग ?
   9. तूं ते बड़ा शरारती एं, मास्टर जी तुगी कदें तरन, नेईं देङन।
   10. अस दोऐ परसों इसलै झीलै च मच्छियें गी आटा पा करदे होगे।
   11. तां तूं पैंछियें दे फोटो बी जरूर खिचगा।
   12. अच्छा हून ते अस पिकनिक दा प्रोग्राम बना करने आं पर परसों अस पिकनिक दियां असली गल्लां करा करदे होगे।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)		*Model (2)*	
तूं कल स्कूल औगा।	(जाना)	तूं कल स्कूल औगी।	(जाना)
तूं कल स्कूल जागा।		तूं कल स्कूल जागी।	
	(पढ़ना)		(पढ़ना)
	(होना)		(होना)
	(बौह्ना)		(बौह्ना)

अस हस्सी पे।	'हम हँस पड़े।'
ओह् हस्सी पेई।	'वह हँस पड़ी।'
में हस्सी पौन्नी आं।	'मैं हँस पड़ती हूँ।'
तुस हस्सी पवो।	'आप हँस पड़ें।'
तूं हस्सी पौगी।	'तुम हँस पड़ोगी।'

15.10 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ 'पौना' सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे :–

रातीं लै स्वैटर ते तुसें लाना गै पौना ऐ।

'रात को स्वेटर तो आपको पहनना ही पड़ेगा।'

गर्म कपड़े ते लेने गै पौने न।

'गर्म कपड़े तो ले जाने ही पड़ेंगे।'

रस्ते च इक प्हाड़ी बी चढ़नी पौनी ऐ।

'रास्ते में एक पहाड़ी भी चढ़नी पड़ेगी।'

बत्तै दियां मुश्कलां बी झल्लनियां पौनियां न।

'रास्ते की मुश्किलें भी झेलनी पड़ेंगी।'

15.11 **'पौना'** क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई संज्ञा आती है तो **'पौना'** सहायक के रूप उस संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :–

परूं मती ठंड पेई ही।	'पिछले वर्ष अधिक ठंड पड़ी थी।'
ऐतकी मती गर्मी पेई ऐ।	'इस साल अधिक गर्मी पड़ी है।'
चार साल पैह्‌ले काल पेआ हा।	'चार वर्ष पूर्व अकाल पड़ा था।'
उसी कल मार पेई ही।	'उसे कल मार पड़ी थी।'

Model (3)

तुस कल नचगे। (पढ़ना)

(टुरना)

(लड़भना)

Model (4)

तुस कल नचगियां। (पढ़ना)

(टुरना)

(लड़भना)

Model (5)

ओह् नच्चग। (दौड़ना)

ओह् दौड़ग।

(हस्सना)

(राह्ना)

(धोना)

Model (6)

ओह् नचङन। (दौड़ना)

ओह् दौड़ङन।

(हस्सना)

(राह्ना)

(धोना)

Model (7)

में औङ। (पढ़ना)

में पढ़ङ।

(लिखना)

(तैरना)

(उट्ठना)

अस नचगे। (टुरना)

अस टुरगे। (दौड़ना)

(न्हौना)

(नच्चना)

Model (8)

में औङ। (पढ़ना)

में पढ़ङ।

(लिखना)

(तैरना)

(उट्ठना)

अस नचगियां। (टुरना)

अस टुरगियां। (दौड़ना)

(न्हौना)

(नच्चना)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)

में जा करना आं।

में जा करदा होङ।

Model (2)

अस पढ़ा करने आं।

अस पढ़ा करदे होगे।

15.12 **'पौना'** सहायक क्रिया के साथ मुख्य क्रिया का संज्ञार्थक रूप **'आकारान्त'** के अतिरिक्त **'एकारान्त'** या **'ऐकारान्त'** भी होता है। जैसे :–

मिगी सफर पैदल तैह् करने पौना ऐ।

'मुझे सफर पैदल तय करना पड़ेगा (होगा)'

उसी ढक्की ढलने / ढलनै पौनी ऐ।

'उसे ढक्की उतरना पड़ेगी (होगी)'

मिगी कल उत्थै जाने / जानै पेआ।

'मुझे कल वहाँ जाना पड़ा।'



झल्लने	झेलनी	ठैह्रने	ठहरने
पौनियां	पड़तीं	जाची लै	जांच लें
ओपरे	अनजान	उप्पर	पर
जाइयै	जाकर	जंदे	जाते
पुच्छनी	पूछनी	मन्दर	मन्दिर
लेनियां	ले जानी	तगर	तक
में	मैं	बडलै	सुबह
दुआइयां	दवाइयाँ	न्हेरै	अन्धेरे
उत्थै	वहाँ	रुकदी	रुकती
दकानां	दुकानें	अद्धे	आधे
ढक्किया	ढक्कियां	निक्के	छोटे
बड़ी	बहुत	चंगी	अच्छी
बब्ब	बाप	कु'सी	किसे/किसको
छोड़ियै	छोड़कर	बड्डी	बड़ी
भैन	बहन	सद्दी लैनी	बुला लेनी
फ्ही	फिर	बलाई लैनी	बुला लेनी
दस्सी छोड़ेओ	बता देना	भजाई देना	भेज/भिजवा देना
लोड़दियां	चाहिए	पैह्लें	पहले
किट्ठियां	इकट्ठीं	करी लेदियां	कर लीं
इन्नी	इतनी	बड़मुल्ली	बहुमूल्य
तुन्दा	आपका	मता	बहुत
आवा करदियां	आ रहीं	धन्नवाद	शुक्रिया
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी		

झल्लने	झेलनी	ठैह्‌रने	ठहरने
पौनियां	पड़तीं	जाची लै	जांच लें
ओपरे	अनजान	उप्पर	पर
जाइयै	जाकर	जंदे	जाते
पुच्छनी	पूछनी	मन्दर	मन्दिर
लेनियां	ले जानी	तगर	तक
में	मैं	बडलै	सुबह
दुआइयां	दवाइयाँ	न्हेरै	अन्धेरे
उत्थै	वहाँ	रुकदी	रुकती
दकानां	दुकानें	अद्‌धे	आधे
ढक्किया	ढक्कियां	निक्के	छोटे
बड़ी	बहुत	चंगी	अच्छी
बब्ब	बाप	कु'सी	किसे/किसको
छोड़ियै	छोड़कर	बड्‌डी	बड़ी
भैन	बहन	सद्‌दी लैनी	बुला लेनी
फ्ही	फिर	बलाई लैनी	बुला लेनी
दस्सी छोड़ेओ	बता देना	भजाई देना	भेज/भिजवा देना
लोड़दियां	चाहिए	पैह्‌लें	पहले
किट्‌ठियां	इकट्‌ठीं	करी लेदियां	कर लीं
इन्नी	इतनी	बड़मुल्ली	बहुमूल्य
तुन्दा	आपका	मता	बहुत
आवा करदियां	आ रहीं	धन्नवाद	शुक्रिया
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी		

मोहन खेढा करदा ऐ।

मून लिखा करदा ऐ।

तूं आवा करना एं।

तूं हस्सा करना एं।

ओह् खेढा करदे न।

ओह् दौड़ा करदे न।

तुस नच्चा करदे ओ।

तुस गा करदे ओ।

Model (3)

में लिखा करनी आं।

में लिखा करदी होङ।

ओह् गा करदी ऐ।

ओह् खेढा करदी ऐ।

तूं पानी भरा करनी एं।

तूं कपड़े सीआ करनी एं।

Model (4)

अस बुना करनियां आं।

अस बुना करदियां होगियां।

ओह् पढ़ा करदियां न।

ओह् लिखा करदियां न।

तुस कपड़े धोआ करदियां ओ।

तुस पानी पीआ करदियां ओ।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

1. मून पिकनिक पर जाइयै केह्–केह् करना चांह्दा ऐ?
2. रज्जू पिकनिक पर नच्चग की नेईं?
3. मास्टर जी मून गी झीलै च तरन की नेईं देङन?
4. किन्ने बच्चे पिकनिक पर जाने दा प्रोग्राम बना करदे न?
5. झीलै दे केह्ड़े जीव–जन्तु बच्चें दे आकर्शन दा खास केन्द्र न?

5. कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के निरन्तरता सूचक रूप बनाकर रिक्त स्थान भरिए :–

1. तुस सब .... । (जाना)
2. अस सारे .... । (खाना)
3. भांन्त–सभांते द्रिश्श बी .... । (दिक्खना)

5. प्रिया ने सोनू गी केह् करने आस्तै आखेआ ?

6. गर्मी च ओह्दा बुरा हाल कि'यां होआ ?

7. दफ्तर केह् करदे थक्की जान होंदा ऐ ?

8. छुट्टी आह्ले दिन केह् करदे टैमा दा पता नेईं चलदा ?

४. निम्नलिखित कृदन्तों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–

बनांदे–बनांदे,	खपदे–खपदे,	ढोंदे–ढोंदे,	पकांदे–पकांदे,
डुबदे–डुबदे,	खेढी–खाढियै,	चढ़दे–उतरदे,	नचदे–टपदे,
लिखदे–पढ़दे,	पुछदी–पछांदी,	खाई–खाइयै,	चली–चलियै,
न्हाई–न्हूई,	दिक्खी–सुनी,	खाई–पी,	लेटे–लेटे,
सुत्ते–बैठे,	बैठे–बैठे,		

Vocabulary **शब्दावली**

बनांदे–बनांदे	बनाते–बनाते	खपदे–खपदे	खपते–खपते
ढोंदे–ढोंदे	ढोते–ढोते	पकांदे–पकांदे	पकाते–पकाते
खंदे–खंदे	खाते–खाते	डुबदे–डुबदे	डूबते–डूबते
करदे–करदे	करते–करते	खेढी–खाढियै	खेल–कूद कर
नचदे–टपदे	नाचते–कूदते	चढ़दे–उतरदे	चढ़ते–उतरते
लिखदे–पढ़दे	लिखते–पढ़ते	पुछदी–पछांदी	पूछते–पूछते
खाई–खाइयै	खा–खाकर	चली–चलियै	चल–चलकर
न्हाई–न्हूई	नहा–वहा	दिक्खी–सुनी	देख–सुन
खाई–पी	खा–पीकर	बैठे–बैठे	बैठे–बैठे

लेटे–लेटे	लेटे–लेटे	इक्कली	अकेली
पुज्जी	पहुँची	बजारा	बाज़ार से
अज्ज	आज	मुन्नन	मुंडन संस्कार
आह्‌ले	वाले	तौले	जलदी
थक्की	थकी	कु'त्थै	कहाँ
सेई	सो	जन्ने आं	जाते हैं
परसा	पसीना	थुआढ़े	आपके।
पौड़ियां	सीढ़ियाँ		

टिप्पणियाँ

16.1 इस पाठ में आप **पुनरुक्त क्रियाओं तथा क्रियाओं के कर्तावाचक** रूपों से अवगत हुए हैं।

16.2 डोगरी में पुनरुक्त क्रियाओं का प्रयोग अधिकतर वर्तमान कालिक और भूतकालिक क्रिया–रूपों की पुनरुक्ति से होता है। जैसे :–

बनांदे–बनांदे	'बनाते–बनाते'
खन्दे–खन्दे	'खाते–खाते'
बैठे–बैठे	'बैठे–बैठे'
खड़ोते–खड़ोते	'खड़े–खड़े'
नचदे–टपदे	'नाचते–कूदते'
फिरी–फिरियै	'फिर–फिर कर'

16.3 वर्तमान कालिक क्रिया–रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं प्रायः दो रूपों में मिलती है :

(i) समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

(ii) भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

16.4 दो समान क्रियाओं से वर्तमान कालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी **'पुनरुक्त क्रियाएं'** हैं :

मकान बनांदे–बनांदे साल होई गेआ ऐ।

'मकान बनाते–बनाते साल बीत गया है।'

फुल्के पकांदे–पकांदे परसा आई गेआ ऐ।

'रोटियाँ बनाते–बनाते पसीना आ गया है।'

सारा दिन मजूरें कन्नै खपदे–खपदे ते समान ढोंदे–ढोंदे थक्की गे आं।

'दिन भर मजदूरों से खपते–खपते और समान ढोते–ढोते थक गए हैं।'

यह सभी पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आने के कारण अविकारी रूप में हैं और कार्य की निरन्तरता सूचित करते हुए क्रिया विशेषण का काम कर रही हैं।

16.5 वर्तमान कालिक क्रियाओं के ये पुनरुक्त रूप वाक्य के कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे :–

ओह् रुट्टी खा करदी ही खंदी–खंदी गै सेई गेई।

'वह खाना खा रही थी खाती–खाती ही सो गेई।'

ओह्दियां स्हेलियां घर पुछदियां–पुछदियां आई गेइयां।

'उसकी सहेलियें घर पूछती–पूछती आ गईं।'

ञ्याणा रोंदा–रोंदा सेई गेआ।

'बच्चा रोता–रोता सो गया।'

16.6 दो भिन्न–भिन्न क्रियाओं के वर्तमान कालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी 'पुनरुक्त क्रियाएं' इस प्रकार हैं :–

बच्चे सारा दिन नचदे–टपदे रौंह्दे न।

'बच्चे सारा दिन नाचते–कूदते रहते हैं।'

पैह्ले रुट्टी खाई लैओ ते फ्ही लिखदे–पढ़दे र'वेओ।

'पहले खाना खा लें फिर बाद में लिखते–पढ़ते रहें।'

इन दोनों उदाहरणों की पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के पुलिंग–बहुवचनी रूप के अनुसार पुलिंग बहुवचन में ही हैं। इसके साथ ही ये 'एकारान्त' रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :–

कुड़ी नचदे–टपदे डिग्गी पेई।

'लड़की नाचते–कूदते गिर पड़ी।'

कुड़ियां लिखदे–पढ़दे थक्की गेइयां।

'लड़कियाँ लिखते–पढ़ते थक गईं।'

नौकर नचदे–टपदे डिग्गी पेआ।

'नौकर नाचते–कूदते गिर पड़ा।'

16.7 भूतकालिक क्रिया–रूपों से पुनरुक्त क्रियाएं भी दो प्रकार की होती हैं :–

(i) समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

(ii) भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

16.8 दो समान भूतकालिक क्रिया रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं

बैठे–बैठे किश चिर गै होई गेआ।

'बैठे–बैठे कुछ देर ही हो गई।'

खरा। लेटे–लेटे अखबार गै पढ़ी लैन्नां।

'चलो। लेटे–लेटे अखबार ही पढ़ लेता हूँ।'

इन वाक्यों में भूतकालिक पुनरुक्त रूप क्रिया की स्थिति सूचित कर रहे हैं और 'एकारान्त' रूप में होने के कारण कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार नहीं है। किन्तु ये वाक्य के कर्ता के अनुसार रूप ग्रहण करते हुए भी क्रिया विशेषणों का कार्य करते

हैं। जैसे :–

ओह् बैठा–बैठा अखबार पढ़दा रेहा।

'वह बैठा–बैठा अखबार पढ़ता रहा।'

शीला लेटी–लेटी टी. वी. दिक्खा करदी ही।

'शीला लेटी–लेटी टी. वी. देख रही थी।'

16.9 दो भिन्न–भिन्न क्रियाओं के भूतकालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी पुनरुक्त क्रियाएं हैं :–

तूं सुत्ती–बैठी केह् सोचदी रौह्न्नी एं?

'तुम सोई–बैठी क्या सोचती रहती हो?'

ओह् बैठा–खड़ोता इक्कै गल्ल करदा रौंह्दा ऐ।

'वह बैठा–खड़ा एक ही बात करता रहता है।'

ऊपर दिए गए वाक्यों में पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के लिंग, वचन अनुसार हैं और क्रिया विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त हैं। यही पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :–

तूं सुत्ते–बैठे केह् सोचदी रौह्न्नी एं?

'तुम सोए–बैठे क्या सोचती रहती हो?'

ओह् बैठे–खड़ोते इक्कै गल्ल करदा रौंह्दा ऐ।

'वह बैठे–खड़े एक ही बात करता रहता है।'

16.10 पूर्व कालिक क्रिया रूपों की पुनरुक्ति से भी पुनरुक्त क्रियाएं बनती हैं और ऐसी पुनरुक्त क्रियाएं एक ही रूप में रहती हैं। जैसे :–

ञ्याणे खेढी–खेढियै सेई जंदे न।

'बच्चे खेल–खेल कर सो जाते हैं।'

फिरी–फिरियै मेरा हाल बुरा होई गेआ ऐ।

'फिर–फिर कर मेरा हाल बुरा हो गया है।'

इन वाक्यों में 'खेढी–खेढियै' और 'फिरी–फिरियै' पूर्व कालिक क्रिया रूपों की क्रमशः 'खेढियै' और 'फिरियै' के पुनरुक्त रूप है। इन पुनरुक्ति रूपों में संक्षेपीकरण की प्रवृत्ति रहती है इसीलिए 'फिरियै–फिरियै' के स्थान पर 'फिरी–फिरियै' और 'खेढियै–खेढियै' के स्थान पर 'खेढी–खेढियै' रूप प्रयुक्त होते है।

16.11 नच्चने आह्ली — 'नाचने वाली'

गाने आह्लियां — 'गाने वाली'

खाने आह्ले — 'खाने वाले'

रुट्टी बनाने आह्ला — 'रोटी बनाने वाला'

क्रियाओं के कर्ता वाचक रूप हैं। ये संज्ञार्थक क्रियाओं को अन्त में **'आ'** के स्थान पर **'ए'** आदेश करके साथ में **'आह्ला' (वाला)** लगाने से बने हैं और जिस क्रिया से बनते हैं उसके कर्ता के अर्थ का भाव प्रकट करते हैं।

16.12 क्रियाओं के कर्तावाचक रूप संज्ञा और विशेषण दो रूपों में प्रयुक्त होते हैं।

(i) संज्ञा के रूप में

चार गाने आह्लियां सद्दी दियां न।

'चार गाने वाली बुलाई हुई हैं।'

रुट्टी बनाने आह्ले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(ii) विशेषण के रूप में

ओह् गाने आह्लियां कुड़ियां कु'न हियां ?

'वे गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

रुट्टी बनाने आह्ला लुहाई इत्थूं दा हा ?

'रोटी बनाने वाला हलवाई यहाँ का था ?'

16.13 **'गाने आह्लियां'** शब्द वाक्य में जब संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होता तो संज्ञा की भूमिका निभाता है और यदि इसके साथ आगे कोई संज्ञा (जैसे कुड़ियां) जुड़ जाती है तो यह उस संज्ञा की विशेषता बतलाने के कारण विशेषण का काम करता है। जैसे गाने आह्लियां कुड़ियां (गाने वाली लड़कियाँ)

16.14 कर्तवाचक क्रिया–रूप संज्ञा और विशेषण दोनों रूपों में कर्ता के लिंग, वचन कारक, के अनुसार रहते हैं। जैसे :–

(i) संज्ञा रूप में

पुलिंग

एकवचन रुट्टी बनाने आह्ले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(कर्ता कारक विभक्ति युक्त)

बहुवचन खाने आह्ले सारे गै तरीफ करा करदे हे।

'खाने वाले सभी तारीफ कर रहे थे।'

(कर्ता कारक सरल)

स्त्रीलिंग

एकवचन इक नच्चने आह्ली सद्दी दी ही। (कर्म कारक सरल)

'एक नाचने वाली बुलाई (हुई) थी।'

बहुवचन चार गाने आह्लियां बी सद्दी दियां हियां। (कर्म कारक सरल)

'चार गाने वाली भी बुलाई (हुई) थीं।'

संज्ञा के रूप में आने पर इन कर्तावाचक रूपों में कारक के लिए भी परिवर्तन होता है।

(ii) विशेषण के रूप में

पुलिंग

एकवचन	रुट्टी बनाने आह्ला लुहाई कुत्थूं दा हा ?
	'रोटी बनाने वाला हलवाई कहाँ का था ?'
बहुवचन	दिक्खने आह्ले लोक बी इ'यै पुच्छा करदे हे।
	'देखने वाले लोग भी यही पूछ रहे थे।'

स्त्रीलिंग

एकवचन	ओह् नच्चने आह्ली कुड़ी कुतूं बाह्रा दा आई दी थी।
	'वह नाचने वाली लड़की कहीं बाहर से आई थी।'
बहुवचन	गाने आह्लियां कुड़ियां कु'न हियां ?
	'गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

विशेषण रूपों में प्रयुक्त होने पर ये कर्तावाचक रूप संज्ञा के लिंग, वचन और कारक के अनुसार होते हैं।

* * *

पाठ–17

मेले जागे

(मेले जाएँगे)

नीतू : मीनू। तुगी अपना वायदा भुल्ली गेआ ? इत्थै बैठे–बैठे केह् सोचा करनी एं ? चल तौले–तौले त्यार हो।

मीनू : तूं केह्ड़े वायदे दी गल्ल करा करनी एं ? में केईं वायदे कीते होङन।

नीतू : तां एह् गल्ल ऐ। चेता कर हां उस दिन शवाले मंदर टुरदे–टुरदे तूं केह् आखेआ होग ?

मीनू : नीतू। में केइयें चीजें दे बारे च आखदी होङ। तूं दस्स तुगी केह् चाहिदा ऐ ? तूं इ'यां फलौह्नियां की पा करनी एं ? साफ–साफ की नेईं दसदी ?

नीतू : चीजें दे बारे च तूं कुसै होर गी आखेआ होग। सच्चें–मुच्चें मिगी तेरे शा किश नेईं लोड़दा ते नां गै में कोई फलौह्नियां पा करनी आं। चेता कर हां तूं आखेआ नेईं हा जे शिवारात्री आह्ले दिन अस साथें–साथें मंदर जागे। उत्थै उस दिन बड़े प्रोग्राम होने न।

नीतू : मीनू। तुम अपना वादा भूल गई ? यहाँ बैठे–बैठे क्या सोच रही हो ? चल जल्दी से तैयार हो।

मीनू : तुम कौन से वादे की बात कर रही हो ? मैंने तो केई वादे किए होंगे।

नीतू : तो यह बात है। याद करो न उस दिन शिवालय मन्दिर चलते–चलते तूने क्या कहा होगा ?

मीनू : नीतू। मैं कई चीजों के बारे में कहती हूँगी। तुम बताओ तुम्हें क्या चाहिए। तुम इस प्रकार पहेलियां क्यों बुझा रही हो ? साफ–साफ क्यों नहीं कहती ?

नीतू : चीजों के बारे में तूने किसी और से कहा होगा। यकीन मानो मुझे तुम से कुछ नहीं चाहिए और न ही मैं कोई पहेली बुझा रही हूँ। याद करो तुमने कहा नहीं था कि शिवारात्रि वाले दिन हम साथ–साथ मन्दिर जाएंगे। उस दिन वहाँ बहुत से कार्यक्रम होंगे।

मीनू : ठीक--ठीक। तूं सच्च आखा करनी एं। में जरूर तुगी आखेआ होना ऐ ते घर आनियै मम्मी गी बी सनाया होग जे अस दोऐ रहोली–रहोली मंदर जागियां।

नीतू : तां ते मम्मी जाने आस्तै जरूर मन्नी जाङन ?

मीनू : हां। ओह् ते पक्क गै मन्नी जाङन पर मुश्कल एह् ऐ जे ओह् इसलै घर नेईं न ते नां गै मिगी पता ऐ जे ओह् कु'त्थै गेइयां होङन।

नीतू : कोई गल्ल नेईं तूं अपनी भाबी गी सनाई आ ते चल। ओह् ते घर गै होनी ऐ ?

मीनू : इसलै ओह् बी घर नेईं। पर, ओह् अपनी भैन दे घर गै गेई होनी ऐ।

नीतू : उन्दे घर फोन ते होना गै तूं उसी फोन पर दस्सी ओड़ ते फटोफट त्यार होई जा।

मीनू : फोन करने दी लोड़ नेईं अस किश चिर बलगी लैन्ने आं। उ'न्नै तौले गै आई जाना ऐ।

नीतू : ठीक ऐ। इन्ने तगर तूं त्यार होई जा। में तेरे आस्तै कपड़े तालनी आं।

मीनू : ठीक–ठीक। तुम सच कह रही हो मैंने जरूर तुम्हें कहा होगा और घर आकर मम्मी को भी बताया होगा कि हम दोनों साथ–साथ मंदिर जाएँगी।

नीतू : तब तो मम्मी जाने के लिए जरूर मान जाएंगी ?

मीनू : हाँ। वे तो पक्का मान जाएँगी पर मुश्किल यह है कि वे इस समय घर पर नहीं और न ही मुझे मालूम है कि वे कहाँ गई होंगी।

नीतू : कोई बात नहीं, तुम अपनी भाभी को कह दो और चलो। वह तो घर पर ही होगी ?

मीनू : इस वक्त वह भी घर पर नहीं। पर, वह अपनी बहन के घर तक ही गई होगी।

नीतू : उनके यहाँ फोन तो होगा ही तुम उसे फोन पर बता दो और जल्दी से तैयार हो जाओ।

मीनू : फोन करने की जरूरत नहीं। हम कुछ देर प्रतीक्षा कर लेते हैं वह जल्दी ही आ जाएगी।

नीतू : ठीक है। इतने में तुम तैयार हो जाओ। मैं तुम्हारे लिए कपड़ों का चयन करती हूँ।

मीनू	:	एह् चंगी गल्ल ऐ। एह् मेरी लमारी ऐ। दस्स में केह् लां ?	मीनू	:	यह अच्छी बात है। यह मेरी अलमारी है। वताओ क्या पहनूँ ?
नीतू	:	दिक्ख। एह् नीला टिमकड़े आह्ला कनेहा शैल सूट ऐ !	नीतू	:	देखो। यह नीला बिन्दियों वाला सूट कितना सुन्दर है !
मीनू	:	पर एह् में अदुं तारा दे ब्याह् पर बी लाया हा।	मीनू	:	पर यह मैंने तब तारा की शादी पर भी पहना था।
नीतू	:	फ्ही केह् होआ तूं अज्ज बी इसी लाई सकनी एं ?	नीतू	:	तो क्या ? तुम आज भी इसे पहन सकती हो ?
मीनू	:	पर परती–परतियै इक्कै सूट लाना मिगी चंगा नेईं लगदा।	मीनू	:	किन्तु, बार–बार एक ही सूट पहनना मुझे अच्छा नहीं लगता।
नीतू	:	तां फ्ही एह् फुल्लें आह्ला सैल्ला सूट लाई लै ते कन्नै एह् सैल्ला शाल बी लेई लै।	नीतू	:	तो फिर यह फूलों वाला हरा सूट पहन लो और साथ में यह हरा शाल भी ले लो।
मीनू	:	शाल दी केह् लोड़ ऐ ? इन्नी ठण्ड ते होन नेईं लगी।	मीनू	:	शाल की क्या जरूरत है ? इतनी ठंड तो होगी नहीं।
नीतू	:	बेशक्क। हून भामें ठण्ड नेईं ऐ पर तुगी पता ऐ जे असें दिनभर उत्थै मेला दिक्खना ऐ ते फ्ही उत्थै गै रातीं शिवजी दा ब्याह् बी सुनने दा प्रोग्राम बनाया हा ?	नीतू	:	बेशक। इस समय चाहे सर्दी नहीं है पर तुमको मालूम है कि हमने दिन भर वहाँ मेला देखना है और फिर रात को वहीं शिव विवाह सुनने का प्रोग्राम भी बनाया था ?
मीनू	:	हां। ओह् ते ठीक ऐ।	मीनू	:	हाँ। वह तो ठीक है।
नीतू	:	जि'यां–जि'यां दिन घरोग उ'आं ठण्ड बी बधदी जाग। इसकरी शालै बगैर ते तूं ठरी जागी।	नीतू	:	जैसे–जैसे दिन ढलेगा वैसे–वैसे ठंड भी बढ़ती जाएगी। इसलिए शाल के बिना तो तुम ठिठुर जाओगी
मीनू	:	ठीक–ठीक। में समझी गेई ओह् दिक्ख मेरी भाबी बी आई गेई	मीनू	:	ठीक–ठीक। मैं समझ गई। वह देखो मेरी भाभी भी आ गई है।

	ऐ। हून तूं पञ्ज मिन्ट बलग। में फटाफट त्यार होई जन्नी आं।		अब तुम पांच मिन्ट प्रतीक्षा करो। मैं झटपट तैयार हो जाती हूँ।
नीतू :	पञ्ज की ? पन्दरां मिन्ट बलगङ। तूं मजे–मजे कन्नै त्यार हो। फ्ही गै जाने दा बी अनन्द ऐ।	नीतू :	पाँच क्यों ? पन्द्रह मिनट प्रतीक्षा करूँगी। तू मज़े–मज़े से तैयार हो। तभी जाने का भी मज़ा है।

EXERCISES

1. मौखिक उत्तर दीजिए :–

1. नीतू मीनू गी केह्ड़े वायदे लेई चेता करा दी ही ?
2. नीतू ते मीनू दौनें शवाले मंदर कदूं जाना हा ?
3. शिवरात्री आह्ले रोज शवाले मंदर केह्–केह् होंदा ऐ ?
4. मीनू ने नीतू गी किश चिर बलगने आस्तै की आखेआ ?
5. नीतू ने मीनू गी केह्ड़ा सूट लाने दी सलाह् दित्ती ?
6. नीतू टिमकड़ें आह्ला नीला सूट लाने लेई की नेईं मन्नी ?
7. नीतू ने मीनू गी शाल लैने आस्तै की आखेआ ?
8. नीतू केह्ड़ा सूट लाइयै मंदरै लेई त्यार होन लगी ही ?

2. उदाहरण वाक्यों के समान अलग–अलग वाक्य बनाएँ :–

ओह् कु'त्थै गेई होग ?

ओह् कु'त्थै गेइयां होङन ?

ओह् कु'त्थै गेआ होग ?

ओह् कु'त्थै गे होङन ?

राम कु'त्थै......................।

कुड़ियां कु'त्थै......................।

4. तूं .... । (सोचना)

5. में इसलै पिकनिक उप्पर केह् .... । (करना)

6. ओह् मच्छियें गी आटा .... । (पाना)

7. ओह् फोटू.. । (खिच्चना)

Vocabulary **शब्दावली**

मानसर	डुग्गर की एक प्रसिद्ध झील	चूपना	चूसना
पिकनिक	पिकनिक	तु'म्मी	तुम भी
सुखना	सपना	कंढा	किनारा
शरारती	शरारती	औखा	कठिन
चबक्खै	चहुं ओर	पत्तर	पत्ता
खचोपड़	कछुआ	दिलचस्पी	रुचि
फंघ	पंख	भापा	भैया
सोचना	सोचना	आखना	कहना

टिप्पणियाँ

11.1 इस पाठ में आप **भविष्यत् काल के सामान्य तथा निरन्तरता सूचक क्रिया रूपों** से परिचित हुए हैं।

11.2 डोगरी में भविष्यत् काल के क्रिया रूप कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलते हैं। जैसे :–

पुलिंग रूप

एकवचन

प्रथमपुरुष	*में जाङ*	*'मैं जाऊँगा'*
मध्यमपुरुष	*तूं जागा*	*'तू/तुम जाएगा/जाओगे'*
अन्यपुरुष	*ओह् जाग*	*'वह जाएगा'*

पैह्ले रुट्टी खाई लैओ ते फ्ही लिखदे–पढ़दे र'वेओ।

'पहले खाना खा लें फिर बाद में लिखते–पढ़ते रहें।'

इन दोनों उदाहरणों की पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के पुलिंग–बहुवचनी रूप के अनुसार पुलिंग बहुवचन में ही हैं। इसके साथ ही ये 'एकारान्त' रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :–

कुड़ी नचदे–टपदे डिग्गी पेई।

'लड़की नाचते–कूदते गिर पड़ी।'

कुड़ियां लिखदे–पढ़दे थक्की गेइयां।

'लड़कियाँ लिखते–पढ़ते थक गईं।'

नौकर नचदे–टपदे डिग्गी पेआ।

'नौकर नाचते–कूदते गिर पड़ा।'

16.7 भूतकालिक क्रिया–रूपों से पुनरुक्त क्रियाएं भी दो प्रकार की होती हैं :–

(i) समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

(ii) भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

16.8 दो समान भूतकालिक क्रिया रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं

बैठे–बैठे किश चिर गै होई गेआ।

'बैठे–बैठे कुछ देर ही हो गई।'

खरा। लेटे–लेटे अखबार गै पढ़ी लैन्नां।

'चलो। लेटे–लेटे अखबार ही पढ़ लेता हूँ।'

इन वाक्यों में भूतकालिक पुनरुक्त रूप क्रिया की स्थिति सूचित कर रहे हैं और 'एकारान्त' रूप में होने के कारण कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार नहीं है। किन्तु ये वाक्य के कर्ता के अनुसार रूप ग्रहण करते हुए भी क्रिया विशेषणों का कार्य करते

हैं। जैसे :–

ओह् बैठा–बैठा अखबार पढ़दा रेहा।

'वह बैठा–बैठा अखबार पढ़ता रहा।'

शीला लेटी–लेटी टी. वी. दिक्खा करदी ही।

'शीला लेटी–लेटी टी. वी. देख रही थी।'

16.9 दो भिन्न–भिन्न क्रियाओं के भूतकालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी पुनरुक्त क्रियाएं हैं :–

तूं सुत्ती–बैठी केह् सोचदी रौह्न्नी एं ?

'तुम सोई–बैठी क्या सोचती रहती हो ?'

ओह् बैठा–खड़ोता इक्कै गल्ल करदा रौंह्दा ऐ।

'वह बैठा–खड़ा एक ही बात करता रहता है।'

ऊपर दिए गए वाक्यों में पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के लिंग, वचन अनुसार हैं और क्रिया विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त हैं। यही पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :–

तूं सुत्ते–बैठे केह् सोचदी रौह्न्नी एं ?

'तुम सोए–बैठे क्या सोचती रहती हो ?'

ओह् बैठे–खड़ोते इक्कै गल्ल करदा रौंह्दा ऐ।

'वह बैठे–खड़े एक ही बात करता रहता है।'

16.10 पूर्व कालिक क्रिया रूपों की पुनरुक्ति से भी पुनरुक्त क्रियाएं बनती हैं और ऐसी पुनरुक्त क्रियाएं एक ही रूप में रहती हैं। जैसे :–

ञ्याणे खेढी–खेढियै सेई जंदे न।

'बच्चे खेल–खेल कर सो जाते हैं।'

फिरी–फिरियै मेरा हाल बुरा होई गेआ ऐ।

'फिर–फिर कर मेरा हाल बुरा हो गया है।'

इन वाक्यों में 'खेढी–खेढियै' और 'फिरी–फिरियै' पूर्व कालिक क्रिया रूपों की क्रमशः 'खेढियै' और 'फिरियै' के पुनरुक्त रूप है। इन पुनरुक्ति रूपों में संक्षेपीकरण की प्रवृत्ति रहती है इसीलिए 'फिरियै–फिरियै' के स्थान पर 'फिरी–फिरियै' और 'खेढियै–खेढियै' के स्थान पर 'खेढी–खेढियै' रूप प्रयुक्त होते है।

16.11 नच्चने आह्ली — 'नाचने वाली'

गाने आह्लियां — 'गाने वाली'

खाने आह्ले — 'खाने वाले'

रुट्टी बनाने आह्ला — 'रोटी बनाने वाला'

क्रियाओं के कर्ता वाचक रूप हैं। ये संज्ञार्थक क्रियाओं को अन्त में **'आ'** के स्थान पर **'ए'** आदेश करके साथ में **'आह्ला' (वाला)** लगाने से बने हैं और जिस क्रिया से बनते हैं उसके कर्ता के अर्थ का भाव प्रकट करते हैं।

16.12 क्रियाओं के कर्तावाचक रूप संज्ञा और विशेषण दो रूपों में प्रयुक्त होते हैं।

(i) संज्ञा के रूप में

चार गाने आह्लियां सद्दी दियां न।

'चार गाने वाली बुलाई हुई हैं।'

रुट्टी बनाने आह्ले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(ii) विशेषण के रूप में

ओह् गाने आह्लियां कुड़ियां कु'न हियां ?

'वे गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

रुट्टी बनाने आह्ला लुहाई इत्थूं दा हा ?

'रोटी बनाने वाला हलवाई यहाँ का था ?'

16.13 **'गाने आह्लियां'** शब्द वाक्य में जब संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होता तो संज्ञा की भूमिका निभाता है और यदि इसके साथ आगे कोई संज्ञा (जैसे कुड़ियां) जुड़ जाती है तो यह उस संज्ञा की विशेषता बतलाने के कारण विशेषण का काम करता है। जैसे गाने आह्लियां कुड़ियां (गाने वाली लड़कियाँ)

16.14 कर्तवाचक क्रिया–रूप संज्ञा और विशेषण दोनों रूपों में कर्ता के लिंग, वचन कारक, के अनुसार रहते हैं। जैसे :–

(i) संज्ञा रूप में

पुलिंग

एकवचन रुट्टी बनाने आह्ले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(कर्ता कारक विभक्ति युक्त)

बहुवचन खाने आह्ले सारे गै तरीफ करा करदे हे।

'खाने वाले सभी तारीफ कर रहे थे।'

(कर्ता कारक सरल)

स्त्रीलिंग

एकवचन इक नच्चने आह्ली सद्दी दी ही। (कर्म कारक सरल)

'एक नाचने वाली बुलाई (हुई) थी।'

बहुवचन चार गाने आह्लियां बी सद्दी दियां हियां। (कर्म कारक सरल)

'चार गाने वाली भी बुलाई (हुई) थीं।'

संज्ञा के रूप में आने पर इन कर्तावाचक रूपों में कारक के लिए भी परिवर्तन होता है।

बहुवचन

प्रथमपुरुष	*अस जागे*	*'हम जाएँगे'*
मध्यमपुरुष	*तुस जागे*	*'तुम/आप जाओगे/जाएँगे'*
अन्यपुरुष	*ओह् जाङ्न*	*'वे जाएँगे'*

स्त्रीलिंग रूप

एकवचन

प्रथमपुरुष	*में जाङ/जागी*	*मैं जाऊँगी*
मध्यमपुरुष	*तूं जागी*	*'तू/तुम जाएगी/जाओगी'*
अन्यपुरुष	*ओह् जाह्ग*	*'वह जाएगी'*

बहुवचन

प्रथमपुरुष	*अस जागियां*	*'हम जाएँगी'*
मध्यमपुरुष	*तुस जागियां*	*'तुम/आप जाओगी/जाएँगी'*
अन्यपुरुष	*ओह् जाङ्न*	*'वे जाएँगी'*

भविष्यत् काल में अन्यपुरुष के क्रिया–रूपों में लिंग–भेद नहीं होता।

11.3 निरन्तरता सूचक भविष्यत् काल के रूप, जैसे :–

में जा करदा होङ।	'मैं जा रहा हूँगा।'
अस जा करदे होगे।	'हम जा रहे होंगे।'
तूं जा करदी होगी।	'तुम जा रही होंगी।'
ओह् जा करदियां होङ्न।	'वे जा रही होंगी।'

ये रूप वर्तमान और भूतकालिक निरन्तरता सूचक रूपों की भांति ही प्रयुक्त होते हैं। केवल योजक क्रिया **'हो'** के रूपों में अन्तर है। वह यहाँ पर सामान्य भविष्यत् काल के रूपों में प्रयुक्त होती है। जैसे :–

पुलिंग स्त्रीलिंग

प्रथमपुरुष

एकवचन	*होङ*	*'हूँगा'*	*होङ/होगी*	*'हूँगी'*
बहुवचन	*होगे*	*'होंगे'*	*होगियां*	*'होंगी'*

मध्यमपुरुष

एकवचन	*होगा*	*'होगा/होगे'*	*होगी*	*'होगी'*
बहुवचन	*होगे/ होगेओ/*	*'होंगे'*	*होगियां*	*'होंगी'*

अन्यपुरुष

एकवचन	*होग*	*'होगा'*	*होग*	*'होगी'*
बहुवचन	*होङन*	*'होंगे'*	*होङन*	*'होंगी'*

11.4 **'आस्तै' (के लिए)** सम्प्रदान कारक का सूचक चिह्न् है जो प्रायः संज्ञा, सर्वनाम आदि के विभक्ति वाले रूपों के साथ आता है।

पिकनिक आस्तै ते में जरूर औङ।
'पिकनिक के लिए तो मैं जरूर आऊँगा/आऊँगी।'

रमा मेरे आस्तै फुल्ल आह्नग।
'रमा मेरे लिए फूल लाएगी।'

11.5 **'सुखने लैन लगेआ एं (सपने लेने लगे हो)** प्रयोग में सुखने लैन लगना **'सपने लेने लगना'** संयुक्त क्रिया है। इसमें **'लैन'** मुख्य क्रिया है और **'लगना'** सहायक क्रिया, ऐ **(हो)** योजक क्रिया है।

'सुखने' 'लैना' मुख्य क्रिया की कर्म पूर्ति है। 'लगना' सहायक क्रिया किसी काम को आरम्भ करने की सूचना देती है।

* * *

अरुण : रमेश, तुस दोऐ सन्नासर बी गे हे नेईं ?

रमेश : हां, में ते पिंकी उत्थै बी गे हे। सन्नासर दे नजारे ने ते असेंगी बड़ा गै मोह्त करी लेआ हा।

अरुण : रमेश, तुगी सन्नासरै दी केह् खासियत लब्भी ?

रमेश : केह् दस्सां अरुण, उत्थूं दे कुदरती शलैपे ने ते असेंगी कुतै होर जान गै नेईं दित्ता।

अरुण : सन्नासर पानी कन्नै भरोचे दा हा ?

रमेश : सन्नासर कोई मता बड्डा सरोवर नेईं ऐ। पर जिन्ना बी है उस दिन उत्थै छड़ी बर्फ गै बर्फ ही। अस ओह्दे उप्पर खूब दौड़े हे।

अरुण : सच्च गै ? जेकर उस उप्पर कुतै खुब्भी जंदे तां केह् होंदा ?

रमेश : इ'यां गै खुब्भी जंदे! जिसलै कोई झील जम्मी जंदी ऐ तां उस उप्पर चलने–खेढने दी इजाजत स्पोर्टस अथॉरटी कोला लैती जंदी ऐ।

अरुण : तुसें गी इजाजत मिली गेई ?

रमेश : होर केह् ? तां गै ते अस उप्पर दौड़े हे।

अरुण : रमेश, तुस उत्थै किन्ने दिन रेह् ?

अरुण : तुम दोनों सन्नासर भी गये थे कि नहीं ?

रमेश : हां, मैं और पिंकी वहाँ भी गये थे। सन्नासर के नज़ारे ने हमें तो मोहित कर लिया था।

अरुण : रमेश, तुम्हें सन्नासर की क्या विशेषता लगी ?

रमेश : क्या बतलाऊँ अरुण, वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य ने तो हमें कहीं और जाने ही नहीं दिया।

अरुण : सन्नासर पानी के साथ भरा हुआ था ?

रमेश : सन्नासर कोई बहुत बड़ा सरोवर नहीं पर जितना भी है उस दिन तो वह बर्फ से ढका हुआ था। हम उस पर खूब दौड़े थे।

अरुण : सच यदि तुम लोग कहीं उसमें धंस जाते तो क्या होता ?

रमेश : ऐसे ही धंस जाते! जब कोई झील जम जाए तो उस पर चलने–खेलने की आज्ञा स्पोर्टस अथॉरटी से ली जाती है।

अरुण : क्या तुम लोगों को आज्ञा मिल गई ?

रमेश : और क्या ? तभी तो हम उस पर दौड़े थे।

अरुण : रमेश, तुम वहाँ कितने दिन रहे ?

रमेश	:	असें इक रात पत्तनी टॉप कट्टी ही ते इक सन्नासर च।	रमेश	:	हमने एक रात पत्तनी टॉप में काटी थी और एक सन्नासर में।
अरुण	:	तुसें गी ठंड नेईं ही लग्गी ?	अरुण	:	आपको सर्दी नहीं लगी थी ?
रमेश	:	ठंड ते है गै ही पर असें कन्नै गर्म कपड़े बी खूब लेते दे हे ते खाने–पीने दा खासा चंगा समान बी।	रमेश	:	सर्दी तो थी ही पर हमने साथ गर्म कपड़े भी खूब लिए थे और खाने–पीने का सामान भी।
अरुण	:	तुस गे कदूं हे ?	अरुण	:	तुम गये कब थे ?
रमेश	:	अस उत्थै अट्ठ तरीक पुज्जे हे। उस दिन राती खूब बरखा होई ते बर्फ बी खूब पेई, पर दुए दिन चंगी धुप्प निकली आई। इसकरी असेंगी असानी कन्नै सन्नासरै दे कोला आह्लियें प्हाड़ियें उप्पर चढ़ने दा मौका बी मिलेआ हा।	रमेश	:	हम वहाँ आठ तारीख को पहुँचे थे। उस दिन रात भर खूब वर्षा हुई और बर्फ भी गिरी, पर दूसरे दिन अच्छी धूप निकल आई। इसलिए हमें आसानी से सन्नासर के पास वाली पहाड़ियों पर चढ़ने का अवसर मिल गया था।
अरुण	:	रमेश, किन्ना चंगा होंदा जे तूं मिगी बी कन्नै लेई जंदा। में बी इ'नें जगहें गी दिक्खी सकदा।	अरुण	:	रमेश, कितना अच्छा होता कि तुम मुझे भी साथ ले जाते। तो मैं भी इन स्थानों को देख सकता।
रमेश	:	अरुण, तूं मेरे उप्पर यकीन नेईं करदा। मिगी कोई हर्ज हा के तुगी लेने च ? पर जिसलै में तुगी बलाने गी आया तां तूं साम्बै गेदा हा।	रमेश	:	अरुण, तुम मेरे पर विश्वास नहीं करते तुम्हें ले जाने में मेरा क्या नुक्सान था ? पर जब मैं तुम्हें बुलाने आया तो तुम साम्बा गए हुए थे।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. तूं कल कु'त्थै हा ?
2. देआरें दे बड्डे–बड्डे उच्चे ते झौंगले बूह्टे दिक्खे ते कन्नै किश जंगली जानवर।

3. तूं उस उप्पर दौड़ेआ ते खेढेआ बी ?

4. उत्थै तुस कुप्पड़ें उप्पर बी बैठे हे ?

5. सन्नासर दे नजारे ने ते असेंगी बड़ा गै मोह्‌त करी लेआ हा।

6. तुगी सन्नासर दी केह्‌ खासियत लब्भी ?

7. असें इक रात पत्तनी टॉप कट्टी ही ते इक सन्नासर।

8. उस दिन उत्थै छड़ी बर्फ गै बर्फ ही।

9. अस ओह्‌दे उप्पर खूब दौड़े हे।

10. उत्थूं दे कुदरती शलैपे ने ते असेंगी कुतै होर जान गै नेईं दित्ता।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

रमेश सन्नासर गेआ हा। *(दौड़ना)*

रमेश सन्नासर दौड़ेआ हा।

(खेढना)

(औना)

(पढ़ना)

(दौड़ना)

कमला बैठी ही। *(लेटना)*

कमला लेटी ही।

(जाना)

(औना)

(रौह्‌ना)

(दौड़ना)

Model (2)

ओह्‌ आए हे। *(जाना)*

ओह्‌ गे हे।

(न्हौना)

(बौह्‌ना)

(हस्सना)

(नच्चना)

ओह्‌ खेढियां हियां *(चलना)*

ओह्‌ चलियां हियां।

(सोना)

(नच्चना)

(बौह्‌ना)

(टुरना)

3. **Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)**

Model (1)	*Model (2)*
में क्रिकेट खेढना आं।	*में क्रिकेट खेढनी आं।*
में क्रिकेट खेढेआ ऐ।	*में क्रिकेट खेढेआ ऐ।*
तूं रुट्टी खन्ना एं।	*तूं रुट्टी पकान्नी एं।*
ओह् सन्तोलिया खेढदा ऐ।	*ओह् सन्तोलिया खेढदी ऐ।*

Model (1)	*Model (2)*
अस नाच सिक्खने आं।	*अस नाच सिक्खनियां आं।*
असें नाच सिक्खेआ ऐ।	*असें नाच सिक्खेआ ऐ।*
तुस मैच दिखदे ओ।	*तुस मैच दिखदियां ओ।*
ओह् सैर करदे न।	*ओह् सैर करदियां न।*

4. **कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के साथ उपयुक्त योजक क्रिया का प्रयोग करके रिक्त स्थान भरिए :–**

1. रमेश सन्नासर .... । (जाना)
2. तूं बर्फ उप्पर... । (दौड़ना)
3. मोहन ने फोटू... । (खिच्चना)
4. ओह् धुप्पा च .... । (खड़ोना)
5. तुगी सन्नासरै दी केह् खासियत .... । (लब्भना)

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

रमेश कु'त्थै गेदा हा ?

रमेश केह्ड़े मौसम सैर करन गेआ हा ?

रमेश कन्नै होर कु'न गेदा हा?

क्या अरुण बी सन्नासर गेआ हा?

''सन्नासर'' बारै पञ्ज वाक्य लिखो।

6. **निम्नलिखित वाक्यों का डोगरी में अनुवाद कीजिए :–**

सन्नासर पानी से भरा हुआ था।

हम बर्फ पर खूब दौड़े थे।

वहाँ वर्फ भी देखी कि नहीं?

मैं कल पत्तनी टॉप गया था।

तब तुम लोगों को खूब आनंद आया।

तुम वहाँ कितने दिन रहे?

कितना अच्छा होता कि तुम मुझे भी साथ ले जाते।

7. **निम्नलिखित वाक्यों को निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए :–**

रमेश पत्तनीटॉप गेआ हा।

अरुण सन्नासर गेआ ऐ।

उत्थै बड़ी धुप्प ही।

पत्तनीटॉप सर्दियें च धुप्प निकलदी ऐ।

अज्जकल उत्थै बर्फ पेदी ऐ।

रमेश सन्नासर पैदल गेआ हा।

पिंकी घर गै रेहा हा।

तूं मेरे उप्पर भामे यकीन कर।

तूं मिगी बी कन्नै की लेई गेआ?

Vocabulary

पत्तनी टॉप	जम्मू क्षेत्र में एक विशेष पर्यटन स्थल	देआर	देवदार
		बर्फ	बर्फ
दौड़ना	दौड़ना	धुप्प	धूप
नन्द	आनन्द	बक्खरा	अलग
कुप्पड़	चट्टान	नजारा	दृष्य
छड़ी	केवल	खुब्भना	धंसना
इजाजत	आज्ञा	ठंड	ठंड, सर्दी
खासा	काफी, अधिक	पैदल	पैदल
बरखा	बारिश	दिक्खना	देखना

टिप्पणियाँ

12.1 इस पाठ में आप डोगरी क्रियाओं के भूतकालिक रूपों से परिचित हुए हैं।

12.2 डोगरी में सामान्य भूतकाल के रूप निम्न दो प्रकार के होते हैं :-

(i) व्यञ्जनांत धातुओं के रूप

(ii) स्वरांत धातुओं के रूप

12.3 व्यञ्जनांत धातुओं के सामान्य भूतकालिक रूप इस प्रकार हैं :-

दिक्खेआ (देखा)	दिक्खे (देखे)
दौड़ेआ (दौड़ा)	दौड़े (दौड़े)
खेढेआ (खेला)	खेढे (खेले)
लब्भेआ/लब्भा (मिला/दिखा)	लब्भे (मिले/दिखे)

व्यञ्जनांत धातुओं के साथ भूतकाल के लिए प्रायः **'शून्य'** प्रत्यय लगता है और उनके साथ केवल लिंग और वचन सूचक प्रत्ययों का योग होता है। **'एआ/आ'** पुलिंग एकवचन सूचक, **'ए'** पुलिंग बहुवचन सूचक तथा **'ई'** स्त्रीलिंग एकवचन सूचक तथा 'इयां' स्त्रीलिंग बहुवचन सूचक प्रत्यय लगने से भूतकालिक रूप बनते हैं। जैसे :-

दिक्ख्	+	एआ	=	दिक्खेआ	(देखा)
दौड़	+	ए	=	दौड़े	(दौड़े)
खेढ्	+	ई	=	खेढी	(खेली)
लब्भ्	+	इयां	=	लब्भियां	(मिलीं/दिखीं)

12.4 स्वरांत धातुओं के सामान्य भूतकालिक रूप निम्न प्रकार हैं :-

लेता/लेआ	(लिया)	ले	(लिए)
खड़ोता	(खड़ा हुआ)	खड़ोते	(खड़े हुए)
बैठा	(बैठा)	बैठे	(बैठे)
सीता	(सिया)	सीते	(सिए)
पीता	(पिया)	पीते	(पिए)
न्हाता	(नहाया)	न्हाते	(नहाए)
सुत्ता	(सोया)	सुत्ते	(सोए)
धोता	(धोया)	धोते	(धोए)
खाद्धा	(खाया)	खाद्धे	(खाए)

स्वरान्त धातुओं के साथ भूतकाल के लिए प्रायः **'त्'** प्रत्यय लगता है और एक आध स्थानों पर **'ट्'** अथवा **'द्ध्'** प्रत्यय और बाद में **'आ'**, **'–ए'**, **'ई'** तथा 'इयां' लिंग और वचन सूचक प्रत्यय लगते हैं। जैसे :-

खड़ो	+	त्	+	आ	=	खड़ोता	(खड़ा हुआ)
सी	+	त्	+	ए	=	सीते	(सिए)
खा	+	द्ध्	+	ई	=	खाद्धी	(खाई)
बौह्–बैह्	+	ठ्	+	इयां	=	बैठियां	(बैठीं)

12.5 कुछ एक स्वरांत धातु जैसे **आ, जा, कू, रो, हो** आदि के साथ **'त्'**, **'ट्'** आदि के स्थान पर व्यञ्जनांत धातुओं की तरह शून्य प्रत्यय लगता है और केवल लिंग, वचन सूचक प्रत्यय लगते हैं। जैसे :–

रो	+	0	+	एआ	=	रोएआ	(रोया)
आ	+	0	+	ए	=	आए	(आए)
कू	+	0	+	इ	=	कूई	(बोली)
रो	+	0	+	इयां	=	रोइयां	(रोईं)

'जा' धातु को भूतकाल में 'ग्' आदेश होता है। जैसे :–

जा	–	ग्	+	एआ	=	गेआ	(गया)
ग्	+	ए			=	गे	(गए)
ग्	+	ई			=	गेई	(गई)
ग्	+	इयां			=	गेइयां	(गईं)

12.5 डोगरी में सामान्य भूतकाल का अर्थ इन्हीं क्रिया–रूपों से व्यक्त होता है। यदि क्रिया सकर्मक हो तो क्रिया का रूप कर्म के लिंग, वचन के समान होता है और यदि अकर्मक हो तो वाक्य के कर्ता के लिंग, वचन के समान होता है। जैसे :–

सकर्मक क्रिया

पुलिंग

एकवचन–	*उत्थै तूं केह्–केह् दिक्खेआ ?*	*'वहाँ तूने क्या–क्या देखा' ?*
बहुवचन–	*देआरें दे बड्डे–बड्डे बूह्टे दिक्खे।*	*देवदार के बड़े–बड़े पेड़ देखे।'*

स्त्रीलिंग

एकवचन– *सन्नासर दी केह् खासियत लब्भी ?* *'सन्नासर की क्या विशेषता दिखी ?'*

बहुवचन– *रमेश ने उत्थै बड़ियां मरगाइयां फड़ियां। '*
रमेश् ने वहाँ बहुत सी मुरगाबियें पकड़ीं।'

अकर्मक क्रिया

पुलिंग

एकवचन– तूं उत्थै दोड़ेआ ते खेढेआ बी ?

'तुम वहाँ दौड़े और खेले भी ?'

बहुवचन– अस उत्थै उच्चे–उच्चे कुप्पड़ें पर बी बैठे।

'हम वहाँ ऊँची–ऊँची चट्टानों पर भी बैठे।'

स्त्रीलिंग

एकवचन– ओह् कल घर गेई।

'वह कल घर गई।'

बहुवचन– अस बड़ी चिरें तकर सुत्तियां।

'हम बहुत देर तक सोईं।'

12.7 क्रियाओं के सामान्य भूतकालिक रूपों के साथ योजक क्रिया के प्रयोग से पूर्ण भूतकाल और पूर्ण वर्तमान काल के रूप बनते हैं। जैसे :–

(i) पूर्णभूत काल

उत्थै तुस उच्चे–उच्चे कुप्पड़ें पर बी बैठे हे ?
''वहाँ आप ऊँची–ऊँची चट्टानों पर भी बैठे थे ?''

तुस उत्थै प्हाड़ें उप्पर बी चढ़े हे ?
'आप वहाँ पहाड़ों पर भी चढ़े थे ?'

अस उत्थै अट्ठ तरीक पुज्जे हे।
'हम वहाँ आठ तारीख पहुँचे थे।'

असेंगी प्हाड़ियें उप्पर चढ़ने दा मौका मिलेआ हा।
'हमें पहाड़ियों पर चढ़ने का अवसर मिला था।'

ऊपर दिए गए वाक्य पूर्ण भूतकाल के हैं। क्रिया के सामान्य भूतकालिक रूपों के साथ योजक क्रिया के भूतकालिक रूप **(हा, हे, ही, हियां)** जोड़ने से पूर्ण भूतकालिक क्रिया बनती है।

(ii) पूर्ण वर्तमान काल के प्रयोगों में क्रिया के सामान्य भूतकालिक रूपों के साथ योजक क्रिया भी वर्तमान कालिक रूपों में आती है। जैसे :-

शाम अज्ज गै घर गेआ ऐ।	'शाम आज ही घर गया है।'
मेला दिक्खन बड़े लोक आए न।	'मेला देखने बहुत लोग आए हैं।'
माली ने बूह्टें गी पानी दित्ता ऐ।	'माली ने पौधों को पानी दिया है।'
अज्ज उ'न्नै सारियां चीजां साफ कीतियां न।	'आज उसने सारी चीज़ें साफ की हैं।'
में कल पत्तनी टॉप गेदा हा।	'में कल पत्तनी टॉप गया हुआ था।'
अज्जकल उत्थै बड़ी बर्फ पेदी ऐ।	'आजकल वहाँ बहुत बर्फ गिरी हुई है।'

इन वाक्यों में **'गेदा हा' (गया हुआ था)** और **'बर्फ पेदी ऐ' (बर्फ गिरी हुई है)** प्रयोग क्रमशः पूर्ण भूत और पूर्ण वर्तमान के अर्थों से काफी समानता रखते हैं और लगभग इन्हीं अर्थों को अभिव्यक्त करते हैं, लेकिन इनकी रचना में भेद है। यहाँ पर क्रिया के सामान्य भूताकालिक रूप के साथ वाक्य के कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार **'दा'**, और **'दी'** आदि का प्रयोग हुआ है। जैसे :-

गेआ दा = गेदा   पेई दी = पेदी

ये भूतकाल के संयुक्त रूप होते हैं जिनमें भूतकालिक रूप के साथ **'हुआ'** अर्थ में **'दा'**, **'दे'**, **'दी'**, **'दियां'** का प्रयोग होता है। जैसे :-

में उत्थै खड़ोते दा हा।	'मैं वहाँ खड़ा था' (हुआ)
कुड़ी इत्थै बेठी दी ही।	'लड़की यहाँ बैठी (हुई) थी'

सब उत्थै पुज्जी दियां न।	'सभी यहाँ पहुँची (हुई) हैं।'
तुस इत्थै कि'यां आए दे ओ ?	'आप यहाँ कैसे आए (हुए) हैं।'
सन्नासर पानी कन्नै भरोचे दा हा।	'सन्नासर पानी से भरा (हुआ) था।'

12.9 भूतकाल में सम्भाव्य, संदिग्ध आदि भिन्न–भिन्न अर्थों के लिए क्रिया के सामान्य भूतकालिक रूपों के साथ 'हो' (हो) योजक क्रिया में परिवर्तन होता है। जैसे :–

संदिग्ध अर्थ	तूं गेआ होगा।	'तुम गए होंगे'
	में गेआ होङ।	'मैं गया हूँगा'
सम्भाव्य अर्थ	अस गे होचै।	'हम गए हों।'
	तुस गे होवो।	'आप गए हों।'

12.10 'खेढदे रेह्' (खेलते रहे)

'खड़ोते रेह्' (खड़े रहे)

'निकली आई' (निकल आई)

ये सभी संयुक्त क्रिया प्रयोग हैं, जिनमें क्रमशः **'खेढदे'** **(खेलते)**, **'खड़ोते'** **(खड़े)** और **'निकली'** **(निकल)** मुख्य क्रिया रूप हैं और **'रेह्'** **(रहे)** और **'आई'** **(आई)** सहायक क्रियाएं हैं। **'रेह्'** सहायक मुख्य क्रिया की निरन्तरता सूचित कर रहा है और **'आई'** क्रिया की पूर्णता।

12.11 **जेकर – तां (यदि – तो) प्रयोग संकेतार्थ की सूचना देता है।**

इसका प्रयोग संयुक्त वाक्यों में होता है। एक उपवाक्य के साथ **'जेकर'** **(यदि)** आता है और दूसरे उपवाक्य के साथ **'तां'** **(तो)** जैसेः–

जेकर अस उप्पर कुतै खुब्भी जंदे तां केह् होंदा ?

'यदि हम ऊपर कहीं धंस जाते तो क्या होता।'

किन्ना चंगा होंदा जेकर मिगी बी कन्नै लेई जंदा, में बी इ'नें जगहें गी दिक्खी सकदा।

'कितना अच्छा होता यदि मुझे भी साथ ले जाते (तो) मैं भी इन जगहों को देख सकता।'

यहाँ पर संकेतार्थ भूतकाल के अर्थ में है और ये वाक्य की दोनों क्रियाओं के न होने की सूचना देता है।

12.12 सकर्मक क्रियाओं के भूतकाल में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है और क्रिया के रूप कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :–

राधा ने खत लिखेआ।	'राधा ने पत्र लिखा।'
राधा ने खत लिखे।	'राधा ने पत्र लिखे।'
राधा ने साड़ी खरीदी।	'राधा ने साड़ी खरीदी।'
राधा ने साड़ियां खरीदियां।	'राधा ने साड़ियां खरीदींयां'।

12.13 डोगरी में भूतकालिक वाक्यों में **'में'** (**मैं**) और **'तूं'** (**तू**) सर्वनाम जब कर्ता के स्थान पर आते हैं तो उनके साथ **'ने'** का प्रयोग नहीं होता। जैसे :–

तूं उत्थै केह्–केह् दिक्खेआ ?

'तुमने वहाँ क्या–क्या देखा ?'

में उत्थै देआरें दे उच्चे–उच्चे बूह्टे दिक्खे।

'मैंने वहाँ देवदारों के ऊँचे–ऊँचे पेड़ देखे।'

12.14 भूतकालिक सकर्मक क्रियाओं के साथ वाक्य का कर्ता और कर्म दोनों यदि कारक चिह्नों के समेत आते हैं तो क्रिया का प्रयोग पुलिंग एकवचन में होता है। जैसे :–

सन्नासर दे नजारे ने असेंगी बड़ा मोह्त कीता।

'सन्नासर के दृष्य ने हमें बहुत आकर्षित किया।'

सीता ने राधा गी पढ़ाया।

'सीता ने राधा को पढ़ाया।'

* * *

पाठ–13

सब्हैरी

(दोपहर का भोजन)

संगीता : मां, में रुट्टी खानी ही।

उषा : हां बेटी, सब्हैरी दा समां ते है। अजें में किश ढोडे सेकने हे। कन्नै तेरे पिता जी गी बलगा करदी ही। में सोचेआ हा जे अज्ज अस सब्भै किट्ठे रुट्टी खाचै।

संगीता : खरा मां, में उ'आं बी कल्लै आह्ले मेतेहानै दी त्यारी करनी ही। इसलेई किश चिर पढ़ी लैन्नी आं।

उषा : हां बेटी, तूं पढ़ी लै। में किश कपड़े धोने हे सै धोई लैं।

संगीता : मां, जिसलै पिता जी औङन तां मिगी सद्दी लैएओ।

उषा : ठीक ऐ बेटी। जा तूं पढ़ी लै। अस चाह्न्ने आं जे तूं खरे नंबर लेइयै पास होएं।

उषा : लगदा ऐ जे तेरे पिताजी आई गे न।

दिनेश : तुस मां–धी केह् सलाह् करै दियां हियां ?

संगीता : माँ, मुझे खाना खाना था।

उषा : हाँ बिटिया, दोपहर के भोजन का समय हो चुका है। पर अभी मैंने मकई की कुछ रोटियां सेंकनी थीं। साथ ही तेरे पिता जी की प्रतीक्षा भी कर रही थी। मैंने सोचा कि आज हम सभी एक साथ खाना खाएँ।

संगीता : ठीक है माँ, मैंने वैसे भी कल की परीक्षा की तैयारी करनी थी। इसलिए कुछ देर पढ़ लेती हूँ।

उषा : हाँ बेटी, तुम पढ़ लो। मैंने कुछ कपड़े धोने थे सो धो लूँ।

संगीता : माँ, जब पिता जी आएँ तो मुझे बुला लेना।

उषा : अच्छा बेटी। जाओ तुम पढ़ो। हम चाहते हैं कि तुम अच्छे अंक लेकर पास होवो।

उषा : मालूम होता है कि तेरे पिता जी आ गए हैं।

दिनेश : तुम माँ–बेटी क्या परामर्श कर रही थीं ?

उषा	: अस तुसेंईं गै सब्हैरी आस्तै बलगा करदियां हियां।	उषा	: हम दोपहर के भोजन के लिए आपकी ही प्रतीक्षा कर रही थीं।
दिनेश	: दिक्खो नां, अज्ज मेरे कन्नै कु'न आए न ? सक्सेना जी न। मेरे दफ्तर च गै मेरे कन्नै कम्म करदे न। इ'नें कुतै होर जाना हा, पर में इ'नें गी प्रार्थना कीती जे अज्जै दी सब्हैरी किट्ठे गै करचै।	दिनेश	: देखिए न, आज मेरे साथ कौन आए हैं ? यह सक्सेना जी हैं। मेरे कार्यालय में ही मेरे साथ काम करते हैं। इन्होंने कहीं और जाना था, पर मैंने इनसे प्रार्थना की कि आज दोपहर का भोजन एक साथ करें।
सक्सेना	: नमस्ते भैन जी। नमस्ते बेटी।	सक्सेना	: नमस्ते बहन जी। नमस्ते बेटी।
उषा	: नमस्ते जी। रुट्टी दा समां होई गेदा ऐ। आओ चलचै पैहूलें सब्हैरी करी लैचै।	उषा	: नमस्ते जी। भोजन का समय हो चुका है। आइए चलें पहले भोजन कर लें।
सक्सेना	: अज्ज में रुट्टी कुतै होर खानी ही पर दिनेश होर ताहीं खिच्ची लेई आए।	सक्सेना	: आज मैंने खाना कहीं और खाना था, पर दिनेश जी मुझे खींच कर इधर ले आए।
उषा	: में बी अज्ज मते कम्मै करी तौला च ढोडे, साग, भत्त ते घिया–कद्दू गै बनाया ऐ। पता नेईं तुसें गी मेरा पकाए दा परसिंद बी आवै जां नेईं ?	उषा	: मैंने भी आज बहुत काम के कारण जल्दी में मकई की रोटी, साग भात और घिया–कद्दू ही पकाया है। पता नहीं आप को मेरा पकाया पसंद भी आए कि नहीं।
दिनेश	: जेकर तूं अपने हत्थें बनाएं ? बरताएं तां कु'न आखग जे रुट्टी सुआदली नेईं है ?	दिनेश	: यदि तुम अपने हाथों से खाना पकाओ और परोसो तो कौन कहेगा कि भोजन स्वादिष्ट नहीं है ?
सक्सेना	: दिनेश जी, जेकर अज्ज तुस मिगी इत्थै औने आस्तै मजबूर नेईं करदे	सक्सेना	: दिनेश जी, यदि आप आज मुझे यहाँ आने के लिए विवश

	तां में सच–मुच गै इस स्वादले भोजन थमां बंचित होई जंदा।		न करते तो मैं सच–मुच ही इस स्वादिष्ट भोजन से वंचित रह जाता।
दिनेश :	सक्सेना जी, आओ हत्थ–मुंह् धोचै तां जे अस भोजन करना शुरू करचै।	दिनेश :	सक्सेना जी, आइए हाथ–मुँह धोएँ ताकि हम भोजन करना शुरू करें।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. में रुट्टी खानी ही।
2. अजें में किश ढोडे सेकने हे, कन्नै तेरे पिताजी गी बलगा करदी ही।
3. में सोच्चेआ हा जे अज्ज अस सब्भै किट्ठे रुट्टी खाचै।
4. हां बेटी, तूं पढ़ी लै, में किश कपड़े धोने हे सै धोई लैं।
5. जिसलै पिताजी औङन तां मिगी सद्दी लैएओ।
6. सक्सेना जी मेरे दफ्तर च गै मेरे कन्नै कम्म करदे न।
7. इ'नें कुतै होर जाना हा पर में इ'नें गी प्रार्थना कीती जे आओ, अज्जै दी सब्हैरी किट्ठे गै करचै।
8. में बी अज्ज मते कम्मै करी तौला च ढोडे, साग, भत्त ते घिया–कद्दू गै बनाया ऐ।
9. तुसें गी मेरा पकाए दा पसिंद बी आवै जां नेईं।
10. आओ हत्थ–मुंह् धोचै तां जे अस भोजन करना शुरू करचै।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)		*Model (2)*	
में जाना हा।	*(सौना)*	*असें जाना हा।*	*(सौना)*

में सौना हा।

उ'न्न खेढना हा।

(चलना)

(पढ़ना)

(लिखना)

असें सौना हा।

उ'नें खेढना हां।

(चलना)

(पढ़ना)

(लिखना)

Model (3)

में कमीज धोनी ही।

(कताब, पढ़ना)

में कताब पढ़नी ही।

तूं रुट्टी खानी ही।

(चिट्ठी, लिखना)

(रुट्टी, पकाना)

(प्रार्थना, करना)

Model (4)

असें क्रिकेट खेढना हा।

(पानी, पीना)

असें पानी पीना हा।

तुसें कम्म करना हा।

(मतेहान, देना)

(स्वैटर, बुनना)

(मकान, बनाना)

Model (5)

में कताबां पढ़नियां हियां।

(रुट्टी, पकाना)

में रुट्टियां पकानियां हिंया।

तूं पूनियां कत्तनियां हियां।

(सलाह्, करना)

(पूड़ी, खाना)

(भिण्डी, बनाना)

Model (6)

असें मैच खेढने हे।

(डंड, कड्ढना)

असें डंड कड्ढने हे।

तुसें टल्ले धोने हे।

(ढोडा, सेकना)

(कपड़ा, सीना)

(दोहाना, खाना)

तुसें क्रिकेट खेढना ऐ।

तुसें क्रिकेट खेढना ऐ जां नेईं?

तूं जाना ऐ।

कुड़ी ने पेंटिंग बनानी ऐ।

उ'न्न रियासी जाना ऐ।

में उत्थै औना ऐ।

असें मैच दिक्खना ऐ।

उ'नें किक्रेट खेढना ऐ।

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

1. संगीता उषा दी केह् लगदी ऐ?
2. सब्हैरी आस्तै दिनेश अपने कन्नै होर कुसी लेई आया हा?
3. उषा ते संगीता सब्हैरी लेई कुसी बलगा दियां हियां?
4. उषा ने सब्हैरी लेई केह्–केह् बनाए दा हा?
5. दिनेश ते उषा दा आपूं बिच्चें केह् रिश्ता हा?

5. **दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए :–**

किट्ठे, सब्हैरी, ढोडे, बलगा, खरे।

1. तेरे पिताजी गी..................करदी ही।
2. तूं..................नंबर लेइयै पास होएं।
3. पैह्ले..................करी लैचै।
4. में अजें..................सेकने न।

5. आओ अज्जै दी सब्है री..................गै करचै।

6. **पढ़िए, समझिए तथा लिखिए :–**

जा	**—**	**जाचै**	**—**	**जाना**
खा	—		—	
पढ़	—		—	
चल	—		—	
सौ	—		—	
दौड़	—		—	
लिख	—		—	
बौह्	—		—	
बलग	—		—	

7. **निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए :–**

मतेहान, नंबर, धोना, सेकना, सुआदला, हत्थ – मूंह्, सब्है री

8. **निम्नलिखित वाक्यों का डोगरी में अनुवाद करें :–**

1. आज उसने भी आना था।
2. तुम अच्छे अंक लेकर पास हो जाओ।
3. मुझे कुछ कपड़े धोने थे सो धो लूँ।
4. तुम पढ़ लो।
5. आज मैंने कहीं और खाना खाना था।
6. आइए, हाथ–मुँह धोएं ताकि भोजन करना शुरू करें।

Vocabulary शब्दावली

सब्हैरी	दोपहर का भोजन	रुट्टी	भोजन
ढोडा	मक्की की रोटी	मतेहान	परीक्षा
धोना	धोना	सद्दना	बुलाना
खरा	अच्छा	नम्बर	अंक
बरताना	परोसना	सुआदला	स्वादिष्ट
घिया कद्दू	घिया	तां जे	ताकि
प्रार्थना	प्रार्थना	सलाह्	परामर्श
बलगना	प्रतीक्षा करना	भत्त	भात
साग	शाक	किट्ठे	इकट्ठे
त्यारी	तैयारी		

टिप्पणियाँ

13.1 इस पाठ में आप **क्रियाओं के विधि अर्थ तथा सम्भाव्य अर्थ प्रयोगों** से अवगत हुए हैं।

13.2 विधि अर्थ के लिए क्रिया के संज्ञार्थक रूप के साथ योजक क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे :–

में रुट्टी पकानी ही।	'मैंने खाना बनाना था।'
में किश ढोडे सेकने हे।	'मैंने मक्की की कुछ रोटियाँ सेकनी थीं।'
इ'नें कुतै होर जाना ऐ।	'इन्हें कहीं और जाना है।'

13.3 विधि अर्थ अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में होता है। जैसे :– *अकर्मक क्रिया में*

में जाना ऐ।	'मैंने जाना है।'
उ'न्नै पढ़ना हा।	'उसे पढ़ना था।'
असें सौना ऐ।	'हमें सोना है।'
जागतै न्हौना ऐ।	'लड़के को नहाना है।'
हून तूं सौना होग।	'अब तुमे सोना होगा।'

अकर्मक क्रियाओं के विधि अर्थ में संज्ञार्थक क्रिया के साथ योजक क्रिया हमेशा पुलिंग, एकवचन में रहती है और यह भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् तीनों कालों में प्रयुक्त होती है।

13.4 सकर्मक क्रियाओं के विधि अर्थ में संज्ञार्थक क्रियाओं के रूप वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :–

पुलिंग

एकवचन–	कम्म करना ऐ	'काम करना है'
बहुवचन–	कपड़े धोने न	'कपड़े धोने हैं'

स्त्रीलिंग

एकवचन–	मतेहानै दी त्यारी करनी ऐ।	'इम्तिहान की तैयारी करनी है'
बहुवचन–	कताबां साम्भनियां न।	'किताबें सम्भालनी हैं।'

13.5 सकर्मक क्रियाओं के विधि अर्थ में योजक क्रिया के रूप केवल भूतकाल में वाक्य के कर्म के लिंग, वचन के अनुसार रहते हैं जैसे :–

में कम्म करना हा।	'मुझे काम करना था।'
में टल्ले सकाने हे।	'मुझे कपड़े सुखाने थे।'
में मतेहानै दी त्यारी करनी ही।	'मुझे इम्तिहान की तैयारी करनी थी।'
तूं कताबां साम्भनियां हियां।	'तुझे किताबें सम्भालनी थीं।'

13.6 वर्तमान और भविष्यत् काल के रूपों में संज्ञार्थक क्रियाओं के रूपों में लिंग और वचन सूचक भेद रहता है किन्तु योजक क्रिया में केवल वचन भेद होता है लिंग भेद नहीं। जैसे :–

वर्तमान काल

पुलिंग

एकवचन–	राधा ने रुट्टी पकानी ऐ।	'राधा को रोटी बनानी है।'

स्त्रीलिंग

एकवचन–	राधा ने कम्म करना ऐ।	'राधा को काम करना है।'

पुलिंग

बहुवचन– राधा ने कपड़े धोने न। 'राधा को कपड़े धोने हैं।'

स्त्रीलिंग

बहुवचन– राधा ने चिट्ठियां लिखनियां न। 'राधा को चिट्ठियां लिखनी हैं।'

भविष्यत् काल

पुलिंग

एकवचन– उसने खत पढ़ना होग। 'उसे पत्र पढ़ना होगा।'

स्त्रीलिंग

एकवचन– उसने कताब पढ़नी होग। 'उसे किताब पढ़नी होगी।'

पुलिंग

बहुवचन– उसने कपड़े धोने होङ्न। 'उसे कपड़े धोने होंगे।'

स्त्रीलिंग

बहुवचन– उसने चीजां आह्ननियां होङ्न। 'उसे चीज़ें लानी होंगी।'

13.7 डोगरी में क्रियाओं के सम्भाव्य अर्थ–रूप अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में मिलते हैं। इनके रूप निम्न प्रकार हैं :–

अकर्मक क्रिया – चलना 'चलना'

	एकवचन		***बहुवचन***	
प्रथमपुरुष	चलां	'चलूं'	चलचै	'चलें'
मध्यमपुरुष	चलें	'चलो'	चलो	'चलो/चलें'
अन्यपुरुष	चलै	'चले'	चलन	'चलें'

सकर्मक क्रिया – पीना 'पीना'

	एकवचन		***बहुवचन***	
प्रथमपुरुष	पीआं	'पियूं'	पीचै	'पिएं'

मध्यमपुरुष	पीएं	'पियो'	पीओ	'पियो/पिएं'
अन्यपुरुष	पीऐ	'पिए'	पीन	'पिएं'

13.8 पढ़ी लैन्नी आं। 'पढ़ लेती हूँ'।

धोई लैं। 'धो लूँ'।

सद्दी लैएओ। 'बुला लेना'।

सब्हैरी करी लैचै। 'दोपहर का भोजन कर लें'।

संयुक्त क्रिया के प्रयोग हैं जिनमें **'पढ़', 'धो', 'सद्द्',** कर्

मुख्य धातुओं के साथ **'लैना' (लेना)** सहायक क्रिया का प्रयोग हुआ है।

13.9 डोगरी में 'लैना' सहायक क्रिया के साथ मुख्य क्रियाएं इकारान्त रूप में रहती हैं। जैसे :–

पढ़ी लैना	'पढ़ लेना'
लिखी लैना	'लिख लेना'
खाई लैना	'खा लेना'
हस्सी लैना	'हंस लेना' आदि

13.10 'लैना' सहायक क्रिया के रूप भूत और वर्तमान कालों में लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं। जैसे :–

(i) ***भूतकाल***

में खत लिखी लेआ/लैता।	'मैंने पत्र लिख लिया।'
में खत लिखी ले/लैते।	'मैंने पत्र लिख लिए।'
में चिट्ठी पढ़ी लेई/लैती।	'मैंने चिट्ठी पढ़ ली।'
में चिट्ठियां पढ़ी लेइयां/लैतियां।	'मैंने चिट्ठियाँ पढ़ लीं।'

(ii) ***वर्तमान काल***

रमेश खत पढ़ी लैंदा ऐ।	'रमेश खत पढ़ लेता है।'

रमा खत पढ़ी लैंदी ऐ।	'रमा खत पढ़ लेती है।'
जागत कम्म करी लैंदे न।	'लड़के काम कर लेते हैं।'
कुड़ियां कम्म करी लैंदियां न।	'लड़कियाँ काम कर लेती हैं।'

पुरुष संबन्धी सूचना **'हो'** धातु के रूपों से मिलती है।

13.11 भविष्यत् काल में **'लैना'** सहायक क्रिया कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार रूप ग्रहण करती हैं। जैसे :-

में सेई लैङ।	'में सो लूँगा/लूँगी।'
तूं सेई लैगा/लैगी।	'तुम सो लोगे/लोगी।'
तुस सेई लैगेओ/लैगियां।	'आप सो लेंगे/लेंगी।'
ओह् सेई लैग।	'वह सो लेगा/लेगी।'
ओह् सेई लैङन	'वो सो लेंगे। लेंगी।'

13.12 जेकर................तां (यदि – तो)

ये संकेतार्थ सूचक अव्यय हैं। संयुक्त वाक्यों में एक उपवाक्य के साथ 'जेकर' अथवा 'जे' (यदि) आता है और दूसरे उपवाक्य के साथ 'तां' (तो) का प्रयोग होता है। जैसे :-

जेकर तूं अपने हत्थें बनाएं – बरताएं तां कु'न आखग जे रुट्टी सुआदली नेईं।

'यदि तुम अपने हाथ से खाना बनाओ और परोसो तो कौन कहेगा कि भोजन स्वादिष्ट नहीं।'

13.13 खिच्ची लेई आए ('खींच लाए/ले आए') संयुक्त क्रिया का प्रयोग है।



पाठ–14

धाम बनाने दी त्यारी

(सामूहिक भोजन बनाने की तैयारी)

शामलाल : कु'न करी सकदा ऐ एह् कम्म ?	शामलाल : कौन कर सकता है यह काम ?
रामू : जनाव गणेश करी सकदा ऐ, उसी आखो।	रामू : जनाव गणेश कर सकता है, उसे कहिए।
शामलाल : करी ते केदार बी सकदा ऐ, वैष्णो बी करी सकदी ऐ। इ'नें त्रौं चा जेह्ड़ा चाह् पी ऐठा ऐ उसी मेरे कश भेजी देओ।	शामलाल : कर तो केदार भी सकता है, वैष्णो भी कर सकती है। इन तीनों में से जो चाय पी चुका है उसे मेरे पास भेज दो।
रामू : मेरा खेआल ऐ त्रैवै चाह् पी चुके दे न। दस्सो कु'सी भेजां ?	रामू : मेरा ख्याल है कि सभी चाय पी चुके हैं। बताइए किसे भेजूँ ?
शामलाल : तु'म्मीं अजें तगर चाह् पीती ऐ जां नेईं ? नेईं तां चाह् पीऐ वैष्णो गी सद्द।	शामलाल : तुम ने अभी तक चाय पी है या नहीं ? नहीं तो चाय पीकर वैष्णो को बुलाओ।
वैष्णो : बाबू जी। में इत्थै गै आं। में ते दुर्गी अस दोऐ चाह् पी बैठियां आं। तुस दस्सो केह्ड़ा कम्म करना ऐ ?	वैष्णो : बाबूजी मैं यहीं पर हूँ। मैं और दुर्गी हम दोनों चाय पी चुकी हैं। आप बतलाइए कौन सा काम करना है ?
शामलाल : वैष्णो। नां ते तूं इक्कली एह् सारा कम्म करी सकनीं एं ते नां गै तुस दोऐ रलियै करी सकदियां ओ।	शामलाल : वैष्णो, न ही तुम अकेली यह सारा काम कर सकती हो और न ही तुम दोनों, मिलकर कर सकती हो।
रामू : नेईं बाबू जी। दुर्गी जां वैष्णो गी इ'यां गै नेईं समझो एह्	रामू : नहीं, बाबूजी, दुर्गी या वैष्णो को ऐसे ही न समझिए। यह

कम्म तुस इ'नें गी सौंपियै दिक्खी सकदे ओ। एह् जरूर इसी करी लैङन।	काम आप इनको सौंप कर देख सकते हैं। ये अवश्य ही यह काम कर लेंगी।
शामलाल : रामू तूं अपना नां की नेईं लैंदा ? तु'म्मी करी सकनां एं जां नेईं ?	शामलाल : रामू, तुम अपना नाम क्यों नहीं लेते ? तुम भी कर सकते हो या नहीं ?
रामू : हां जनाव, मिम्मीं करी सकनां। अस सब करी सकने आं।	रामू : हाँ जनाब, मैं भी कर सकता हूँ। हम सब कर सकते हैं।
शामलाल : एह् होई नां गल्ल। मिगी पूरी मेद ही जे तूं करी सकगा पर, तूं हूनै तगर दस्सेआ की नेईं ?	शामलाल : यह हुई न बात। मुझे पूरी आशा थी कि तुम कर सकोगे, परन्तु तुम ने अभी तक बताया क्यों नहीं ?
रामू : तुसें मिगी सिद्धा पुच्छेआ गै नेहा। जे पुछदे ते में आखी ओड़दा।	रामू : आपने मुझे सीधा पूछा ही नहीं था। यदि पूछते तो मैं कह देता।
शामलाल : में तेरा मतेहान लै करदा हा। बैह्स च काफी समां होई चुकेआ ऐ। चलो हून कम्मा दी गल्ल करचै।	शामलाल : मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। अच्छा बातचीत में काफी समय जा चुका है। चलिए अब काम की बात करें।
रामू : जनाब दिक्खो गणेश आई गेआ ऐ। दस्सो असेंगी केह् करना ऐ ?	रामू : जनाब, देखें गणेश भी आ गया है। बताइए हमने क्या करना है ?
शामलाल : औंदे सोमवारें असें संस्था च इक लौह्की जनेही धाम करनी ऐ। अपने मेम्बरें दे इलावा कोई 50 हारे होर लोकें गी बी सद्दे दा ऐ।	शामलाल : आगामी सोमवार के दिन हमने अपनी संस्था में एक छोटा सा प्रीति भोज आयोजित करना है। अपने सदस्यों के अतिरिक्त लगभग 50 लोग बाहर से भी बुलाए गए हैं।

		इस लेई असें कोई डेढ सौ लोकें दी रुट्टी बनानी ऐ।			इसलिए हमने लगभग डेढ सौ लोगों का खाना बनाना है।
रामू	:	तां एह् कम्म ऐ। तुसें पैह्लें गल्ल गै नेईं कीती। गणेश ते केदार दोए रलियै एह् कम्म करी सकदे न।	रामू	:	तो यह काम है ? आपने पहले बात ही नहीं की। गणेश और केदार दोनों मिलकर यह काम कर सकते हैं।
शामलाल	:	चेता रक्खेआं इक बजे तगर सारा किश त्यार होना चाहिदा ऐ।	शामलाल	:	याद रखना एक बजे तक सब कुछ तैयार होना चाहिए।
गणेश	:	जनाब तुस चिंता नेईं करो। अस करी लैगे। वैष्णो ते दुर्गी सलाद–सब्जी चीरने च मदद करङन।	गणेश	:	जनाब, आप चिन्ता मत करें। हम कर लेंगे। वैष्णो और दुर्गी सलाद–सब्जी काटने में सहायता करेंगी।
दुर्गी	:	हां जनाब। अस हर कम्मा च इन्दा हत्थ बंडागियां।	दुर्गी	:	हाँ जनाब, हम हर काम में इनका हाथ बटाएंगी।
रामू	:	तुस एह् रुट्टी बाह्र पकागेओ जां रसोई च ? चेता रक्खेओ एह् बरसांती दा मौसम ऐ अगर बरखा होई तां ?	रामू	:	तुम लोग खाना बाहर पकाओगे या रसोई में ? याद रखना यह बरसात का मौसम है, यदि वर्षा हुई तो ?
गणेश	:	बाबू जी, चिन्ता नेईं करो। उसलै तगर ड्हान कड्ढियै दाल, भत्त, पूरियां खमीरे सब किश त्यार होई चुके दा होना ऐ।	गणेश	:	बाबूजी, चिन्ता मत करें। उस समय तक ड्हान (लम्बा चूल्हा) खोदकर दाल, भात, पूरी, भठूरे सब कुछ तैयार हो चुका होगा।
केदार	:	बाबू जी, एह् ठीक आखा दा ऐ। जेकर एह्दी गल्ल	केदार	:	बाबू जी, यह ठीक कह रहा है। यदि इसकी बात ठीक न

	ठीक नेईं होई तां में ददें नु'क्क चुक्कङ।		हुई तो मैं अपने दाँतों से जूता उठाऊँगा।
शामलाल :	ओह्दी लोड़ नेईं। मिगी तुन्दे पर पूरा भरोसा ऐ। हून तुस चीजें दी लिस्ट त्यार करो। रामू कशा पैसे लेइयै बजारा समान खरीदी आह्नो। तारें स'ञां तगर दुर्गी ते वैष्णो बी सब्जियां लेई आई दियां होङन।	शामलाल :	इसकी जरूरत नहीं है। मुझे तुम सब पर पूरा भरोसा है। अब तुम सामान की सूची तैयार करो। रामू से पैसे लेकर बाजार से सामान खरीद लाओ। रविवार की शाम तक दुर्गी और वैष्णो भी सब्जियें ला चुकी होंगी।
गणेश :	जी जनाब। हर कम्म जि'यां तुस आखदेओ इ'या गै होग।	गणेश :	जी जनाब। जैसे आप कहेंगे, हर काम वैसे ही होगा।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. कु'न करी सकदा ऐ, एह् कम्म ?
2. करी ते केदार बी सकदा ऐ, वैष्णो बी करी सकदी ऐ।
3. मेरा खेआल ऐ त्रैवै चाह् पी चुके दे न।
4. दस्सो, कु'सी भेजां ?
5. तु'म्मीं अजें चाह् पीती ऐ जां नेईं ?
6. जनाब मिम्मीं करी सकनां। अस सब करी सकने आं।
7. में तेरा मतेहान लै करदा हा।
8. बैह्सा चा काफी समां होई चुकेआ ऐ।
9. तुस चिंता नेईं करो। अस करी लैगे।
10. हून तुस चीजें दी लिस्ट त्यार करो।

11. रामू कशा पैसे लेइयै बजारा समान खरीदी आह्नो।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

ओह् पढ़ी बैठा ऐ। *(लिखना)*

ओह् लिखी बैठा ऐ।

ओह् खाई बैठा ऐ।

(पीना)

(न्हौना)

(खेढना)

Model (2)

ओह् पकाई बैठी ऐ। *(सीना)*

ओह् सी बैठी ऐ।

ओह् उट्ठी बैठी ऐ।

(दौड़ना)

(पीह्ना)

(धोना)

Model (3)

ओह् आखी बैठे न। *(बोलना)*

ओह् बोल्ली बैठे न।

ओह् सौंपी बैठे न।

(दस्सना)

(पुच्छना)

(तुप्पना)

Model (4)

ओह् खाई बैठियां न। *(पकाना)*

ओह् पकाई बैठियां न।

ओह् रलाई बैठियां न।

(फंडना)

(तोलना)

(बंडना)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)

में पढ़ी बैठा आं।

में पढ़ी चुकेआ आं।

ओह् दौड़ी बैठा ऐ।

शाम खाई बैठा ऐ।

तूं पी बैठा एं।

Model (2)

में पढ़ी बैठा हा।

में पढ़ी चुकेआ हा।

औह् दौड़ी बैठा हा।

केदार खाई बैठा हा।

तूं पी बैठा हा।

Model (3)	*Model (4)*
में कपड़े धोई बैठी आं।	*में क्रिकेट खेढी बैठी ही।*
में कपड़े धोई चुकी आं।	*में क्रिकेट खेढी चुकी ही।*
ओह् ढोडे पकाई बैठी ऐ।	ओह् त्यारी करी बैठी ही।
वैष्णो पानी भरी बैठी ऐ।	मनीषा पढ़ी बैठी ही।
उषा सोत देई बैठी ऐ।	ओह् टल्ले धोई बैठी ही।

Model (5)	*Model (6)*
अस दौड़ी बैठे आं।	*अस दौड़ी बैठे हे।*
अस दौड़ी चुके आं।	*अस दौड़ी चुके हे।*
ओह् लिखी बैठे न।	ओह् लिखी बैठे हे।
तुस सेई बैठे ओ।	तुस सेई बैठे हे।
ओह् खेढी बैठे न।	ओह् खेढी बैठे हे।

Model (7)	*Model (8)*
अस सेई बैठियां आं।	*अस सेई बैठियां हियां।*
अस सेई चुकियां आं।	*अस सेई चुकियां हियां।*
ओह् दौड़ी बैठियां न।	ओह् दौड़ी बैठियां हियां।
तुस पकाई बैठियां ओ।	तुस पकाई बैठियां हियां।
तुस पीह् बैठियां ओ।	तुस पीह् बैठियां हियां।

4. **पढ़िए, समझिए और लिखिए :–**

(क) **करना, करी सकना, करी चुकना, करी बौह्ना, करी देना**

भरना ....,...............,...............,

आखना ....,..............,..............,

भेजना ....,..............,..............,

(ख) *पढ़, पढ़ियै*, **सी, सीऐ**

सौंप		पी	....
आख		जी	....
दे		पीह्	....

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

1. किन्ने लोकें लेई धाम बनाने दा प्रबन्ध कीता जा करदा हा ?
2. रुट्टी त्यार करने दा कम्म कु'सी सौंपेआ गेआ ?
3. वैष्णो ते दुर्गी दे जिम्मै केह् कम्म आया ?
4. धामा च केह्ड़े पकवान बनाने दा प्रोग्राम हा ?
5. शामलाल ने किन्ने बजे तगर रुट्टी त्यार करने लेई आखेआ हा ?

6. **शब्दों को उचित क्रम में रखकर वाक्य बनाइए :–**

1. सकदा बी करी केदार ते ऐ।
2. ऐ अजें तु'म्मी चाह् तगर पीती।
3. कम्म तुस केह्ड़ा करना दस्सो ऐ।
4. नेहा गै तुसें सिद्धा पुच्छेआ मिगी।
5. हा लै मतेहान में करदा तेरा।
6. हत्थ कम्मा अस च बंडागियां हर इन्दा।
7. न कम्म एह् सकदे गणेश दोऐ केदार रलियै ते करी।

7. **दिए हुए क्रिया शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर उनके सही रूप खाली स्थानों में भरिए :–**

कड्ढना, रक्खना, चीरना, लैना, सौंपना।

1. तुसें सभनें चेता................ऐ।
2. गणेश ने ड्हान................ऐ।
3. वैष्णो ने सब्जियां................न।
4. अस करी................।
5. शामलाल गणेश गी कम्म................बैठा ऐ।

Vocabulary **शब्दावली**

धाम	प्रीतिभोज	खेआल	ख्याल
कम्म	काम	भेजना	भेजना
दस्सना	बताना, दिखाना	रलना	मिलना
सौंपना	सौंपना	समझना	समझना
मेद	आशा	सिद्धा	सीधा
काफी	काफी	बैह्स	बहस
पुच्छना	पूछना	लौह्का	छोटा
मेम्बर	सदस्य	इलावा	इलावा, अतिरिक्त
लोक	लोग	चेता	स्मरण
चिंता	चिंता	बरसांत	बरसात
ड्हान	जमीन खोद कर सामूहिक भोजन के लिए बनाया लम्बा सा चूल्हा	सब्जी	सब्जी
		पूड़ी	पूड़ी
		खमीरा	भठूरा, खमीरा

टिप्पणियाँ

14.1 इस पाठ में आपने **'चुकना'** और **'सकना'** सहायक क्रियाओं के प्रयोग से परिचय किया है।

14.2 डोगरी में **'चुकना'** और **'सकना'** सहायक क्रियाओं के साथ मुख्य क्रिया हमेशा ईकारान्त रूप में रहती है। जैसे :–

पी चुकना	**'पी चुकना'**	**करी सकना**	**'कर सकना'**
होई चुकना	'हो चुकना'	चुक्की सकना	'उठा सकना'
खाई चुकना	'खा चुकना'	बनाई सकना	'बना सकना'
लिखी चुकना	'लिख चुकना'	पढ़ी सकना	'पढ़ सकना'

14.3 **'चुकना'** और **'सकना'** दोनों क्रियाएं वर्तमान, भूत और भविष्यत् तीनों कालों में सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

14.4 **वर्तमान काल**

(i) ***'चुकना'*** क्रिया

गणेश चाह् पी चुकदा ऐ।	'गणेश चाय पी चुकता है।'
में चाह् पी चुकनी आं।	'मैं चाय पी चुकती हूँ।'
तुस चाह् पी चुकदे ओ।	'आप चाय पी चुकते हैं।'
ओह् चाह् पी चुकदे न।	'वे चाय पी चुकते हैं।'

(ii) ***'सकना'*** क्रिया

वैष्णो कम्म करी सकदी ऐ।	'वैष्णो काम कर सकती है।'
तूं कम्म करी सकनी एं।	'तुम काम कर सकती हो।'
अस कम्म करी सकने आं।	'हम काम कर सकते हैं।'
ओह् कम्म करी सकदे न।	'वे काम कर सकते हैं।'

14.5 वर्तमान काल में **'चुकना'** और **'सकना'** दोनों सहायक क्रियाओं के रूप क्रिया के वर्तमान कालिक रूपों की भाँति बनते है।

14.6 ***भूतकाल***

(i) ***'चुकना'*** क्रिया

गणेश चाह् पी चुकेआ हा।	'गणेश चाय पी चुका था।'
में चाह् पी चुकी ही।	'मैं चाय पी चुकी थी।'
अस चाह् पी चुके हे।	'हम चाय पी चुके थे।'
तुस चाह् पी चुकियां हियां।	'आप चाय पी चुकी थीं।'
ओह् चाह् पी चुकी ही।	'वह चाय पी चुकी थी।'

(ii) ***'सकना'*** क्रिया

गणेश कम्म नेहा करी सकेआ।	'गणेश काम नहीं कर सका था।'
ओह् कम्म करी सके हे।	'वे काम कर सके थे।'
तूं कम्म नेही करी सकी।	'तुम काम नहीं कर सकी थी।'
अस सब कम्म करी सकियां हियां।	'हम सब काम कर सकी थीं।'

14.7 भूतकाल में **'चुकना'** और **'सकना'** दोनों सहायक क्रियाओं के रूप क्रिया के भूतकालिक रूपों की भाँति बनते हैं। साथ में प्रयुक्त होने वाली योजक क्रिया भूतकालिक रूप में आती हैं।

14.8 **भविष्यत् काल**

(i) ***'चुकना'*** सहायक क्रिया

गणेश चाह् पी चुकग तां दस्सेआं।	'गणेश चाय पी चुके गा तो बताना।'
जिसलै में कम्म करी चुकङ उसलै आमेआं।	'जब मैं काम कर चुकूंगी तब आना।'
जिसलै तूं पढ़ी चुकगी उसलै कम्म करेआं।	'जब तुम पढ़ चुकोगी तब काम करना।'

(ii) ***'सकना'*** सहायक क्रिया

में कम्म करी सकङ।	'मैं काम कर सकूँगा/सकूँगी।'
तुस कम्म करी सकगे ओ।	'आप काम कर सकेंगे।'
ओह् कम्म करी सकङन।	'वे काम कर सकेंगे। सकेंगी।'
तुस कम्म करी सकगियां।	'आप काम कर सकेंगी।'

14.9 भविष्यत् काल में **'चुकना'** और **'सकना'** सहायक क्रियाओं के रूप क्रिया के भविष्यत् कालीन रूपों की भाँति ही बनते हैं और इनमें लिंग, वचन तथा पुरुष के लिए परिवर्तन भी होता है। जैसे :–

चुकङ	'(मैं) चुकूँगा/चुकूँगी'	चुकगी	'(तू) चुकेगी'
चुकग	'(वह) चुकेगा'	चुकङन	'(वे) चुकेंगे/चुकेंगी'
सकङ	'(मैं) सकूंगा/सकूंगी'	सकगियां	'(तुम/आप/हम)/सकोगी/सकेंगी'
सकग	'(वह) सकेगा/सकेगी'	सकगा	'(तुम)/सकोगे'

14.10 (पी)	चुके दा,	(चुका/चुका हुआ)
(पी)	चुके दे	(चुके/चुके हुए)
(पी)	चुकी दी	(चुकी/चुकी हुई)
(पी)	चुकी दियां	(चुकीं / चुकी हुईं)

ये भी सभी भूतकालिक प्रयोग हैं किन्तु यहाँ पर **'चुके'**, **'चुकी'** के साथ हुआ अर्थ में **'दा'**, **'दे'**, **'दी'**, **'दियां'** का प्रयोग होने से संयुक्त रूप बने हुए हैं। जैसे :–

त्रैवै चाह् पी चुके दे न। ***'तीनों चाय पी चुके हैं।'***

इसी प्रकार

वैष्णो ते दुर्गी सब्जियां लेई आई दियां होङन।

'वैष्णो और दुर्गी सब्जियाँ ले आई होंगी'

में भी, 'लेई आई दियां होङन' संयुक्त क्रिया प्रयोग में **'आई दियां'** भूतकालिक क्रिया का संयुक्त रूप है।

14.11 डोगरी में **'ऐटा'** अथवा **'बैटा'** **'बैटियां'**, **'बैटे'** आदि भी क्रमशः **चुका, चुकियां, चुके** आदि के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे :–

इ'ने त्र'ऊं चा जेहड़ा चाह् पी ऐठा ऐ उसी मेरे कश भेजी देओ।

'इन तीनों में से जो चाय पी चुका है। उसे मेरे पास भेज दो।'

में ते दुर्गी अस दोऐ चाह् पी बैठियां आं।

'मैं और दुर्गी हम दोनों चाय पी चुकी हैं।'

14.12 'जे...................तां' (यदि...................तो)

ये संकेतार्थ सूचक अव्यय हैं। संयुक्त वाक्यों में एक उपवाक्य के साथ **'जे'** अथवा **'जेकर'** आता और दूसरे उपवाक्य के साथ **'तां'** का प्रयोग होता है। जैसे :–

जेकर तुस मिगी पुछदे तां में आखी ओड़दा।

'यदि आप मुझे पूछते तो मैं कह देता।'

जेकर रुट्टी पक्की दी होग तां बुआज मारेआं।

'यदि खाना तैयार होगा तो आवाज लगाना।'

14.13 'नां...................नां गै' (न...................न ही)

ये निषेधार्थवाचक अव्यय है। संयुक्त वाक्यों में एक उपवाक्य के साथ **'नां'** और दूसरे उपवाक्य के साथ **'नां गै'** का प्रयोग होता है। जैसे :–

नां ते तूं इक्कली एह् सारा कम्म करी सकनी एं ते नां गै तुस दोऐ रलियै करी सकदियां ओ।

''न तो तुम अकेले यह सारा काम कर सकती हो और न ही तुम दोनों मिलकर कर सकती हो।''

दो या अधिक शब्दों के बीच भी ये निषेधार्थ वाचक अव्यय प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

नां रुट्टी, नां टल्ला, नां गै मकान मिलेआ ऐ।

"न रोटी, न कपड़ा और न ही मकान मिला है।"

14.14 ***'पीऐ'*** *(पीकर)* क्रिया रूप

"क्रिया को समाप्त करने अथवा साथ-साथ करने" का अर्थ प्रकट करता है। इसीलिए इसे पूर्व कालिक कृदन्त कहते हैं। जैसे :-

खाइयै	'खाकर'	टुरियै	'चलकर'
जाइयै	'जाकर'	दौड़ियै	'भाग कर'
हस्सियै	'हंसकर'	रोइयै	'रोकर'
गाइयै	'गाकर'	नच्चियै	'नाच कर'

धातु के साथ 'इयै' प्रत्यय लगने से ये पूर्वकालिक कृदन्ती रूप बनते हैं। जैसे :-

खा+इयै = खाइयै   टुर्+इयै = टुरियै

जा+इयै = जाइयै   दौड़+इयै = दौड़ियै

ड्हान : *धरती खोद कर बनाया गया गड्ढा और लम्बा चूल्हा जिसमें बड़ी-बड़ी लकड़ियां जलाई जाती हैं। विवाह-शादी एवं धार्मिक अवसरों आदि पर अधिक लोगों के लिए भोजन प्रायः इन्हीं चूल्हों (ड्हानों) पर बनाया जाता है।*

खमीरा : *तली हुई खमीरी रोटी जो प्रायः उत्सवों-त्योहारों अथवा विवाह-शादी आदि अवसरों पर बनाई जाती है।*

***

पाठ – 15

किश्तवाड़ दी यात्रा

(किश्तवाड़ की यात्रा)

रवि	: भाई जी, गर्मियें दियां छुट्टियां आवा करदियां न दस्सो हां कुस केह्ड़े थाह्‌र जाना चाहिदा ऐ ?	रवि	: भाई साहब, ग्रीष्मावकाश हो रहा है, बताइए तो कौन से स्थान पर जाना चाहिए।
शाम	: जम्मू प्रान्त च नेकां थाह्‌र न। समां होऐ तां किश्तवाड़ जां भद्रवाह जनेह् थाह्‌र जरूर दिक्खने चाहिदे न।	शाम	: जम्मू प्रान्त में अनेक स्थल हैं। समय हो तो किश्तवाड़ या भद्रवाह जैसे स्थान जरूर देखने चाहिएं।
रवि	: फ्ही किश्तवाड़ ठीक रौह्‌ग। उत्थै जाने आस्तै केह्ड़ियें गल्लें दा ध्यान रक्खना लोड़दा ऐ ?	रवि	: फिर किश्तवाड़ ठीक रहेगा। वहाँ जाने के लिए कौन–कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
शाम	: जाने कोला पैह्लें पर्यटन विभाग कन्नै रावता करी लैना चाहिदा ते उत्थै अपने ठैह्‌रने दा बाकी थाह्‌र बी जाची लैना चाहिदा। सफर उप्पर जंदे बेल्लै जरूरी चीजां गै लेनियां चाहिदियां न। इक टार्च ते जरूर अपने कन्नै रक्खनी चाहिदी ऐ ते इक स्टोव ते किश भांडे बी अपने कन्नै लेई जाने चाहिदे न।	शाम	: जाने से पहले पर्यटन विभाग से सम्पर्क करना चाहिए और वहाँ अपने ठहरने का स्थान भी निश्चित कर लेना चाहिए। बाकी यात्रा पर जाते समय जरूरी–जरूरी सामान ही लेना चाहिए। एक टार्च तो अवश्य ही साथ रखनी चाहिए और एक स्टोव एवं कुछ बर्तन भी साथ लेने चाहिएं।
रवि	: हां। किश जरूरी दुआइयां बी कन्नै रक्खनियां चाहिदियां न।	रवि	: हां। कुछ जरूरी दवाएं भी साथ रखनीं चाहिएं।
रवि	: उत्थै किन्नी ठण्ड पौंदी ऐ ? क्या गर्म कपड़े बी कन्नै पाई लैने	रवि	: वहाँ कितनी ठण्ड पड़ती है ? क्या गर्म कपड़े भी साथ में ले जाने

		चाहिदे न ? बरखा होने उप्पर खबरै लाड़ी गी बरसांती कोट बी चाहिदा होऐ ?			चाहिए ? बारिश होने पर शायद पत्नी को बरसाती कोट भी चाहिए होगा ?
शाम	:	दपैह्रीं ते मौसम बड़ा रौंसला होई जंदा ऐ। हां, राती लै जरसी जां स्वैटर ते तुसें लाना गै पौना ऐ। जेकर बरखा पेई जा तां गर्म कपड़े बी तुसेंगी चाहिदे होङन।	शाम	:	दोपहर को तो मौसम बड़ा सुहावना हो जाता है। हाँ, रात के समय जरसी या स्वैटर तो आपको पहनना ही पड़ेगा। यदि बारिश हो जाए तो गर्म कपड़े भी आपको चाहिए होंगे।
रवि	:	तुसें मिगी बड़े कम्मै दियां गल्लां दस्सियां न। नेईं तां, मिगी मतियां मुश्कलां झल्लने पौनियां हियां। ओपरे थाह्रै परिवार कन्नै जाइयै परेशान होना पौंदा। इक गल्ल होर पुच्छनी ऐ। क्या सरथल देवी दे मन्दर तक्कर असें गी पैदल जाना पौग ?	रवि	:	आपने मुझे बहुत उपयोगी बातें बताई हैं। नहीं तो, मुझे बहुत कठिनाइयें झेलनी पड़तीं। अनजान जगह पर परिवार के साथ जा कर परेशान होना पड़ता। एक बात और पूछनी है। क्या सरथल देवी के मन्दिर तक हमें पैदल जाना पड़ेगा ?
शाम	:	किश्तबाड़ थमां रोज बडलै न्हेरै इक गड्डी सरथल देवी दे मन्दर तगर जंदी ऐ। ओह् गड्डी तुसें पकड़नी पौनी ऐ। मन्दर शा किश दूरी उप्पर ओह् रुकदी ऐ। उत्थूं दा कोई अद्धे किलो मीटर दा प्हाड़ी सफर तुसेंगी पैदल तैह् करना पौना ऐ।	शाम	:	किश्तबाड़ से रोज सुबह–सवेरे एक गाड़ी सरथल देवी के मन्दिर तक जाती है। वह गाड़ी आपको पकड़नी पड़ेगी। मन्दिर से कुछ दूरी पर वह रुकती हैं। वहां से कोई आधा किलो मीटर का पहाड़ी सफर आपको पैदल ही तय करना पड़ेगा।
रवि	:	दरअसल बच्चे अजें बड़े निक्के न। इस लेई उ'नें गी बी लेना पौना ऐ।	रवि	:	दरअसल बच्चे अभी बहुत छोटे हैं। इसलिए उन को भी ले जाना पड़ेगा।

शाम	:	बड़ी चंगी गल्ल ऐ मां–बब्ब सैर करन जान तां बच्चें गी बी कन्नै लेई जाना चाहिदा। घर कुसी छोड़ियै जा करदे ओ ? बड्डी भैन सद्दी लैनी चाहिदी ही जां फ्ही मासी होरें गी बुलाई लैना हा।	शाम	:	बहुत अच्छी बात है। माता–पिता सैर करने जाएँ तो बच्चों को भी साथ ले जाना चाहिए। घर किसे छोड़ कर जा रहे हैं ? बड़ी बहन को बुला लेना चाहिए था या फिर मौसी जी को बुला लेना था।
रवि	:	बड्डी भैन ते अज्जकल मांदी ऐ। हां मासी होरें गी गै बुलाना पौना ऐ।	रवि	:	बड़ी बहन जी तो आजकल बीमार हैं। हाँ मौसी जी को ही बुलाना होगा।
शाम	:	जेकर सफर आस्तै कोई चीज चाहिदी होऐ ते मिगी दस्सी छोड़ेओ। में भजाई देङ। कैमरा चाहिदा होऐ तां भेजी देङ।	शाम	:	यदि सफर के लिए किसी वस्तु की जरूरत हो तो मुझे बता दीजिएगा मैं भिजवा दूँगा। कैमरा चाहिए भेज दूँगा।
रवि	:	नेईं जी, जो–जो चीजां मिगी पता हियां में पैह्लें गै किट्ठियां करी लेई दियां न। इन्नी बड़मुल्ली जानकारी देने दा तुदा मता–मता धन्नवाद।	रवि	:	नहीं जी, जो–जो वस्तुएं मुझे मालूम थीं मैंने पहले से ही जुटा ली हैं। इतनी बहुमूल्य जानकारी देने के लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1) गर्मियें दियें छुट्टियें च कुस केह्ड़ी थाह्र जाना चाहिदा ऐ ?
2) किश्तबाड़ जां भद्रवाह् जनेह् थाह्र जरूर दिक्खने चाहिदे न।
3) सफर आस्तै मतियें गल्लें दा ध्यान रक्खना लोड़दा ऐ।
4) पर्यटन विभाग कन्नै रावता करी लैना चाहिदा हा।
5) रौह्ने आह्ली थाह्र जाची लैनी चाहिदी ही।

8) तुसें गी जो चीजा चाहिदी होग, दस्सो।

9) बरखा होने उप्पर खबरै बरसांती कोट बी चाहिदा होऐ।

10) ठण्डू च तुसेंगी स्वैटर लाना पौना ऐ।

11) गर्मियें दे मौसम च तुसें गी सूती कपड़े चाहिदे होङन।

12) तुस नेईं होंदे तां मिगी मतियां मुश्कलां झल्लने पौनियां हियां।

13) मन्दर तगर तुसें गी पैदल गै जाना पौना।

14) अड्डे थमां गड्डी पकड़नी पौनी ऐ।

15) किश्तबाड़ दी यात्रा च तुसेंगी प्हाड़ चढ़ने पौने न।

16) मन्दर दे रस्ते च केईं ढक्कियां उतरनियां पौनियां न।

17) दकानदारै गी पूरे पैहे देने लोड़दे न।

18) घरा आस्तै मासी होर बुलाई लैनियां लोड़दियां हियां।

19) सफर आस्तै किश होर चीजां बी चाहिदियां होन तां मंगेओ।

20) मेरा कैमरा चाहिदा होग तां दस्सेओ।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

1) तुसें घर जाना चाहिदा ऐ। (खाना)

तुसें फल खाना चाहिदा ऐ। (न्हौना)

(लाना)

(पढ़ना)

(सौना)

(हस्सना)

(कुर्ता)

(पैन)

3) मिगी घड़ी चाहिदी ही।

(टार्च)

मिगी टार्च चाहिदी ही।

(बोतल)

(चाह्)

(लस्सी)

(पतीली)

(सूई)

4) तुगी खताइयां चाहिदियां न।

(सलाइयां)

तुसी सलाइयां चाहिदियां न।

(दुआइयां)

(सूइयां)

(तीलां)

(बोतलां)

5) शीला गी जाना पौना ऐ।

(पढ़ना)

शीला गी पढ़ना पौना ऐ।

(गाना)

(नच्चना)

(खेढना)

उसी रोना पौग। (जगाना)

(चलाना)

(लखाना)

(जताना)

(करलाना)

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

1. गर्मियें दी छुट्टियें च रवि ने केह् करना चाहिदा ऐ?
2. किश्तबाड़ जाने आस्तै रवि गी केह्ड़ियें गल्लें दा ध्यान रक्खना चाहिदा ऐ?
3. किश्तबाड़ च कसरी होई जाने उप्पर रवि गी केह् करना चाहिदा ऐ?
4. रवि ने सफर उप्पर कन्नै केह्–केह् लेई जाना चाहिदा ऐ?
5. किश्तबाड़ थमां सरथल देवी दे मन्दर तगर पुज्जने आस्तै रवि गी केह्–केह् करना पौग?
6. क्या सरथल देवी दे मन्दर बच्चे बी लेई जाने चाहिदे न?
7. रवि ने घर कु'सी सद्दी लैना चाहिदा हा?

4. **कोष्टक में दी गई क्रियाओं से रिक्त स्थान भरिए :–**

1. किश्तबाड़ .... चाहिदा ऐ। (जाना)
2. टार्च .... चाहिदी ऐ। (लैना)
3. सिर्फ जरूरी चीजां .... चाहिदियां न। (खरीदना)
4. रातीं स्वैटर .... पौना ऐ। (लाना)
5. मुश्कलां .... पौनियां हियां। (झल्लना)

5. **निम्नलिखित पंक्तियों का हिन्दी में अनुवाद करें :–**

तुसें गी केह् चाहिदा ऐ? मिगी किश रपेऽ चाहिदे न। इक टार्च बी चाहिदी ऐ। क्या उसी दुआइयां चाहिदियां न। उ'नें गी इक जरसी चाहिदी ही। तुसें गी किन्नियां जरसियां चाहिदियां हियां। जेकर मेरे कोला किश चाहिदा होग तां मंगी लैएओ। जो–जो चीजां चाहिदियां होङन, में मंगोआई लैङ।

Vocabulary **शब्दावली**

डोगरी	हिन्दी	डोगरी	हिन्दी
किश्तवाड़	किश्तवाड़ (डुग्गर का एक पहाड़ी इलाका)	गर्मियें	गर्मियों
		थाह्‌र	जगह
		नेकां	अनेक
होङन	होंगी	समां	समय
किन्नी	कितनी	जेह्	जैसे
पौंदी	पड़ती	दिक्खने	देखने
खबरै	शायद	गल्लें	बातें/बातों
लाड़ी	पत्नी	आस्तै	लिए
दपैह्‌री	दोपहर को	केह्‌ड़ियें	कौन – सी
रौंसला	सुहावना	लोड़दा	चाहिए
जंदा	जाता	जेकर	यदि
पौना	पड़ना	तुसें	आपने/तुमने
बरखा	बारिश	इ'नें	इन्हें
मिगी	मुझे	कन्नै	साथ
कम्मै दियां	उपयोगी	बी	भी
गल्लां दस्सियां	बातें बताईं	रावता	सम्पर्क
मतियां	बहुत (सारी)	लैना	लेना

झल्लने	झेलनी	ठैह्रने	ठहरने
पौनियां	पड़तीं	जाची लै	जांच लें
ओपरे	अनजान	उप्पर	पर
जाइयै	जाकर	जंदे	जाते
पुच्छनी	पूछनी	मन्दर	मन्दिर
लेनियां	ले जानी	तगर	तक
में	मैं	बडलै	सुबह
दुआइयां	दवाइयाँ	न्हेरै	अन्धेरे
उत्थै	वहाँ	रुकदी	रुकती
दकानां	दुकानें	अद्धे	आधे
ढक्कियां	ढक्कियां	निक्के	छोटे
बड़ी	बहुत	चंगी	अच्छी
बब्ब	बाप	कु'सी	किसे/किसको
छोड़ियै	छोड़कर	बड्डी	बड़ी
भैन	बहन	सद्दी लैनी	बुला लेनी
फ्ही	फिर	बलाई लैनी	बुला लेनी
दस्सी छोड़ेओ	बता देना	भजाई देना	भेज/भिजवा देना
लोड़दियां	चाहिए	पैह्लें	पहले
किट्ठियां	इकट्ठीं	करी लेदियां	कर लीं
इन्नी	इतनी	बड़मुल्ली	बहुमूल्य
तुन्दा	आपका	मता	बहुत
आवा करदियां	आ रहीं	धन्नवाद	शुक्रिया
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी		

टिप्पणियाँ

15.1 इस पाठ में आपने **'चहिदा'** **(चाहिए)** और **'पौना'** **(पड़ना)** सहायक क्रियाओं के प्रयोग से परिचय किया है।

15.2 डोगरी में **'चाहिदा'** सहायक क्रिया संज्ञार्थक रूपों वाली मुख्य क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होती है और 'पौना' सहायक क्रिया संज्ञार्थक रूपों वाली मुख्य क्रिया तथा ईकारान्त मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होती है। जैसे :–

जाना चाहिदा ऐ।	'जाना चाहिए'
लिखना चाहिदा हा।	'लिखना चाहिए था'
जाना पेआ।	'जाना पड़ा'
जाना पौग।	'जाना पड़ेगा।'
रोई पेआ।	'रो पड़ा'

15.3 **'चाहिदा'** सहायक क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ आती है और इसके वाक्यों का कर्ता कर्म कारक में आता है। जैसे :–

असें गी कु'त्थै जाना चाहिदा ऐ ?	'हमें कहाँ जाना चाहिए ?'
तुगी पढ़ना चाहिदा ऐ।	'तुम्हे पढ़ना चाहिए।'
मिगी कपड़े धोने चाहिदे न।	'मुझे कपड़े धोने चाहिएँ।'

15.4 अकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ **'चाहिदा'** सहायक क्रिया पुलिंग एकवचन में ही रहती है। जैसे :–

दस्सो हां कु'स–केह्ड़े थाह्‌र जाना चाहिदा ऐ ?

'बताइए कौन से स्थान पर जाना चाहिए ?'

हूनै तगर उसी पुज्जना चाहिदा हा।

'अब तक उसे पहुँचना चाहिए था।'

रोज बमार रौंह्दे ओ कुसै डाक्टरै गी दस्सना ते चाहिदा ऐ।

'रोज बीमार रहते हो किसी डाक्टर को दिखाना तो चाहिए।'

15.5 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ जब **'चाहिदा'** सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :–

पर्यटन विभाग दे कन्नै रावता करी लैना चाहिदा हा।

'पर्यटन विभाग के साथ सम्पर्क कर लेना चाहिए था।'

किश्तवाड़ ते भद्रवाह जनेह् थाह्र जरूर दिक्खने चाहिदे न।

'किश्तवाड़ और भद्रवाह जैसे स्थान जरूर देखने चाहिएँ।'

ठैह्रने दी थाह्र बी दिक्खी–सुनी लैनी चाहिदी ऐ।

'ठहरने की जगह भी देख–सुन लेनी चाहिए।'.

सफर पर अपनी जरूरतै दियां चीजां गै लेनियां चाहिदियां न।

'सफर पर अपनी जरूरत की चीजें ही लेनी चाहिएँ।'

15.6 **'चाहिदा'** क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई **'संज्ञा'** होती है तो **'चाहिदा'** के रूप संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :–

दुआइयां चाहिदियां होंङन तां लब्भी जाङन।

'दवाइयें चाहिएँ (होंगी) तो मिल जाएँगी।'

कैमरा चाहिदा होग तां दस्सेओ।

'कैमरा चाहिए (होगा) तो कहिएगा।'

मिगी पैसे चाहिदे न।

'मुझे पैसे चाहिएँ।'

उसी कताब चाहिदी ऐ।

'उसे पुस्तक चाहिए।'

15.7 डोगरी में **'चाहिए'** के अर्थ में **'चाहिदा'** के सादृश्य पर **'लोड़दा'** प्रयोग भी होता है। जैसे :–

असेंगी कु'नें गल्लें दा ध्यान रक्खना लोड़दा ऐ ?

'हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?'

जे किश लोड़दा होग जरूर दस्सेओ।

'जो कुछ चाहिए (होगा) जरूर बतलाइएगा।'

15.8 **'चाहिदा'** वाले वाक्यों में काल और अर्थ संबन्धी सूचना योजक क्रिया के रूपों से होती है। जैसे :–

चाहिदा ऐ	'चाहिए'	चाहिदा होग	'चाहिए होगा'
चाहिदा हा	'चाहिए था'	चाहिदा होऐ	'चाहिए हो।'

15.9 **'पौना'** सहायक क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ आती है। अकर्मक क्रियाओं के साथ दो रूपों में प्रयुक्त होती है।

(i) संज्ञार्थक रूपों के साथ

(ii) ईकारान्त रूपों के साथ

15.9.1 संज्ञार्थक रूपों के साथ यह पुलिंग एक वचन में आती है और वाक्य का कर्ता कर्म कारक में होता है। जैसे :–

उ'नें गी टुरना पेआ।	'उन्हें चलना पड़ा।'
जागतै गी पढ़ना पौग।	'लड़के को पढ़ना पड़ेगा (होगा)'
उसी नच्चना पेआ।	'उसे नाचना पड़ा।'

15.9.2 सकर्मक क्रियाओं के ईकारान्त रूपों के साथ **'पौना'** सहायक के रूप वाक्य के कर्ता के लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। जैसे :–

में हस्सी पेआ।	'मैं हँस पड़ा।'

अस हस्सी पे।	'हम हँस पड़े।'
ओह् हस्सी पेई।	'वह हँस पड़ी।'
में हस्सी पौन्नी आं।	'मैं हँस पड़ती हूँ।'
तुस हस्सी पवो।	'आप हँस पड़ें।'
तूं हस्सी पौगी।	'तुम हँस पड़ोगी।'

15.10 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ 'पौना' सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे :–

रातीं लै स्वैटर ते तुसें लाना गै पौना ऐ।

'रात को स्वेटर तो आपको पहनना ही पड़ेगा।'

गर्म कपड़े ते लेने गै पौने न।

'गर्म कपड़े तो ले जाने ही पड़ेंगे।'

रस्ते च इक प्हाड़ी बी चढ़नी पौनी ऐ।

'रास्ते में एक पहाड़ी भी चढ़नी पड़ेगी।'

बत्तै दियां मुश्कलां बी झल्लनियां पौनियां न।

'रास्ते की मुश्किलें भी झेलनी पड़ेंगी।'

15.11 **'पौना'** क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई संज्ञा आती है तो **'पौना'** सहायक के रूप उस संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :–

परूं मती ठंड पेई ही।	'पिछले वर्ष अधिक ठंड पड़ी थी।'
ऐतकी मती गर्मी पेई ऐ।	'इस साल अधिक गर्मी पड़ी है।'
चार साल पैह्‌ले काल पेआ हा।	'चार वर्ष पूर्व अकाल पड़ा था।'
उसी कल मार पेई ही।	'उसे कल मार पड़ी थी।'

15.12 **'पौना'** सहायक क्रिया के साथ मुख्य क्रिया का संज्ञार्थक रूप **'आकारान्त'** के अतिरिक्त **'एकारान्त'** या **'ऐकारान्त'** भी होता है। जैसे :–

मिगी सफर पैदल तैह् करने पौना ऐ।

'मुझे सफर पैदल तय करना पड़ेगा (होगा)'

उसी ढक्की ढलने / ढलनै पौनी ऐ।

'उसे ढक्की उतरना पड़ेगी (होगी)'

मिगी कल उत्थै जाने / जानै पेआ।

'मुझे कल वहाँ जाना पड़ा।'



पाठ–16

घर–परिवार

(घर–परिवार)

पूनम	:	मते चिरें दे तुस साढ़े घर नेईं आए ?	पूनम	:	बहुत देर से आप हमारे घर नहीं आए।
प्रिया	:	गल्ल ते ठीक ऐ पर केह् करां ? मकान बनांदे–बनांदे साल होई गेआ ऐ, अजें तगर पूरा नेईं होआ।	प्रिया	:	बात तो ठीक है पर क्या करूँ ? मकान बनाते–बनाते साल हो गया है, अभी तक पूरा नहीं हुआ।
पूनम	:	तां ते अज्जकल बड़ा कम्म होना ऐ।	पूनम	:	तब तो आजकल बहुत काम होगा।
प्रिया	:	होर केह्, सारा दिन मजदूरें कन्नै खपदे–खपदे ते समान ढोंदे–ढोंदे सब जनें थक्की जन्ने आं।	प्रिया	:	और क्या, सारा दिन मजदूरों के साथ खपते–खपते और समान ढोते–ढोते सब लोग थक जाते हैं।
पूनम	:	रुट्टी बनी गेई ?	पूनम	:	खाना बन गया ?
प्रिया	:	बनी ते गेई पर गर्मी च फुल्के पकांदे–पकांदे परसा आई गेआ ऐ।	प्रिया	:	बन तो गया पर गर्मी में चपातियां पकाते–पकाते पसीना आ गया है।
पूनम	:	गुड़िया कु'त्थै गेदी ऐ ?	पूनम	:	गुड़िया कहाँ गई है ?
प्रिया	:	ओह् सेई गेदी ऐ।	प्रिया	:	वह सो गई है।
पूनम	:	ओह् इन्नी तौले सेई गेई।	पूनम	:	वह इतनी जल्दी सो गई।
प्रिया	:	हां, ओह् रुट्टी खा करदी ही ते रुट्टी खंदे–खंदे गै सेई गेई।	प्रिया	:	हाँ, वह खाना खा रही थी और खाना खाते–खाते ही सो गई।
पूनम	:	थुआढ़े कन्नै आह्लें दे जागतै दा केह् हाल ऐ ?	पूनम	:	आपके साथ वालों के लड़के का क्या हाल है ?
प्रिया	:	ओह्दा। ओह् ते कल नैह्रा च डुबदे–डबदे बचेआ। अस बी मसीबता कोला बची गे।	प्रिया	:	उसका। वह तो कल नहर में डूबते–डूबते बच गया। हम भी संकट से बच गए।

पूनम	:	अच्छा ते हून में चलनी आं गुड़िया दे पापा आई गे न, सोनू दे पापा बी आई गे लभदे न।	पूनम	:	अच्छा तो अब मैं चलती हूँ। गुड़िया के पापा आ गए हैं। सोनू के पापा भी आ गए लगते हैं।
प्रिया	:	अज्ज ते बड़ा चिर लाई ओड़ेआ ?	प्रिया	:	आज तो बड़ी देर लगा दी ?
रमेश	:	हां, कम्म ज्यादा हा। बैठे–बैठे किश चिर गै होई गेआ ऐ। प्रिया, अजकल बच्चे पढ़दे बी हैन जां खेढी–खाढियै गै सेई जंदे न ?	रमेश	:	हाँ, काम अधिक था बैठे–बैठे कुछ देर ही हो गई है। प्रिया, आजकल बच्चे कुछ पढ़ते भी हैं या खेल–कूद कर ही सो जाते हैं ?
प्रिया	:	सारा दिन नचदे गै रौंह्दे न। आखा ते बिन्द मनदे गै नेईं।	प्रिया	:	सारा दिन नाचते ही रहते हैं। कहना तो बिलकुल मानते ही नहीं।
रमेश	:	में उ'नें गी आखनां जे रुट्टी त्यार ऐ।	रमेश	:	मैं उन्हें कहता हूँ कि खाना तैयार है।
प्रिया	:	हां, पैह्ले रुट्टी खाई लैओ ते फ्ही लिखदे–पढ़दे र'वेओ।	प्रिया	:	हाँ, पहले खाना खा लो और फिर लिखते–पढ़ते रहना।
रमेश	:	तूं अज्ज दिनेश हुंदे घर मुन्नने उप्पर गेदी ही ?	रमेश	:	तुम आज दिनेश के घर मुण्डन पर गई थी ?
प्रिया	:	हां, मिगी ते उन्दा घर बी पता नेईं हा पर फ्ही बी पुछदी–पुछदी पुज्जी गै गेई।	प्रिया	:	हाँ, मुझे तो उनका घर भी मालूम नहीं था, पूछते–पूछते पहुँच ही गई।
रमेश	:	खरा कीता जाना जरूरी हा। तूं बापस इक्कली गै आई ही ?	रमेश	:	अच्छा किया। जाना जरूरी था। तुम वापस अकेली ही आई थी।
प्रिया	:	नेईं, में ते नीलम किट्ठियां आइयां हां। औंदे मौके मैटाडोर आह्ले ने असें गी बड़ी दूर लुआही ओड़ेआ ते गर्मी च चली–	प्रिया	:	नहीं, मैं और नीलम इकट्ठी आई थीं। आते समय मैटाडोर वाले ने हम को बहुत दूर उतार दिया और गर्मी में चल–चल के मेरा बुरा

		चलियै मेरा बुरा हाल होई गेआ।			हाल हो गया।
रमेश	:	होर सनाऽ उन्दे घरै का प्रोग्राम कनेहा रेहा ?	रमेश	:	और बताओ उनके घर का कार्यक्रम कैसा रहा ?
प्रिया	:	ओह् ते शैल हा। इक नच्चने आह्ली ते चार गाने आह्लियां सद्दी दियां हियां। रुट्टी बनाने आह्ले ने बी कमाल कीते दा हा। खाने आह्ले सारे गै तरीफ करा करदे हे।	प्रिया	:	वह तो अच्छा था। एक नाचने वाली और चार गाने वाली बुलाई हुई थीं। खाना बनाने वाले ने भी कमाल किया था। खाने वाले सभी ही तारीफ कर रहे थे।
रमेश	:	अच्छा। तां सच्च गै कमाल हा। पर ओह् गाने आह्लियां कुड़ियां कु'न हियां ?	रमेश	:	अच्छा। तो सच ही कमाल था। पर, वे गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?
प्रिया	:	उन्दा ते पता नेईं पर नच्चने आह्ली कुड़ी कुतूं बाह्रा दा आई दी ही। दिक्खने आह्ले लोक बी इ'यै पुच्छा करदे हे।	प्रिया	:	उनका तो मालूम नहीं, पर नाचने वाली लड़की कहीं बाहर से आई हुई थी। देखने वाले लोग भी यही पूछ रहे थे।
रमेश	:	रुट्टी बनाने आह्ला लुहाई इत्थूं दा हा जां उ'ब्बी कुतूं बाह्रा दा सद्दे दा हा ?	रमेश	:	रोटी बनाने वाला हलवाई यहीं से था या वह भी कहीं बाहर से बुलाया गया था ?
प्रिया	:	ओह् शायद इत्थूं दा गै हा। सुनो, तुस बी थक्के दे होगेओ, बिन्द रमान करी लैओ।	प्रिया	:	वह तो शायद यहीं से था। सुनिये, आप भी थके होंगे कुछ, आराम कर लीजिए।
रमेश	:	चलो। लेटे–लेटे अखबार गै पढ़ी लैन्नां।	रमेश	:	चलो। लेटे–लेटे अखबार ही पढ़ लेता हूँ।

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. मकान बनांदे–बनांदे साल होई गेआ ऐ।
2. मजदूरें कन्नै खपदे–खपदे ते समान ढोंदे–ढोंदे थक्की जन्ने आं।
3. गर्मी च फुल्के पकांदे–पकांदे परसा आई गेआ ऐ।
4. गुड़िया रुट्टी खंदे–खंदे गै सेई गेई।
5. सारा दिन नचदे–टपदे ते पौड़ियां चढ़दे–उतरदे रौंह्दे न।
6. उन्दे घर पुछदी – पछांदी पुज्जी गै गेई।
7. लोग्र खाई–खाइयै बस नेईं करा दे हे।
8. सब किश बनाई–बनूई ओड़ेआ ऐ आओ ते खाओ।
9. दफ्तर बी कम्मा च बैठे–बैठे थक्की जान होंदा ऐ?
10. छुट्टी आह्ले रोज सुत्ते–बैठे टैमां दा पता गै नेईं लगदा।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

गुड़िया खंदे–खंदे गै सेई गेई। *(रोंदे–रोंदे)*

गुड़िया रोंदे–रोंदे गै सेई गेई।

जागत खेढदे–खेढदे थक्की गेआ। (पढ़दे–पढ़दे)

(लिखदे–लिखदे)

(चलदे–चलदे)

Model (2)

जागत खेढी–खेढियै सेई गेआ। *(रोई–रोइयै)*

जागत रोई–रोइयै सेई गेआ।

ओह् चली–चलियै थक्की गेई। (पढ़ी–पढ़ियै)

(टुरी–टुरियै)

(पुच्छी–पुच्छियै)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)	***Model (2)***
में चलदे–चलदे थक्की गेआ।	*अस खेढदे–खेढदे भुल्ली गे।*
में चलदे–चलदे थक्की गेई।	*अस खेढदे–खेढदे भुल्ली गेइयां।*
में हसदे–हसदे रोई पेआ।	अस जंदे–जंदे बेही गे।
तूं डिगदे–डिगदे बचेआ।	तुस आखदे–आखदे रेही गे।
ओह् चलदे–चलदे रुकी गेआ।	ओह् तुपदे–तुपदे आई पुज्जे।

4. उदाहरणों का अनुसरण करते हुए दी गई क्रियाओं के रूप बनाइए :–

उदाहरण :–	*औना*	*औंदे–जंदे*
	देना	....
	उट्ठना	....
	चढ़ना	....
उदाहरण :–	लिखना	लिखदे–पढ़दे
	खाना	....
	न्हौना	....
	आखना	....

5. पाठ की सहायता से रिक्त स्थान भरिए :–

1. मजदूरें कन्नै .... ते समान .... सब जनें थक्की जन्ने आं।
2. गर्मी च फुल्के .... परसा आई गेआ ऐ।

3. गुड़िया रुट्टी .... गै सेई गेई।

4. अज्जकल बच्चे पढ़दे बी हैन जां .... सेई जंदे न।

5. सारा दिन .... ते .... रौंह्‌दे न।

6. सोनू उट्‌ठ ते उट्‌ठियै .... लै।

7. सोनू तूं न्हाई लेआ ऐ ते जा किश .... ते पढ़।

8. सब किश .... ओड़ेआ ऐ आओ ते खाओ।

9. गर्मी च .... मेरा बुरा हाल होई गेआ।

6. पढ़िए, समझिए और लिखिए :–

पीना–	*पींदे–पींदे*	*पी–पीऐ*
लेटना–	*लेटदे–लेटदे*	*लेटी–लेटियै*
दौड़ना		....
पकाना		....
खपना		....
बनाना		....
चलना		....
रोना		....

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

1. प्रिया गी केह्‌ करदे साल होई गेआ ?

2. गर्मी च केह्‌ करदे परसा आई गेआ ?

3. सारा दिन बच्चे केह्‌ करदे रौंह्‌दे न ?

4. प्रिया दिनेश हुन्दे घर कि'यां पुज्जी ?

5. प्रिया ने सोनू गी केह् करने आस्तै आखेआ ?

6. गर्मी च ओह्‌दा बुरा हाल कि'यां होआ ?

7. दफ्तर केह् करदे थक्की जान होंदा ऐ ?

8. छुट्‌टी आह्‌ले दिन केह् करदे टैमा दा पता नेईं चलदा ?

8. **निम्नलिखित कृदन्तों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–**

बनांदे–बनांदे, खपदे–खपदे, ढोंदे–ढोंदे, पकांदे–पकांदे, डुबदे–डुबदे, खेढी–खाढियै, चढ़दे–उतरदे, नचदे–टपदे, लिखदे–पढ़दे, पुछदी–पछांदी, खाई–खाइयै, चली–चलियै, न्हाई–न्हूई, दिक्खी–सुनी, खाई–पी, लेटे–लेटे, सुत्ते–बैठे, बैठे–बैठे,

Vocabulary **शब्दावली**

बनांदे–बनांदे	बनाते–बनाते	खपदे–खपदे	खपते–खपते
ढोंदे–ढोंदे	ढोते–ढोते	पकांदे–पकांदे	पकाते–पकाते
खंदे–खंदे	खाते–खाते	डुबदे–डुबदे	डूबते–डूबते
करदे–करदे	करते–करते	खेढी–खाढियै	खेल–कूद कर
नचदे–टपदे	नाचते–कूदते	चढ़दे–उतरदे	चढ़ते–उतरते
लिखदे–पढ़दे	लिखते–पढ़ते	पुछदी–पछांदी	पूछते–पूछते
खाई–खाइयै	खा–खाकर	चली–चलियै	चल–चलकर
न्हाई–न्हूई	नहा–वहा	दिक्खी–सुनी	देख–सुन
खाई–पी	खा–पीकर	बैठे–बैठे	बैठे–बैठे

लेटे–लेटे	लेटे–लेटे	इक्कली	अकेली
पुज्जी	पहुँची	बजारा	बाज़ार से
अज्ज	आज	मुन्नन	मुंडन संस्कार
आह्ले	वाले	तौले	जलदी
थक्की	थकी	कु'त्थै	कहाँ
सेई	सो	जन्ने आं	जाते हैं
परसा	पसीना	थुआढ़े	आपके।
पौड़ियां	सीढ़ियाँ		

टिप्पणियाँ

16.1 इस पाठ में आप **पुनरुक्त क्रियाओं तथा क्रियाओं के कर्तावाचक** रूपों से अवगत हुए हैं।

16.2 डोगरी में पुनरुक्त क्रियाओं का प्रयोग अधिकतर वर्तमान कालिक और भूतकालिक क्रिया–रूपों की पुनरुक्ति से होता है। जैसे :–

बनांदे–बनांदे	'बनाते–बनाते'
खन्दे–खन्दे	'खाते–खाते'
बैठे–बैठे	'बैठे–बैठे'
खड़ोते–खड़ोते	'खड़े–खड़े'
नचदे–टपदे	'नाचते–कूदते'
फिरी–फिरियै	'फिर–फिर कर'

16.3 वर्तमान कालिक क्रिया–रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं प्रायः दो रूपों में मिलती है :

(i) समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

(ii) भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

16.4 दो समान क्रियाओं से वर्तमान कालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी **'पुनरुक्त क्रियाएं'** हैं :

मकान बनांदे–बनांदे साल होई गेआ ऐ।

'मकान बनाते–बनाते साल बीत गया है।'

फुल्के पकांदे–पकांदे परसा आई गेआ ऐ।

'रोटियाँ बनाते–बनाते पसीना आ गया है।'

सारा दिन मजूरें कन्नै खपदे–खपदे ते समान ढोंदे–ढोंदे थक्की गे आं।

'दिन भर मजदूरों से खपते–खपते और समान ढोते–ढोते थक गए हैं।'

यह सभी पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आने के कारण अविकारी रूप में हैं और कार्य की निरन्तरता सूचित करते हुए क्रिया विशेषण का काम कर रही हैं।

16.5 वर्तमान कालिक क्रियाओं के ये पुनरुक्त रूप वाक्य के कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे :–

ओह् रुट्टी खा करदी ही खंदी–खंदी गै सेई गेई।

'वह खाना खा रही थी खाती–खाती ही सो गेई।'

ओह्दियां स्हेलियां घर पुछदियां–पुछदियां आई गेइयां।

'उसकी सहेलियें घर पूछती–पूछती आ गईं।'

ञ्याणा रोंदा–रोंदा सेई गेआ।

'बच्चा रोता–रोता सो गया।'

16.6 दो भिन्न–भिन्न क्रियाओं के वर्तमान कालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी 'पुनरुक्त क्रियाएं' इस प्रकार हैं :–

बच्चे सारा दिन नचदे–टपदे रौंह्दे न।

'बच्चे सारा दिन नाचते–कूदते रहते हैं।'

पैह्ले रुट्टी खाई लैओ ते फ्ही लिखदे–पढ़दे र'वेओ।

'पहले खाना खा लें फिर बाद में लिखते–पढ़ते रहें।'

इन दोनों उदाहरणों की पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के पुलिंग–बहुवचनी रूप के अनुसार पुलिंग बहुवचन में ही हैं। इसके साथ ही ये 'एकारान्त' रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :–

कुड़ी नचदे–टपदे डिग्गी पेई।

'लड़की नाचते–कूदते गिर पड़ी।'

कुड़ियां लिखदे–पढ़दे थक्की गेइयां।

'लड़कियाँ लिखते–पढ़ते थक गईं।'

नौकर नचदे–टपदे डिग्गी पेआ।

'नौकर नाचते–कूदते गिर पड़ा।'

16.7 भूतकालिक क्रिया–रूपों से पुनरुक्त क्रियाएं भी दो प्रकार की होती हैं :–

(i) समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

(ii) भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

16.8 दो समान भूतकालिक क्रिया रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं

बैठे–बैठे किश चिर गै होई गेआ।

'बैठे–बैठे कुछ देर ही हो गई।'

खरा। लेटे–लेटे अखबार गै पढ़ी लैन्नां।

'चलो। लेटे–लेटे अखबार ही पढ़ लेता हूँ।'

इन वाक्यों में भूतकालिक पुनरुक्त रूप क्रिया की स्थिति सूचित कर रहे हैं और 'एकारान्त' रूप में होने के कारण कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार नहीं है। किन्तु ये वाक्य के कर्ता के अनुसार रूप ग्रहण करते हुए भी क्रिया विशेषणों का कार्य करते

हैं। जैसे :–

ओह् बैठा–बैठा अखबार पढ़दा रेहा।

'वह बैठा–बैठा अखबार पढ़ता रहा।'

शीला लेटी–लेटी टी. वी. दिक्खा करदी ही।

'शीला लेटी–लेटी टी. वी. देख रही थी।'

16.9 दो भिन्न–भिन्न क्रियाओं के भूतकालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी पुनरुक्त क्रियाएं हैं :–

तूं सुत्ती–बैठी केह् सोचदी रौह्न्नी एं?

'तुम सोई–बैठी क्या सोचती रहती हो?'

ओह् बैठा–खड़ोता इक्कै गल्ल करदा रौंह्दा ऐ।

'वह बैठा–खड़ा एक ही बात करता रहता है।'

ऊपर दिए गए वाक्यों में पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के लिंग, वचन अनुसार हैं और क्रिया विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त हैं। यही पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :–

तूं सुत्ते–बैठे केह् सोचदी रौह्न्नी एं?

'तुम सोए–बैठे क्या सोचती रहती हो?'

ओह् बैठे–खड़ोते इक्कै गल्ल करदा रौंह्दा ऐ।

'वह बैठे–खड़े एक ही बात करता रहता है।'

16.10 पूर्व कालिक क्रिया रूपों की पुनरुक्ति से भी पुनरुक्त क्रियाएं बनती हैं और ऐसी पुनरुक्त क्रियाएं एक ही रूप में रहती हैं। जैसे :–

ञ्याणे खेढी–खेढियै सेई जंदे न।

'बच्चे खेल–खेल कर सो जाते हैं।'

फिरी–फिरियै मेरा हाल बुरा होई गेआ ऐ।

'फिर–फिर कर मेरा हाल बुरा हो गया है।'

इन वाक्यों में 'खेढी–खेढियै' और 'फिरी–फिरियै' पूर्व कालिक क्रिया रूपों की क्रमशः 'खेढियै' और 'फिरियै' के पुनरुक्त रूप है। इन पुनरुक्ति रूपों में संक्षेपीकरण की प्रवृत्ति रहती है इसीलिए 'फिरियै–फिरियै' के स्थान पर 'फिरी–फिरियै' और 'खेढियै–खेढियै' के स्थान पर 'खेढी–खेढियै' रूप प्रयुक्त होते है।

16.11

नच्चने आह्ली	'नाचने वाली'
गाने आह्लियां	'गाने वाली'
खाने आह्ले	'खाने वाले'
रुट्टी बनाने आह्ला	'रोटी बनाने वाला'

क्रियाओं के कर्ता वाचक रूप हैं। ये संज्ञार्थक क्रियाओं को अन्त में **'आ'** के स्थान पर **'ए'** आदेश करके साथ में **'आह्ला' (वाला)** लगाने से बने हैं और जिस क्रिया से बनते हैं उसके कर्ता के अर्थ का भाव प्रकट करते हैं।

16.12 क्रियाओं के कर्तावाचक रूप संज्ञा और विशेषण दो रूपों में प्रयुक्त होते हैं।

(i) संज्ञा के रूप में

चार गाने आह्लियां सद्दी दियां न।

'चार गाने वाली बुलाई हुई हैं।'

रुट्टी बनाने आह्ले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(ii) विशेषण के रूप में

ओह् गाने आह्लियां कुड़ियां कु'न हियां ?

'वे गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

रुट्टी बनाने आह्ला लुहाई इत्थूं दा हा ?

'रोटी बनाने वाला हलवाई यहाँ का था ?'

16.13 **'गाने आह्लियां'** शब्द वाक्य में जब संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होता तो संज्ञा की भूमिका निभाता है और यदि इसके साथ आगे कोई संज्ञा (जैसे कुड़ियां) जुड़ जाती है तो यह उस संज्ञा की विशेषता बतलाने के कारण विशेषण का काम करता है। जैसे गाने आह्लियां कुड़ियां (गाने वाली लड़कियाँ)

16.14 कर्तवाचक क्रिया–रूप संज्ञा और विशेषण दोनों रूपों में कर्ता के लिंग, वचन कारक, के अनुसार रहते हैं। जैसे :–

(i) संज्ञा रूप में

पुलिंग

एकवचन रुट्‌टी बनाने आह्‌ले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(कर्ता कारक विभक्ति युक्त)

बहुवचन खाने आह्‌ले सारे गै तरीफ करा करदे हे।

'खाने वाले सभी तारीफ कर रहे थे।'

(कर्ता कारक सरल)

स्त्रीलिंग

एकवचन इक नच्चने आह्‌ली सद्‌दी दी ही। (कर्म कारक सरल)

'एक नाचने वाली बुलाई (हुई) थी।'

बहुवचन चार गाने आह्‌लियां बी सद्‌दी दियां हियां। (कर्म कारक सरल)

'चार गाने वाली भी बुलाई (हुई) थीं।'

संज्ञा के रूप में आने पर इन कर्तावाचक रूपों में कारक के लिए भी परिवर्तन होता है।

(ii) विशेषण के रूप में

पुलिंग

एकवचन	रुट्टी बनाने आह्ला लुहाई कुत्थूं दा हा ?
	'रोटी बनाने वाला हलवाई कहाँ का था ?'
बहुवचन	दिक्खने आह्ले लोक बी इ'यै पुच्छा करदे हे।
	'देखने वाले लोग भी यही पूछ रहे थे।'

स्त्रीलिंग

एकवचन	ओह् नच्चने आह्ली कुड़ी कुतूं बाह्‌रा दा आई दी थी।
	'वह नाचने वाली लड़की कहीं बाहर से आई थी।'
बहुवचन	गाने आह्लियां कुड़ियां कु'न हियां ?
	'गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

विशेषण रूपों में प्रयुक्त होने पर ये कर्तावाचक रूप संज्ञा के लिंग, वचन और कारक के अनुसार होते हैं।

* * *

पाठ–1 7

मेले जागे

(मेले जाएँगे)

नीतू : मीनू। तुगी अपना वायदा भुल्ली गेआ ? इत्थै बैठे–बैठे केह् सोचा करनी एं ? चल तौले–तौले त्यार हो।	नीतू : मीनू। तुम अपना वादा भूल गई ? यहाँ बैठे–बैठे क्या सोच रही हो ? चल जल्दी से तैयार हो।
मीनू : तूं केह्ड़े वायदे दी गल्ल करा करनी एं ? में केईं वायदे कीते होङन।	मीनू : तुम कौन से वादे की बात कर रही हो ? मैंने तो केई वादे किए होंगे।
नीतू : तां एह् गल्ल ऐ। चेता कर हां उस दिन शवाले मंदर टुरदे–टुरदे तूं केह् आखेआ होग ?	नीतू : तो यह बात है। याद करो न उस दिन शिवालय मन्दिर चलते–चलते तूने क्या कहा होगा ?
मीनू : नीतू। में केइयें चीजें दे बारे च आखदी होङ। तूं दस्स तुगी केह् चाहिदा ऐ ? तूं इ'यां फलौह्नियां की पा करनी एं ? साफ–साफ की नेईं दसदी ?	मीनू : नीतू। मैं कई चीजों के बारे में कहती हूँगी। तुम बताओ तुम्हें क्या चाहिए। तुम इस प्रकार पहेलियां क्यों बुझा रही हो ? साफ–साफ क्यों नहीं कहती ?
नीतू : चीजें दे बारे च तूं कुसै होर गी आखेआ होग। सच्चें–मुच्चें मिगी तेरे शा किश नेईं लोड़दा ते नां गै में कोई फलौह्नियां पा करनी आं। चेता कर हां तूं आखेआ नेईं हा जे शिवारात्री आह्ले दिन अस साथें–साथें मंदर जागे। उत्थै उस दिन बड़े प्रोग्राम होने न।	नीतू : चीजों के बारे में तूने किसी और से कहा होगा। यकीन मानो मुझे तुम से कुछ नहीं चाहिए और न ही मैं कोई पहेली बुझा रही हूँ। याद करो तुमने कहा नहीं था कि शिवारात्रि वाले दिन हम साथ–साथ मन्दिर जाएंगे। उस दिन वहाँ बहुत से कार्यक्रम होंगे।

मीनू : ठीक–ठीक। तूं सच्च आखा करनी एं। में जरूर तुगी आखेआ होना ऐ ते घर आनियै मम्मी गी बी सनाया होग जे अस दोऐ रह्‌ोली–रह्‌ोली मंदर जागियां।

नीतू : तां ते मम्मी जाने आस्तै जरूर मन्नी जाङन ?

मीनू : हां। ओह् ते पक्क गै मन्नी जाङन पर मुश्कल एह् ऐ जे ओह् इसलै घर नेईं न ते नां गै मिगी पता ऐ जे ओह् कु'त्थै गेइयां होङन।

नीतू : कोई गल्ल नेईं तूं अपनी भाबी गी सनाई आ ते चल। ओह् ते घर गै होनी ऐ ?

मीनू : इसलै ओह् बी घर नेईं। पर, ओह् अपनी भैन दे घर गै गेई होनी ऐ।

नीतू : उन्दे घर फोन ते होना गै तूं उसी फोन पर दस्सी ओड़ ते फटोफट त्यार होई जा।

मीनू : फोन करने दी लोड़ नेईं अस किश चिर बलगी लैन्ने आं। उ'न्नै तौले गै आई जाना ऐ।

नीतू : ठीक ऐ। इन्ने तगर तूं त्यार होई जा। में तेरे आस्तै कपड़े तालनी आं।

मीनू : ठीक–ठीक। तुम सच कह रही हो मैंने जरूर तुम्हें कहा होगा और घर आकर मम्मी को भी बताया होगा कि हम दोनों साथ–साथ मंदिर जाएँगी।

नीतू : तब तो मम्मी जाने के लिए जरूर मान जाएंगी ?

मीनू : हाँ। वे तो पक्का मान जाएँगी पर मुश्किल यह है कि वे इस समय घर पर नहीं और न ही मुझे मालूम है कि वे कहाँ गई होंगी।

नीतू : कोई बात नहीं, तुम अपनी भाभी को कह दो और चलो। वह तो घर पर ही होगी ?

मीनू : इस वक्त वह भी घर पर नहीं। पर, वह अपनी बहन के घर तक ही गई होगी।

नीतू : उनके यहाँ फोन तो होगा ही तुम उसे फोन पर बता दो और जल्दी से तैयार हो जाओ।

मीनू : फोन करने की जरूरत नहीं। हम कुछ देर प्रतीक्षा कर लेते हैं वह जल्दी ही आ जाएगी।

नीतू : ठीक है। इतने में तुम तैयार हो जाओ। मैं तुम्हारे लिए कपड़ों का चयन करती हूँ।

मीनू :	एह् चंगी गल्ल ऐ। एह् मेरी लमारी ऐ। दस्स में केह् लां ?	मीनू :	यह अच्छी बात है। यह मेरी अलमारी है। बताओ क्या पहनूँ ?
नीतू :	दिक्ख। एह् नीला टिमकड़े आह्ला कनेहा शैल सूट ऐ !	नीतू :	देखो। यह नीला बिन्दियों वाला सूट कितना सुन्दर है !
मीनू :	पर एह् में अदुं तारा दे ब्याह् पर बी लाया हा।	मीनू :	पर यह मैंने तब तारा की शादी पर भी पहना था।
नीतू :	फ्ही केह् होआ तूं अज्ज बी इसी लाई सकनी एं ?	नीतू :	तो क्या ? तुम आज भी इसे पहन सकती हो ?
मीनू :	पर परती–परतियै इक्कै सूट लाना मिगी चंगा नेईं लगदा।	मीनू :	किन्तु, बार–बार एक ही सूट पहनना मुझे अच्छा नहीं लगता।
नीतू :	तां फ्ही एह् फुल्लें आह्ला सैल्ला सूट लाई लै ते कन्नै एह् सैल्ला शाल बी लेई लै।	नीतू :	तो फिर यह फूलों वाला हरा सूट पहन लो और साथ में यह हरा शाल भी ले लो।
मीनू :	शाल दी केह् लोड़ ऐ ? इन्नी ठण्ड ते होन नेईं लगी।	मीनू :	शाल की क्या जरूरत है ? इतनी ठंड तो होगी नहीं।
नीतू :	बेशक्क। हून भामें ठण्ड नेईं ऐ पर तुगी पता ऐ जे असें दिनभर उत्थै मेला दिक्खना ऐ ते फ्ही उत्थै गै रातीं शिवजी दा ब्याह् बी सुनने दा प्रोग्राम बनाया हा ?	नीतू :	बेशक। इस समय चाहे सर्दी नहीं है पर तुमको मालूम है कि हमने दिन भर वहाँ मेला देखना है और फिर रात को वहीं शिव विवाह सुनने का प्रोग्राम भी बनाया था ?
मीनू :	हां। ओह् ते ठीक ऐ।	मीनू :	हाँ। वह तो ठीक है।
नीतू :	जि'यां–जि'यां दिन घरोग उ'आं ठण्ड बी बधदी जाग। इसकरी शालै बगैर ते तूं ठरी जागी।	नीतू :	जैसे–जैसे दिन ढलेगा वैसे–वैसे ठंड भी बढ़ती जाएगी। इसलिए शाल के बिना तो तुम ठिठुर जाओगी।
मीनू :	ठीक–ठीक। में समझी गेई ओह् दिक्ख मेरी भाबी बी आई गेई	मीनू :	ठीक–ठीक। मैं समझ गई। वह देखो मेरी भाभी भी आ गई है।

	ऐ। हून तूं पञ्ज मिन्ट बलग। में फटाफट त्यार होई जन्नी आं।		अब तुम पांच मिन्ट प्रतीक्षा करो। मैं झटपट तैयार हो जाती हूँ।
नीतू :	पञ्ज की ? पन्दरां मिन्ट बलगङ। तूं मजे–मजे कन्नै त्यार हो। फ्ही गै जाने दा बी अनन्द ऐ।	नीतू :	पाँच क्यों ? पन्द्रह मिनट प्रतीक्षा करूँगी। तू मज़े–मज़े से तैयार हो। तभी जाने का भी मज़ा है।

EXERCISES

1. मौखिक उत्तर दीजिए :–

1. नीतू मीनू गी केहड़े वायदे लेई चेता करा दी ही ?
2. नीतू ते मीनू दौनें शवाले मंदर कदूं जाना हा ?
3. शिवरात्री आह्ले रोज शवाले मंदर केह्–केह् होंदा ऐ ?
4. मीनू ने नीतू गी किश चिर बलगने आस्तै की आखेआ ?
5. नीतू ने मीनू गी केह्ड़ा सूट लाने दी सलाह् दित्ती ?
6. नीतू टिमकड़ें आह्ला नीला सूट लाने लेई की नेईं मन्नी ?
7. नीतू ने मीनू गी शाल लैने आस्तै की आखेआ ?
8. नीतू केह्ड़ा सूट लाइयै मंदरै लेई त्यार होन लगी ही ?

2. उदाहरण वाक्यों के समान अलग–अलग वाक्य बनाएँ :–

ओह् कु'त्थै गेई होग ?

ओह् कु'त्थै गेइयां होङन ?

ओह् कु'त्थै गेआ होग ?

ओह् कु'त्थै गे होङन ?

राम कु'त्थै......................।

कुड़ियां कु'त्थै......................।

जागत कु'त्थै.......................।

मुड़े कु'त्थै......................।

3. **Substitution Drill स्थानापन्न अभ्यास**

1. में केईं वायदे कीते होङन............ (वायदे कीते)

में केईं खत पढ़े होङन............ (खत पढ़े)

(कपड़े सीते)

(कम्म कीते)

(लोक दिक्खे)

(लेख लिखे)

2. तूं कुसै होर गी आखेआ होग............ (आखेआ)

में रमा गी ठाकेआ होग .... (ठाकेआ)

(सनाया)

(समझाया)

(पढ़ाया)

(पुच्छेआ)

4. **सहायक क्रिया के उपयुक्त रूप का प्रयोग करते हुए नीचे दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। जैसे :–**

में तुगी केइयें चीजें दे बारे च आखदी होङ। (होङ)

में उसी किश आखदा..................।

अस राधा गी किश पुछदे..................।

तूं मिगी रुट्टी खलांदी..................।

ओह् मिगी टैलीफोन करदे..................।

पम्मी हून मिगी बलगदी..................।

अरुष ते शिखा स्कूल जंदे..................।

तुस कल शैह्‌र गे..................।

5. **कोष्टक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए :–**

उदाहरण *तूं इ'यां फलौह्‌नियां की पा करनी एं ? (फलौह्‌नियां)*

सच्चें–मुच्चें मिगी तेरे शा..................लोड़दा

कपड़ा/पैसा/किश/नेईं

शिवरात्री आह्‌ले दिन अस..................मंदर जागे।

पल्ले/साथें–साथें/बडलै

अस किश चिर..................लैन्ने आं।

खेढी/खाई/बलगी

प्रथम और मध्यम पुरुषों के लिंग और वचन के अनुसार 'हो' – धातु के रूप बनाइये :–

उदाहरण

प्रथमपुरुष

	एकवचन	*बहुवचन*
पुलिंग	होङ	होगे
स्त्रीलिंग	होङ	होगियां

मध्यमपुरुष

	एकवचन	*बहुवचन*
पुलिंग		....
स्त्रीलिंग		....

अन्यपुरुष

	एकवचन	बहुवचन
पुलिंग		....
स्त्रीलिंग		....

6. **इन वाक्यों का डोगरी भाषा में अनुवाद कीजिए :–**

चीजों के बारे में तूने किसी और से कहा होगा। यकीन मानो मुझे तुम से कुछ नहीं चाहिए। न ही मैं कोई पहेली बुझा रही हूं।

'याद करो तुमने कहा नहीं था कि शिवरात्रि वाले दिन हम साथ–साथ मंदिर जाएँगे। उस दिन वहाँ बहुत से कार्यक्रम होंगे।'

7. **नीचे दिए गए वाक्यों की क्रिया के साथ कोष्टक में दिए गए क्रिया–विशेषणों के उपयुक्त क्रिया विशेषण लगाइए :–**

इत्थै बैठे–बैठे केह् सोचा करनी एं (बैठे–बैठे)

.............................की नेईं दसदी ?

.............................मंदिर जागे।

.............................त्यार होई जा।

में.............................त्यार होई जन्नी आं।

तूं.............................त्यार हो।

.............................दिन घरोग।

.............................ठण्ड बी बधग।

जि'यां–जि'या, साथें–साथें, साफ–साफ, फटोफट–झटपट, मजे–मजे कन्नै, उ'आं–उ'आं

Vocabulary शब्दावली

वायदा	'वादा'	कपड़े	'कपड़े'
गल्ल	'बात'	तालना	'चयन करना'
चेता	'याद'	टिमकड़े आह्ला	'बिंदियों वाला'
मंदर	'मंदिर'	कनेहा	'कैसा'
शवाला	'शिवालय'	शैल	'सुन्दर'
फलौह्नी	'पहेली'	लाना	'पहनना'
आखना	'कहना'	अदूं	'तब'
सच्चें–मुच्चें	सुचमुच	ब्याह्	'विवाह'
लोड़दा	चाहिए	परती–परतियै	'बार बार'
शिवरात्री	शिवरात्रि	सूट	'सूट/जोड़ा'
रूहोली	साथ–साथ	लगदा	'लगता'
जरूर	ज़रूर	फुल्ल	'फूल'
पक्क	ज़रूर/पक्का	सैल्ला	'हरा'
मुश्कल	'कठिन/मुश्किल'	कन्नै	'साथ'
फटोफट	'फटाफट'	शाल	'शाल'
लोड़	'जरूरत'	बलगना	'प्रतीक्षा करना'
ठण्ड	'सर्दी/ठण्ड'	चिर	'देर'
बेशक्क	'बेशक/निःसंदेह'	किश	'कुछ'
पता	'पता'	त्यार	'तैयार'
दिनभर	दिनभर	दिक्खना	'देखना'

सनाना	'सुनाना'	जि'या–जि'यां	'जैसे–जैसे'
दस्सना	'बताना/दिखाना'	उ'आ–उ'आं	'वैसे–वैसे'
चंगा	'अच्छा'	बधना	'बढ़ना'
चंगी	'अच्छी'	बगैर	'बिना'
लमारी	'अल्मारी'	ठरना	'ठिठुरना'
समझना	'समझना'	पंज	'पाँच'
भाबी	'भाभी'	पंदरां	'पंदरह'
मजे–मजे कन्नै	'मजे–मजे से'		

टिप्पणियाँ

17.1 इस पाठ में आप डोगरी क्रियाओं के संदिग्ध अर्थी रूपों तथा संयुक्त क्रिया विशेषणों से परिचित हुए हैं।

17.2 डोगरी में संदिग्ध अर्थ अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में होता है। जैसे :–

अकर्मक नां गै मिगी पता ऐ जे ओह् कु'त्थै गेइयां होङन।
'न ही मुझे मालूम है कि वे कहाँ गई होंगी।'

सकर्मक ते घर आनियै मम्मी गी बी सनाया होग।
'और घर आकर मम्मी से भी कहा होगा।'

सकर्मक नीलू ने नुमाइश दिक्खी होग किश आखी नेईं सकदी ?
'नीलू ने नुमाइश देखी होगी कुछ कह नहीं सकती।'

17.3 संदिग्ध क्रिया रूप भूतकाल और वर्तमान काल में बनते हैं और संदिग्ध अर्थ की सूचना 'हो' धातु के रूपों से होती है। मुख्य क्रिया से काल तथा कर्ता के लिंग वचन आदि की सूचना रहती है। जैसे :–

भूतकालिक रूपों में संदिग्ध अर्थ

में गेआ होङ।	'मैं गया हूँगा।'
अस गे होगे।	'हम गए होंगे।'
तूं गेआ होगा।	'तू गया होगा। तुम गये होगे।'
तुस गे होगेओ।	'आप गये होंगे।'
ओह् गेआ होग।	'वह गया होगा।'
ओह् गे होङन	'वे गए होंगे।'

स्त्रीलिंग

में गेई होङ।	'मैं गई हुँगी।'
अस गेइयां होगियां।	'हम गई होंगी।'
तूं गेई होगी।	'तू गई होगी। तुम गई होंगी।'
तुस गइयां होगियां।	'आप गई होंगी।'
ओह् गेई होग।	'वह गई होगी।'
ओह् गेइयां होङन।	'वे गईं होंगी।'

ऊपर दिए गये उदाहरणों में 'हो' धातु संदिग्ध अर्थ के अतिरिक्त पुरुष आदि के विषय में भी सूचना दे रहा है।

17.4 वर्तमान कालिक रूपों में संदिग्ध अर्थ :–

वर्तमान काल में संदिग्ध अर्थ के लिए केवल मुख्य क्रिया के रूप में ही परिवर्तन होता है। भूतकाल के संदिग्ध अर्थ के लिए मुख्य क्रिया भूतकाल के रूप में होती है जैसे **'गेआ'** **(गया)** और वर्तमान काल के संदिग्ध अर्थ के लिए वर्तमान काल के रूप में होती है। जैसे :–

में जंदा/जंदी होङ	'मैं जाता हूँगा/जाती हूँगी।'
ओह् जंदा/जंदी होग	'वह जाता होगा/जाती होगी।'
तूं जंदा होगा।	'तू जाता होगा/तुम जाते होगे।'

तूं जंदी होगी।	'तूं जाती होगी/तुम जाती होगी।'
अस जंदे होगे।	'हम जाते होंगे।'
तुस जन्दियां होगियां।	'आप जाती होंगी'
ओह् जंदे होङन।	'वे जाते होंगे।'

आदि में

17.5 में रुट्टी खन्दा होङ। 'मैं खाना खाता हूँगा।'
अस रुट्टी खन्दे होगे। 'हम खाना खाते होंगे।'

ये वाक्य भी संदिग्ध अर्थ की सूचना दे रहे हैं अन्तर केवल इतना है कि यहाँ क्रिया के साथ कर्म का भी प्रयोग है। अतः यह सकर्मक क्रिया का संदिग्ध अर्थी रूप है। सकर्मक क्रियाओं के संदिग्ध अर्थी रूप भी अकर्मक क्रियाओं के समान बनते हैं जैसे ऊपर 'जाना' क्रिया से बने हैं।

17.6 सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक संदिग्ध अर्थ में क्रियाओं (मुख्य और सहायक) के रूप कर्म के समान होते हैं। इसलिए उनको कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष आदि से कोई सम्बन्ध नहीं होता। यहाँ पर वे दोनों वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार आती हैं। जैसे :–

में कताब पढ़ी होग।	'मैंने किताब पढ़ी होगी।'
तूं कताब पढ़ी होग।	'तूने किताब पढ़ी होगी।'
उ'न्नै कताब पढ़ी होग।	'उसने किताब पढ़ी होगी।'
असें कताब पढ़ी होग।	'हमने किताब पढ़ी होगी।'
तुसें कताब पढ़ी होग।	'आपने किताब पढ़ी होगी।'

17.7 सकर्मक क्रियाओं के भूतकाल में वाक्य का कर्ता विभक्ति वाले कर्ता कारक में आता है। जैसे ऊपर दिए गए सभी वाक्यों में क्रमश **'में' (मैंने)**, **'तूं' (तुमने)** **'उ'न्नै' (उसने)** **'असें' (हमने)** और **'तुसें' (आपने)**। ये सभी कर्ता कारक की विभक्ति वाले रूप हैं।

उ'आ–उ'आं	वैसे–वैसे
जि'यां–जि'यां	जैसे–जैसे

17.8	तौले–तौले	जल्दी–जल्दी
	ठीक–ठीक	ठीक–ठीक
	साफ–साफ	साफ–साफ
	साथें–साथें	साथ–साथ
	र्होली–र्होली	साथ–साथ
	फटो–फट	फटाफट
	झटपट	झटपट
	सच्चें–मुच्चें	सच–मुच

ये सभी संयुक्त क्रिया विशेषण हैं जो दो समान क्रियाविशेषणों के इकट्ठा आने से बने हैं।

17.9	तौले गै	जल्दी ही
	जरूर गै	जरूर ही
	दिनभर	दिनभर
	राती बेल्लै	रात के समय
	पक्क गै	अवश्य ही
	अज्ज बी	आज भी
	उत्थै बी	वहीं

ये भी संयुक्त क्रिया विशेषण है लेकिन इनमें क्रिया विशेषण के साथ बलसूचक शब्द है।



पाठ–18

गल्लें–गल्लें च

(बातों–बातों में)

मधु	: केह् बना दा ऐ ?	मधु	: क्या बनाया जा रहा है ?
माधवी	: किश नेईं बस इक लेख लिखना हा। हत्थ पीड़ा मूजब सुधा कोला लखाऽ करनी आं।	माधवी	: कुछ नहीं। बस एक लेख लिखना था। हाथ में दर्द के कारण सुधा से लिखवा रही हूँ।
मधु	: कुसै होर कोला लखोआई लैना हा।	मधु	: किसी और से लिखवा लेना था।
माधवी	: की ? सुधा शैल लिखदी ऐ। होर कुसै कोला लखोआने दी केह् जरूरत ऐ।	माधवी	: क्यों ? सुधा अच्छी तरह लिखती है। और किसी से लिखवाने की क्या ज़रूरत है।
मधु	: अच्छा। सुधा केह्ड़ी क्लासै च पढ़दी ऐ ?	मधु	: अच्छा। सुधा कौन सी कक्षा में पढ़ती है ?
माधवी	: बाह्रमीं च। खरा कीता तुस आइयां।	माधवी	: बारहवीं में। अच्छा किया आप आईं।
मधु	: में ते सिमरन गी बी औने आस्तै आखेआ हा। पर ओह् बच्चें गी पढ़ाऽ करदी ही। माधवी, तूं बड़ा शैल स्वेटर लाए दा ऐ। दस्स हां केह् बनोआ दा ऐ अज्जकल ?	मधु	: मैंने तो सिमरन को भी आने केलिए कहा था। परन्तु वह बच्चों को पढ़ा रही थी। माधवी, तुमने बहुत अच्छी स्वेटर पहनी है। बताओ तो क्या बुना जा रहा है आजकल।
माधवी	: बनोना केह् ऐ। अज्जकल जां ते बने बनाए खरीदने आं जां फ्ही कुसै कोला बनोआन्ने आं।	माधवी	: बुना क्या जाना है। आजकल या तो बने बनाए खरीदते हैं या फिर किसी से बनवाते हैं।

	एह् स्वेटर ते मेरी भाबी ने बनाया ऐ।		यह स्वेटर तो मेरी भाभी ने बनाई है।
मधु :	तुसें सुनेआं होना रघु होर बस ऐक्सीडेंट च बाल–बाल बचे। छड़े आपूं गै नेईं बचे उ'नें होरनें गी बी बचाया ते फ्ही जेह्ड़े घट्ट जख्मी होए दे हे उ'नें गी स्थानी हस्पताल भेजेआ ते मते जख्मियें गी बाहूर भजोआया।	मधु :	आपने सुना होगा रघु जी बस दुर्घटना में बाल–बाल बचे और औरों को भी बचाया। फिर जो कम घायल थे उनको स्थानीय हस्पताल भेजा और अधिक गम्भीर घायलों को बाहिर भिजवाया।
माधवी :	शुकर ऐ कोई–ऐसी वैसी गल्ल नेईं होई। मधु, क्या तुगी गर्मी नेईं लगदी ? सुधा, जे एह् पक्खा चलदा ऐ तां चलाऽ हां ? मेरे शा ते चलेआ नेईं।	माधवी :	शुक्र है कोई ऐसी–वैसी बात नहीं हुई। मधु, क्या तुम्हें गर्मी नहीं लगती है ? सुधा, यदि यह पंखा चलता है तो ज़रा चला दो। मुझ से तो चला नहीं।
सुधा :	मेरे कोला बी एह् नेईं चलदा। गोपाल कोला चलोआन्नी आं।	सुधा :	मुझ से भी यह नहीं चलता। गोपाल से चलवाती हूँ।
मधु :	रितु गी सद्दना हा। कि'यां सदचै ?	मधु :	ऋतु को बुलाना था। कैसे बुलाएँ ?
सुधा :	हूनै नौकरे गी भेजियै सदान्नी आं।	सुधा :	अभी नौकर को भेजकर बुलवाती हूं।
मधु :	सन्नी कु'त्थै ऐ ? जागेआ नेईं ?	मधु :	सन्नी कहाँ है। क्या अभी तक सोया हुआ है ? जागा नहीं ?
सुधा :	ओह् आपूं कु'त्थै जागदा ऐ। उस्सी ते जगाना पौंदा ऐ। जगोआन्नी आं।	सुधा :	वद खुद कहाँ जागता है। उससे तो जगाना पड़ता है। जगवाती हूँ।

मधु	: माधवी ते इत्थै गै ही। हून कु'त्थै गेई।	मधु	: माधवी तो यहाँ थी। अब कहाँ गई ?
सुधा	: दादी जी बमार न। ओह् आपूं उट्ठी–बेही नेईं सकदियां, उ'नें गी ठुआलना–बुहालना पौंदा ऐ। अम्मा उ'नें गी बुहाला करदियां न।	सुधा	: दादी जी बीमार हैं। वह स्वयं उठ–बैठ नहीं सकती हैं। उनको उठाना–बैठाना पड़ता है। माँ उनको बिठा रही है।
मधु	: सुधा, एह् टोकरी चुक्क ते अंदर रक्ख। में दादी गी दिक्खियै औन्नी आं।	मधु	: यह टोकरी उठाओ और अंदर रखो। मैं दादी को देखकर आती हूँ।
सुधा	: एह् बड़ी भारी ऐ। नौकरै शा गै चकान्नी आं।	सुधा	: यह बहुत भारी है। नौकर से ही उठवाती हूँ।
मधु	: हां, ओह्दे कोला गै चकोआ। लेई जा ते अंदर रखोआऽ।	मधु	: हाँ, उससे ही उठवा। ले जाओ और अन्दर रखवाओ।
सुधा	: एह्दे च किश अम्ब न सारें गी खलाएआं, दादी गी बी।	सुधा	: इसमें कुछ आम के फल हैं। सभी को खिलाना। दादी जी को भी।

EXERCISES

1. Repetition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. इक लेख लिखना हा।
2. सुधा कोला लखाऽ करनी आं।
3. कुसै होर कोला लखोआई लैना हा।
4. सुधा बाह्‌रमीं च पढ़दी ऐ।
5. ओह् ज्याणें गी पढ़ाऽ करदी ही।
6. हून ते जां बने – बनाए खरीदने आं ते जां बनोआन्ने आं।

7. ओह् छड़े आपूं गै नेईं बचे, होरनें गी बी बचाया।

8. उ'नें गी स्थानी हस्पताल भेजेआ ते किश जख्मियें गी बाह्र भजोआया।

9. सुधा, एह् पक्खा चलदा ऐ तां चलाऽ हां। नेईं, गोपाल कोला चलोआन्नी आं।

10. उसी जगाना पौंदा ऐ, जगोआन्नी आं।

11. अम्मा दादी होरें गी बुहाला करदियां न।

12. एह् पैकट नौकरै गी चकाऽ ते अंदर रखोआऽ।

2. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)	*Model (2)*
सुधा लिखा करदी ऐ।	*दादी जी, उट्ठो।*
सुधा गी लखाऽ करनी आं।	*दादी जी गी ठुआलो।*
सिमरन पढ़ा करदी ऐ।	जख्मी बाह्र भेजो।
सन्नी जागा करदा ऐ।	सुधा, पैकट चुक्क।
नौकर चुक्का करदा ऐ।	मधु, पानी पी।
मधु खा करदी ऐ।	सन्नी, जाग।

3. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)		*Model (2)*	
सन्नी लखांदा ऐ।	*(पढ़)*	*अम्मा ने दादी गी बुहालना ऐ।*	*(सौ)*
सन्नी पढ़ांदा ऐ।		*अम्मा ने दादी गी सुआलना ऐ।*	
	(चुक्क)		*(खा)*
	(बन)		*(पी)*
	(सुन)		*(जाग)*
	(बच)		*(चल)*

4. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप बनाकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–
पढ़ना, लिखना, खाना, चुक्कना, पीना, बुनना, चलना।

Vocabulary शब्दावली

लेख	लेख	घट्ट	कम
पीड़ा मूजब	दर्द के कारण	जख्मी	घायल
लखाऽ	लिखा	भेजेआ	भेजा
कोला	से/द्वारा	मते जख्मी	गम्भीर घायल
लखोआई लैना हा	लिखवा लेना था	भजोआया	भिजवाया
खरा	अच्छा	चलोआन्नी आं	चलवाती हूँ
पढ़ाऽ करदी ही	पढ़ा रही थी	सद्दना	बुलाना
बनोआ करदा ऐ	बुना जा रहा है	सदचै	बुलाएं
बनोना	बुना जाना	भेजियै	भेज कर
बुने–बनाए	बुने–बुनाए	सदान्नी आं	बुलवाती हूँ
खरीदने आं	खरीदते हैं	सुत्तै दा	सोया हुआ
बनोआन्ने आं	बुनवाते हैं	जागेआ	जागा
लगदा	लगता	उसी	उसको
बाल–बाल बचे	बाल–बाल बचे	जगाना	जगाना
छड़े	केवल	जगोआन्नी आं	जगवाती हूँ
बचे	बचे	बेही	बैठी
होरनें गी	औरों को	बुहालना	बिठाना
बचाया	बचाया	बुहाला करदियां न	बिठा रही हैं
दादी जी	दादी जी	चुक्क	उठा
रक्ख	रख	बड़ा	बहुत/बड़ा
भारा	भारी	चकवान्नी आं	उठवाती हूँ
चकोआऽ	उठवा	पानी	पानी
पीना	पीना	पलाऽ	पिला
लेआन्नी	लाती (हूँ)	खलांऽ	खिलाऊं
खलाऽ	खिला		

18.1 इस पाठ में आप डोगरी **क्रियाओं के प्रेरणार्थक** रूपों से परिचित हुए हैं।

18.2 जब कोई कर्ता स्वयं काम न करके किसी दूसरे को करने की प्रेरणा देता है अथवा किसी से करवाने की प्रेरणा देता है तब क्रिया के रूप प्रेरणार्थक होते हैं। जैसे :-

में सुधा कोला लखाऽ करनी आं।

'मैं सुधा से लिखा रही हूँ।'

होर कोह्दे कोला लखवोआना हा ?

'और किससे लिखवाना था ?'

पहले वाक्य में कर्ता 'में' (मैं) ने स्वयं न लिख कर सुधा को लिखने के लिए प्रेरित किया है। और दूसरे वाक्य में किसी अन्य व्यक्ति से लिखने का काम करवाने का भाव व्यक्त है।

पहले वाक्य का क्रिया रूप प्रथम प्रेरणार्थक है और दूसरे वाक्य का द्वितीय प्रेरणार्थक।

18.3 प्रेरणार्थक क्रियाएं अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं से बनती हैं।

i) अकर्मक क्रियाओं से

रमा ने सीता गी सोआलेआ।	'रमा ने सीता को सुलाया।'
रमा ने सीता गी सलोआया।	'रमा ने सीता को सुलवाया।'
अम्मा उ'नें गी बोहालदियां न।	'अम्मा उन्हें बिठलाती हैं।'
अम्मा उ'नेंगी बलोहांदियां न।	'अम्मा उन्हें बिठलवाती हैं।'

ii) सकर्मक क्रियाओं के

टोकरी बड़ी भारी ऐ नौकरै शा चकान्नी आं।

'टोकरी बहुत भारी है नौकर से उठवाती हूँ'।

हां ओह्दे कशा गै चकोआऽ।

'हाँ उसी से उठवाओ।'

18.4 डोगरी में क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप निम्न प्रकार के होते हैं :-

18.4.1 प्रथम प्रेरणार्थक रूप के लिए 'आऽ' जुड़ता है और दूसरे प्रेरणार्थक रूप के लिए 'ओआऽ'। जैसे :-

में बच्चें गी स्कूल भेजा करनी आं।

'मैं बच्चों को स्कूल भेज रही हूँ।'

में बच्चें गी स्कूल भजोआऽ करनी आं।

'मैं बच्चों को स्कूल भिजवा रही हूँ।'

इसी प्रकार चलना क्रिया से :-

चलाऽ (चला) चलोआऽ (चलवा)

'बुनना' क्रिया से :-

बनाऽ (बुना) बनोआऽ (बुनवा) रूप बनते हैं।

18.4.2 **सौ (सो)**, **'न्हौ' (नहा)**, **'बौह्' (बैठ)** आदि औकारान्त धातुओं को ओकारान्त बना कर प्रथम प्रेरणार्थक के लिए आव् और दूसरे प्रेरणार्थक के लिए **'लोआऽ'** जोड़ने से प्रेरणार्थक क्रिया रूप बनते हैं। जैसे :-

रमा दादी गी नोहालदी ऐ

'रमा दादी को नहलाती है।'

रमा दादी को किसी से नलोहांदी ऐ

'रमा दादी को किसी से नहलवाती है।'

इसी प्रकार 'सौना' (सोना) क्रिया से :-

सोआलना (सुलाना) सलोआना (सुलवाना)

बोहालना (बिठाना) बलोहाना (बिठलवाना)

18.4.3 'घुल्' (पिघल) 'मिल्' (मिल) 'जुड़्' (जुड़) आदि धातुओं के प्रेरणार्थक इस प्रकार बनते हैं।

प्रथम प्रेरणार्थक

घुलना — घलाऽ — ना (पिघलाना)

मिलना — मलाऽ — ना (मिलाना)

जुड़ना — जड़ाऽ — ना (जुड़ाना)

द्वितीय प्रेरणार्थक

घलोआऽ — ना (पिघलवाना)

मलोआऽ — ना (मिलवाना)

जड़ोआऽ — ना (जुड़वाना)

प्रयोग

शशि घ्यौ घलाऽ।	'शशि घी पिघलाओ'
शशि घ्यौ घलोआऽ।	'शशि घी पिघलवाओ।'

18.4.4. 'उट्ठ' (उठ) 'उतर' (उतर) आदि 'उ' से आरम्भ होने वाली धातुओं के प्रेरणार्थक क्रिया रूप इस प्रकार बनते हैं :-

प्रथम प्रेरणार्थक

उट्ठना (उठना)	ठोआलना (उठाना)
उतरना (उतरना)	तोआरना (उतारना)

द्वितीय प्रेरणार्थक

ठलोआऽ—ना (उठवाना)

तरोआऽ—ना (उतरवाना)

18.5 'खा' 'पी' आदि कुछ धातुओं के प्रेरणार्थक रूप बनाते समय 'ल्' का आगम होता है जैसे :-

प्रथम प्रेरणार्थक

खा (खा) — खलाऽ – ना (खिलाना)

पी (पी) — पलाऽ – ना (पिलाना)

द्वितीय प्रेरणार्थक

खलोआऽ — ना (खिलवाना)

पलोआऽ — ना (पिलवाना)

प्रयोग

प्रथम प्रेरणार्थक

रमा, राजू गी रुट्टी खलाऽ।

'रमा राजू को खाना खिलाओ'।

द्वितीय प्रेरणार्थक

रमा, राजू गी रुट्टी खलोआऽ।

'रमा राजू को खाना खिलवाओ।'

18.5.5. **सु'ट्ट (फेंक)**, **धो (धो)**, **दे (दे)**, **आख् (कह्)**, **सी (सी)**, आदि धातुओं से केवल द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया रूप बनते हैं। जैसे :-

सु'ट्ट ____________	सट्हाऽ/सटोहाऽ–ना	'फेंकवाना'
धो ____________	धोआऽ – ना	'धुलवाना'
दे ____________	दोआऽ – ना	'दिलवाना'
आख् ____________	खोआऽ – ना	कहलवाना
सी ____________	सेआऽ – ना	सिलवाना

'मैंने माली से कूड़ा फेंकवाया'।

रमा ने माता जी कशा पैसे दोआए।

'रमा ने माता जी से पैसे दिलवाए।'

एह् गल्ल राधा ने कुसै शा खोआई।

'यह बात राधा ने किसी से कहलवाई।'

में कपड़े दर्जी शा नेईं सेआंदी।

'मैं कपड़े दर्जी से नहीं सिलवाती।'



पाठ–19
डोगरी कान्फ्रेंस
(डोगरी कान्फ्रेंस)

सुशील : कल मिगी मनोज होर मिले हे, में उ'नें गी सनाया हा जे डोगरी साहित्य सभा, भड्डू आसेआ सैमीनार कीता जा करदा ऐ। पर अजें तगर ओह् पुज्जे नेईं।	सुशील : कल मुझे मनोज जी मिले थे। उन्हें सुनाया था कि डोगरी साहित्य सभा, भड्डू की ओर से सेमिनार किया जा रहा है। परन्तु अभी तक वह पहुँचे नहीं।
शिवदेव : मिगी बी उ'नें गै सनाया। इ'यां ते मिगी इत्तलाह ही जे सैमीनार होआ करदा ऐ पर भुल्ली गेदा हा। इस ब'रै इस संस्था आसेआ होर केह्–केह् आयोजन कीते जा करदे न ?	शिवदेव : मुझे भी उन्होंने ही सुनाया। ऐसे तो मुझे सूचना थी कि सेमिनार हो रहा है परन्तु भूल गया था। इस वर्ष इस संस्था की ओर से और क्या–क्या आयोजन किये जा रहे हैं ?
सुशील : जि'यां हर ब'रै लोक मेला लाया जंदा ऐ, लोकगीत–संगीत दे कार्यक्रम कीते जंदे न, नमैश लाई जंदी ऐ ते गोश्टियां कीतियां जंदियां न–एह् सब ते इस ब'रै बी कीता गै जाग। इसदे अलावा इक कार्य शाला कीती करदी ऐ ते दो विशेश बैठकां बी कीतियां जा करदियां न।	सुशील : जैसे हर वर्ष लोकमेला किया जाता है, लोकगीत–संगीत के कार्यक्रम किये जाते हैं, प्रदर्शनी लगाई जाती है और गोष्ठियां की जाती हैं–यह सब तो इस वर्ष भी किया ही जाएगा। इसके इलावा एक कार्य शाला की जा रही है और दो विशेष सभाएं भी की जा रही हैं।
शिवदेव : मुक्ख परौह्ने पुज्जी गेदे न जां नेईं ?	शिवदेव : मुख्य अतिथि पहुँच गए हैं कि नहीं ?
सुशील : नेईं, अजें नेईं। उ'नें गी लैन कुसै गी भेजेआ गेआ ऐ, औंदे गै होने।	शिवदेव : नहीं, अभी नहीं। उनको लाने किसी को भेजा गया है। आते ही होंगे।

शिवदेव : पिछली बारी जिसलै में पुज्जा
उसलै वन्दना गोआ करदी ही।
चलो, अंदर चलियै बौह्न्ने आं।
जे पिच्छें बारी आई तां किश नेईं
सनोना।

सुशील : हां, तुसें ठीक आखेआ।
सैमीनार दी कारवाई किश
सनोग जां नेईं नाह्रे जरूर
सनोङन, जेह्ड़े बाह्र बलोङन।

शिवदेव : कार्ड कड्ढो हां, केह्-केह्
क्रार्यक्रम न ?

सुशील : नौ बजे उद्घाटन कीता जाना
ऐ। पैह्ले सत्र च स्वागती भाशन
पढ़ेआ जाना ऐ, फ्ही गतिविधियें
दी रपोट पेश कीती जानी ऐ।
दुए सत्र च चार शोध पत्र पढ़ोने
न ते फ्ही स'ञां क्हानी गोश्टी च
सत्त क्हानियां पढ़ोनियां न।

शिवदेव : थुआढ़े शा पढ़ोआ ऐ एह्, कार्डै
पर ख'ल्ल बरीक अक्खरें च
केह् लखोए दा ऐ ?

सुशील : बगैर ऐनका किश अक्खर
पढ़ोए ते किश नेईं। उप्परली
सतर पढ़ोई गेई ऐ पर ख'लकियां
दऊं नेईं पढ़ोइयां। होना
किश जलपान बारै लखोए दा।

शिवदेव : पिछली बार जब मैं पहुँचा उस
समय वन्दना गाई जा रही थी।
चलो अन्दर चलकर बैठते हैं।
यदि पीछे बारी आई तो कुछ
नहीं सुना जाएगा।

सुशील : हाँ, आपने ठीक कहा।
सेमिनार की कार्यवाही कुछ सुनी
जा सकेगी या नहीं। नारे जरूर सुने
जाएँगे जो बाहिर बोले जाएँगे।

शिवदेव : कार्ड निकालो न, क्या-क्या
कार्यक्रम हैं ?

सुशील : नौ बजे उद्घाटन किया जाना
है। पहले सत्र में स्वागत भाषण
पढ़ा जाना है, फिर गतिविधियों
की रिपोर्ट प्रस्तुत की जानी है।
दूसरे सत्र में चार शोध पत्र पढ़े
जाने हैं और फिर शाम को क्हानी
गोष्ठी में सात क्हानियाँ पढ़ी जानी हैं।

शिवदेव : आपसे पढ़ा गया है यह, कार्ड
पर नीचे बारीक अक्षरों में क्या
लिखा गया हुआ है ?

सुशील : बिना चश्मे कुछ अक्षर पढ़े गए
हैं और कुछ नहीं। ऊपर की
पंक्ति पढ़ी गेई है परन्तु नीचे
की दो नहीं पढ़ी गईं। होगा कुछ
जलपान के बारे में लिखा हुआ।

शिवदेव :	बाह्‌र एह्‌ नाह्‌रे कोह्‌दे खलाफ बलोआ करदे हे ?	शिवेदव :	बाहिर ये नारे किसके खिलाफ बोले जा रहे थे ?
सुशील :	विद्यार्थियें हड़ताल कीती दी ऐ जे समें सिर लाके दी सफाई बक्खी ध्यान दित्ता जा तां जे लोकें गी मौसमी बमारियें शा बचाया जाई सकै।	सुशील :	विद्यार्थियों ने हड़ताल की हुई है कि समय पर इलाके की सफाई की ओर ध्यान दिया जाए ताकि लोगों को मौसमी बिमारियों से बचाया जा सके।
शिवदेव :	एह्‌ ते बड़ी चंगी गल्ल ऐ। लगदा ऐ मुक्ख परौह्‌ने होर आई गे न। कल लोकगीतें दे कार्यक्रम च केह्‌–केह्‌ रक्खेआ गेआ ऐ। मसलन–गीतड़ु, भाखां, ढोलरू वगैरा।	शिवदेव :	यह तो बहुत अच्छी बात है। लगता है मुख्य अतिथि जी आ गए हैं। कल लोकगीतों के कार्यक्रम में क्या–क्या रखा गया है मसलन–गीतड़ु, भाखें, ढोलरू वगैरा।
सुशील :	भाखां खास तौर पर रक्खियां गेइयां न ते थुआढ़ा नां जज्जें दी लिस्टा च रक्खेआ गेआ ऐ।	सुशील :	भाखें खास तौर पर रखी गई हैं और आपका नाम निर्णायकों की सूचि में रखा गया है।
शिवदेव :	जेकर मेरा नां जजे च रक्खेआ गेआ होग तां ते मिगी अज्ज इत्थै गै रुकना होग। ईनाम नगद दित्ते जंदे न जां कुसै होर रूप च ?	शिवदेव :	यदि मेरा नाम निर्णायकों में रखा गया होगा तब तो मुझे आज यहीं रुकना होगा। ईनाम नकद दिये जाते हैं या किसी और रूप में।
सुशील :	नगद गै दित्ते जंदे न।	सुशील :	नकद ही दिये जाते हैं ?

EXERCISES

1. Repetition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. डोगरी साहित्य सभा, भड्डू आसेआ इक सैमीनार कीता जा करदा ऐ।
2. साहित्य सभा आसेआ होर केह्‌–केह्‌ आयोजन कीते जा करदे न ?

3. लोक–मेला लाया जंदा ऐ, लोकगीत–संगीत दे कार्यक्रम कीते जंदे न।

4. नमैश लाई जंदी ऐ ते गोश्टियां कीतियां जंदियां न।

5. कार्यशाला कीती जा करदी ऐ ते बशेश बैठकां कीतियां जा करदियां न।

6. नौ बजे उद्घाटन कीता जाना ऐ।

7. पैह्‌ले सत्र च स्वागती भाशन पढ़ोना ऐ।

8. दुए सत्र च चार शोध–पत्र पढ़ोने न।

9. कार्डै पर ख'ल्ल बरीक अक्खरें च केह् लखोए दा ऐ?

10. एह् नाह्‌रे कोह्‌दे खलाफ बलोआ करदे हे?

2. **दिए गए वाक्यों को उदाहरणों के अनुसार परिवर्तित कीजिए :–**

Model (1)

डोगरी साहित्य सभा, भड्डू आसेआ इक सैमीनार कीता जा करदा ऐ।

डोगरी साहित्य सभा, भड्डू आसेआ इक सैमीनार कीता जा करदा हा।

1. इक कार्यशाला कीती जा करदी ऐ।

2. दो बशेश बैठकां कीतियां जा करदियां न।

3. होर केह्–केह् आयोजन कीते जा करदे न।

4. पैह्‌ले सत्र च स्वागती भाशन पढ़ोना ऐ।

5. रपोट पेश कीती जानी ऐ।

6. किश अक्खर पढ़ोए न ते किश नेईं।

Model (2)

लोकमेला लाया जंदा ऐ, लोकगीत संगीत दे कार्यक्रम कीते जंदे न।

लोकमेला लाया गेआ ऐ, लोकगीत संगीत दे कार्यक्रम कीते गे न।

1. नमैश लाई जंदी ऐ।

2. गोश्टियां कीतियां जंदियां न।

3. ईनाम नगद दित्ते जंदे न।

4. विद्यार्थियें हड़ताल कीती दी ऐ जे समें सिर लाके दी सफाई बक्खी ध्यान नेईं दित्ता जंदा ऐ।

5. डुग्गर वन्दना बी गाई जंदी ऐ।

6. कवि गोश्टी बी रक्खी जंदी ऐ।

3. **पढ़िए, समझिए और लिखिए**

Model (1)

पढ़ना : पढ़ेआ जंदा ऐ/पढोंदा ऐ

खाना :

रक्खना :

Model (2)

देना : दित्ता गेआ ऐ/दनोआ ऐ

गाना :

लिखना :

Model (3)

धोना : धोता जंदा हा/
धनुचदा हा

भरना :

परोना :

Model (4)

चुक्कना : चुक्केआ गेआ हा/
चकोआ हा

बजाना :

फड़ना :

Model (5)

सद्दना : सद्दी जंदी ऐ/सदोंदी ऐ

पकड़ना :

खट्टना :

Model (6)

पीना : पीती गेई ऐ/पलोई ऐ

फंडना :

बंडना :

Model (7)

सुनना : सुनेआ जाग/सनोग

बोलना :

छट्टना :

Model (8)

चुनना : चुने जाङन/चनोङन

तुप्पना :

कड्ढना :

4. **दी गई क्रियाओं के कर्मवाच्यी रूप बना कर रिक्त स्थान भरिए :–**

करना, देना, पढ़ना, लिखना, गाना

1. केईं कार्यक्रम .... न।
2. ईनाम बी .... हे।
3. वन्दना अजें .... ऐ।
4. मेरे शा उप्परली सतर .... ही।
5. अजें नां .... न।

Vocabulary शब्दावली

आसेआ	की ओर से	कार्यशाला	कार्यशाला
कीता जा करदा ऐ	किया जा रहा है	गोश्टियां	गोष्ठियाँ
पुज्जे	पहुँचे	कीतियां जंदियां न	की जाती हैं
सनाया	सुनाया	अलावा	इलावा
इत्तलाह	सूचना	कीती जा करदी ऐ	की जा रही है
भुल्ली गेदा हा	भूल गया हुआ था	बशेश	विशेष
कीते जा करदे न	किये जा रहे हैं	बैठकां	सभाएँ
जि'यां	जैसे	कीतियां जा करदियां न	की जा रही हैं

लोक मेला	लोक मेला		
मुक्ख परौह्ने	मुख्य अतिथि	लाया जंदा ऐ	लगाया जाता है
भेजेआ गेआ ऐ	भेजा गया है	नमैश	प्रदर्शनी
लैन	लाने	लाई जंदी ऐ	लगाई जाती है
औंदे गै	आते ही	गोआ करदी ही	गाई जा रही थी
चलियै	चलकर	सनोचग	सुना जाएगा
कारवाई	कार्यवाही	सनोग/सनोचग	सुना जाएगा
सनोङन	सुने जाएँगे	नाह्रे	नारे
बलोङन	बोले जाएँगे	कीता जाना ऐ	किया जाना है
पढ़ेआ जाना ऐ	पढ़ा जाना है	पढ़े जाने न	पढ़े जाने हैं
पढोने न	पढ़े जाने हैं	पढ़ियां जानियां न	पढ़ी जानी हैं
पढ़ोएआ	पढ़ेआ गेआ	पढ़ोनियां न	पढ़ी जानी हैं
		लखोए दा	लिखा हुआ
अक्खर	अक्षर	पढ़ोए/पढ़े गे	पढ़े गये
पढ़ोइयां/पढ़ियां गेइयां	पढ़ी गईं	लखोए दा	लिखा हुआ
खलाफ	खिलाफ	बलोआ करदे हे	बोले जा रहे थे
ध्यान	ध्यान	दित्ता जा	दिया जाए
बचाया जाई सकै	बचाया जा सके	रक्खियां गेइयां न	रखी गेईं हैं
रक्खेआ गेआ ऐ	रखा गया है	रक्खेआ गेआ होग	रखा गया होगा
नगद	नकद	दित्ते जंदे न	दिये जाते हैं

19.1 इस पाठ में आप डोगरी क्रियाओं के **कर्मवाच्यी रूपों** से परिचित हुए हैं। डोगरी में संक्षेपी करण की प्रवृत्ति के कारण कर्मवाच्य के रूप अधिक रूपों से मिलते हैं ?

19.2 मुख्य क्रिया के भूतकालिक रूपों के साथ **'जा'** सहायक क्रिया लगने से क्रिया के कर्मवाच्यी रूप बनते हैं। जैसे :-

साहित्य सभा, भड्डू आसेआ सैमीनार कीता जा करदा ऐ।

'साहित्य सभा, भड्डू की ओर से सेमिनार किया जा रहा है।'

समें सिर लाके दी सफाई बक्खी ध्यान दित्ता जा।

'समय पर इलाके की सफाई की ओर ध्यान दिया जाए।'

19.3 संक्षेपी करण के कारण डोगरी में मुख्य धातु और सहायक धातु 'जा' मिलकर एक हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में कर्मवाच्य के रूप कई प्रकार से बनते हैं। जैसे :-

लखोए	'लिखे गए'
पढ़ोए	'पढ़े गए'
सनोचे	'सुने गए'
धनोए	'धोए गए'
खनोए	'खाए गए'

19.4 कर्मवाच्य के रूपों में मुख्य और सहायक दोनों क्रियाओं के लिंग, वचन आदि कर्म के समान होते हैं। जैसे :-

दो बशेश बैठकां कीतियां जानियां न।

'दो विशेष बैठकें की जानी हैं।'

इक खास प्रोग्राम कीता जाना ऐ।

'इक खास प्रोग्राम किया जाना है।'

लोकगीत – संगीत दे कार्यक्रम कीते जंदे न।

'लोकगीत – संगीत के कार्यक्रम किए जाते हैं।'

इसदे इलावा इक विशेश कार्यशाला बी कीती जा करदी ऐ।

'इसके अतिरिक्त एक विशेष कार्यशाला भी की जा रही है।'

19.5 डोगरी में संक्षेपीकरण वाले रूपों में जब मुख्य और सहायक क्रियाएं मिलकर एक हो जाती हैं तो उनमें कर्म के लिंग, वचन आदि **'जा'** सहायक धातु में ही रहते हैं। जैसे :–

खत पढ़ोआ।	'पत्र पढ़ा गया।'
खत पढ़ोए।	'पत्र पढ़े गए।'
चिट्ठी पढ़ोई।	'चिट्ठी पढ़ी गई।'
चिट्ठियां पढ़ोइयां।	'चिट्ठियां पढ़ी गईं।'

19.6 संक्षेपीकरण के कारण डोगरी क्रियाओं के रूप निम्न प्रकार के होते हैं :–

i) *मुख्य धातु के साथ 'ओ' लगने से :–*

भाशन पढ़ोना ऐ	'भाषण पढ़ा जाना है'
पेपर पढ़ोने न	'पेपर पढ़े जाने हैं'
रर्पोट पढ़ोनी ऐ	'रिर्पोट पढ़ी जानी है'
क्हानियां पढ़ोनियां न	'क्हानियां पढ़ी जानी हैं'

ii) *मुख्य धातु के साथ 'नो' लगने से :–*

पानी पनोग जां नेईं, रुट्टी खनोई जाग।

'पानी पिया जाएगा या नहीं, रोटी खाई जाएगी।'

कपड़े सनोई बी जाङन ते धनोई बी जाङन।

'कपड़े सिल भी जाएँगे और धुल बी जाएँगे।'

iii) *मुख्य धातु के साथ 'ओच' लगने से :-*

कारवाई किश सनोचग जां नेईं।

'कार्यवाही कुछ सुनाई पड़ेगी या नहीं'।

नाह्रे जरूर सनोचङन।

'नारे अवश्य सुनाई पड़ेंगे'।

19.7 संक्षेपीकरण की इस प्रक्रिया में मुख्य धातुओं के रूपों में भी कुछ परिवर्तन होता है। जैसे :-

लिख ---------- लख् = लखोना 'लिखा जाना'

सुन ---------- सन् = सनोचना 'सुनाई पड़ना/सुना जाना'

पी ---------- प् = पनोना 'पिया जाना'

खा ---------- ख् = खनोना 'खाया जाना'

सी ---------- स् = सनोना 'सिया जाना'

धो ---------- ध् = धनोना 'धोया जाना'

तुप्प् ---------- तप् = तपोना 'ढूँढा जाना'

19.8 क्रिया के कर्मवाच्य वाले रूपों के साथ वाक्य का कर्ता हमेशा करण कारक में होता है। जैसे :-

थुआढ़े शा पढ़ोआ ऐ, कार्डै उप्पर केह् लखोए दा ऐ ?

''आपसे पढ़ा गया है, कार्ड पर क्या लिखा गया है ?''

गीतड़ु : डोगरी लोकगीतों का एक भेद, प्रायः श्रृंगारिक भाव व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है। इसमें एक गायक मुखिया उठ कर और नाच कर गीत के बोल बोलता है और बाकी के लोकगायक उसी बोल को दुहराते गाते हैं।

भाख : डुग्गर का विशेष लोकगीत है जो कंढी के इलाके में प्रचलित और अति लोकप्रिय है। यह गीत गाने का एक विशेष ढंग है। इसमें गायकों का समूह होता है और उस समूह

में शामिल लोग अपना एक हाथ कान पर रख कर दूसरे हाथ को हवा में लहराते हैं। एक सुर से शुरू करके बाद में अलग–अलग सुरों में बँट जाते हैं। गायकों में एक मुखिया होता है जो बाकी गायकों की अपेक्षा सुर को लम्बा खींचता है पर सभी के सुरों में सामंजस्य (Harmony) बना रहता है।

ढोलरू : यह ऋतु संबन्धी लोकगीत है। इन्हें 'बारामासे' भी कहा जाता है। इनमें गर्मी, सर्दी, बरसात, पतझड़, बसन्त आदि ऋतुओं के सुन्दर एवं मार्मिक वर्णन मिलते हैं।

'ढोलरू' गीत गाने वाली टोलियां चैत्रमास में घर–घर जाकर भी ये गीत गाती एवं अजीविका कमाती हैं।



पाठ – 20

डोगरी बुझारतां

(डोगरी पहेलियाँ)

श्यामला : बच्चेओ, केह् सोचा करदे ओ ?

दिनेश : तविषी ने इक बुझारत पाई ऐ
उसदा हल सोचा करने आं।

श्यामला : बुझरत केह् ऐ ? दस्सो।

तविषी : आँटी सुनो, इन्नी हारी थैली
सारे अन्दर फैली

दिनेश : आँटी में बुज्झां ?

श्यामला : हां बेटे बुज्झो।

तविषी : एह् धूफ–बत्ती ऐ की जे ओह्
धुखियै सारे अंदर फैली जंदी ऐ।

श्यामला : अच्छा, हून शकुंतला दी बारी ऐ।
शकुंतला सनाऽ कोई फलौह्नी।

शकुंतला : रि'नदी खां पकांदी खां
टब्बैर कन्नै अद्ध बंडांऽ।
बुज्झो हां तां मन्नां।

सबभै : इक मिन्टै च दस्सने आं।

सुरेश : आँटी एह् कड़छी ऐ। जिसलै
कड़छी कन्नै दाल–भत्त सब्जी
बगैरा बनाओ ते बरताओ तां
सब थमां पैह्ले उन्दा सुआद
इक स्हाबै कन्नै उ'ऐ लैंदी ऐ।

श्यामला : बच्चो क्या सोच रहे हो ?

दिनेश : तविषी ने एक पहेली कही है
उसे बूझ रहे हैं।

श्यामला : पहेली क्या है ? बताओ।

तविषी : आँटी सुनो, इतनी सी थैली
सारे अन्दर फैली।

दिनेश : आँटी मैं बूझू ?

श्यामला : हाँ बेटे, बूझो।

तविषी : यह धूप–बत्ती है क्योंकि वह
जलकर सारे अंदर फैल जाती है।

श्यामला : अच्छा, अब शकुंतला की बारी है।
शकुंतला कहो कोई पहेली।

शकुंतला : बनाती खाऊँ पकाती खाऊँ
परिवार के साथ हिस्सा
बंटाऊँ बूझो तो मानूँ।

सभी : एक मिनट में बताते हैं।

सुरेश : आँटी यह कलछी है। जब कलछी
के साथ दाल–भात और सब्जी
आदि बनाएं और परोसें तो सबसे
पहले उनका स्वाद एक तरह से
कलछी ही लेती है।

चन्द्रमोहन : आँटी, हून मेरी बारी, में बुझारत पां ?

श्यामला : अच्छा बेटा पाओ।

श्यामला : इन्ना हारा छोकरा गास जाई टंगोआ।

दिनेश : आँटी जी, एह् ते जंदरा ऐ। साफ लब्भा करदा ऐ।

शकुंतला : हां आंटी एह् जवाब ठीक ऐ। सुकन्या तुम्मी कोई बुझारत पा।

सुकन्या : लैओ सुनो – बाह्र चबक्खै काठ अंदर बैठे जगननाथ।'

तविषी : में बुज्झां ?

सब्भै : हां बुज्झो

तविषी : बदाम।

चन्द्रमोहन : बिल्कुल स्हेई जवाब ऐ।

सुकन्या : अच्छा बुज्झो–''त्रै भ्रा इक–टोपी''

श्यामला : कुड़िये में दस्सां ? इसदा जवाब ऐ चु'ल्ली दे त्रै कुक्करे ते उन्दे उप्पर रक्खे दा तवा।

सुकन्या : आँटी जवाब बिल्कुल ठीक ऐ।

श्यामला : हून में बुझारत पान्नी आं ''डींग पडींगी लकड़ी समान जाई टक्करी।''

चन्द्रमोहन : आँटी अब मेरी बारी, मैं पहेली कहूँ ?

श्यामला : अच्छा बेटा कहो।

चन्द्रमोहन : इतना सा छोकरू आसमान पर जा लटका।

दिनेश : आँटी, यह तो ताला है, साफ दिख रहा है।

शकुंतला : हाँ आँटी यह उत्तर ठीक है। सुकन्या तुम भी कोई पहेली कहो।

सुकन्या : लीजिए सुनिए बाहर चहुं ओर काष्ठ अंदर बैठे जगन्नाथ।

तविषी : मैं बूझूँ ?

सब्बै : हां बूझो।

तविषी : बादाम।

चन्द्रमोहन : बिल्कुल सही उत्तर है।

सुकन्या : अच्छा बूझिए 'तीन भाई एक टोपी'

श्यामला : बेटी मैं बताऊँ ? इसका उत्तर है–चूल्हे के तीन कींगरे और उनके ऊपर रखा हुआ तवा।

सुकन्या : आँटी जवाब बिल्कुल सही है।

श्यमाला : अब मैं पहेली कहती हूँ ''टेढ़ी मेढ़ी लकड़ी आकाश जा टकराई''

सुकन्या : में दस्सनी आं–इसदा जवाब ऐ–धूं, की जे धूं म्हेशां डींगा–त्रेह्डा उप्परै गी जंदा ऐ।

अस्मिता : हून मेरी बारी ऐ। कटोरे पर कटोरा पुत्तर बब्बै कोला की गोरा।

महेश : में दस्सनां इस बुझारत दा जवाब–नारियल। हून इक बुझारत में बी पान्नां, बुज्झो–मेरी मैंह् सिक्कड़ खा पानी दिक्खै मरी जा।

अस्मिता : में बुज्झां–अग्ग।

सुरेश : में बी इक बुझारत पान्नां, बुज्झो, इन्ना हारी कुन्नी जवें कन्नै तुन्नी।

तविषी : एह् दड़ूनी ऐ।

आदित्य : आँटी, मिगी बी बुझारत पान देओ।

श्यामला : हां बेटे बोल्लो।

आदित्य : अक्खनी–मक्खनी रातीं भरी दिनें सक्खनी।

शकुंतला : में दस्सनी आं–एह् अम्बर ऐ।

श्यामला : क्या तुस लोक इ'यां गै दिनभर फलौह्नियां पांदे

सुकन्या : मैं बताती हूँ –इसका उत्तर है धुआँ, क्योंकि धुआँ हमेशा टेढ़ा–मेढ़ा होता है और ऊपर को जाता है।

अस्मिता : अब मेरी बारी है। कटोरे पर कटोरा बेटा बाप से भी गोरा।

महेश : मैं बताता हूँ इस पहेली का उत्तर–नारियल। अब एक पहेली मैं भी कहता हूँ, बूझिए– मेरी भैंस लकड़ी के छिलके खाए पानी देखे तो मर जाए।

अस्मिता : मैं बूझूँ–आग।

सुरेश : मैं भी एक पहेली कहता हूँ, बूझिए–इतनी सी हाँडी जौ से भरी–भरी।

तविषी : यह खट्टा अनार है।

आदित्य : आँटी, मुझे भी पहेली कहने दो।

श्यामला : हाँ बेटा कहो।

आदित्य : अक्खनी–मक्खनी रात को भरी दिन को खाली।

शकुंतला : मैं बताती हूँ यह आकाश है।

श्यामला : क्या आप लोग ऐसे ही दिनभर पहेलियाँ कहते

	रौह्गेओ जां किश खाह्गे– पीह्गे बी ? चलो रुट्टी खाओ।		रहोगे या कुछ खाओ–पीओगे भी ? चलो खाना खाओ।
तविषी :	की नेईं भुक्ख ते लग्गी दी गै, चलो।	तविषी :	क्यों नहीं भूख तो लगी ही है, चलिए।

Vocabulary शब्दावली

बुझारत	पहेली	दड़्नी	खट्टा अनार
थैली	थैली	रुट्टी	भोजन, रोटी
बुज्झना	बूझना	धूफ बत्ती	धूपबत्ती
धुखना	सुलगना, जलना	फलौह्नी	बुझारत
रि'न्नना	पकाना	कड़छी	कलछी
बरताना	परोसना	सुआद	स्वाद
छोकरू	छोकरा	गास	आसमान
जंदरा	ताला	चबक्खै	चहुं ओर
रहेई	सही	बदाम	बादाम
चु'ल्ल	चूल्हा	कुक्करे	चूल्हे के कींगरे
डींग–पडींगा	टेढ़ा–मेढ़ा	बब्ब	बाप
सि'क्कड़	छिलका	कु'न्नी	मिट्टी की हांडी

दड़ूनी : खट्टे अनारों की एक किस्म जो प्रायः डुग्गर के पहाड़ी इलाकों में पैदा होती है। इस फल के दाने सुखाकर अनारदाना तैयार किया जाता है जो यहाँ की प्रसिद्ध सौगात है।

* * *

पाठ—21

जम्मू सूबे दे मश्हूर धार्मक थाह्‌र

(जम्मू प्रान्त के प्रसिद्ध धार्मिक स्थान)

भीमू	: नैन्तू, नमस्ते। केह् हाल ऐ ?	भीमू	: नैन्तू, नमस्ते। क्या हाल है ?
नैन्तू	: नमस्ते। खरा ऐ मेरा हाल, निकला करदा ऐ बक्त। तूं सनाऽ राजी एं नां ?	नैन्तू	: नमस्ते। मैं ठीक हूँ। समय निकल रहा है। तुम सुनाओ कुशल तो हो ?
भीमू	: शुकर ऐ परमात्मा दा।	भीमू	: परमात्मा की कृपा है।
नैन्तू	: सच्च ऐ भाई, उस्सै दा स्हारा लोड़चदा ऐ।	नैन्तू	: भाई सच ऐ। उसी का सहारा चाहिए।
भीमू	: क्या तूं जम्मू सूबे दे मश्हूर धार्मक थाह्‌रें दे बारे च किश ज़ानकारी रक्खना एं ?	भीमू	: क्या तुम जम्मू प्रान्त के प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों के बारे में कुछ जानकारी रखते हो ?
नैन्तू	: हां, की नेईं। में सभनें मश्हूर धार्मक थाह्‌रें दे बारे च चंगी जानकारी रक्खनां। तूं इन्दे बारे च सुनना चाह्‌न्नां केह् ?	नैन्तू	: क्यों नहीं। मैं सभी प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों के विषय में अच्छी जानकारी रखता हूँ। तुम इनके बारे में सुनना चाहते हो क्या ?
भीमू	: हां, भाई। तां गै ते में तुगी पुच्छेआ ऐ। तां फ्ही सनाऽ मिगी।	भीमू	: हाँ, भाई। तभी तो मैंने तुम्हें पूछा है। तो फिर मुझे सुनाओ
नैन्तू	: लै सुन। साढ़े जम्मू सूबे च सब थमां मता मश्हूर धार्मक थाह्‌र ऐ माता वैष्णो देवी दा पवित्तर गुफा मंदर ऐ।	नैन्तू	: लो सुनो। हमारे जम्मू प्रान्त में सब से अधिक प्रसिद्ध धार्मिक स्थान माता वैष्णो देवी का पवित्र गुफा मंदिर है।
नैन्तू	: लै हून अग्गें सुन। उधमपुर जिले	नैन्तू	: लो अब आगे सुनो। उधमपुर

		च शुद्ध महादेव नां आह्‌ला शिवमंदर बी बड़ा मश्हूर ऐ।			जिले में शुद्ध महादेव नामक प्राचीन शिवमन्दिर भी बड़ा प्रसिद्ध है।
भीमू	:	हां, आखदे न जे एह्‌ बड़ा प्राचीन थाह्‌र ऐ।	भीमू	:	हाँ, कहते हैं कि यह बड़ा प्राचीन धार्मिक स्थान है।
नैन्तू	:	तुगी शायद पता नेईं जे जम्मू सूबे दी मश्हूर धार्मक नदी देवका बी शुद्ध महादेव दे कोला दा गै निकलदी ऐ।	भीमू	:	तुम्हें शायद पता नहीं, कि जम्मू प्रान्त की प्रसिद्ध धार्मिक नदी देविका भी शुद्ध महादेव के पास से ही निकलती है।
भीमू	:	सच्च। एह्‌ मिगी पता नेईं हा।	भीमू	:	सच्च ही, यह मुझे पता नहीं था।
नैन्तू	:	साढ़े जम्मू सूबे च उ'आं ते बड़ियां झीलां न, पर धार्मक म्हत्तव आह्‌लियां प्रमुख त्रै गै न।	नैन्तू	:	हमारे जम्मू प्रान्त में वैसे तो अनेकों झीलें है, पर धार्मिक महत्त्व वाली प्रमुख तीन ही झीलें हैं।
भीमू	:	हां, हां दस्सो ओह्‌ त्रै केह्‌ड़ियां न ?	भीमू	:	हाँ, बतलाइये वे तीन कौन सी झीलें हैं ?
नैन्तू	:	एह्‌ त्रैं न – सरूईं सर, मानसर ते भद्रवाह दे कोल कपलास झील। इसी बास कुंड बी आखदे न।	नैन्तू	:	ये तीन झीले हैं–सरूईंसर, मानसर और भद्रवाह के पास कपलास झील। इसे बास कुण्ड भी कहते हैं।
भीमू	:	इन्दा धार्मिक म्हत्तव केह्‌ ऐ ?	भीमू	:	इन झीलों का धार्मिक महत्त्व क्या है ?
नैन्तू	:	इ'नें त्रौनें झीलें च नागदेवता दा बास मन्नेआ जंदा ऐ। ते इ'यां लोक इन्दा धार्मक म्हत्तव मनदे न।	नैन्तू	:	इन तीनों झीलों में नागदेवता का निवास माना जाता हैं। तो इसलिए लोग इनका धार्मिक महत्व मानते हैं।
भीमू	:	सुनेआ जे अज्ज़कल इ'नें झीलें गी पर्यटन दी द्रिश्टी कन्नै उन्नत कीता जा करदा ऐ।	भीमू	:	सुना जाता है कि आजकल इन झीलों को पर्यटन की दृष्टि से उन्नत किया जा रहा है।
नैन्तू	:	हां भीमू सरकार इन्दे तरक्की–	नैन्तू	:	हाँ भीमू, सरकार इनकी उन्नति

बाद्धे आस्सै खासा ध्यान देआ करदी ऐ।

भीमू : ठीक ऐ। हून अग्गें दस्सो जम्मू सूबे बिच्च होर केहूड़े धार्मक थाहूर न ?

नैन्तू : पुन्छ शैहूरै दे कोल सिक्खें दा धार्मक स्थान नगाली साहब ऐ। पुन्छ शैहूरै थमां गै 20 किलोमीटर मंडी नां आहूले थाहूर बुड्ढा अमरनाथ नां आहूला शिवमंदर बी बड़ा मशहूर ऐ। रजौरी च मुसलमानें दी मशहूर ज़ियारत शहादरा शरीफ बी बड़ी मन्नी–परमन्नी दी ऐ।

भीमू : तुन्दा बड़ा–बड़ा धन्नवाद ऐ। तुसें जेहूड़े धार्मक थाहूर हून तोड़ी दस्से न उन्दे बारे च जानकारी प्राप्त करियै मन बड़ा गै खुश होआ ऐ।

नैन्तू : लैओ हून अग्गें बी सुनो जे इत्थै होर केहूड़े धार्मक थाहूर न ?

भीमू : हां, सनाओ।

नैन्तू : पौनी नां आहूले कस्बे दे कोल शिव खोड़ी नां दा शिवजी दा मंदर बड़ा मशहूर ऐ।

भीमू : ठीक ऐ। नैन्तू, आखदे न जे बाबा

की ओर विशेष ध्यान दे रही है।

भीमू : ठीक है। अब आगे बतलाइए जम्मू प्रान्त में और कौन से धार्मिक स्थान हैं ?

नैन्तू : पुन्छ शहर के पास सिक्खों का धार्मिक स्थान नगाली साहब है। पुन्छ नगर से 20 किलोमीटर दूर मण्डी नामक स्थान पर बुड्ढा अमरनाथ नामक शिवमन्दिर भी बड़ा प्रसिद्ध है। राजौरी में मुसलमानों की प्रसिद्ध ज़ियारत शहादरा शरीफ भी मानी हुई धार्मिक जगह है।

भीमू : आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। आपने जो धार्मिक स्थान अब तक बतलाए हैं, उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर के मन अति प्रसन्न हुआ है।

नैन्तू : लो अब आगे भी सुनिए यहाँ और कौन–कौन से धार्मिक स्थान हैं ?

भीमू : हाँ, सुनाएँ।

नैन्तू : पौनी नामक कस्बे के पास शिव खोड़ी नामक शिवजी का गुफा मन्दिर भी बड़ा प्रसिद्ध है।

भीमू : ठीक है। नैन्तू, कहते हैं कि बाबा

जित्तो की जन्म भूमी ग्हार नां दा थाह्‌र बी बड़ा प्रसिद्ध ऐ।

नैन्तू : भीमू सिर्फ ग्हार गै नेईं बल्के जम्मू दे कोल झिड़ी ग्रांऽ बी बाबा जित्तो दे करियै गै मशहूर ऐ।

भीमू : नैन्तू, झिड़ी बाबा जित्तो दे कारण की मशहूर ऐ ? बिंद गल्ला गी खोह्‌लियै सनांदे।

नैन्तू : झिड़ी बाबा जित्तो दी कर्म भूमि ते बलिदान भूमि होने करियै मशहूर ऐ। इत्थै हर साल बड़ा बड्‌डा मेला लगदा ऐ।

भीमू : नैन्तू, हून तुस मिगी जम्मू शैह्‌रै दे मशहूर धार्मक थाह्‌रें जां मंदरें दे नां दस्सो।

नैन्तू : हां, सुनो। जम्मू शैह्‌रै च श्री रघुनाथ जी दा मंदर, श्री रणवीरेश्वर मंदर, पीरखोह्‌ आह्‌ला गुफा मंदर, बाह्‌वे किले च महाकाली दा मंदर, जिसी बाह्‌वे आह्‌ली माता बी आखदे न अति प्रसिद्ध न। गुमट च नौगजिये पीर दी दरगाह्‌ बी बड़ी मशहूर ऐ।

भीमू : भाई जी, तुसें किश्तबाड़ दे कोल सरथल देवी दा ते जिकर गै नेईं कीता। ठाह्‌रें भुजें आह्‌ली महाकाली दी

जित्तो दी भूमि ग्हार नामक स्थान भी बड़ा प्रसिद्ध है।

नैन्तू : भीमू, केवल ग्हार ही नहीं बल्कि जम्मू के समीप झिड़ी नामक स्थान भी बाबा जित्तो के कारण प्रसिद्ध है।

भीमू : नैन्तू, झिड़ी बाबा जित्तो के कारण क्यों प्रसिद्ध है ? इस बात को जरा खोलकर सुनाएँ।

नैन्तू : झिड़ी क्यों कि बाबा जित्तो की कर्म भूमि और बलिदान भूमि है इसलिए प्रसिद्ध है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष विशाल मेला लगता है।

भीमू : नैन्तू, अब आप मुझे जम्मू शहर के प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों या मंदिरों के नाम बतलाएँ।

नैन्तू : हाँ, सुनिए। जम्मू नगर में श्रीरघुनाथ मन्दिर, श्री रणवीरेश्वर मन्दिर, पीरखोह्‌ का गुफा शिव मन्दिर, बाहुकिले में महा काली का मन्दिर जिसे बाहवे वाली माता जी भी कहते हैं अति प्रसिद्ध है। इसी प्रकार गुमट में नौगजिये पीर की दरगाह भी प्रसिद्ध है।

भीमू : भाई जी, आपने किश्तबाड़ के पास सरथल देवी का तो नाम ही नहीं लिया है। अठारह भुजाओं वाली महाकाली की मूर्ति

		मूर्ति ते उसदे सवाऽ कुतै होर है गै नेईं।			तो इस स्थान के सिवाए कहीं अन्यत्र है ही नहीं।
नैन्तू	:	भीमू, बड़ा–बड़ा धन्नवाद में सच्च गै सरथल आह्ली माता दे बारे च भुल्ली गै गेदा हा।	नैन्तू	:	भीमू आपका बड़ा–बड़ा धन्यवाद। सच ही मैं तो सरथल देवी के विषय में बतलाना भूल गया था।
भीमू	:	अच्छा, जेकर जम्मू सूबे च होर बी मशहूर धार्मक थाह्‌र हैन तां अग्गें बी दस्सो।	भीमू	:	अच्छा, यदि जम्मू प्रान्त में और भी प्रसिद्ध धार्मिक स्थान हैं तो तो आगे भी सुनाएँ।
नैन्तू	:	लैओ सुनो। बलौर दा प्राचीन शिवमंदर, बलौर दे गै कोल सुकराला देवी दा मंदर, सुंदरी कोट दी धारा उप्पर ते नगरी पड़ोल च माता बाला सुन्दरी दे मंदर ते पड़ोल दे गै कोल ऐरवां च प्राचीन शिव मंदर साढ़े जम्मू सूबे दी शोभा न।	नैन्तू	:	लो सुनिये। बिलावर का प्राचीन शिवमन्दिर, बिलावर के ही पास सुकराला देवी का मन्दिर, सुंदरी कोट पहाड़ पर तथा नगरी पड़ोल में माता बालासुन्दरी के मन्दिर और पड़ोल के ऐरवा नामक स्थान पर प्राचीन शिवमन्दिर हमारे जम्मू प्रान्त की शोभा हैं।
भीमू	:	नैन्तू, तुन्दा मता–मता धन्नवाद। तुसें इ'नें धार्मक जगहें दा ब्यान करियै मेरा ज्ञान बधाई दित्ता ऐ।	भीमू	:	नैन्तू आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। आपने इन धार्मिक स्थानों की जानकारी देकर मेरा ज्ञान बढ़ा दिया है।

EXERCISES

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

    1. सूबा जम्मू दा सभनें शा मता मशहूर धार्मक थाह्‌र केह्‌ड़ा ऐ।
    2. उधमपुर जिले च केह्‌ड़ा शिवमंदर बड़ा मशहूर ऐ?

3. देवका नदी कु'त्थूं दा निकलदी ऐ?

4. सूबा जम्मू च कि'न्नियां झीलां न?

5. कपलास झील कु'त्थै ऐ?

6. इ'नें झीलें च केह्ड़े देवता दा बास मन्नेआ जंदा ऐ?

7. राजौरी च केह्ड़ा धार्मक थाह्र मता प्रसिद्ध ऐ?

8. पुन्छ शैह्रै दे कोल केह्ड़ा धार्मक थाह्र ऐ?

9. 'शिवखोड़ी' केह्ड़े देवते दा स्थान ऐ?

10. 'ग्हार' थाह्र की प्रसिद्ध ऐ?

2. निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :–

बाबा जित्तो, ठाह्रें, सुकराला, नौगजिये, शिवमंदर

1. गुमट च .... पीर दी दरगाह् बड़ी मश्हूर ऐ।

2. झिड़ी .... दे कारण मश्हूर ऐ।

3. बलौरे दे कोल .... देवी दा मंदर ऐ।

4. .... भुजें आह्ली महाकाली दी मूर्ति सिर्फ सरथल देवी दे मंदरै च ऐ।

5. ऐरवां च प्राचीन .... जम्मू सूबे दी शोभा न।

3. जम्मू शहर के धार्मिक स्थानों पर दस वाक्य लिखिए।

4. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–

स्हारा, धार्मक, मश्हूर, पवित्तर, मेला, कर्म भूमि, शिवखोड़ी, जन्मभूमि, सरूईंसर, ध्यान, तरक्की, मानसर, खासा, प्राचीन

5. डोगरी में अनुवाद कीजिए :–

जम्मू प्राँत में कई प्रसिद्ध धार्मिक स्थान हैं। इन में वैष्णों देवी तथा शिवखोड़ी के गुफा मंदिर, शुद्ध महादेव का प्राचीन शिव मंदिर, बिलावर का शिवमंदिर, राजौरी में

शहादरा शरीफ जम्मू शहर में श्री रघुनाथजी, श्री रणबीरेश्वर, पीरखोह, बाहु किले में महाकाली का मन्दिर अति प्रसिद्ध हैं।

Vocabulary

धार्मक थाह्‌र	धार्मिक स्थान	हाल	हाल
स्हारा	सहारा	मश्हूर	प्रसिद्ध
जानकारी	जानकारी	वैष्णोदेवी	जम्मू प्राँत में एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान
पवित्तर	पवित्र		
मुल्ख	देश	झील	झील
म्हत्तव	महत्त्व	द्रिश्टी	दृष्टि
प्राप्त	प्राप्त	ग्हार	डुग्गर प्रसिद्ध
झिड़ी	लोक नायक बावा जित्तो की कर्म एवं बलिदान भूमि		लोकनायक बावाजित्तो की जन्म भूमि
मेला	मेला	दरगाह्	दरगाह

झिड़ी :

डुग्गर के प्रसिद्ध लोक–नायक बावा जित्तो तथा उनकी बेटी बुआ कौड़ी की देहरी जम्मू के पास 'झिड़ी' नाम के स्थान पर स्थापित है। यहाँ हर वर्ष कार्तिक मास की पूर्णिमा को बड़ा विशाल मेला लगता है। यह मेला सात दिनों तक चलता है और यह मेला **'झिड़ी का मेला'** नाम से प्रसिद्ध है ?।

श्री वैष्णो देवी :

डुग्गर प्रदेश में त्रिकुटा पर्वत के दामन में स्थित वैष्णो देवी की गुफा तथा भवन की महिमा न्यारी है। यहाँ तीस फुट लम्बी गुफा में देवी का निवास चार पिंडियों के रूप में

मिलता है। यहाँ वैष्णो देवी के अतिरिक्त लक्ष्मी, सरस्वती तथा महाकाली की पिंडियाँ हैं। श्रद्धालु कटड़ा से आगे पैदल यात्रा करके देवी दर्शन के लिए आते हैं। वर्षभर देश – विदेश से आए भगतों का ताँताँ बंधा रहता हैं।

सरथल :

डुग्गर प्रदेश के ज़िला डोडा में स्थित एक प्रसिद्ध शक्ति–स्थल है। यह स्थल देवी की अठारह भुजाओं वाली मूर्ति के कारण बहुत प्रसिद्ध है।

* * *

पाठ–22

ग्राईं ते शैह्‌री वातावरण

(ग्रामीण तथा शहरी वातावरण)

राजेन्द्र	:	सोरता ग्रांऽ जाना ऐ केहड़ा रस्ता ठीकरौह्‌ग ?	राजेन्द्र		मुझे 'सोरता' गाँव जाना है। कौन सा रास्ता ठीक रहेगा ?
नरेन्द्र	:	में बी उत्थै गै जाना ऐ आओ मेरे कन्नै।	नरेन्द्र	:	मैंने भी वहाँ ही जाना है। आइए मेरे साथ।
राजेन्द्र	:	क्या तुस 'सोरते' गै रौंह्‌दे ओ ?	राजेन्द्र		क्या आप सोरता गाँव में ही रहते हैं ?
नरेन्द्र	:	हां जी, में सोरते गै रौह्‌न्नां। तुस कुत्थूं दे रौह्‌ने आह्‌ले ओ ?	नरेन्द्र	.	हाँ जी, मैं 'सोरता' में ही रहता हूँ। आप कहाँ के रहने वाले हैं ?
राजेन्द्र	:	में जम्मू शैह्‌र रौह्‌न्नां।	राजेन्द्र	:	मैं जम्मू शहर में रहता हूँ।
नरेन्द्र	:	तां तुसें गी एह् लाका सुनसान जन लग्गा होना ?	नरेन्द्र	:	तब आपको यह इलाका सुनसान जैसा लगा होगा ?
राजेन्द्र	:	नेईं–नेईं। बड़ा शैल लाका ऐ, तुन्दा। किन्ना शांत ते मन मोह्‌ना वातावरण ऐ इत्थै ?	राजेन्द्र	:	नहीं–नहीं। बहुत सुंदर इलाका है आपका। कितना शाँत एवं मनमोहक वातावरण है यहाँ ?
नरेन्द्र	:	जी, गल्ल तां तुन्दी ठीक ऐ, ब कु'त्थै शैह्‌री रौनकां ते कु'त्थै एह् जंगल–जाड़ ?	नरेन्द्र	:	जी हाँ, बात तो आप की ठीक है, परन्तु कहाँ शहर की रौनकें तथा कहाँ ये जंगल–उजाड़।
राजेन्द्र	:	तुस खुश्वा ठीक गलाऽ करदे ओ। सच्चें गै शैह्‌री रौनकां ते उत्थै दी दौड़–भज्ज इत्थै नेईं, पर असें शैह्‌रियें गी बी शांत वातावरण परसिंद ऐ।	राजेन्द्र	:	आप शायद ठीक कह रहे हैं। सच ही शहर की चहल–पहल और भाग–दौड़ यहाँ नहीं है लेकिन हम शहर वालों को भी शांत वातावरण पसन्द है।

नरेन्द्र	:	इ'नें जंगलें दे शलैपे ते शैह्री चमक–दमक दा केह् मकाबला ऐ ?	नरेन्द्र	:	इन जंगलों के सौन्दर्य एवं शहर की चमक–दमक का क्या मुकाबला है ?
राजेन्द्र	:	सच्चें गै कोई मकाबला नेईं। शैह्रें बेथ'वे, बस्तार ते बेस्हाबे उद्योगीकरण प्रकृति दे संतुलन गी बगाड़दे–बगाड़दे जानलेवा होंदे जा करदे न।	राजेन्द्र	:	सच ही कोई मुकाबला नहीं। शहरों के अनियोजित विस्तार एवं असीमित उद्योगीकरण प्रकृति के सन्तुलन को बिगाड़ते–बिगाड़ते जानलेवा होते जा रहे हैं।
नरेन्द्र	:	पर, फ्ही बी अस इ'नें जंगलें दी अनदिक्खी गै करदे जा करने आं। बड़ा गै चर्ज ऐ।	नरेन्द्र	:	परन्तु फिर भी हम इन जंगलों की उपेक्षा ही करते जा रहे हैं। बड़ा ही आश्चर्य है।
राजेन्द्र	:	एह् ते सच्ची गल्ल ऐ की जे एह् जंगल गै असें गी सेह्त ते लम्मी उमर देने आह्ले न। इस वास्तै इन्दी हिफाजत निहायत जरूरी ऐ।	राजेन्द्र	:	यह तो सच्ची बात ऐ क्योंकि ये जंगल ही हमें स्वास्थ्य और दीर्घ आयु देने वाले है। इसलिए इनकी रक्षा अत्यन्त आवश्यक है।
नरेन्द्र	:	ते इ'नें शैह्रें दा केह् होग ?	नरेन्द्र	:	और इन शहरों का क्या होगा ?
राजेन्द्र	:	अज्ज शैह्रें च बधदी जा करदी गड्डियें–मोटरें ते कल–कारखानें दी संख्या कन्नै वातावरण मता गै प्रदूशत होंदा जा करदा ऐ। इस कोला बचने दी लोड़ ऐ।	राजेन्द्र	:	आज शहरों में बढ़ रही गाड़ियों, मोटरों और कल कारखानों की संख्या से वातावरण अत्यन्त दूषित होता जा रहा है। इससे बचने की आवश्यकता है।
नरेन्द्र	:	अच्छा जी। तुसें बड़ी गै चंगी गल्ल दस्सी ऐ।	नरेन्द्र	:	अच्छा। आपने बहुत बढ़िया बात बताई है।
राजेन्द्र	:	हां, जंगलें दे एह् भांत–सभांतड़े रुक्खे–बूह्टे, पशु–पैंछी आदि	राजेन्द्र	:	हाँ, जंगलों के ये तरह–तरह के पेड़–पौधे, पशु–पक्षी आदि

दिक्खो हां किन्ने साफ–सुथरे
वातावरण दी सिरजना करदे न ?

नरेन्द्र : तुसें ठीक गलाया ऐ। कुश्वा
इस्सै करी अज्ज बी साढ़े लोक
रुक्ख–बूह्टें ते पशु–पैंछियें दी
पूजा करदे न। इन्दे पालन–
पोशन वगैरा गी पुन्नै आह्ला
कम्म समझने आह्ले लोक बी
घट्ट नेईं न।

राजेन्द्र : तुन्दे पास्सै केह्ड़े–केह्ड़े रुक्खे–
बूह्टें दी पूजा–अर्चना होंदी ऐ ?

नरेन्द्र : बड़, आमली, करौंगल,
तुलसी ते होर बथ्हेरे दुए रुक्ख
बूह्टें गी कुसै नां कुसै परम्पारिक–
विधि कन्नै पूजने–राधने दा
आम रवाज ऐ। उ'आं लोक–
आस्थां नेहियां बी हैन जि'न्दे
थमां रुक्ख–बूह्टें गी हानी पजाना,
दिन घरोते दे कुसै रुक्ख–बूह्टे
गी छूह्ना–छेड़ना जां फ्ही दिन
बार दा बचार कीते बिजन
कुसै रुक्ख–बूह्टे गी कट्टना
भन्नना–त्रोड़ना आदि अनहित
दा मूजब गै समझेआ जंदा ऐ।

राजेन्द्र : सच्चें, एह् सब जनमानस गी
रुक्खें–बूह्टे दे म्हत्तव दी खरी
जानकारी दा गै सबूत ऐ।

देखो कितने साफ–सुथरे
वातावरण का सृजन करते हैं ?

नरेन्द्र : आपने ठीक कहा है।
शायद इसी कारण आज भी
हमारे लोग पेड़–पौधों एवं पशु–
पक्षियों की पूजा करते हैं इनका
पालन–पोषण, सुरक्षा इत्यादि
को पुण्य कार्य समझने वाले
भी कम नहीं हैं।

राजेन्द्र : आपके वहाँ कौन–कौन से पेड़–
पौधों की पूजा–अर्चना होती है ?

नरेन्द्र : पीपल, आमली, अमलतास,
तुलसी एवं बहुत से अन्य पेड़–
पौधों की किसी न किसी
पारम्परिक पद्धति से पूजा–
अर्चना करने का आम रिवाज
है। वैसे अनेक लोक–आस्थाएं
ऐसी भी हैं जिन से पेड़–पौधों
को हानि पहुँचाना, सूर्यास्त के
बाद किसी पेड़–पौधे को छूना–
हिलाना या फिर दिन–वार का
विचार किये बिना किसी पेड़–
पौधे को काटना, तोड़ना आदि
अनहित का कारण समझा जाता है।

राजेन्द्र : सच ही, यह सब, जनमानस को
पेड़–पौधों के महत्त्व की अच्छी
जानकारी का ही प्रमाण है।

नरेन्द्र	: जी, ते इ'यां गै पशु–पैंछियें ते होर जीव–जैन्तुएं दी पूजा–मानता बी जनमानस च मजूद ऐ।	नरेन्द्र	: जी, और ऐसे ही पशु–पक्षियों तथा अन्य जीव–जन्तुओं की पूजा–अर्चना भी जनमानस में विद्यमान है।
राजेन्द्र	: तुन्दै केह्ड़े–केह्ड़े पशु–पैंछियें ते होर दुए जीव जैन्तुएं दी पूजा–मानता होंदी ऐ ?	राजेन्द्र	: आप के यहाँ किन्न–किन पशु पक्षियों तथा अन्य जीव–जन्तुओं की पूजा–अर्चना होती है ?
नरेन्द्र	: गौ, कुत्ता, कां, बांदर, चिड़ी, नाग, कीड़ी, मकोड़ा आदि लगभग सभनें जीव जन्तुएं दी पूजा–मानता होंदी ऐ ते इन्दी सुरक्खेआ गी हितकारी समझेआ जंदा ऐ।	नरेन्द्र	: गाय, कुत्ता, कौआ, बंदर, चिड़िया, नाग, चींटी, मकोड़ा इत्यादि लगभग सभी जीव–जन्तुओं की पूजा–अर्चना होती है तथा इनकी सुरक्षा को हितकारी समझा जाता है।
राजेन्द्र	: किन्नी शैल गल्ल ऐ। जनमानस दा प्रकृति दे संतुलन सरबंधी एह् सोह्ग सच्चें गै गौरव करने जोग ऐ।	राजेन्द्र	: कितनी अच्छी बात है। जनमानस का प्रकृति के संतुलन के बारे में यह ध्यान सत्य ही गौरव करने योग्य है।

EXERCISES

I. पाठ के आधार पर उत्तर दें :–

1. राजेन्द्र ने केह्ड़े ग्रांऽ जाना ऐ ?
2. राजेन्द्र कु'त्थूं दा रौह्ने आह्ला ऐ ?
3. नरेन्द्र कु'त्थै रौंह्दा ऐ ?
4. शैह्रें दा वातावरण कनेहा ऐ ?
5. ग्रांऽ दा वातावरण कनेहा ऐ ?

II उपर्युक्त शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(लाका, जाना, रौंह्दे, आरबला, प्रदूशत)

1. तुस कु'त्थै .... ओ ?
2. में बी उत्थै गै .... ऐ।
3. बड़ा शैल ते मनमोह्ना ....।
4. वातावरण मता .... होंदा जा करदा ऐ।
5. जंगल साढ़ी नरोई सेह्त ते लम्मी .... दी जमानत न।

III पढ़ें, और ऐसे ही तीन वाक्य स्वयं बनाएँ।

जंगलें दे शलैपे ते शैह्री चमक–दमक दा केह् मकाबला।

IV उदाहरण का अनुसरण करें एवं पाठ से ऐसे ही कुछ और संयुक्त शब्दों का चयन करें–

दौड़–भज्ज ....

V इन्न शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करें।

जाना, रौह्न्नां, चमक–दमक, लाका, आरबला

VI उचित वाक्यांशों को जोड़ कर वाक्य बनाएँ।

1. बधदा प्रदूशन जान लेवा	मता प्रदूशत ऐ।
2. शैह्रें दा वातावरण	होंदा जा करदा ऐ।
3. तुसें गी एह् लाका तां	सुनसान लग्गा होना।
4. किन्ना मनमोह्ना	जमानत न।
5. जंगल साढ़ी नरोई सेहत ते लम्मी आरबला दी	लाका ऐ।

VII शब्दों को उचित क्रम में प्रयोग करके शुद्ध वाक्य बनाएँ :–

1. ठीक तुस करदे गलाऽ ओ।

2. में गै रौह्न्नां सोरतै।

3. कन्नै मेरे आओ।

4. रौह्न्नां शैह्र में जम्मू।

5. रस्ता रौह्ग केह्ड़ा ठीक ?

VIII उदाहरण का अनुसरण करें तथा कथनात्मक वाक्यों के प्रश्नात्मक वाक्य बनाएँ :–

में सोरतै गै रौह्न्नां।

केह् में सोरतै गै रौह्न्नां ?

1. तुस जम्मू रौंह्दे ओ।

....

2. तुसें गी एह् लाका सुनसान लग्गा होना।

....

3. एह् रस्ता ठीक रौह्ग।

....

4. एह् लाका बड़ा शैल ऐ।

....

5. तुसें बी उत्थै गै जाना ऐ।

....

Vocabulary शब्दावली

ग्रांऽ	गाँव	जानलेवा	जान लेने वाला (मृत्युकारक)
रस्ता	रास्ता		
बशक्क	निसंदेह	रौह्ना	रहना
शैह्र	शहर	निग्गोसारी	अकेलापन
भुल्ली दी	भूली हुई	लाका	इलाका

सुनसान	सुनसान	गल्ल	बात
लग्गा होना	लगा होगा	अक्सर	प्रायः
मन मोह्ना	मन मोहक	तुलना	मकाबला
वातावरण	वातावरण	नरोई	निरोग्य
जंगल–जाड़	जंगल–उजाड़	लम्मी	लम्बी
शलैपा	सुन्दरता	आरबला	आयु
चमक–दमक	चमक–दमक	जमानत	जमानत
मकाबला	तुलना	बधदी	बढ़ती
सच्चें	सच्च ही	गड्डी–मोटर	गाड़ी–मोटर
बेथ'वे	अनियोजित	कल–कारखाने	कल–कारखाने
बस्तार	विस्तार	संख्या	संख्या
बेस्हाबा	असीमत	प्रदूशत	प्रदूषित
उद्योगीकरण	उद्योगीकरण	भांत	भांति के
प्रकृति	प्रकृति	रुक्ख–बूहूट	पेड़–पौधे
संतुलन	संतुलन	पशु–पैंछी	पशु–पक्षी
बगाड़ना	बिगाड़ना	दिक्खना	देखना
साफ–सुथरे	साफ–सुथरे	सिरजना	सृजन
बचार	विचार	गलाया	कहा
बिजन	बिना	खुश्पा	शायद
बढना	काटना	इस्सै करी	इसी कारण
त्रोड़ना	तोड़ना	पूजा–मानता	पूजा–मान्यता
मूजब	कारण	हरिकाम	विद्यमान
जनमानस	जनमानस	पालमा	पालन
खरी	अच्छी	सुरक्खेआ	सुरक्षा
म्हत्त्व	महत्त्व	जानकारी	जानकारी

पुन्न–कारज	पुण्य–कार्य	सबूत	प्रमाण
बड़	पीपल	होर	और
आमली	आमली	दुए	दूसरे
करौंगल	अमलतास	गौ	गाय
तुलसी	तुलसी	कुत्ता	कुत्ता
बथ्हेरे	बहुत से	कां	कौआ
परम्पारिक	पारम्परिक	बांदर	बंदर
नभाना	निभाना	चिड़ी	चिड़िया
संदर्भ	संदर्भ	नाग	नाग
रवाज	रिवाज	कीड़ी	कीड़ी–चींटी
आस्थां	आस्थाएं	मकोड़ा	मकोड़ा
दिन घरोना	सूर्यास्त होना	हितकारी	हितकारी
छूना छेड़ना	छूना–हिलाना	सोह्ग	ध्यान
दिनवार	दिन वार	गौरव	गौरव
जोग	योग्य		



पाठ–23

डुग्गर दे पर्व – तेहार

(डुग्गर के पर्व – त्योहार)

बिमला	: शीला भैन नमस्ते।	बिमला	: शीला बहन नमस्ते।
शीला	: नमस्ते जी, सनाओ केह् हाल ऐ ?	शीला	: नमस्ते जी, सुनाइए क्या हाल है ?
बिमला	: बड़े दिनें बाद लब्भियां ओ। ठीक ते है हियां ?	बिमला	: बहुत दिनों बाद दिखीं। ठीक तो थीं ?
शीला	: ठीक गै ही पर में इत्थै नेही, तीर्थे गेदी ही।	शिला	: ठीक ही थी पर मैं यहाँ नहीं थी, तीर्थ यात्रा पर गई हुई थी।
बिमला	: तुस बड़ियां नित–नीमी ओ अपने पर्वें–तेहारें दे बारे च सब किश जानदियां–भालदियां ओ। हून अस बी स्याने होआ करने आं असें गी बी किश दस्सी ओड़ो हां इन्दे बारै।	बिमला	: आप बहुत नित्य–नेम करती हैं अपने पर्व–त्योहारों के बारे में सब कुछ जानती हैं। अब हम भी बजुर्ग हो रहे हैं हमें भी इनके बारे में कुछ जानकारी दे दें।
शीला	: कु'त्थूं दा शुरू करां ? खरा ब'रे दे शुरू थमां गै दस्सना शुरू करनी आं। साढ़े नमें ब'रे दा रम्भ चेत्तर म्हीने औने आह्ले पैह्ले नराते कन्नै होंदा ऐ ते फ्ही इसदे बाद लड़ो लड़ी तेहार औंदे रौंह्दे न। नौमें नराते गी 'रामनौमी' दा तेहार मनाया जंदा ऐ ते फ्ही बसाख म्हीने दी सङरांदी गी बसाखी दा तेहार औंदा ऐ। जेह्ड़ा सिर्फ इत्थै गै नेईं साढ़े	शीला	: कहाँ से शुरू करूँ ? अच्छा वर्ष के आरम्भ से ही बताना शुरू करती हूँ। हमारा नया वर्ष चैत्र मास के प्रथम नवरात्रे से आरम्भ होता है। और फिर इसके बाद एक के बाद एक करके त्योहार आते जाते हैं। नवें नवरात्र को 'रामनवमी' का त्योहार मनाया जाता है। फिर बैसाख मास की संक्रान्ति को 'वैशाखी' का त्योहार आता है जो सिर्फ यहाँ ही नहीं

		गुआंढी प्रदेश पंजाब च बी धूमधाम कन्नै मनाया जंदा ऐ।			हमारे पड़ोसी प्रदेश पंजाब में भी धूमधाम से मनाया जाता है।
बिमला	:	हां बसाखी दा तेहार ते बड़ा बड्डा तेहार होंदा ऐ। इसदा मिगी पता ऐ।	बिमला	:	हाँ वैशाखी का त्योहार तो बहुत बड़ा त्योहार होता है। इसके बारे में मुझे मालूम है।
शीला	:	इसदे बाद धमदें दा तेहार, निर्जला कास्ती, राह्ड़े दा तेहार, सकोलड़े (मिञ्जरां), रंक्खड़ी दा, ठौगरें दा बर्त, बच्छ दुआह्, द्रुब्बडी, नागपैंचमी आदि मते सारे तेहार कन्नै–कन्नै उठी औंदे न।	शीला	:	इसके बाद 'धमदें' का त्योहार, निर्जल एकादशी, राह्ड़ों का त्योहार, सकोलड़े (मिंजरों का त्योहार), राखी का त्योहार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत, बच्छ बारस, राधा अष्टमी, नागपंचमी आदि बहुत से त्योहार साथ–साथ आ जाते हैं।
बिमला	:	हां भैन इन्दे च मते तेहार ते बर्तै आह्ले न।	बिमला	:	हाँ बहन इनमें बहुत से त्योहार तो व्रत उपवास वाले हैं।
शीला	:	एह् ते तुगी पता गै होना ऐ की जे तुम्मी ते बर्त रक्खनी एं इ'नें मौकें। इन्दे बाद नराते, दसैह्रा, हरतालका, कर्वा चौथ, देआली आदि तेहार बी किट्ठे–किट्ठे औंदे न।	शीला	:	यह तो तुम्हें मालूम ही होगा क्योंकि तुम भी तो व्रत रखती हो इन अवसरों पर। इनके बाद नव–रात्रे, दशहरा, हर तालिका व्रत, कर्वा चौथ और दीवाली आदि त्योहार भी इकट्ठे–इकट्ठे ही आते हैं।
बिमला	:	हां, फ्ही इन्दे बाद तेहारें दा किश छिंडा पेई जंदा ऐ।	बिमला	:	हाँ, फिर इनके बाद त्योहार कुछ देर से आते हैं।
शीला	:	ठीक आखा करनीं। फ्ही कुतै पोह् म्हीने दे खीरा च 'लोह्ड़ी' ते उसदे दुए रोज 'अत्रैण' दा दिन पर्व औंदा ऐ।	शीला	:	ठीक कह रही हो फिर कहीं पौष माह के अन्त में लोहड़ी और उसके अगले उत्तरायण का पर्व आता है।

बिमला : लोह्ड़ी दे अगें–पिच्छें गै भुग्गे दा बर्त बी औंदा ऐ।	बिमला : लोह्ड़ी के आगे–पीछे ही गणेश चतुर्थी का व्रत भी आता है।
शीला : हां उ'ब्बी इ'नें दिनें गै औंदा ऐ। इसदे बाद, बसंत–पैंचमी, शिवरात्रि, होली, चैतर–चौदेआ आदि दे तेहार औंदे न।	शीला : हाँ, वह भी इन्हीं दिनों आता है। इसके बाद बसंत पंचमी, शिवरात्रि, होली, चैत्रचतुर्दशी, होली आदि के पर्व आते हैं।
बिमला : एह् ते हिन्दुएं दे तेहार होए नां। सिक्ख ते मुसलमान भ्राएं दे तेहार बी इत्थै खासे मनोंदे न ?	बिमला : ये तो हिंदुओं के त्योहार हुए न। सिक्ख और मुस्लिम भाइयों के त्योहार भी यहाँ काफी मनाए जाते हैं ?
शीला : हां की नेईं ? गुरु अर्जुनदेव दा जन्मदिन, गुरु हर गोबिंद दा गुरुपर्व, गुरुनानक देव ते गुरु गोविन्द सिंह आदि सभनें गुरुएं दे गुरु पर्व इत्थै बड़ी धूमधाम कन्नै मनाए जंदे न। इ'यां गै निक्की ईद, बड्डी ईद, शब–ए–बरात, रमजान बगैरा मुसलमान भ्राएं दे तेहार बी पूरी अकीदत कन्नै मनोंदे न। ते बुद्ध ते जैनियें दे तेहार बी अपने समें पर औंदे न ते अपने–अपने तरीके कन्नै मनाए जंदे न।	शीला : हाँ क्यों नहीं ? गुरु अर्जुन देव का, जन्मदिन गुरु हर गोविन्द का गुरुपर्व, गुरुनानक देव और गुरु गोविन्द सिंह आदि सभी गुरुओं के गुरु पर्व यहाँ बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। ऐसे ही छोटी ईद, बड़ी ईद, शब–ए–बारात, रमज़ान आदि मुस्लिम भाइयों के त्योहार भी पूरी श्रद्धा के साथ मनाए जाते हैं और बुद्ध एवं जैन धर्म अनुयायियों के त्योहार भी अपने–अपने समय परआते हैं और अपने–अपने ढंग से मनाए जाते हैं।
बिमला : तां सच्चें गै साढ़े इस डुग्गर प्रदेश च ब'रा भर तेहारें दी गैह्मा–गैह्मी रौंह्दी ऐ।	बिमला : तो सच ही हमारे इस डुग्गर प्रदेश में वर्ष भर त्योहारों की गहमा–गहमी लगी रहती है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

1. नमें ब'रे दा रम्भ कदूं कोला मन्नेआ जंदा ऐ?
2. नौमें नराते गी केह्ड़ा तेहार मनाया जंदा ऐ?
3. बसाखी दा तेहार कदूं औंदा ऐ?
4. पोह् म्हीने दे खीरा च औने आह्ले तेहारै दा केह् नां ऐ।?
5. लोह्ड़ी दे दुए रोज केह्ड़ा तेहार औंदा ऐ?
6. सिक्ख समुदाए दे प्रमुख तेहार केह्ड़े न?

2. निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरिए :–

टौगरें दा बर्त, लोह्ड़ी, कर्वा चौथ, बसाखी, रामनौमी, होली

1. अत्रैण थमां इक दिन पैह्लें .... दा तेहार होंदा ऐ।
2. रक्खड़ी दे बाद औने आह्ला तेहार .... ऐ।
3. .... देआली शा पैह्लें औंदी ऐ।
4. धमदें दा तेहार .... दे बाद औंदा ऐ।
5. .... गी रंगें दा तेहार बी आखदे न।
6. नौमें नराते गी .... आखदे न।

3. डुग्गर दे पर्वें–तेहारें पर दस वाक्य लिखो :–

4. निम्नलिखित कथनात्मक वाक्यों के निषेधात्मक वाक्य बनाइए :–

1. होली सङरांदी आह्ले दिन होंदी ऐ।
2. शिवरात्री गी गणेश जन्म दे तौर पर मनाया जंदा ऐ।
3. नागपैंचमी गी ठण्डे–मिट्ठे पानी दियां शबीलां लाइयां जंदियां न।

4. लोह्ड़ी हाड़ म्हीने च औंदी ऐ।

5. बसाखी दे इकदम बाद रक्खड़ी दा तेहार औंदा ऐ।

सकोलड़े	=	रंगदार धागे और गोटे का बना कर्ण आभूषण जो सावन मास की संक्रान्ति के दिन राह्ड़ों के समाप्ति–त्योहार पर डाला जाता है। हिमाचल में इसे 'मिंजरां' कहा जाता है।
ठौगरें दा बर्त	=	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत
नाग पैंचमी	=	नाग पंचमी
देआली	=	दीवाली
लोह्ड़ी	=	लोहड़ी
ईद	=	ईद
गुरूपर्व	=	गुरुपर्व
अकीदत	=	श्रद्धा, अकीदत

Vocabulary शब्दावली

पर्व–तेहार	पर्व–त्योहार	लब्भना	दिखना, मिलना
तीर्थ	तीर्थ	नित–नीमी	नित्य–नेम करने वाली
जानना	जानना		
स्याना	बजुर्ग, समझदार		
लड़ो–लड़ी	एक के बाद दूसरा ; साथ–साथ आते रहना		
रम्भ	आरम्भ		
म्हीना	महीना		
ब'रा	वर्ष		

नराते	नवरात्रे
रामनौमी	रामनवमी
गुआंढी	पड़ोसी
बसाखी	वैशाखी
धमदें	आषाढ़ मास की संक्रान्ति का पर्व
राह्ड़े	डुग्गर का प्रसिद्ध नारी त्योहार जो आषाढ मास की संक्रान्ति को शुरू होकर सावन मास की संक्रान्ति तक चलते हैं। इस अवसर पर घड़ा आदि के उपरिभाग को जमीन में गाढ़ कर बीच में अनाज बीजा जाता है इन्हें राह्ड़ों की संज्ञा दी जाती हैं। राह्ड़ों के चौगिर्द नाना प्रकार के रंगों से चित्रकला भी की जाती है।

धमदें :

आषाढ़ मास की संक्रांति को डुग्गर में 'धमदें' का त्योहार–पर्व मनाया जाता है। इसे 'धर्म ध्याड़ा' भी कहा जाता है। इस दिन अपने पितरों–पुरखों के निमित्त पानी से भरे घड़े, फल, सब्जी, अन्न, दालें, पंखी आदि दान किए जाते हैं और विवाहित बहनों–बेटियों को भी अन्न, फल, वस्त्र, नकद पैसे आदि दिए जाते हैं।

राह्ड़े :

'राह्ड़े' नामक विशेष त्योहार भी डुग्गर का प्रसिद्ध त्योहार है। यह आषाढ़ मास की संक्रांति को आरम्भ होकर सावन मास की संक्रांति को सम्पन्न होता है। इस समय लड़कियाँ (विवाहित एवं कंवारी) मिट्टी के घड़ों आदि के अग्रभाग (मुख वाला भाग) लेकर उन्हें कच्ची जमीन में गाढ़ देती हैं और उनके बीच में फसल के बीज बोए जाते हैं, फिर आषाढ़ मास के प्रत्येक रविवार को ये लड़कियाँ रंग–बिरंगे कपड़े पहन कर, एकत्र होकर जलाशय पर जाती हैं और वहाँ पर नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ खाती, उत्सव मनाती हैं। अन्यथा प्रतिदिन शाम को जिस स्थान पर 'राह्ड़े' बीजे होते हैं वहाँ पर एकत्र हो राह्ड़ों के गीत गाती, खुशी मनातीं और प्रीतिभोज के गीत गाती हैं। अन्ततः सावन मास की संक्रांति के दिन सब लड़कियाँ नदी, तालाब आदि किसी जलाशय पर एकत्र होती हैं जहाँ इन राहड़ों को प्रवाहित किया जाता है और साथ ही नए–नए रंग–बिरंगे वस्त्र, आभूषण पहन कर नाना प्रकार के पकवान, मिठाई, फल आदि खाती–पीती मौज मनातीं

हैं। सावन मास के तथा विशेषकर राह्ड़ों के गीत गाती हैं। यह राह्ड़ों का समापन समारोह होता है और इसे 'बड्डा रुटट' भी कहते हैं। रेशम और गोटे से बने विशेष कर्णाभूषण जिन्हें 'सकोलड़े' कहा जाता है वह भी इस दिन पहने जाते हैं। कुछ लोग इसे सकोलड़ों का त्योहार भी कहते हैं।

नराते :

नवरात्रों के पर्व को डोगरी में 'नराते' कहा जाता है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। चैत्रमास में तथा अश्विन मास में यह नौ–नौ दिनों के लिए मनाया जाता है। यह कन्याओं का विशेष पर्व होता है। कन्याएं मिलकर किसी एक स्थान पर खेती बीजती हैं जिसे माता (देवी) का प्रतीक माना जाता है और वहीं पर दीवाल आदि में देवी की मिट्टी की प्रतिमा स्थापित की जाती है जिसकी हर रोज प्रातः–सायं पूजा होती है। रोज शाम को कन्याएं उक्त स्थान पर मिल–बैठ प्रतिभोज करती हैं जिसे 'चूटी' कहा जाता है। नवरात्रे के अन्तिम दिन प्रत्येक घर में कन्यापूजन होता है और सायंकाल को नवरात्रे रखने वाली लड़कियाँ कान्ह और सखियों का प्रदर्शन करती हैं।

लोह्ड़ी :

यह त्योहार मकर संक्रांति के एक दिन पूर्व मनाया जाता है। डुग्गर में इस त्योहार का निराला ही रंग होता है। लड़के–लड़कियों में विशेष उत्साह होता है जो लोहड़ी से लगभग एक माह पूर्व ही इसकी तैयारियों में लग जाते हैं। लड़के 'छज्जा' बनाते हैं जो काष्ट के ढांचे पर रंग–बिरंगे कागज़ के फूलों और मध्य में मोर के चित्र से सजा होता है। लोहड़ी के दिन लड़के डंडारस खेलते और छज्जा नाच प्रस्तुत करते हैं। जिन घरों में लड़के का विवाह या फिर लड़का उत्पन्न हुआ होता है उन घरों में लोग विशेषकर छज्जा नाच करते 'लोहड़ी' माँगते हैं। नव विवाहिता कन्याओं – वहुओं को पीहर और ससुराल की ओर से वस्त्राभूषणों की भेंट भी दी जाती है। इस त्योहार के मुख्य खाद्य तिल और चावल के बने पदार्थ होते हैं। रात्रि के समय 'लोहड़ी' जलाई जाती है और लोग मिलकर बैठते हैं एवं शीतऋृतु में आनन्द मनाते हैं।

नाग पैंचमी :

सावन मास में शुक्लपक्ष की पंचमी को डुग्गर प्रदेश में नाग पंचमी का पर्व मनाया जाता है। सावन–भादों दोनों मास गर्मी और बरसात के मास हैं। उमस बहुत होती है अतः साँप–बिच्छू आदि कीड़े भी होते हैं। संभवतः इस त्योहार के पीछे इन सर्प–बिच्छू आदि से रक्षा हेतु इनकी पूजा का विधान है। इस दिन लगभग हर घर में विभिन्न प्रकार के पकवान आदि बनते हैं और भूमि या

दीवार पर नागों के चित्र बनाकर उन्हें इन सभी व्यंजनों का भोग लगाकर उनकी स्तुति करते हुए घर–परिवार की भलाई की कामना की जाती है।

बसाखी :

यह त्योहार वैशाख मास की संक्रांति को मनाया जाता है। इस दिन विक्रमी संवत् आरम्भ होता है और सारा वर्ष, ऋद्धि–सिद्धि, खुशहाली और सुख, समृद्धि में बीते ऐसी कामना से इस पर्व को मनाया जाता है दूसरा यह 'रबी' की फसल पक कर तैयार होने की खुशी में भी मनाया जाता है इसलिए इस पर्व पर स्नान–दान आदि धार्मिक कृत्यों के अतिरिक्त खाने–पीने, पहनने, नाचने–गाने आदि का भी उत्सव है। लोग आपस में मुबारखबाद देते एवं मिठाई भी बाँटते हैं। इस अवसर पर भंगड़ा नाच का प्रदर्शन भी होता है।

रामनवमी :

चैत्रमास के नवरात्रों की नवमीं तिथि को यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन भगवान राम का जन्म हुआ था। अतः मंदिरों में विशेष पूजा–अराधना, हवन–यज्ञ आदि होते हैं। कन्या–पूजन भी इस दिन विशेष रूप से होता है। मंदिरों आदि में मेले भी लगते हैं।



पाठ – 24

डोगरी लोकगीत

(डोगरी लोकगीत)

अम्मां	: ''तेरे मैह्‌लें दे बिच–बिच बे,'' बाबल डोला अड़ी बो गेआ।''	अम्माँ	: ''तेरे मैह्‌लें दे बिच–बिच बे, बाबल डोला अड़ी बो गेआ।''
कमला	: अम्मां। तुस बड़ा गै सुहाना गीत गुनगनाऽ करदियां ओ। केह्‌ड़ा गीत ऐ एह्‌ ?	कमला	: अम्माँ। आप बहुत ही मधुर गीत गुनगुना रही हैं। कौन सा गीत है यह ?
अम्मां	: एह्‌ 'सुहाग' लोकगीत ऐ। कुड़ी दे ब्याह्‌ उप्पर सुहाग गाए जंदे न। एह्‌ सुहाग कुड़ी सौह्‌रे टोरदे बेल्लै गाया जंदा ऐ।	अम्माँ	: यह 'सुहाग' लोकगीत है। लड़की के विवाह पर सुहाग गाए जाते हैं और यह सुहाग लड़की ससुराल भेजते समय गाया जाता है।
कमला	: अम्मां। सच्च गै इस गीतै च बड़ी बेदन ऐ। में पुच्छना चाह्‌न्नी आं जे साढ़े डुग्गर च किन्नी किस्में दे लोकगीत प्रचलत न ?	कमला	: अम्माँ। सच ही इस गीत में बहुत वेदना है। मैं जानना चाहती हूँ कि हमारे डुग्गर में कितने प्रकार के लोक गीत प्रचलित हैं ?
अम्मां	: धियें, एह्‌ ते तूं बड़ी गै चंगी गल्ल पुच्छी ऐ। नेईं तां अज्जै–कल्लै दियां कुड़ियां ते फिल्मी गीत गै परसिंद करदियां न।	अम्माँ	: कमला बेटी, यह तो तुमने बहुत ही अच्छी बात पूछी है। अन्यथा आजकल तो लड़कियाँ फिल्मी गीत ही पसंद करती हैं।
कमला	: तुस जानदियां गै जे डुग्गर संस्कृति कन्नै मिगी बड़ा मोह्‌ ऐ, कीजे	कमला	: आप तो जानती ही हैं कि डुग्गर संस्कृति के साथ मुझे बहुत

मिगी अपनी धरती कन्नै मता प्यार ऐ। इस्सै करी इस सुहाग गीते दे बोल्लें मेरा दिल छूही लेआ ऐ।

लगाव हैं, क्योंकि मुझे अपनी धरती के साथ अति प्यार है। इसीलिए इस सुहाग गीत के इन शब्दों ने मेरा हृदय छू लिया है।

अम्मां : धिये, मिगी एह् सुनियै होर मती खुशी होई ऐ जे तुगी डुग्गर दे लोक गीतें कन्नै बी प्यार ऐ।

अम्माँ : बेटी, मुझे यह सुनकर अति प्रसन्नता हुई है कि तुम्हारा डुग्गर के लोक गीतों के साथ भी प्यार है।

कमला : प्यार ऐ तां गै ते तुन्दे कोला इन्दे बारे च पुच्छा करनी आं।

कमला : प्यार है तभी तो आप से इनके बारे में पूछ रही हूँ।

अम्मां : धिये, बड़ी चंगी सोच ऐ तेरी।

अम्माँ : बेटी, बहुत अच्छी सोच है तुम्हारी।

कमला : अच्छा, हून मिगी तुस एह् दस्सो डुग्गर च केह्‌ड़े–केह्‌ड़े लोक गीत गाए जंदे न ?

कमला : अच्छा अब मुझे यह बताइए कि डुग्गर में कौन–कौन से लोक गीत गाए जाते हैं ?

अम्मां : खरा। ध्यान लाइयै सुन।

अम्माँ : ठीक है। ध्यान से सुनो।

कमला : हां, सुना करनी आं।

कमला : हाँ, सुन रही हूँ।

अम्मां : साढ़े लोकगीत साढ़े जीवन दियें सारियें गतिविधियें कन्नै जुड़े दे न इस लेई में उरसै स्हाबै कन्नै इन्दा वणर्न करन लगी आं।

अम्माँ : हमारे लोकगीत हमारे जीवन की सभी गतिविधियों से सम्बन्धित हैं इसलिए मैं उसी क्रम से इनका वर्णन करती हूँ।

कमला : ठीक ऐ।

कमला : ठीक है।

अम्मां : बधावे लोक गीत खुशी दे हर मौके पर गाए जंदे न ते बेहाइयां जागतै दे जन्म उप्पर,

अम्माँ : 'बधावे' लोकगीत खुशी के हर अवसर पर गाए जाते हैं और 'बेहाइयाँ' लड़के के जन्म पर,

मुन्नन, सूतरा, बरसगंढ आदि
मौकें पर गाइयां जंदियां न।

कमला : अम्मां इन्दे लावा होर केह्ड़े–केह्ड़े लोकगीत संस्कारें आदि कन्नै सरबंधत न ?

अम्मां : कमला 'सुहाग' लोकगीत बारै ते तुगी दस्सी गै ओड़ेआ ऐ। जे कुड़ी दे ब्याह् उप्पर गाए जंदे न ते 'घोड़ियां' लोकगीत जागतै दे ब्याह् पर गाए जंदे न। इ'नें संस्कार गीतें दे इलावा डोगरी लोक गीतें दियां होर बी मतियां किस्मां न।

कमला : अम्मां, एह् होर गीत केह्ड़े–केह्ड़े मौके पर गाए जंदे न ?

अम्मां : साढ़े जिन्ने बी पर्व हैन उन्दे कन्नै सरबंधत गीत बी प्रचलत न, जि'यां नरातें दे गीत–भेटां, आरती, चूटी बगैरा, राह्ड़ें दे गीत, लोह्ड़ी दे गीत, बसाखी दे भांगड़े दियां बोलियां ते सद्दां, शिवरात्रि दे मौके पर शिव ब्याह् बगैरा अनेकां गीत इस डुग्गर संस्कृति दा अंग न।

कमला : अम्मां। खेतरें च कम्म करदे बेल्लै बी लोक किश गांदे न

मुंडन, नामकरण, वर्षगाँठ आदि
अवसरों पर गाई जाती हैं।

कमला : अम्माँ, इनके अतिरिक्त और कौन–कौन से लोकगीत संस्कारों आदि से सम्बन्धित हैं ?

अम्माँ : कमला 'सुहाग' लोकगीत के विषय में तो तुम्हें बता ही दिया है कि लड़की के विवाह पर गाए जाते है और 'घोड़ियां' लोक–गीत लड़के के विवाह पर गाए जाते हैं। इन संस्कार गीतों के अतिरिक्त डोगरी लोकगीतों के और भी कई प्रकार हैं।

कमला : अम्माँ। ये बाकी लोक गीत कौन–कौन से अवसर पर गाए जाते हैं ?

अम्माँ : हमारे जितने भी पर्व–त्योहार हैं उनसे सम्बन्धित गीत भी प्रचलित हैं, जैसे नवरात्रों के गीत–भेटें, आरती, चूटी (रात्रि भोज) वगैरा, राह्ड़ों के गीत, लोहड़ी के गीत, वैशाखी के भांगड़ा नाच की बोलियाँ, शिवरात्रि के अवसर पर शिव–विवाह आदि अनेक गीत इस डुग्गर संस्कृति का अंग हैं।

कमला : अम्माँ। खेतों में कार्य करते समय भी लोग कुछ गाते–

नां ?

अम्मां : हां कमला। लोक कम्म काज करदे बेल्लै जेह्ड़े गीत गांदे न उ'नेंगी श्रम गीत आखदे न जि'यां सुहाड़ी, गरलोडी, लाद्दी, चक्की आदि गीत मुक्ख श्रमगीत न।

कमला : अम्मां। चक्की गीत ते चक्की पींह्दे बेल्लै गांदे होने पर बाकी गीत केह्ड़े मौके पर गाए जंदे न ?

अम्मां : 'लाद्दी' गीत घरें–मकानें पर छत पांदे मौके, 'सुहाड़ी' गोडी करदे बल्लै ते 'गरलोडी' शत्हीर आदि ढोंदे बेल्लै गाया जंदा ऐ।

कमला : अम्मां किश गीत ऐसे बी होङन जेह्ड़े खेढदे मौके गाए जंदे न ?

अम्मां : हां कमला उ'ब्बी गीत बथ्हेरे न। ज्याणें दियें लगभग सभनें खेढें कन्नै कोई नां कोई गीत जुड़े दा ऐ, जि'यां कीकली, कौड्डी, अत्तर पत्तर, कोरड़ा शपाकी, ठीकरीमठीकरी बगैरा केई गीत न।

गुनगुनाते हैं न ?

अम्माँ : हाँ कमला। लोग कामकाज करते समय जो गीत गाते हैं उन्हें श्रमगीत कहा जाता है, जैसे सुहाड़ी, गरलोडी, लाद्दी, चक्की आदि के गीत मुख्य श्रमगीत हैं।

कमला : अम्माँ। चक्की गीत तो चक्की पीसते समय गाते होंगे पर बाकी गीत कौन से अवसर पर गाए जाते हैं ?

अम्माँ : 'लाद्दी' गीत घर–मकानों पर छत डालते समय, 'सुहाड़ी' गुडाई करते समय और 'गरलोडी' शहतीर आदि उठाते समय गाया जाता है।

कमला : अम्माँ कुछ गीत ऐसे भी होंगे जो खेलते समय गाए जाते हैं ?

अम्माँ : हाँ कमला वे भी बहुतेरे हैं। बच्चों की लगभग सभी खेलों से कोई न कोई गीत जुड़ा है। जैसे, कीकली, कबड्डी, अत्तर–पत्तर, कोरड़ा शपाकी, ठीकरीमठीकरी आदि केई खेलगीत हैं।

कमला : तां ते बड़े लोकगीत न डोगरी च ?	कमला : तब तो बहुत से लोकगीत हैं डोगरी में ?
अम्माँ : लोकगीत ते होर बी बड़े न पर अज्ज इन्ने गै काफी न। बाकी कल दस्सङ।	अम्माँ : लोकगीत तो और भी बहुत हैं, पर आज इतनें ही काफी हैं। बाकी कल बताऊँगी।
कमला : ठीक ऐ अम्मां।	कमला : ठीक है अम्माँ।

EXERCISES

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :–

1. अम्मां केह्ड़ा लोकगीत गुनगनाऽ करदी ही ?
2. 'सुहाग' लोकगीत केह्ड़े मौके पर गाया जंदा ऐ ?
3. जागत–जन्म दे मौके पर केह्ड़े लोकगीत गाए जंदे न ?
4. जागतै दे ब्याह् पर केह्ड़े लोकगीत गाए जंदे न ?
5. सुहाड़ी केह्ड़ी किस्मा दा लोकगीत ऐ ?
6. कु'नें पञें लोक खेढें दे नां लिखो जि'न्दे कन्नै गीत बी गाए जंदे न।

2. रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरिए :–

1. लाद्‌दी गीत घरें–मकानें पर .... पांदे मौकै गाया जंदा ऐ।
2. घोड़ियां .... दे ब्याह् पर गाइयां जंदियां न।
3. .... लोकगीत खुशी दे हर मौके पर गाए जंदे न।
4. .... लोकगीत कुड़ी दे ब्याह् दे मौके पर गाए जंदे न।
5. कम्म–काज करदे बेल्लै जेह्ड़े गीत गाए जंदे न उ'नेंगी .... आखदे न।

3. बहुवचन बनाइए और वाक्यों में प्रयोग भी कीजिए :–

लोकगीत, बिहाई, बधावा, सुहाड़ी, चक्की–गीत, सुहाग, भेंट।

4. डोगरी लोकगीतों के बारे में दस वाक्य लिखिए।

5. डोगरी में अनुवाद कीजिए :–

डोगरी लोकगीतों का डोगरी लोक साहित्य में विशेष स्थान है। इन गीतों के कई भेद हैं। इनका भाव पक्ष बहुत प्रबल है। इन गीतों के सौंदर्य को छंद और अलंकार कई गुणा बढ़ा देते हैं। लोक कथाओं की तरह ही लोकगीतों के भी कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनके प्रकाशन का काम जम्मू–कश्मीर अकैडेमी आफ़ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़ ने अपने जिम्मे लिया हुआ है।

Vocabulary शब्दावली

सुहाग	डोगरी लोकगीतों की एक किस्म जो लड़की के विवाह पर गाए जाते हैं।	प्रचलत	प्रचलित
धरती	धरती	गतिविधियां	गतिविधिएं
मुन्नन	मुंडन संस्कार	सूतरा	नामकरण संस्कार
बरस गंढ	वर्ष गाँठ	बेदन	वेदन
भेंट	भेंट (भगती लोक गीतों की एक किस्म)	बेल्ला	समय
शत्हीर	शहतीर	लगभग	लगभग
कीकली	लड़कियों का एक खेल और उसका गीत	कौडी	कबड्डी
कोरड़ा–शपाकी	बच्चों का एक खेल जिसमें हारने वाले को कपड़े से मारा जाता है।	श्रमगीत	श्रमगीत
ठीकरी–मठीकरी	ठीकरी छुपा कर खेले जाने वाला एक खेल।	बथ्हेरे	बहुतेरे

सुहाग :

लड़की के विवाह पर गाए जाने वाले लोक गीतों को डुग्गर में 'सुहाग' कहा जाता है। इनमें प्रायः लड़की का पीहर से बिछुड़ने का मार्मिक दर्द भरा होता है।

घोड़ी :

लड़के के विवाह पर गाए जाने वाले लोकगीतों को 'घोड़ियाँ' कहा जाता है। इनमें वर बधु के लिए मंगल कामना के साथ–साथ हँसी मजाक आदि का पुट भी होता है।

भेट :

डोगरी लोकगीतों के भक्ति गीतों का एक भेद है। इसमें किसी देवी–देवता की स्तुति की गई होती है।

आरती :

यह भी डोगरी का भक्ति लोकगीत है। जिसमें देवी–देवता की स्तुति अराधना करते हुए उसके गुणों का गायन होता है।

बधावे :

कुलदेवता की स्तुति में गाए जाने वाले लोकगीतों को डोगरी में बधावे कहा जाता है। किसी भी मंगल कार्य के आरम्भ में 'बधावे' गाए जाते हैं।

वेहाइयां :

यह संस्कार गीत है जो लड़के के जन्म, उसके नामकरण, संस्कार, मुंडन संस्कार आदि के समय खुशी में गाए जाते हैं।

कीकली :

यह खेलगीत का एक भेद है। दो लड़कियाँ मिल कर एक दूसरे की बाहें पकड़ कर गोल दायरें में तेज–तेज घूमती हैं जिसको 'कीकली पाना' कहते हैं और इस खेल के समय उक्त नामक गीत गाया जाता है।

कोरड़ा शपाकी :

यह भी खेलगीत है। इस खेल में सभी खेलने वाले एक दायरे में बैठ जाते हैं और खिलाड़ी उस दायरे के इर्द–गिर्द चक्कर लगाते हुए यह कहता चलता है "कोरड़ा शपाकी जुमेरात आई जे'तो बाकी के खिलाड़ी कहते हैं "जेह्ड़ा अग्गें–पिच्छें दिक्खै ओह्दी शामत आई जे।"

टीकरीमटीकरी :

यह भी एक खेलगीत है। ठीकरी से खेला जाता है और खेलते समय इसे गाया जाता है।

अत्तर–पत्तर :

अत्तर–पत्तर खेल खेलते समय यह गीत गाया जाता है और इसे भी अत्तर–पत्तर नाम से पुकारा जाता है।

चूटी :

नवरात्रों के अवसर पर लड़कियाँ रोज सायंकाल मिल बैठ, प्रीती–भोज करती हैं जिसे 'चूटी करना' कहा जाता है और उस समय जो गीत गाया जाता है उसे चूटी का गीत कहते हैं।

सुहाड़ी :

यह एक श्रमगीत है। खेतों में बीज बोते, धान की पौध लगाते और गुडाई आदि करते समय प्रायः जो गीत गाए जाते हैं उन्हें डोगरी में 'सुहाड़ी' कहते हैं।

गरलोडी :

यह भी श्रमगीत है। मेहनत–मजदूरी करते, शहतीर उठाते–ढोते समय प्रायः गरलोडी नामक लोकगीत गाए जाते है।

लादूदी :

यह भी श्रमगीत का एक भेद है। घर–मकानों की छत डालते समय लादूदी नामक श्रमगीत गाए जाते हैं।

भांगड़ा :

यह डुग्गर का एक प्रसिद्ध लोकनाच है जो विशेषकर मैदानी इलाके में नाचा जाता है। वैशाखी के उत्सव पर डुग्गर में भाँगड़ा नाच का विशेष रंग होता है। इस नाच के लिये विशेष प्रकार के लोक गीत गाए जाते हैं, जिन्हें 'बोलियां', 'सद्दां' कहा जाता है। 'बोलियां' सद्दां विशेष आह्वान के साथ कुछ गाकर कहा जाता है और भांगड़ा नाच नाचा जाता है।



पाठ—25

डोगरी साहित्य दा परिचे

(डोगरी साहित्य का परिचय)

दीपक	:	मनिराम दो कप चाह् मक्खन टोस्ट लेई आ।	दीपक	:	मनीराम दो कप चाय और मक्खन—टोस्ट ले आओ।
मनिराम	:	बेह्तर जनाब, हूनै लेई औन्नां।	मनिराम	:	बेहतर जनाब, अभी लाता हूँ।
राजू	:	दीपक, अज्जकल केह् लखोआ दा ऐ ?	राजू	:	दीपक, आजकल क्या लिखा जा रहा है ?
दीपक	:	'वत्स विकल' दा उपन्यास 'फुल्ल बिना डाह्ल्ली' पढ़ियै मकाया ऐ ते गज़ल लिखने दा मूड बने दा ऐ अज्जकल।	दीपक	:	वत्स विकल का उपन्यास 'फुल्ल बिना डाह्ल्ली' पढ़कर समाप्त किया है और गज़ल लिखने का मूड है आजकल।
राजू	:	अच्छा। तां ते कमाल ऐ। सनाऽ हां कोई ताजा गज़ल।	राजू	:	अच्छा। तब तो कमाल है। सुनाओ तो ज़रा कोई ताजा गज़ल।
दीपक	:	इस बेल्लै पूरी गज़ल चेतै नेईं ऐ। कल्ल सनाङ। में डोगरी साहित्य दा इतिहास नां दी कताब खरीदना चाह्न्नां, भलां कुत्थूं दा थ्होग ?	दीपक	:	इस समय पूरी गज़ल याद नहीं, कल सुनाऊँगा। मैं 'डोगरी साहित्य दा इतिहास' नाम पुस्तक खरीदना चाहता हूँ, भला कहाँ से मिलेगी।
राजू	:	'डोगरी साहित्य दा इतिहास' तूं केह् करना ? मतेहान देना ऐ के ?	राजू	:	'डोगरी साहित्य दा इतिहास' तुम्हें क्या करना है ? परीक्षा देनी है क्या ?
दीपक	:	नेईं मतेहान ते नेईं देना, पर	दीपक	:	नहीं परीक्षा तो नहीं देनी, पर

डोगरी लेखकें ते उन्दियें रचनाएं बारै मुख्तसर जनेही जानकारी हासल करना चाह्न्नां।

राजू : जे एह् गल्ल ऐ तां पुछदा चल फ्ही, केह् पुच्छना ऐ ?

दीपक : राजू, डोगरी साहित्य गी पढ़ना होऐ तां पैह्ले केह् पढ़ना चाहिदा ऐ ?

राजू : क्हानी पढ़ो, उपन्यास पढ़ो, लेख, निबन्ध बगैरा जो किश भी चाहो पढ़ी सकदे ओ।

दीपक : कविता की नेईं ?

राजू : शुरू–शुरू च गद्य पढ़ो पद्य बाद च पढ़ेओ। कविता दा आनन्द गै बक्खरा ऐ ओह् बी जेकर कवि दे मुहां सुनी जा तां आनन्द दी क्या बात ऐ। पर जेकर तुसेंगी कविता पसंद ऐ तां तां कविता कन्नै शुरू करी सकदे ओ।

दीपक : में जानना चाह्न्नां जे डोगरी साहित्य दा रम्भ भला कविता कन्नै गै होआ हा जां क्हानी आदि कन्नै ?

राजू : हर भाशा आह्ला लेखा

डोगरी लेखकों और उनकी रचनाओं के विषय में मुख्तसर सी जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ।

राजू : यदि यह बात है तो फिर पूछते चलो, क्या पूछना है ?

दीपक : राजू, डोगरी साहित्य को पढ़ना हो तो पहले क्या पढ़ना चाहिए ?

राजू : क्हानी पढ़, उपन्यास पढ़, लेख, निबन्ध वगैरा जो कुछ भी चाहो पढ़ सकते हैं।

दीपक : कविता क्यों नहीं ?

राजू : शुरू–शुरू में गद्य पढ़ पद्य बाद में पढ़ना। कविता का आनन्द ही अलग है वह भी यदि कवि की वाणी में सुनी जाए तो आनन्द की क्या बात है। पर, यदि आपको कविता पसंद है तो कविता से शुरू कर सकते हैं।

दीपक : मैं जानना चाहता हूँ डोगरी साहित्य का आरम्भ भला कविता से ही हुआ था या कहानी आदि से ?

राजू : हर भाषा की भाँति डोगरी में

	डोगरी च बी पैह्ले कविता गै सिरजी गेई ही।		भी पहले कविता ही लिखी गई थी।
दीपक :	डोगरी कविता दा सभनें थमां पराना नमूना कदूं दा मन्नेआ जंदा ऐ ?	दीपक :	डोगरी कविता का सब से पुराना नमूना किस समय का माना जाता है ?
राजू :	अज्जै तगर होई दी खोज मताबक सोह्लमी सदी दे मानक चंद होर पैह्ले डोगरी कवि हे।	राजू :	आज तक हुई खोज के अनुसार सोलहवीं सदी के मानक चंद डोगरी के पहले कवि थे।
दीपक :	ते पैह्ला क्हानीकार कु'न हा ?	दीपक :	तो पहला कहानीकार कौन था।
राजू :	डोगरी दे पैह्ले क्हानीकार भगवत्प्रसाद साठे हे।	राजू :	डोगरी के पहले कहानीकार भगवतप्रसाद साठे थे।
दीपक :	उन्दे क्हानी संग्रैह् दा नां केह् ऐ ?	दीपक :	उनके क्हानी संग्रह का नाम क्या है ?
राजू :	'पैह्ला फुल्ल'	राजू :	'पैह्ला फुल्ल'।
दीपक :	बाह् भाई। नां ते बड़ा सार्थक ऐ। तुस इस संग्रैह् दियां क्हानियां पढ़ी चुके दे होगेओ ?	दीपक :	वाह भाई। नाम तो बहुत सार्थक है। आप इस संग्रह की कहानियाँ पढ़ चुके होंगे ?
राजू :	चरोकनियां पढ़ी चुके दा आं में इन्दे दुए संग्रैह् 'खालीगोद' दियां बी सब्भै क्हानियां पढ़ी लेई दियां न।	राजू :	बहुत देर से पढ़ चुका हूँ। मैंने तो इनके दूसरे कहानी संग्रह 'खालीगोद' की भी सभी कहानियाँ पढ़ ली हैं।
दीपक :	अम्मी पढ़ना चांह्ङ पर एह् कताबां कु'त्थूं थ्होई सकदियां न ?	दीपक :	मैं भी पढ़ना चाहूँगा, परन्तु ये किताबें कहाँ से मिल सकती हैं ?

राजू : डोगरी संस्था, कर्णनगर थमां जां फ्ही कल्चरल अकैडमी दे बाहूर 'किताबघर' थमां लेई सकदे ओ ते लायब्रेरियें चा बी लेई सकदे ओ।

दीपक : राजू, तुस मिगी डोगरी साहित्य दे चोनमें–चोनमें लेखकें–साहित्यकारें दे ते उन्दियें खास–खास रचनाएं दे नां दस्सी सकदे ओ ?

राजू : की नेईं ? आधुनिक डोगरी साहित्य असल च इस सदी दे चौथे दूहाके च गै लखोना शुरू होआ।

दीपक : इसदे पैहूलें दा साहित्य मिलदा नेईं होना।

राजू : पैहूले शायद लखोई–छपोई गै नेईं हा सकेआ।

दीपक : फ्ही चानचक्क एह् सीर कि'यां फुटी पेई ?

राजू : भारत दे हर प्रान्ता च देश व्यापी सांस्कृतक चेतना दी लैहूर जित्थै–जित्थै पुज्जी उत्थूं दी जनता दे मना च

राजू : डोगरी संस्था, कर्ण नगर से या फिर कल्चरल अकैडमी के बाहिर 'किताबघर' से खरीद सकते हो और लायब्रेरियों से भी ले सकते हो।

दीपक : राजू, तुम मुझे डोगरी साहित्य के चुने हुए कवियों, लेखकों तथा उनकी खास खास रचनाओं के नाम बतला सकते हो ?

राजू : क्यों नहीं ? आधुनिक डोगरी साहित्य वास्तव में शताब्दी के चौथे दशक में ही लिखा जाना आरम्भ हुआ था।

दीपक : इससे पहले का साहित्य तो मिलता ही नहीं होगा।

राजू : पहले शायद लिखा भी नहीं गया होगा और न ही छापा जा सका होगा।

दीपक : फिर अचानक यह स्रोता कैसे फूट पड़ा था ?

राजू : भारत के प्रत्येक प्रान्त में देश व्यापी सांस्कृतिक चेतना की लहर जहाँ–जहाँ पहुँची वहाँ कि जनता के मन में अपनी मातृभाषा

आपनी मां–भाशा ते अपने सांस्कृतक बिरसे गी जीवत करने दी तांह्ग जागी पेई।

दीपक : फ्ही केह् होआ ?

राजू : केह् होना हा ? कवियें, क्हानी कारें कलम फगड़ी लेई ते दीनू भाई पन्त होरें जोरदार सुरै च कवितां लिखियै डोगरा कौम गी झुनकेआ। डोगरी भाशा गी लोकप्रिय बनाया। डोगरें गी डोगरी बोलने ते डोगरी च लिखने लेई प्रेरेआ।

दीपक : बड़ा गै चंगा कम्म कीता। उसदे बाद डोगरी साहित्य च दिनोदिन बाद्धा होन लगी पेआ होना ऐ ?

राजू : बिलाशक सन् 1960 दे लगभग डोगरी च त्रै उपन्यास 'शानो', 'हाड़, बेड़ी ते पत्तन' ते 'धारां ते धूड़ां' छपियै सामनै आए। सन् 1961 ई.च 'त्रिवेणी' निबन्ध संग्रैह् छपी गेआ। नाटक दा मुंढ 1935 ई.

और अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने की ललक जाग पड़ी थी।

दीपक : फिर क्या हुआ ?

राजू : क्या होना था ? कवि और कहानी कारों ने कलम उठा ली और दीनू भाई पन्त ने प्रबल सुर में कविता लिखकर डोगरा समाज को झकझोरा। इस प्रकार उन्होंने डोगरी भाषा को लोक प्रिय बनाया। डोगरों को डोगरी भाषा बोलने और डोगरी में लिखने के लिए प्रेरित किया।

दीपक : बड़ा ही प्रशंसा योग्य कार्य किया। उसके बाद डोगरी साहित्य में दिन प्रति दिन वृद्धि होती गई होगी ?

राजू : निस्सन्देह। सन् 1960 ई के लगभग डोगरी में तीन उपन्यास 'शानो' 'हाड़, बेड़ी ते पत्तन और 'धारा ते धूड़ां' छपकर सामने आए। सन 1961 में 'त्रिवेणी' निबन्ध संग्रह छपकर तैयार हुआ।

च गै पेई चुके दा हा।

दीपक : कुन्न लिखेआ हां ओह् पैह्ला नाटक ते उसदा केह् नां ऐ ?

राजू : ओह् पैह्ला नाटक पूरा नाटक नेईं हा, बल्के नाट्क दा इक भेद एकांकी हा। 'अछूत' नां दे इस एकांकी दे लेखक हे विश्वनाथ खजूरिया होर।

दीपक : केह् भला डोगरी च साहित्य दियां होर विधां बी मिलदियां न ?

राजू : की नेईं ? 'बद्दली कलावे' नां दा गीत संग्रैह् 'अस ते आं बनजारे लोक'नां दा गज़ल संग्रैह् 'रामायण' ते जित्तो' नां दे महाकाव्य, 'शेरे लाला हंसराज महाजन दी जीवनी, 'पगडंडियां' नां दी आत्मकथा 'पैह्लियां बांगां' नां दा सॉन्नट संग्रैह् 'सोध समुन्दरें दी' नां दा चमुखा संग्रैह्, 'गूढ़े धुंधले चेह्रे' नां दा रेखा चित्र संग्रैह्, 'डोगरी साहित्य चर्चा' ते त्रै डोगरी साहित्य दे इतिहास बगैरा सुद्धा

नाटक का श्रीगनेश सन् 1935 में ही हो चुका था।

दीपक : वह पहला नाटक किसने लिखा था ? और उसका नाम क्या था ?

राजू : वह पहला नाटक पूरा नहीं था। बल्कि नाटक का एक भेद एकांकी था। 'अछूत' नामक इस नाटक के लेखक थे स्व० विश्वनाथ खजूरिया।

दीपक : क्या डोगरी में साहित्य की अन्य विधाएं भी मिलती हैं ?

राजू : क्यों नहीं ? 'बद्दली कलावे' नामक गीत संग्रह 'अस ते आं बनजारे लोक' नामक गज़ल संग्रह 'रामायण' और 'जित्तो' नामक महाकाव्य 'शेरे डुग्गर लाला हंस राज' नामक जीवनी, 'पगडंडिया' नामक, आत्माकथा 'पैह्लियां बांगां' शीर्षक से सांन्नट संग्रह, 'सोध समुन्दर दी' नामक चपंक्तों का संग्रह, 'गूढ़े–धुंधले चेह्रे' नामक रेखा चित्र संग्रह 'डोगरी साहित्यचर्चा' और तीन

		किश ऐ।			डोगरी साहित्य के इतिहास आदि बहुत कुछ है।
दीपक	:	दूइयें भाशाएं दे अनुवाद बी डोगरी च होए दे होने न ?	दीपक	:	दूसरी भाषाओं से अनुवाद भी डोगरी में किये गए होंगे ?
राजू	:	हां, डोगरी दा पैह्ला अनुवाद 'धर्मपुस्तक' 1818 ई.च छपेआ हा। फ्ही संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेज़ी उर्दू, बंगला, मलयालम आदि भाशाएं दियें साहित्यक रचनाएं दे अनुवाद बी होंदे रेह् न।	राजू	:	हाँ, डोगरी का पहला अनुवाद 'धर्मपुस्तक' सन् 1818 प्रकाशित हुआ था। फिर संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेज़ी, उर्दू, बंगला, मलयालम आदि भाषाओं की साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद भी होते रहे हैं।
दीपक	:	इसदा मतलब ऐ जे इसलै डोगरी साहित्य च बड़ा किश ऐ।	दीपक	:	इसका अभिप्राय है कि इस वक्त डोगरी साहित्य में बहुत कुछ है।
राजू	:	जरूर। अज्जकल किश पत्रिका ते अखबारां बी डोगरी च छपा करदियां न।	राजू	:	अवश्य। आजकल कुछ पत्रिकाएं और समाचार पत्र भी डोगरी में छप रहे हैं।
दीपक	:	राजू जी तुन्दा मता–मता धन्यवाद। तुसें मुख्तसर हारी गल्ला बाता राहें मिगी डोगरी साहित्य कन्नै बाकवी करोआई दित्ती ऐ।	दीपक	:	राजू जी, आपका बड़ा धन्यवाद। आपने संक्षिप्त सी बात–चीत से मुझे डोगरी साहित्य के साथ परिचित करवा दिया है।

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–**

1. राजू 'डोगरी साहित्य दा इतिहास' की खरीदना चांह्दा ऐ?
2. डोगरी साहित्य दा रम्भ केह्ड़ी विधा कन्नै होआ हा?
3. डोगरी कविता दा सभनें थमां पराना नमूना कदूं दा मन्नेआ जंदा ऐ?
4. डोगरी दा पैह्ला क्हानीकार कु'न हा?
5. 'पैह्ला फुल्ल' केह्ड़ी विधा दी रचना ऐ?
6. आधुनिक डोगरी साहित्य दा मुंढ कदूं पेआ?
7. डोगरें गी डोगरी च लिखने दी प्रेरेणा कु'न्न दित्ती?
8. 'त्रिवेणी' संग्रैह् कदूं छपेआ?
9. डोगरी दा पैह्ला अनुवाद केह्ड़ा ऐ ते एह् कदूं छपेआ हा?
10. 'रामायण' केह्ड़ी विधा दी रचना ऐ?

2. **उदाहरण का अनुसरण करते हुए कथनों को सही कीजिए :–**

उदाहरण : 'पैह्ला फुल्ल' कविता संग्रैह् ऐ।

पैह्ला फुल्ल कविता संग्रैह् नेईं क्हानी संग्रैह् ऐ।

1. रामायण इक उपन्यास ऐ?
2. 'अस ते आं बनजारे लोक' गीतें दा संग्रैह् ऐ।
3. डोगरी दा पैह्ला कवि दत्तु गी मन्नेआ गेआ ऐ।
4. 'फुल्ल बिना डाह्ल्ली' मदन मोहन शर्मा दा उपन्यास ऐ।
5. डोगरी दे पैह्ले क्हानीकार नरेन्द्र खजूरिया न।

3. **निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरिए :–**

विश्वनाथ खजूरिया, मूड, अछूत, त्रै, गीत

1. गज़ल लिखने दा ....बने दा ऐ।
2. सन् 1960 दे लगभग डोगरी च .... उपन्यास छपे।
3. डोगरी दे पैह्ले एकांकी दा नां .... ऐ।
4. 'अछूत' एकांकी दे रचनाकार .... होर न।
5. 'बद्दली कलावे' इक .... संग्रैह् ऐ।

4. **शब्दों को उचित क्रम में प्रयोग करके वाक्य बनाएँ :–**

1. कोई हां गज़ल ताजा सनाऽ।
2. केह् अज्ञकल दा लखोआ ऐ।
3. पैह्ले गै सिरजी कविता गेई च बी डोगरी।
4. कहानी दा उन्दे संग्रैह् ऐ नां केह् ?
5. पैह्ला हा ओह् कुन्न नाटक लिखेआ ?

5. **पढ़िए, समझिए और लिखिए :–**

लिखेआ .... लिखेआ गेआ

मकाया .... मकाया गेआ

सनाया ....

दित्ता ....

छापेआ ....

प्रेरेआ ....

दस्सेआ ....

Vocabulary शब्दावली

चाह्	चाय, चाह	गज़ल	गज़ल
मुख़्तसर	संक्षिप्त	बक्खरा	अलग
सिरजना	सृजना	नमूना	नमूना, उदाहरण
खोज	खोज	मताबक	अनुसार, मुताबक
सार्थक	सार्थक	चरोकना	बहुत देर का
चोनमां	चुनींदा	दूहाका	दशक
चानचक्क	अचानक	सीर	सीर
लैह्‌र	लहर	जीवत	जीवित
तांह्‌ग	ललक, इच्छा	सुर	स्वर, सुर
बाद्‌धा	बढ़ोतरी	मुंढ	आरम्भ, शुरुआत, शुरू
विलाशक	बिलाशक	सुद्‌धा	बहुत
बाकवी	परिचय		



